(६) सूरह
अल-अन्आम

६. सूरह अल-अन्आम

नाम : आयत 136 से 145 में उस बहुदेववादी प्रथा (बिदअत) का खण्डन किया गया है जो बहुदेववादियों (मुश्रिकों) ने अन्आम अर्थात मवेशियों के सिलसिले में अपना रखी थी। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल अन्आम'' है।

नाज़िल होने का समयः मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के मध्यकाल में अवतारित हुई होगी।

केन्द्रीय विषयः शिर्क का खण्डन और तौहीद-आख़िरत एवं रिसालत के सिलसिले में इन्कार करने वालों की शंकाओं को दूर करते हुए उन को ईमान की दअवत ।

पिछली तीन सूरों में अहले किताब पर तर्क प्रस्तुति कर दी गई थी । इस सूरह में शिर्क करने वालों (बहुदेववादियों) पर तर्क की स्पष्ट प्रस्तुति कर दी गई है।

कलाम की तरतीबः आयत 1 से 3 भूमिका है। इन में कायनात के पैदा करने वाले (सृष्टा) का सही परिचय एवं सही ज्ञान प्रदान किया गया है।

आयत 4 से 21में इन्कार करने वालों की तथ्य रहित बातों पर पकड़ करते हुए उन की शंकाओं को दूर किया गया है।

आयत 22 से 32 में अल्लाह का शरीक ठहराने वालों, उस की आयतों को झुठलाने वालों,और दूसरे जीवन का इन्कार करना वालों की वह हालत बयान की गई है जब कि क़ियामत बरपा होगी और वे खुदा के सामने खड़े होंगे।

आयत 33 से 55 में रिसालत के सिलसिले में आपत्ति व्यक्त करने वालों को जवाब दिया गया है और उन्हें इन्कार करने के अन्जाम से भी ख़बरदार किया गया है एवं ईमान वालों को क्षमा दान और दया की शुभ सूचना सुना दी गई है।

आयत 56 से 67 में ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा दूसरी हस्तियों) की इबादत (बन्दगी) से विमुखता का एलान करने की हिदायत की गई है। और तौहीद को पेश किया गया है।

आयत 68 से 70 में कटहुज्जती करने वालों को उन के हाल पर छोड़ देने का निर्देश दिया गया है।

आयत 71 से 73 में शिर्क का खण्डन एवं तौहीद का समर्थन है।

आयत 74 से 83 में शिर्क और बुतपरस्ती के विरुद्ध और तौहीद के हक़ में इब्राहीम अलैहिस्सलाम के उस तर्क को प्रस्तुत किया गया है जो उन्हों ने अपनी क़ौम के सामने पेश किया था।

आयत 84 से 90 में महानुभाव नबियों का यह आदर्श भी प्रस्तुत किया गया है कि वे तौहीद पर अडिग थे और शिर्क से उन्हें दूर का भी वास्ता न था । उन की राह हिदायत की राह है।

आयत 91 से 94 में वह्य के नाज़िल होने से सम्बन्धित आपत्तियों का जवाब देते हुए उस मनोदशा को प्रस्तुत किया गया है जिस से इन्कार करने वाले मौत के समय और फिर क़ियामत के दिन दोचार होंगे।

आयत 95 से 108 में उन निशानियों की तरफ़ ध्यानकर्षित कराया गया है जो आसमान और ज़मीन में फैली हुई हैं तथा इन्सान के नफ़्स (अन्तरात्मा) में विद्यमान हैं और जिन से बिना किसी दूसरे की साझेदारी के एकमात्र अल्लाह के प्रभु एवं पूज्य होने का सबूत मिलता है और हर प्रकार के शिर्क का खण्डन होता है।

आयत 109 से 115 में इन्कार करने वालों की, उन की बेजा माँगों पर खिंचाई की गई है।

आयत 116 से 121 में इस बात की ताकीद की गई है कि धर्म के मामले में आदमी अटकल पच्चू बातों से प्रभावित न हो और बहूदेववादी अन्धविश्वास से बच कर रहे।

आयत 122 से 135 में रसूल की मुख़ालफ़त करने वालों को उन के अन्जाम से ख़बरदार किया गया है।

आयत 136 से 150 में बहुदेववादियों की इस गुमराही पर पकड़ की गई है कि उन्हों ने अन्धविश्वास में लिप्त हो कर कुछ मवेशियों को हराम ठहरा रखा है और अपने देवताओं को खुश करने के लिए अपनी औलाद को उन पर भेंट चढ़ाते हैं एवं खेती और मवेशियों में भी उन की भेंट के लिए एक भाग सुनिश्चित करते हैं।

आयत 151 से 158 में इस बात को संक्षेप में बयान करते हुए कि ख़ुदा ने वास्तव में क्या चीज़ें हराम ठहराई हैं, तथा क़ुर्आन पर ईमान लाने और उस की पैरवी करने की दअवत दी गई है।

आयत 159 से 165 अन्तिम शब्द अथवा उपसंहार है जिस में यह ऐलान किया गया है कि जिन लोगों ने अलग अलग मज़हब बना लिए हैं उन का ख़ुदा के दीन से कोई लगाव नहीं है और हर व्यक्ति अपने कर्मों का ज़िम्मेदार है।

६-सूरह अल-अन्आम्

سُورَةُ الْأَنْعَامِ

आयतें : १६५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. हम्द [1] (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया [2] और अंधकार और प्रकाश बनाए।[3] फिर भी कुफ्र करने वाले अपने रब का समकक्ष ठहराते हैं।[4]

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ
وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ١

2. वही है जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया [5] फिर (जीवन की) एक मुद्दत सुनिश्चित की।[6] और उस के यहाँ एक दूसरी मुद्दत भी सुनिश्चित है।[7] फिर भी तुम लोग हो कि शक करते हो।[8]

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا وَأَجَلٌ مُسَمًّى
عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُونَ ٢

3. और वही अल्लाह आसमानों में भी है और ज़मीन में भी।[9] तुम्हारी छिपी और खुली सब बातों को जानता है और जो (अच्छी बुरी) कमाई तुम करते हो वह भी उसे मालूम है।[10]

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ
وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ٣

4. उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी ऐसी नहीं जो उन के पास आई हो और उन्हों ने उस से मुँह न मोड़ लिया हो ।[11]

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ
إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ٤

5. अतः जब हक़ उन के पास आया तो उस को उन्हों ने झुठला दिया [12] तो जिन बातों का वे मज़ाक उड़ाते रहे उन की ख़बरें बहुत जल्द उन के पास पहुँच जाऐंगी।[13]

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ٥

6. क्या उन्हों ने देखा नहीं कि उन से पहले हम कितनी क़ौमों को नष्ट कर चुके हैं, जिन को हम ने ज़मीन में वह शक्ति प्रदान की थी जो तुम को नहीं प्रदान की। [14] हम ने उन पर ख़ूब बरसने वाली बारिश भेज दी थी, और उन के नीचे नहरें जारी कर दी थीं [15] फिर हम ने उन के गुनाहों की पादाश (बदले) में उन्हें नष्ट कर दिया और उन के बाद दूसरी क़ौमों को उठा खड़ा किया।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ
مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا
الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا
مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ٦

1. हम्द (प्रशंसा) की व्याख्या सूरह फ़ातिहा नोट २ में गुज़र चुकी ।

2. अल्लाह का आसमान और ज़मीन का सृष्टा होना एक स्पष्ट वास्ताविकता है जो दलील की मुहताज नहीं । यहूदि और ईसाई तो उस पर आस्था रखते ही थे और अरब के बहुदेववादियों को भी इस से इन्कार नहीं था और जहाँ तक आसमानी किताबों का सम्बन्ध है, उपलब्ध पुस्तकों में तौरात सर्वधिक प्राचीन ग्रन्थ है जिस की शुरुआत ही इस हक़ीक़त के ऐलान से होती है,

''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' (उत्पत्ति १:१)

इस सर्वमान्य वास्तविकता से इन्कार का दुस्साहस केवल अनीश्वरवादी अथवा नास्तिक ही कर सके हैं। या फिर वे लोग जो अपनी उचित एवं स्वभाविक सोच को फ़लसफ़ियाना बहसों में उलझा कर रह गए। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में ब्रहमाण्ड के सृष्टा के बारे में जो विचार पाया जाता है वह काफ़ी उलझा हुआ है। ऋगवेद में यह कहीं नहीं कहा गया है कि किसी सर्व शक्तिमान एवं प्रभुत्व प्राप्त हस्ती ने दुनिया को पैदा किया है। उन के विभिन्न देवताओं का जो कारनामा बयान किया गया है वह केवल यह है कि उन्हों ने दुनिया को एक खास शक्ल और एक खास हैसियत दे दी न कि दुनिया को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाए ।

“It has not been said anywhere in the Rig Veda that there was a creation of the world, the bringing into being of what was not existing, by some Superior power. The various gods are related to the formation of the world. But not one of them ‘created’ the world. They gave the world a form and position.”

–(The Quintessence of the Rig Veda, P.103).

अलबत्ता उपनिषद में यह स्पष्टीकरण मिलता है कि सब से पहले आत्मा थी और उस ने इन दुनियाओं को पैदा किया:

“In the beginning all this was, verily, the Atman alone, there was nothing else living He created these worlds.”

–(The Essence of Principal Upanishads by Swami Sivananda, P.136).

एक तरफ़ यह उलझी हुई बातें और दूसरी तरफ़ क़ुर्आन का ब्रहमाण्ड के सृष्टा के बारे में बयान है जो कितना स्पष्ट, उचित और दिल की गहराइयों में उतर जाने वाला है।

3. इस से ज़रतुश्तों (पारसियों अथवा Zoraster)के इस विचार का खण्डन होता है कि प्रकाश और अंधकार के अलग अलग ख़ुदा हैं उन्हों ने अपने इस दंभपूर्ण विचार के अनुसार एक का नाम यज़दाँ और दूसरे का नाम अहरमन रखा है। यज़दाँ रौशनी और ख़ैर (भलाई) का ख़ुदा है तो अह्रमन अधंकार और बदी का । इस धारणा ने उन्हें आग का पुजारी बना दिया । दो ख़ुदाओं (Dualism) के इस अक़ीदे का मतलब इस बात को मान लेना है कि इस ब्रहमाण्ड पर दो प्रतिद्वन्द्वी शक्तियों की वर्चस्वता एवं सत्ता है। लेकिन अगर ऐसा होता तो कायनात (ब्रहमाण्ड) की यह व्यवस्था पूरे ताल मेल के साथ किस तरह चल सकती थी? फिर तो यह कायनात दो विरोधी शक्तियों का युद्ध स्थल बन कर रह जाती। यह एक दलील ही इस धारणा को असत्य एवं ग़लत ठहराने के लिए काफ़ी है।

4. अर्थात् जब यह एक अखण्डनीय एवं सर्वमान्य वास्तविकता है कि यह पूरी कायनात अल्लाह ही ने पैदा की है तो फिर किसी और के ख़ुदा होने या देवी देवता होने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है?

5. अर्थात आदम की रचना मिट्टी से हुई थी और उन ही से मानव वंश चला है।

6. मतलब यह है कि कर्म करने की मुहलत जिसे मौत समाप्त कर देती है।

7. अर्थात् वह मुद्दत जो तमाम इन्सानों के दोबारा उठाए जाने के लिए निश्चित है। मुराद क़ियामत की घड़ी है।

8. अर्थात् दोबारा उठाए जाने के बारे में मनुष्य अकारण संदेह में पड़ा हुआ है। जिस हस्ती ने मिट्टी से मनुष्य की रचना की हो वह उसे दोबारा मिट्टी से उठा खड़ा क्यों नहीं कर सकती? और जिस ने मौत की घड़ी निश्चित की कि कोई व्यक्ति उस को टाल नहीं सकता तो वह क़ियामत की घड़ी को किस तरह टाल सकेगा? जिस तरह वह निश्चित समय पर मरने के लिए मजबूर होता है उसी तरह वह निश्चित समय पर दोबारा उठ खड़े होने के लिए भी विवश होगा।

9. इस का सीधा सादा अर्थ वही है जो एक साधारण पढ़ने वाले के मस्तिष्क में आ सकता है और जिस का अनुमोदन बाद के वाक्य से भी होता है। अर्थात अल्लाह हर जगह हाज़िर और नाज़िर है मतलब कि हर जगह विद्यमान है और सब कुछ देख रहा है। और उस की सत्ता एवं शासन धरती के चप्पे चप्पे पर स्थापित है। रही यह बात की ख़ुदा की रुह हर चीज़ में प्रविष्ट हो गई है या यह विचार की सब कुछ ख़ुदा ही है, ख़ुदा के सिवा किसी और वस्तु का अस्तित्व नहीं, यह ख़ुदा है जो तरह तरह की शक्लों में दिख रहा है तो यह बहुदेववादी विचार है और सृष्टा को सृष्टि समझने का परिणाम है।

10. और उस के इस ज्ञान का तक़ाज़ा यह है कि बदले

का दिन बरपा करे और हर एक को उस की कमाई का बदला दे। वह हस्ती जिस की जानकारी में सब का कच्चा चिट्ठा हो वह उन का हिसाब क्यों कर न चुकाएगी?

11. क़ुर्आन की हर आयत अल्लाह की निशानी है इस लिए कि इस से अल्लाह का मार्ग स्पष्ट हो जाता है और इस लिए भी कि वह बोलता हुआ चमत्कार है लेकिन लोगों का हाल यह है कि वह इन निशानियों के मामले में विमुखता का रवैया अपनाए हुए है।

12. अर्थात् पहले तो उन्हों ने अल्लाह की आयतों से मुँह मोड़ा किन्तु जब इन आयतों के द्वारा हक़ बिलकुल खुल कर सामने आ गया तो उस को झुठलाने पर तुल गए।

13. अर्थात् क़ुर्आन जिन बातों पर ईमान लाने का न्योता दे रहा है उन का वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं लेकिन जब इस का अन्जाम उन के सामने आएगा तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि हक़ीक़त क्या थी ।

14. संबोधन क़ुरैश की क़ौम अर्थात् मक्का के बुत परस्तों से है कि तुम किस घमंड में डूबे हुए हो। अगर तुम्हें अपनी क़ौमी ताक़त पर नाज़ है तो तुम्हें मालूम हो जाना चाहिए कि तुम से पहले तुम से कहीं अधिक बलवान, शक्तिशाली, एवं प्रभुत्वशाली क़ौमें गुज़र चुकी है। लेकिन जब उन्होंने रसूलों को झुठलाया और सरकशी की तो उन को अल्लाह तआला ने विनष्ट कर दिया। यही अंत तुम्हारा भी हो सकता है अगर तुम न संभलो ।

जिन क़ौमों को गुनाहों के करने के बदले विनष्ट कर दिया गया उन का किस्सा आगे सूरह आराफ़ में बयान हुआ है।

15. अर्थात् उन क़ौमों को शक्ति के अलावा रिज़्क़ भी अधिकता के साथ प्रदान किया था।

और ऐ पैग़म्बर तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक उड़ाया जा चुका है तो जिन लोगों ने मज़ाक़ उड़ाया था उन को उस चीज़ ने आ घेरा जिस का वे मज़ाक़ उड़ाते थे।(अल-क़ुर्आन)

7. (ऐ पैग़म्बर !) अगर हम तुम पर काग़ज़ पर लिखी हुई किताब नाज़िल करते और ये उसे अपने हाथों से छू भी लेते तब भी जिन्हों ने कुफ्र किया है यही कहते कि यह तो खुली जादूगरी है।[16]

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَٰبًا فِى قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ
ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا إِنْ هَٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

8. और कहते हैं कि इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया। अगर हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो मामले का फ़ैसला ही हो जाता, फिर इन्हें मुहलत न दी जाती।[17]

وَقَالُوا لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِىَ
ٱلْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿٨﴾

9. और अगर हम फ़रिश्ते को पैग़म्बर बना कर भेजते तो मनुष्य के रुप ही में भेजते और इन्हें वैसे ही संदेह में डाल देते जैसा संदेह यह अब कर रहे हैं।[18]

وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَٰهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا
يَلْبِسُونَ ﴿٩﴾

10. और ऐ पैग़म्बर तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक उड़ाया जा चुका है तो जिन लोगों ने मज़ाक़ उड़ाया था उन को उस चीज़ ने आ घेरा जिस का वे मज़ाक़ उड़ाते थे।[19]

وَلَقَدِ ٱسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ
بِٱلَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾ ع

11. कहो, ज़मीन में चल फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ।[20]

قُلْ سِيرُوا فِى ٱلْأَرْضِ ثُمَّ ٱنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ
ٱلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

12. इन से पूछो, आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किस का है? कहो अल्लाह ही का है।[21] उस ने अपने ऊपर रहमत अनिवार्य कर ली है।[22] वह तुम्हें ज़रुर क़ियामत के दिन जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं।[23] जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाल दिया है वही ईमान नहीं लाते।[24]

قُل لِّمَن مَّا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ
نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ ٱلَّذِينَ
خَسِرُوٓا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

13. और उस के लिए है जो कुछ ठहरा हुआ है रात और दिन में।[25] और वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।

وَلَهُۥ مَا سَكَنَ فِى ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ ۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

14. कहो, क्या मैं अल्लाह को छोड़ कर जो आसमानों और ज़मीन का सृष्टा है और (सबको) खिलाता है और कोई नहीं जो उस को खिलाता हो,[26] किसी और को वली (सरपरस्त एवं हाजतों को पूरी करने वाला) बना लूँ।[27] कहो मुझे तो यही हुक्म दिया गया है कि मैं सब से पहले अपने को उस के हवाले करने वाला बनूँ।[28] और (ऐ पैग़म्बर !) तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों में से न हो जाओ।[29]

قُلْ أَغَيْرَ ٱللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَهُوَ
يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّىٓ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ
أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾

16. अर्थात जो लोग न मानने की क़सम खा बैठे हैं उन्हें चाहे कोई निशानी दिखा दी जाए वे मानने वाले नहीं हैं । अगर क़ुर्आन आसमान से लिखा लिखाया किताब की सूरत में नाज़िल किया जाता तब भी जो लोग हठ्धर्मी में लिप्त हैं वे उस को आसमानी किताब न मानने के लिए एक न एक बहाना बना लेते और अगर कोई बात बन न पड़ती तो उसे जादूगरी कहने से न चुकते । इस लिए ऐसे लोगों के एतिराज़ों की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए।

17. इन्कार करने वालों का दूसरा एतिराज़ यह था कि अगर वास्तव में यह व्यक्ति पैग़म्बर है तो इस पर आसमान से फ़रिश्ता इस तरह क्यों नहीं नाज़िल होता कि उसे हम भी देख लेते और वह एलान करता कि इस व्यक्ति को अल्लाह ने पैग़म्बर बना कर भेजा है। उन के इस एतिराज़ का उत्तर यह दिया गया है कि फ़रिश्ते को इस तरह नाज़िल करने की सूरत में अमल की वह मुहलत बाक़ी नहीं रहेगी जो तुम्हें दी गई है बल्कि वह फ़ैसले की घड़ी होगी क्यों कि अमल की मोहलत तब तक है जब तक कि इम्तिहान का मौक़ा बाक़ी है। लेकिन जब फ़रिश्तों का एलानिया अवतरण होने लगे और ग़ैब ग़ैब न रहे तो ईमान लाने का क्या सवाल बाक़ी रह जाता है?इस लिए फ़रिश्ते का इस प्रकार उतारना अल्लाह की उस योजना के विरुद्ध है जो उस ने इन्सान का इम्तिहान लेने के उद्देश्य से बनाई है।

18. अर्थात् फ़रिश्ते के नाज़िल होने की दूसरी सूरत यह हो सकती थी कि फ़रिश्ते को रसूल बना कर इन्सानी रुप में भेजा जाता । इस सूरत में भी इन लोगों को यही संदेह होता जो अब हो रहा है, अर्थात ये कहते कि यह तो इन्सान है यह पैग़म्बर कैसे हो सकता है।

19. अर्थात् जिस अज़ाब का वे मज़ाक़ उड़ाते थे वह उन पर छा कर रहा।

20. अर्थात् जिन क़ौमों की तरफ़ रसूल भेजे गए और उन्हों ने उन को झुठलाया वे अल्लाह के प्रकोप की ज़द में आ गए। उन की इस तबाही की स्मृतियाँ ज़मीन में खण्डहरों की शक्ल में मौजूद हैं जैसे क़ुरा की घाटी में समूद क़ौम की तबाही की स्मृतियाँ और वे स्मृतियाँ भी जो इतिहास के पन्नों पर अंकित हैं जैसे मिस्त्र में फ़िरऔन का अन्जाम (उस की लाश आज भी इबरत के लिए मौजूद है।) आदि।

क़ुर्आन इस तरह के इतिहासिक स्थलों का अवलोकन करने के लिए भ्रमण (सफ़र) करने का निमंत्रण देता है मगर इस लिए नहीं कि इस के द्वारा वे मात्र अपना मनोरन्जन करें अथवा जनरल नालेज (सामान्य ज्ञान) में वृद्धि करें, बल्कि इस लिए कि इस अवलोकन द्वारा वे संसार की वास्तविकता को समझें और उन के अन्त से पाठ सीखें।

आज मनुष्य बहुत सफ़र करता है और कई उद्देश्यों से सफ़र करता है लेकिन नहीं करता तो इबरत हासिल करने के लिए।

21. अर्थात् तुम इन से यह सवाल ज़रुर करो कि आसमान और ज़मीन की सारी वस्तुओं का मालिक कौन है ताकि वे विचार करें और असल वास्तविकता को पा सकें। फिर तुम अपना यह जवाब भी उन्हें सुना दो कि सब कुछ अल्लाह ही का है ताकि सत्य की अभिव्यक्ति हो जाए।

22. मतलब यह कि उस को रहम करने के लिए किसी ने मजबूर नहीं किया है बल्कि उस ने स्वयं यह निर्णय कर लिया है कि वह अपने बन्दों पर मेहरबान होगा।

23. अर्थात क़ियामत के दिन सब को जमा करना उस की रहमत का तक़ाज़ा है। क़ियामत यद्यपि एक हौलनाक रुप में प्रकट होगी और इन्कार करने वालों पर ख़ुदा का प्रकोप टूट पड़ेगा लेकिन यह क़ियामत (प्रलय) प्रकट होने का केवल एक पहलु है दूसरा पहलू जो इस से महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिणाम अपने अन्दर रखता है, यह है कि अल्लाह अपने वफ़ादार बन्दों पर अपनी असीमित दया उंडेलेगा और वे सदा के लिए उस की रहमत से उन्मत्त होंगे।

24. अर्थात् जिन लोगों को इस बात से कोई दिलचस्पी नहीं है कि क़ियामत के दिन अल्लाह की रहमत की जो बारिश होने वाली है उस से अपने दामन भर लें, वे उस से वंचित ही रहने वाले हैं। और अल्लाह की रहमत से वंचित होना बहुत बड़े घाटे की बात होगी ऐसा घाटा जो उस बर्बादी के समानार्थ है जो कि अनन्त हो।

25. अर्थात् वह ज़मान और मकान (Time & Space) और सारे जगत, सब का मालिक है। रात और दिन की हालत उस के लिए समान है, कोई चीज़ किसी भी दशा में उस के वश से बाहर नहीं।

26. खाना पीना सृष्टि की विशेषता है सृष्टा की नहीं। अल्लाह सृष्टा है और उसे खाने पीने की कोई आवश्यकता लागू नहीं होती इस के विरुद्ध बहुदेववादी अपने देवी देवताओं के बारे में खाने पीने की धारणा रखते हैं। अत: भारत के बहुदेववादियों की अपने देवताओं के बारे में एक धारणा यह है कि वे एक विशेष प्रकार का मादक पेय पदार्थ सोमा पी कर ज़िन्दा रहते हैं और यह भी अजीब बात है कि बुत परस्त अपने ख़ुदाओं के सामने खाना पेश करते हैं।

27. अर्थात् जब आसमानों और ज़मीन को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला अल्लाह ही है और सब के खाने पीने और परवरिश का सामान अकेले वही कर रहा है और वह ख़ुद

खाने पीने का मुहताज नहीं है तो उस के सिवा किसी और को ख़ुदा बनाने का क्या सवाल पैदा होता है?हाजतों को पूरा करने वाला जब एक मात्र वही है और सब उस के मुहताज हैं तो मुहताज को हाजत पूरा करने वाले की श्रेणी में रखना कहाँ की बुद्धिमानी है?

28. पैग़म्बर दूसरों को ख़ुदा परस्ती की दअवत देने से पहले खुद उस पर अमल करता है। वह अल्लाह के आदेशनुसार अपने काम का आरम्भ स्वयं अपने आप से करता है। अर्थात वह अपने को पूर्ण रुप से अल्लाह के हवाले करता है कि वह केवल उसी की इबादत (उपासना) करेगा और उस का जो हुक्म भी होगा उस का पालन करेगा ।

ख़ुदा के इस हुक्म और पैग़म्बर के इस आदर्श में हर उस व्यक्ति के लिए जो सत्य प्रिय है, यह रहनुमाई है कि वह सत्य धर्म के मामले में सर्वप्रथम अपने उस दायित्व को पूरा करे जो उस के अपने व्यक्तित्व से सम्बन्धित है,यह सोचे बग़ैर कि लोग अपने दायित्व को पूरा करते हैं या नहीं क्यों कि सब से पहले उसे ख़ुदा के सामने अपने व्यक्तित्व से सम्बन्धित उत्तर देना होगा ।

29. इस से मुस्लिम और मुश्रिक का अन्तर स्पष्ट होता है। एक मुस्लिम स्वयं को पूर्ण रुप से अल्लाह के हवाले कर देता है। इस के विपरीत मुश्रिक अर्थात बहुदेववादी अपने आप को अल्लाह के हवाले कभी नहीं करता। वह ख़ुदा को मानता भी है तो कुछ बचाव (Reservations) के साथ क्यों कि उस की वफ़ादारियाँ अन्य ख़ुदाओं में बटी हुई होती हैं।

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उस की आयतों को झुठलाए? निश्चय ही ज़ालिम कभी फ़लाह (सफ़लता एवं मुक्ति) नहीं पाऐंगे। (अल-क़ुर्आन)

15. कहो अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।[30]

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

16. उस दिन जिस को इस से बचा लिया गया उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है।[31]

مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

17. और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में मुब्तिला करे तो उस को दूर करने वाला उस के सिवा कोई नहीं। और अगर कोई भलाई पहुँचाए तो वह हर चीज़ पर क़ादिर [32] (समर्थ) है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ
يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

18. और वह अपने बन्दों के ऊपर ज़ोर और ग़लबा (प्रभुत्व) रखने वाला है। [33] और वह हकीम भी है और बाख़बर भी।[34]

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿١٨﴾

19. (इन से) पूछो सब से बढ़ कर गवाही किस की है? कहो अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है।[35]और यह क़ुर्आन मेरी तरफ़ वह्य किया गया है ताकि मैं इस के द्वारा तुम को सावधान करूँ [36] और उन को भी जिन को यह पहुँचे।[37] क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा भी हैं ? कहो मैं तो इस की गवाही नहीं देता।कहो सिर्फ़ वही एक ख़ुदा है।[38]और तुम जो शरीक ठहराते हो उन से मैं बिलकुल बेज़ार (विरक्त) हूँ।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ
وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ
لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا
هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿١٩﴾

20. जिन लोगों को हम ने किताब दी है वह उस को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं।[39](लेकिन) जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाल दिया है वे ईमान नहीं लाते।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾

21. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उस की आयतों को झुठलाए?[40] निश्चय ही ज़ालिम कभी फ़लाह (सफ़लता एवं मुक्ति) नहीं पाऐंगे।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ
لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢١﴾

22. और जिस दिन [41] हम इन सब को जमा करेंगे, फिर शरीक ठहराने वालों (बहुदेववादियों) से पूछेंगें कि तुम्हारे वे शरीक कहाँ हैं जिस को तुम (ख़ुदा का) साझीदार समझते थे?

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ
شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

30. अर्थात् क़ियामत के दिन के अज़ाब का डर। और वह डर हर एक ख़ुदा के बन्दे को होना चाहिए। पैग़म्बर भी इस से अलग नहीं।

31. अर्थात् वास्तविक सफ़लता यही कि आदमी क़ियामत के दिन अल्लाह के प्रकोप (अज़ाब) से सुरक्षित हो। अगर आज लोगों को इस बात का एहसास नहीं है तो क़ियामत के दिन इस का एहसास ज़रुर होगा ।

32. अर्थात दुख सुख पहुँचाना सब कुछ अल्लाह ही के वश में है। किसी और के बारे में यह विचार रखना कि वह दुख दूर कर सकता है और सुख प्रदान कर सकता है एक ऐसी बात है जिस का वास्तव में कोई आधार नहीं।"मुश्किल कुशा" (मुश्किलों को दूर करने वाले) "ग़ौस" (फ़रियाद सुनने वाले) और "बिगड़ी के बनाने वाले" ये सब खोखले लक़ब हैं जो लोगों ने ग़ैरुल्लाह को दे रखे हैं। हक़ीक़त का इन से दूर का भी वास्ता नहीं।

33. अर्थात् बन्दे पूरी तरह उस के क़ाबू में और उस के वश में हैं। वह जिस बन्दे को जिस हाल में रखना चाहे कोई ताक़त नहीं जो उसे उस से रोक सके।

34. इन गुणों एवं विशेषताओं को बयान कर के यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि अल्लाह इन ख़ूबियों एवं गुणों से सुसज्जित है। इस लिए उस का प्रभु, पुज्य एवं उपास्य होना सत्य एवं वास्तविकता पर आधारित है। रहे बहुदेववादियों के ख़ुदा तो जब इन ख़ूबियों में से कोई ख़ूबी एवं विशेषता भी किसी में पाई नहीं जाती तो वे ख़ुदा कहलाने के हक़दार ही कब हैं जो उन्हें उपास्य बनाया जाए?

35. मतलब यह है कि जब अल्लाह ही ज़मीन और आसमान का रचयिता है तो वही यह बता सकता है कि उस ने अपने ख़ुदा होने में किसी को साझीदार किया है या नहीं। उस के बताए बग़ैर तुम्हारा यह दावा कि उस ने फ़लाँ और फ़लाँ को अपने ख़ुदा होने में शरीक कर लिया है एक निराधार दावा है। ख़ुदा होने के मामले में कायनात के बनाने वाले की गवाही ही सर्वाधिक विश्वासनीय और निर्णायक हो सकती है, और मैं उसी की गवाही पेश कर रहा हूँ। और उस की गवाही---- जैसा कि इस के आगे स्पष्ट किया गया है---- क़ुर्आन के रुप में तुम्हारे सामने मौजूद है।

36. अर्थात् क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है इस लिए उस का अल्लाह की गवाही होना बिलकुल स्पष्ट है। और उस की गवाही यह है कि उस के ख़ुदा होने में कोई साझीदार नहीं। और क़ुर्आन इस लिए नाज़िल किया गया है कि ख़ुदा का साझीदार ठहराने वालों को इस बात से सावधान कर दिया जाए कि उन्हें इस जुर्म की कड़ी सज़ा भुगतनी होगी।

37. अर्थात् क़ुर्आन केवल मक्का वालों या अरब वासियों के लिए नहीं है बल्कि सारे जगत के लिए है। जिस जिस तक और जिन जिन क़ौमों तक पहुँचे उन सब पर यह आदेश लागू होगा और वे अल्लाह के सम्मुख कोई तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे क्यों कि पैग़म्बर ने उन्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था और शिर्क, कुफ्र और सरकशी के बुरे अन्जाम से उन्हें सावधान कर दिया था।

38. अर्थात् सच्ची बात यह है कि अल्लाह ही ख़ुदा है और वही वास्तविक पूज्य एवं उपास्य है। उस के सिवा न कोई ख़ुदा है और न पूज्य।

39. अर्थात् जिस तरह किसी को अपनी औलाद के पहचानने में संदेह नहीं होता उसी तरह उन लोगों को जिन के पास आसमानी किताबें आई हैं इस नबी को पहचानने में कोई संदेह नहीं होता क्यों कि वे अच्छी तरह जानते हैं कि एक नबी की क्या विशेषताऐं होती हैं तथा उन्हें यह भी मालूम है कि आसमानी किताबों (तौरात और इन्जील) में आने वाले नबी के बारे में जो भविष्यवाणियाँ मौजूद हैं वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर बिल्कुल पूरी उतरती हैं।

इस आयत का इशारा अहले किताब के सत्यप्रिय लोगों की ओर है। और इस से बहुदेववादियों पर यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि पैग़म्बर और क़ुर्आन निराधार रुप से हवा में नहीं प्रकट किए गए हैं बल्कि इस की ठोस बुनियादें हैं और इस का सम्बन्ध अल्लाह की हिदायत के उसी सिलसिले से है जो पहले से चला आ रहा है।

40. यह इन्कार करने वालों को विचार करने का निमंत्रण है कि अगर तुम्हारा यह आरोप सही है कि इस व्यक्ति (पैग़म्बर) ने नबी होने का झूठा दावा किया है तो फिर उस ने अल्लाह पर सब से बड़ा झूठ बाँधा है. अत: वह सब से बड़ा ज़ालिम क़रार पाता है। लेकिन क्या तुम को वास्तव में यह व्यक्ति इस स्तर का प्रतीत होता है?क्या वह व्यक्ति जो सत्य की मूर्ति हो इतना बड़ा झूठ गढ़ सकता है?क्या चरित्र एवं आचरण की पवित्रता के साथ झूठे दावों एवं झूठे आरोपों का जोड़ लग सकता है? अगर इस का जवाब ना में है तो फिर सोच लो कि तुम्हारी पोजीशन क्या हुई? क्या तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार कर के अपने को सब से बड़ा ज़ालिम और अपराधी साबित नहीं कर रहे हो?

इस आयत के भावार्थ का एक दूसरा पहलू भी है और वह यह कि जो व्यक्ति ख़ुदा पर यह बोहतान (आरोप) लगाए कि उस ने अपने ख़ुदा होने में फ़लाँ और फ़लाँ को शरीक कर लिया है उस से बड़ा ज़ालिम कोई नहीं। उसी तरह जो व्यक्ति अल्लाह की आयतों को झुठलाए उस से बड़ा अपराधी कोई नहीं।

41. अर्थात् क़ियामत के दिन ।

23. फिर वे इस के सिवा कोई बात न बना सकेंगे कि अल्लाह हमारे रब की क़सम हम मुश्रिक (बहुदेववादी) न थे।[42]

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا
مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

24. देखो यह किस तरह अपने ऊपर झूठ बोलेंगे और जो कुछ इन्हों ने गढ़ लिया था वह सब इन से गुम हो जाएगा।[43]

انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

25. इन में कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं मगर हम ने उन के दिलों पर परदे डाल रखे हैं कि कुछ न समझें और इन के कानों में बोझ डाल दिया है।[44] वे हर तरह कि निशानियाँ देख लें जब भी उन पर ईमान लाने वाले नहीं। यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास आ कर तुम से झगड़ते हैं तो ये काफ़िर कहने लगते हैं कि यह तो अगले लोगों की कहानियाँ हैं।[45]

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً
أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا
بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا
إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

26. वे दूसरों को भी उस से रोकते हैं और खुद भी उस से दूर रहते हैं।(ऐसा कर के) वे अपने ही को विनाश में झोंक रहे हैं मगर उन को इस का ज्ञान नहीं।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِنْ يُهْلِكُونَ
إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

27. अगर तुम उस समय की दशा देख लेते जब वे दोज़ख़ के किनारे खड़े कर दिए जाऐंगे। उस समय वे कहेंगे, काश हम फिर (दुनिया में) वापस भेज दिये जाऐं और अपने रब की आयतें न झुठलाऐं और ईमान वालों में शामिल हो जाऐं।[46]

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ
بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

28. (यह हसरत इस लिए नहीं होगी कि सत्य उन पर स्पष्ट नहीं हुआ था) बल्कि (इस लिए होगी की) जिस बात को वे इस से पहले छिपाया करते थे वह खुल कर उन के सामने आ गई होगी।[47] अगर उन्हें दुनिया की तरफ़ वापस भेज दिया जाए तो फिर वही करेंगे जिस से उन्हें मना किया गया था।[48] निश्चय ही ये बिल्कुल झूठे हैं।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَا كَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا
لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

29. वे कहते हैं ज़िन्दगी तो बस यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हमें (मरने के बाद) उठाया नहीं जाएगा।[49]

وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

42. अर्थात् आज तो ये बहुदेववादी अपने ''ख़ुदाओं'' को छोड़ने के लिए आमादा नहीं हैं लेकिन कल जब कि अल्लाह की अदालत में अपने को हाज़िर पाएंगे तो उन से अपनी बहुदेववादी हरकतों का कोई जवाब न बन पड़ेगा और दुखदायी यातना का भय उन्हें ऐसा बदहवास करेगा कि वे शिर्क से बेज़ारी और उस से अपने आप को अलग रखने के लिए झूठ बोलने से भी नहीं चूकेंगें। मगर उन का यह झूठ उन ही के मुँह पर मार दिया जाएगा।

43. अर्थात् जिन जिन को उन्हों ने ख़ुदा होने का दर्जा दे रखा था वे सब ग़ायब हो जाएंगे और उन का कोई ''ख़ुदा'' भी उन की मदद के लिए नहीं आएगा ।

44. अर्थात् कुछ लोग पैग़म्बर की बातें सुनते हैं किन्तु सत्य को मान लेने के उद्देश्य से नहीं बल्कि कट हुज्जती के लिए। और अल्लाह का यह क़ानून है कि जो व्यक्ति खुले मस्तिष्क से हक़ बात सुनने और समझने के लिए आमादा नहीं होता उस को सत्य को स्वीकार कर लेने की तौफ़ीक़ नहीं बख़्शी जाती। और उस के दिल पर इच्छाओं की ऐसी परतें पड़ जाती हैं कि दअवत देने वाला कितनी ही वज़नदार दलीलें प्रस्तुत करे, बात उस के दिल में उतरती ही नहीं। चूँकि यह नतीजा अल्लाह के नियत किए हुए क़ानून अर्थात् स्वभाविक नियमानुसार प्रकट होता है। इस लिए अल्लाह तआला इस को इस तरह बयान फ़रमाता है कि हम ने इन के दिलों पर परदे डाल दिए हैं या हम ने इन के कानों में बोझ डाल रखा है। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़रह नोट १५।

45. क़ुर्आन में पिछली क़ौमों का जो इतिहास प्रस्तुत किया गया है और पैग़म्बरों को झुठलाने वालों की तबाही की जो घटनाऐं बयान हुई हैं पूर्ण रुप से सत्य पर आधारित हैं और इस लिए बयान कि गई हैं ताकि लोग नसीहत हासिल करें और क़ौमों के उत्थान एवं पतन के वास्तविक कारणों से भिज्ञ हो किन्तु क़ुर्आन का इन्कार करने वाले उस पर यह फ़बती कसते थे कि ये पुरातन कथाऐं हैं जो हमें सुनाई जा रही हैं और आज के इन्कार करने वाले भी यह फबती कसते हैं कि यह दक़यानूसी बातें हैं।

46. बहुदेववादियों के इस हसरतनाक अन्जाम की तस्वीर शब्दों के रुप में आज ही दिखा दी गई है ताकि जो लोग शिर्क में लिप्त हैं या यह कि बहुदेववादी धर्म से संबद्ध हैं वे होश में आ जाऐं और अपने रवैये को ठीक कर लें वरना कहीं उन्हें क़ियामत के दिन पछताना न पड़े।

47. अर्थात् क़ियामत के दिन उन की यह हसरत और दुनिया में दोबारा जाने की इच्छा इस लिए नहीं होगी कि सत्य उन पर स्पष्ट नहीं हुआ था और अब उन पर पहली बार स्पष्ट हुआ है बल्कि इस लिए होगी कि उन्हों ने जिन बुरे उद्देश्यों और जिस अनुचित उत्प्रेरणा के तहत सत्य को स्वीकार नहीं किया था और उन को अपने दिल में छिपाए हुए थे वे सब खुल कर सामने आ गई होंगी और तर्क एवं विवशता प्रकट करने के लिए कोई गुन्जाइश बाक़ी न रहेगी ।

48. अर्थात अगर दोबारा दुनिया में भेज दिया जाए तो वहाँ का माहौल आज़माइशी (परीक्षा का) माहौल ही होगा और जब यह दोबारा इम्तिहान में पड़ेंगे तो अपनी इच्छाओं और बुरे उद्देश्यों एवं ज़रुरतों के तहत फिर वही रवैया अपनाऐंगे जो उन्हों ने पहले किया था।

49. मक्का के बहुदेववादी दूसरे जीवन के क़ायल नहीं थे। वे ख़ुदा को इन्सान का सृष्टा जानते थे लेकिन उन का कहना था कि यह जीवन जो मनुष्य को प्रदान किया गया है वह पहला और अन्तिम जीवन है। इस के बाद दोबारा जीवन मिलने वाला नहीं। भारत के बहुदेववादी भी मक्का के बहुदेववादियों के पद चिन्हों पर हैं। अन्तर केवल यह है कि वे पुनर्जन्म की धारणा रखते हैं। अर्थात् मनुष्य के जानवर, वृक्ष आदि में परिवर्तित हो जाने की विचारधारा। और पुनर्जन्म इसी लोक (दुनिया) ही में हो जाता है। यह धारणा मनुष्य के मनुष्य की हैसियत से दोबारा उठाए जाने के विरुद्ध है। इस में न क़ियामत की बात है और न ख़ुदा के सामने उपस्थित हो कर अपने कर्मों का हिसाब देने और फिर उस की तरफ़ से कर्मों का फ़ल पाने का विचार।

रहे आज के दौर के धर्म से विरक्त लोग तो वे मोह माया में इतने डूबे हैं कि उन्हें दूसरे जीवन के बारे में सोचने की फ़ुर्सत ही नहीं। जीवन की बदमस्तियों ने उन्हें आख़िरत के बारे में निर्भीक एवं मन मौजी बना दिया है ।

अत: एक शायर कहता है:

मय नोश कल के वादे पे क्या हिज़्ज़ उठाएगा
पी ले अभी कि कल को यह दिन न आएगा
ऐ चाँद,चाँदनी की क़सम पी भी ले कि चाँद
आए गा लौट लौट के हम को न पाए गा

30. और अगर तुम उन की उस समय की हालत देख लेते जब ये अपने रब (स्वामी) के सामने खड़े किए जाऐंगे। उस समय वह उन से पूछेगा क्या यह वास्तविकता नहीं है ?[50] वे कहेंगे, हाँ हमारे रब की क़सम। वह फ़रमायेगा तो अब अपने कुफ़्र के बदले में अज़ाब (यातना) का मज़ा चखो।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا۟ عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِٱلْحَقِّ ۚ
قَالُوا۟ بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا۟ ٱلْعَذَابَ بِمَا
كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

31. तबाही में पड़ गए वे लोग जिन्हों ने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठलाया।यहाँ तक कि जब वह घड़ी [51]अचानक आ प्रकट होगी [52] तो कहेंगे अफ़सोस ! इस मामले में हम से कैसी कोताही हुई और वे अपने बोझ [53] अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे । तो क्या ही बुरा बोझ है जो ये उठा रहे होंगे।

قَدْ خَسِرَ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِلِقَآءِ ٱللَّهِ ۖ
حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمُ ٱلسَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا۟ يَٰحَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا
فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ
أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

32. और दुनिया की ज़िन्दगी तो बस खेल तमाशा है।[54] अलबत्ता आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़्वा (ईश-भय) रखते हैं। फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते।[55]

وَمَا ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ ٱلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ
يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾

33. हम जानते हैं कि इन की बातें तुम्हारे लिए मलाल का कारण होती हैं लेकिन ये दरअसल तुम्हें नहीं झुठला रहे हैं बल्कि ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार कर रहे हैं।[56]

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُۥ لَيَحْزُنُكَ ٱلَّذِى يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ
لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٣﴾

34. तुम से पहले भी रसूलों को झुठलाया जा चुका है मगर इस झुठलाने एवं कष्ट देने पर उन्हों ने सब्र किया यहाँ तक कि उन के पास हमारी मदद आ पहुँची। कोई नहीं जो अल्लाह के कलिमों (वाक्यों) को बदल सके।[57] और पैग़म्बरों के वाक़िआत (घटनाओं) की ख़बरें तुम्हें पहुँच ही चुकी हैं।[58]

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا۟ عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا۟
وَأُوذُوا۟ حَتَّىٰٓ أَتَىٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِ ٱللَّهِ ۚ
وَلَقَدْ جَآءَكَ مِن نَّبَإِى۟ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٣٤﴾

35. और अगर इन की विमुखता तुम पर भारी गुज़रती है तो यदि तुम्हारे बस में है कि ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूँढ निकालो ताकि इन लोगों के लिए कोई निशानी ला सको तो ऐसा कर देखो।[59] अगर अल्लाह चाहता तो सब को हिदायत पर जमा कर देता। अतः उन लोगों में से न हो जाओ जो नादान हैं।[60]

وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ ٱسْتَطَعْتَ أَن تَبْتَغِىَ
نَفَقًا فِى ٱلْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِى ٱلسَّمَآءِ فَتَأْتِيَهُم بِـَٔايَةٍ ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ
لَجَمَعَهُمْ عَلَى ٱلْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ ٱلْجَٰهِلِينَ ﴿٣٥﴾

50. जो लोग बदले के दिन (आख़िरत के दिन) को दलील की रौशनी में मानने को तैयार नहीं हैं वे उसी समय मानेंगे जब कि उन्हें यह सब कुछ आँखों से दिखा दिया जाए। और यह काम दुनया में तो हो नहीं सकता अलबत्ता जब क़ियामत बरपा होगी तो वे इस को अपनी आँखों से अवश्य देखेंगे और उस समय इस बात को स्वीकार भी करेंगे कि हिसाब का दिन एक हक़ीक़त है मगर उस समय उन का यह स्वीकार करना उन्हें सज़ा से न बचा सकेगा।

51. क़ियामत के लिए क़ुर्आन में बहुतेरी जगहों पर ‘‘अस्साअ:’’ का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है जिस के अर्थ विशेष घड़ी (क्षण) और निश्चित समय के हैं।

52. अर्थात क़ियामत इस कायनात की अचानक प्रकट होने वाली घटना होगी। इस घटना के घटित होने से कुछ मिनट पहले भी किसी को यह ख़बर न होगी कि उस प्रचण्ड धमाके (प्रलय) का समय आ गया है।

53. मुराद गुनाहों के बोझ हैं।

54. अर्थात आखिरत को नज़रंदाज़ कर देने के बाद दुनिया की हैसियत खेल तमाशे से अधिक कुछ भी नहीं रहती इसी लिए आख़िरत का इन्कार करने वाले आज तक किसी सन्जीदा (गंभीर) उद्देश्य की निशानदेही नहीं कर सके हैं।

55. आख़िरत का इन्कार बुद्धिमानी नहीं बल्कि बुद्धि से काम न लेने का परिणाम है।

56. क़ुरैश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अमीन (अमानतदार) सादिक (सच्चा) समझते थे लेकिन जब आप ने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना शुरु किया तो वे आप को झुठलाने लगे । गोया झुठलाने का असल निशाना स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं बल्कि क़ुर्आन की आयतें थीं जिन को आप पेश फ़रमा रहे थे।

57.मुराद अल्लाह की वह सुन्नत (नियम) है जिस के अनुसार अल्लाह की मदद प्रकट होती है। अल्लाह तआला ने अपने रसूलों और ईमान वालों से सहायता का जो वादा किया है वह निश्चित रुप से पूरा हो कर रहता है चाहे मुखालफ़ातों का तूफ़ान कितना ही तीव्रतम हो। किन्तु यह मदद समय से पहले प्रकट नहीं होती । अत: ऐसा कभी नहीं हुआ कि हक़ की दअवत पेश की गई हो और हक़ पर दृढ़ता से जमे रहने वालों को आज़माइशों से गुज़रे बग़ैर अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त हुई हो।

अल्लाह के कलिमों में परिवर्तन संभव नहीं,उस के फ़ैसले उस के वादे और उस की तमाम बातें बिलकुल अटल हैं और कोई ताक़त ऐसी नहीं जो इन को परिवर्तित कर सके। उस की बात पत्थर की लकीर और उस का फ़ैसला अपरिवर्तनीय है।

58. अर्थात् नबियों के जो किस्से (वृत्तांत) क़ुर्आन में बयान किये गए हैं उन से अल्लाह तआला के इस नियम की पुष्टि होती है कि अल्लाह की मदद हक़ परस्तों के आज़माइशों की भट्टी से गुज़रने और सत्य के पूरी तरह स्पष्ट हो जाने के बाद प्रकट होती है। इस लिए विरोधियों द्वारा कष्ट पहुँचाने से प्रभावित हो कर हक़ परस्तों को दुखी नहीं होना चाहिए और न दिल को छोटा करना चाहिए ।

59. काफ़िर लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसे मोअजज़ों (चमत्कारों) की माँग करते थे जिन के बाद ग़ैब ग़ैब न रहे जैसे फ़रिश्तों का अपने असल रुप में उतरना आदि । इसी के जवाब में यह बात इर्शाद हुई है जिस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देनी भी अभिप्रेत है एवं यह स्पष्ट करना भी कि मोअजज़ा दिखाना नबी के इख्तियार में नहीं है बल्कि यह अल्लाह ही के इख़्तियार में है और उसी की मर्ज़ी पर निर्भर है। और जहाँ तक काफ़िरों के वांछित चमत्कारों की बात है यदि वे दिखाए जाऐं तो बुद्धि एवं विवेक की परीक्षा का कोई अवसर बाक़ी नहीं रहता अत: इन को दिखाना अल्लाह की नीति (हिकमत) के ख़िलाफ़ है।

इस आयत से यह बात भी स्पष्ट हुई कि जब एक नबी अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर मोअजज़ा (चमत्कार) दिखाने पर क़ादिर नहीं होता तो किसी वली किसी बुज़ुर्ग के बस में कहाँ हो सकता है कि वह करामतें दिखाए । भौतिक नियमों पर सत्ता केवल अल्लाह की है। और उन की पकड़ से मुक्त हो कर कोई असाधारण चीज़ दिखाना किसी भी इन्सान के बस की बात नहीं चाहे वह नबी हो या वली। अलबत्ता जब अल्लाह चाहता है, नबी के हाथों चमत्कार प्रकट हो जाता है और जब वह चाहता है किसी नेक और बुज़ुर्ग व्यक्तित्व का समर्थन और सहायता असाधारण रुप से करता है वरना कोई बुज़ुर्ग से बुज़ुर्ग व्यक्तित्व न करामत दिखाने पर स्वयं सक्षम है और न करामत दिखाने का दावा कर सकता है। इसी लिए हम देखते हैं कि सहाबा किराम (प्यारे रसूल के प्यारे साथी) में से किसी ने भी करामत दिखाने का दावा नहीं किया।

60. अर्थात् अल्लाह की मर्ज़ी यह नहीं है कि लोग लामुहाला हिदायत पर एकत्रित हो जाऐं और उन के लिए बुद्धि, एवं विवेक की परीक्षा का कोई अवसर बाक़ी न रहे। अगर अल्लाह की मर्ज़ी यह होती तो कोई व्यक्ति भी हिदायत की राह से विमुख नहीं हो सकता था। किन्तु उस की मर्ज़ी यह हुई कि मनुष्य को बुद्धि एवं विवेक से काम लेने का अवसर प्रदान किया जाए इस लिए कोई ऐसी निशानी (चमत्कार) दिखाना जिस के बाद बुद्धि एवं विवेक की परीक्षा का अवसर बाक़ी ही न रहे, अल्लाह तआला की उस योजना के विरुद्ध है जो उस ने अपनी हिकमत के तहत इस दुनिया के लिए बनाई है। जो लोग अल्लाह की इस योजना (स्कीम) को समझने की कोशिश नहीं करते वे नादानी की बातें करने लगते हैं।

36. (हक़ को) वही लोग स्वीकार करते हैं जो सुनते हैं।[61] रहे मुर्दे तो अल्लाह उन्हें (क़ब्रों से) उठाएगा।[62] फिर उसी के पास लौटाए जाएंगे।[63]

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ
إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

37. और ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी ? [64] अल्लाह निश्चय ही इस बात पर क़ादिर (पूरी तरह समर्थ) है कि निशानी उतार दे लेकिन बहुतेरे लोग नहीं जानते।[65]

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن
يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

38. और ज़मीन पर चलने वाला कोई जीव और परों से उड़ने वाला कोई परिन्दा ऐसा नहीं जिस की तुम्हारी तरह उम्मतें (जातियाँ)न हों।[66] हम ने नविश्ते (किताब) में कोई कसर नहीं छोड़ी है।[67] फिर सब अपने रब के पास इकट्ठे किए जाते हैं।[68]

وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ
أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ
إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾

39. जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया वे बहरे और गुँगे हैं, अंधकार में पड़े हुए।[69] अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है।[70]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ
يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

40. कहो क्य तुम ने इस बात पर भी ग़ौर किया कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) आ जाए या वह घड़ी (क़ियामत) आ पहुँचे तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? बताओ अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ
تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

41. नहीं बल्कि (जब मुसीबत आती है तो) तुम उसी को पुकारते हो।फिर अगर वह चाहता है तो उस मुसीबत को जिस के लिए तुम उस को पुकारते हो दूर कर देता है और अपने ठहराए दुए शरीकों को तुम भूल जाते हो।[71]

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ
مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

42. तुम से पहले हम ने बहुत सी उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे और उन उम्मतों को तंगी और तकलीफ़ में मुब्तिला किया ताकि वे गिड़गिड़ाऐं।[72]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ
لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

43. फिर ऐसा क्यों न हुआ कि जब हमारी तरफ़ से सख़्ती आई तो वे गिड़गिड़ाते? बल्कि उन के दिल और सख़्त हो गए और जो बुरे काम वे कर रहे थे उन को शैतान ने उन की नज़रों में ख़ुशनुमा (सुन्दर) बना दिया।[73]

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

61. सुनने से मुराद वह सुनना है जो सत्य को मान लेने के उद्देश्य से है अर्थात् दिल इस बात के लिए आमादा हो कि जो बात सुनाई जा रही है वह अगर सत्य है तो मैं उसे अवश्य स्वीकार करुँगा और इस मामले में अपनी किसी इच्छा, स्वार्थ या किसी प्रकार के धार्मिक विद्वेष को रोड़ा न बनने दूँगा।

62. मुर्दे उन लोगों को कहा गया है जो पैग़म्बर की हक़ पर आधारित निमंत्रण (दअवत) को सुनने समझने के लिए तैयार नहीं हैं। यह दिल के मुर्दा होने का परिणाम है। और जब आदमी का दिल ही मर गया हो तो उस का अस्तित्व कहाँ रहा। उस की हैसियत एक बेजान लाश से अधिक नहीं। ऐसे लोग जब क़ियामत के दिन क़बरों से उठाए जाऐंगे तब ही उन पर हक़ खुल सकेगा ।

63. अर्थात् पेशी के लिए।

64. मुराद ऐसा चमत्कार (मोअजज़ा) है जो महसूस भी हो और जो ग़ैब के परदे को चाक कर के दिखला दे कि इस व्यक्ति को वास्तव में अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है।

65. अर्थात ऐसा चमत्कार न दिखाने का कारण यह नहीं है कि अल्लाह इस का सामर्थ्य नहीं रखता है बल्कि इस का कारण दूसरा है जिस को यह जानते नहीं हैं और वह कारण यह है कि वे एक ऐसे चमत्कार की माँग कर रहे हैं जो अगर दिखाया जाए तो फिर ग़ैब ग़ैब नहीं रहता।

रहा यह सवाल कि फिर दूसरे नबियों को महसूस होने वाले मोअजज़े (चमत्कार) क्यों दिए गए थे तो इस का जवाब यह है कि प्रथम तो मक्का के काफ़िरों की माँग उस तरह के महसूस होने वाले मोअजज़े की नहीं थी बल्कि वे चाहते थे कि कोई ऐसी निशानी प्रकट हो जाए जिस से वे ग़ैब (परोक्ष) की कुछ वास्तविकताओं का अनुभव कर सकें जैसे फ़रिश्तों को उन के असल रुप में देखना, आसमान से लिखी लिखाई किताब का उतरना । पैग़म्बर का आसमान पर सीढ़ी लगा कर चढ़ना, आसमान का कोई टुकड़ा ज़मीन पर गिरा देना आदि । ज़ाहिर है पिछले नबियों को जो मोअजज़े दिए गए थे उन में से कोई मोअजज़े भी उस तरह का नहीं था। द्वितीय यह कि पिछले नबियों को जो महसूस होने वाले मोअजज़े दिए गए थे वे भी दो प्रकार के थे एक वे जो बिना माँगे प्रदान किए गए थे जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को यह मोअजज़ा दिया गया था कि आप की लाठी साँप बन जाया करती थी। और दूसरी तरह के मोअजज़े वे जो काफ़िरों के माँग करने पर दिए गए जैसे समूद की क़ौम के मुतालबे (Demand) पर स्वालेह अलैहिस्सलाम को ऊँटनी का मोअजज़ा दिया गया था। जहाँ तक पहली तरह के मोअजज़े का सम्बन्ध है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन तमाम सामायिक चमत्कारों से बढ़ कर एक अनंत चमत्कार प्रदान किया गया है और वह है क़ुर्आन । इस लिए चैलेन्ज किया गया कि अगर क़ुर्आन तुम्हारी नज़र में चमत्कार (मोअजज़ा) नहीं है तो तुम भी इस जैसा क़ुर्आन लिख कर लाओ । रहा दूसरी तरह का मोअजज़ा तो काफ़िरों का मुँह माँगा मोअजज़ा होता है और जब वह प्रदान किया जाता है और फिर वे ईमान नहीं लाते तो उन की अमल की मुहलत समाप्त हो जाती है और अल्लाह का अज़ाब उन्हें आ लेता है। अत: अल्लाह की मसलहत का यह तक़ाज़ा हुआ कि मक्का के काफ़िरों को उन का मुँह माँगा मोअजज़ा न दिखाया जाए ताकि उन की अमल की मुहलत शीघ्र ही समाप्त न हो जाए और बाद की परिस्थितियों ने स्पष्ट कर दिया कि इस तरह के मोअजज़े न दिखाना क़ुरैश के पक्ष में बेहतर साबित हुआ। क्यों कि धीरे धीरे उन में से कितने ही लोगों की समझ में पैग़म्बर की बात आ गई और उन्हें ईमान लाने की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

66. अर्थात् चरने वाले जानवर हों या उड़ने वाले, थल के हों या जल के, चींटियाँ हों या तितलियाँ सब अलग अलग जाति हैं और जिस तरह मानव जाति अपने अन्दर जो एकता एवं सामाजिकता रखती है और उस की परवरिश और जीविका उपार्जन की अपनी व्यवस्था है उसी तरह जीवों की हर जाति की अपनी एक समूहिक व्यवस्था एवं एकता है और उस की परवरिश एवं जीविका उपार्जन की भी एक व्यवस्था है। मिसाल के तौर पर चींटियों एवं शहद की मक्खियों की व्यवस्था को देखा जा सकता है कि वे किस तरह परस्पर सम्बद्ध एवं अनुशासित ढंग से उस राह पर चल पड़ती हैं जो उन की जीविका उपार्जन के लिए मुक़र्रर कर दी गई है।

इन जातियों का यदि आदमी अच्छी तरह निरीक्षण करे तो उस को कायनात के सृष्टा की एक से एक आश्चर्यजनक निशानियाँ नज़र आऐंगी और ये निशानियाँ उन ही हक़ीक़तों की तरफ़ उस की रहनुमाई करेंगी जिन की दअवत क़ुर्आन और पैग़म्बर दे रहे हैं।

67. अर्थात् अल्लाह ने अपनी सृष्टियों के लिए जो नविश्ता (भाग्य) बनाया है उस में छोटी बड़ी सारी चीज़ें लिखित हैं कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो छूट गई हो। मतलब यह है कि इस कायनात में जो कुछ हो रहा है वह एक योजनानुसार हो रहा है और उस के पीछे एक ऐसी हस्ती का इरादा और तदबीर काम कर रही है जो पूर्ण ज्ञान रखने वाली है।

68. अर्थात् तमाम जानदार मख़्लूक़ के प्राण उन के मरने के बाद ख़ुदा ही के पास इकट्ठे हो जाते हैं क्यों कि वही सब का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) है और उसी की तरफ़ सब को लौट कर जाना है।

69. हक़ीक़त ही तरफ़ रहनुमाई के लिए अल्लाह तआला

ने जो निशानियाँ इस कायनात में रखी हैं आदमी जब उन निशानियों का ग़लत स्पष्टीकरण करता है और पैग़म्बर की बात पर ध्यान नहीं देता तो उस का हाल एक बहरे और गूँगे व्यक्ति की तरह हो जाता है कि सच बात न सुन सकता है और न बोल सकता है। ऐसा व्यक्ति जिहालत के अन्धकार में पड़ा रहता है यद्यपि कि उस को अपने ज्ञान पर गर्व हो!

70. अर्थात् गुमराह होना या सीधी राह पर होना अल्लाह ही की मशिय्यत (मर्ज़ी) पर निर्भर है किसी और का इस मामले में दख़ल नहीं। अल्लाह तआला की यह मशिय्यत (मर्ज़ी) उस की उस हिकमत के अनुकूल होती है कि न किसी को गुमराही के रास्ते पर चलने के लिए विवश किया जाए और न हिदायत की राह पर चलने के लिए। बल्कि जो व्यक्ति हिदायत का चाहने वाला हो उसे हिदायत दी जाए और जो भटकना चाहता हो उसे इस बात का मौक़ा दिया जाए कि वह भटकता रहे। दूसरे शब्दों में किसी का हिदायत पाना या गुमराह होना अल्लाह के हिदायत पाने और गुमराह होने के नियमानुसार ही होता है।

71. यह तौहिद की वह निशानी है जो इन्सान की अपनी आत्मा में मौजूद है। जब इन्सान किसी असाधारण मुसीबत में फ़ँस जाता है या बहुत बड़े खतरे से दोचार होता है तो उस समय उसे ख़ुदा याद आ जाता है। और तमाम बनावटी उपास्यों एवं पूज्यों को वह भूल जाता है यहाँ तक कि जो लोग ख़ुदा के क़ायल नहीं है अर्थात अनीश्वरवादी हैं उन्हें ऐसे नाज़ुक समय में ख़ुदा याद आ जाता है। यह इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य की आत्मा में एक मात्र ख़ुदा की शहादत (गवाही) मौजूद है। मक्का के बहुदेववादी यद्यपि बुत परस्त थे लेकिन जब किसी असाधारण मुसीबत में घिर जाते तो अल्लाह ही को पुकारते।

मनुष्य की आत्मा की इसी गवाही को प्रस्तुत करते हुए उसे विचार करने का निमंत्रण दिया जा रहा है कि कम से कम उन संभावित बातों पर तो विचार करना चाहिए कि अगर अल्लाह का अज़ाब आ जाता है या क़ियामत का धमाका हो जाता है तो उस समय मनुष्य अपने बचाव के लिए किस को पुकारेगा? अगर मनुष्य इस की कल्पना मात्र कर ले तो ख़ुदा की तरफ़ लपके।

72. आर्थिक संकट और शारीरिक मुसीबतों में क़ौमों को जो मुब्तिला किया जाता है वह बेमक़सद नहीं होता बल्कि उस के पीछे ख़ुदा की यह नीति निहित होती है कि उन को संभलने का मौक़ा दिया जाए तंगी, और तकलीफ़ें मनुष्य की आत्मा (ज़मीर) को झंझोड़ती हैं, उस का ध्यान अपने रब की ओर आकर्षित करती हैं और उस के दिल को इस के लिए तैयार करती हैं कि वह अल्लाह के आगे झुके।

73. जब हालात की कड़ाई भी किसी क़ौम के दिलों में नरमी पैदा नहीं करतीं तो फिर उन के दिल ऐसे सख़्त हो जाते हैं कि कोई नसीहत भी उन पर असर नहीं करती और शैतान का जादू ऐसा चल जाता है कि उन्हें अपना ग़लत रवैया भी सही मालूम होने लगता है। वे गुनाह के कामों को अपना गर्वित कारनामा समझने लगते हैं और उन की नज़र में मूल्य बदल जाते हैं:

''था जो ना ख़ूब वही ख़ूब हुआ''

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

कहो, तुम ने इस बात पर भी ग़ौर किया कि अगर अल्लाह तुम्हारी सुनने और देखने की शक्ति को छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह के सिवा कौन सा ख़ुदा है जो ये (नेमतें) तुम्हें वापस दिला सके? देखो किस तरह हम अपनी निशानियाँ तरह तरह से बयान करते हैं फिर भी ये लोग हैं कि किनाराकशी करते (दूर होते) हैं ।(अल-क़ुर्आन)

44. फिर जब उन्हों ने उस नसीहत को भुलाया जो उन्हें की गई थी तो हम ने उन पर हर तरह (की ख़ुशहालियों) के दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जब वे इन बख़्शिशों पर इतराने लगे तो हम ने उन को अचानक पकड़ लिया और वे निराश हो कर रह गए।[74]

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ
حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ
مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾

45. तो उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्हों ने ज़ुल्म किया था और तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो सारी कायनात का रब है।[75]

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾

46. कहो, तुम ने इस बात पर भी ग़ौर किया कि अगर अल्लाह तुम्हारी सुनने और देखने की शक्ति को छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे[76] तो अल्लाह के सिवा कौन सा ख़ुदा है जो ये (नेमतें) तुम्हें वापस दिला सके? देखो किस तरह हम अपनी निशानियाँ तरह तरह से बयान करते हैं[77] फिर भी ये लोग हैं कि किनाराकशी करते (दूर होते)हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَ اَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ
عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

47. कहो, तुम ने (कभी) सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या आलानिया आ जाए तो ज़ालिमों के सिवा और कौन सा गिरोह है जो हलाक (विनष्ट) किया जाएगा?[78]

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ
يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾

48. हम रसूलों को इसी लिए भेजते हैं कि वे ख़ुशख़बरी देने वाले और सावधान करने वाले हों।[79] फिर जो ईमान लाए और जिन्हों ने अपनी इस्लाह (सुधार) कर ली उन के लिए न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न वे दुखी होंगे।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ
وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

49. और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन को उन की नाफ़रमानियों के कारण अज़ाब अपनी लपेट में ले लेगा।[80]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾

50. कहो, मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मुझे ग़ैब का इल्म (ज्ञान) है और न मैं यह कहता हूँ कि फ़रिश्ता हूँ। मैं तो सिर्फ उस वह्य की पैरवी करता हूँ जो मुझ पर की जाती है।[81] पूछो क्या अन्धा और आँख वाला दोनो बराबर हो सकते हैं? क्या तुम ग़ौर नहीं करते?

قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ
وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ
هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾

74. जब कोई क़ौम परिस्थितियों की कड़ाई से सबक हासिल नहीं करती बल्कि उस का यह स्पष्टीकरण करती है कि ये मात्र घटनाक्रम हैं और क़ौमों को नर्म गर्म हालात तो पेश आते ही रहते हैं तो अल्लाह तआला आजमाइश का एक दूसरा अध्याय खोल देता है और हर तरह की ख़ुशहालियों से उन को सुसज्जित करता है ताकि उन के अन्दर अपने प्रभु (रब) के प्रति कृतज्ञता की भावना उत्पन्न हो। मगर जब वे कृतज्ञ होने के बजाय घमंड करने और इतराने लगते हैं तो फिर उन का पैमाना भर जाता है और अल्लाह का अज़ाब अचानक उन्हें आ लेता है। फिर अफ़सोस और निराशा के सिवा कुछ भी उन के पल्ले नहीं पड़ता।

ऐसे हालात रसूलों की उम्मतों के साथ आम तौर पर पेश आते रहे हैं ताकि उन की सत्यता स्पष्ट हो किन्तु इस प्रकार की परिस्थितियाँ साधारण क़ौमों के साथ भी पेश आती रहती हैं, ताकि वे होश में आऐं।

75. सरकश (उद्दंड) क़ौमों को विनष्ट करना इन्साफ़ का तक़ाज़ा भी है और मानवता जगत के पक्ष में भलाई का कारण भी, कि कुफ्र का ज़ोर टूट गया और उपद्रवी तत्वों से माहौल पवित्र हो गया। इस लिए अल्लाह तआला ने उन क़ौमों के साथ जो मामला किया उस पर वह प्रशंसा का ही अधिकारी है।

76. अर्थात् सोचने और समझने की शक्ति छीन ले।

77. अर्थात् क़ुर्आन में तौहीद की दलीलें कई पहलुओं से और कई शैलियों में पेश की जा रही हैं ताकि जो लोग बात समझना चाहें वे आसानी से समझ सकें।

78. यहाँ अज़ाब से मुराद वह अज़ाब है जो पैग़म्बरों को झुठलाने वाली क़ौमों पर हुज्जत पूरी होने के बाद आता है और चूँकि यह अज़ाब सत्य और असत्य में फ़र्क करने के लिए आता है इस लिए उस की ज़द में केवल असत्य के पूजारी आ जाते हैं और ईमान वालों को उस से बचा लिया जाता है। अत: समूद की क़ौम, आद की क़ौम आदि पर जो अज़ाब (प्रकोप) आए उन की ज़द में सिर्फ काफ़िर आए थे। ईमान वाले ऐसे हर मौक़े पर सुरक्षित रहे।

79. अर्थात रसूलों को भेजने का वास्तविक उद्देश्य चमत्कार दिखाना नहीं है बल्कि ईमान की दअवत पेश करना है। जो इसे स्वीकार करें उन को अनंत सफ़लता का शुभ समाचार सुनाना और जो इस से इन्कार करें उन को अनंत विनाश से सचेत करना है। चमत्कार (मोअजज़े) अगर दिखाए जाते हैं तो मात्र हुज्जत पूरी (आदेश स्पष्ट) करने के लिए जब कि अल्लाह की नीति (हिकमत) इस का तक़ाज़ा करे। अत: रसूल के साथ चमत्कार को संलग्न समझना सही नहीं।

80. यही वह बात है जिस से पैग़म्बर अपनी क़ौमों को सावधान करते रहे हैं।

81. इन्कार करने वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अजीब अजीब मोअजज़े (चमत्कार) दिखाने की जो माँग करते थे उस के जवाब में आप की ज़बान से यह एलान करा दिया गया कि मैं ने यह दावा ही कब किया है कि मैं तुम को एक से एक अजीब (चमत्कार) दिखा सकता हूँ जो तुम मुझ से इस तरह की माँग कर रहे हो। मैं ने तो तुम्हारे सामने हक़ का पैग़ाम पेश कर दिया जो मेरी तरफ़ अल्लाह ने एक ऐसे माध्यम से भेजा है जो तुम्हारे लिए अदृश्य एवं आभास रहित है। तुम्हें चाहिए कि इस पैग़ाम की सच्चाई (सत्यता) तर्क की कसौटी पर जाँचो लेकिन तुम हक़ (सत्य) को अपनी विवेक दृष्टि से देखने के बजाए अजूबे देखना चाहते हो और अजूबे दिखाना मेरे बस की बात नहीं बल्कि ख़ुदा के बस की बात है। मैं ने केवल पैग़म्बर होने का दावा किया है, यह दावा नहीं किया है कि अल्लाह के ख़ज़ाने मेरे इख़्तियार में हैं कि उन को जिस तरह चाहूँ उपयोग करुँ और न मैं उन बातों को जानता हूँ जो ग़ैब में हैं सिवाय उन के जो अल्लाह अपनी वह्य के द्वारा मुझे बताता है। और न ही मैं ने यह दावा किया है कि मैं इन्सान नहीं बल्कि फ़रिश्ता हूँ। मेरी हक़ीक़त इस के सिवा कुछ नहीं कि मुझे रिसालत के पद पर नियुक्त किया गया है। और जिस को रिसालत के पद पर नियुक्त किया गया हो वह इन्सान ही रहता है। न उस के अन्दर ख़ुदा के गुण पैदा होते हैं और न वह फ़रिश्ता बन जाता है। मगर मेरे रिसालत के दावे में सत्यता का अनुभव वही व्यक्ति कर सकता है जिस ने अपनी आँखों पर पट्टी न बाँध ली हो । क्योंकि वास्तविकता कितनी ही उज्जवल हो मगर उस को वही व्यक्ति देख सकता है जो आँखें रखता हो।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी यह एलान ''वला आलमुलग़ैबा''(और न मुझे ग़ैब का इल्म है) एक ऐसी ख़ुली बात है जिस में मतभेद की कोई गुन्जाइश नहीं। मगर जिन लोगों कि बुद्धि में टेढ़ है उन्हों ने इतनी स्पष्ट बात में भी मतभेद पैदा कर दिया। अत: मुसलमानों के बीच यह बहस खड़ी हो गई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म था कि नहीं। जो लोग दीन में नई नई बातों को निकालने और उस में हद से आगे निकलने में लगे हैं वे यह दावा करते हैं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ग़ैब का इल्म था जब कि यह आयत इस दावे का स्पष्ट रुप से खण्डन करती है। और पूरे क़ुर्आन में यह कहीं नहीं कहा गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला बनाया गया है बल्कि बहुत ही खोल कर कहा गया है

कि ग़ैब का इल्म (ज्ञान) केवल अल्लाह को है और वह अपने नबी पर ग़ैब की वह बातें ज़ाहिर करता है जिस का सम्बन्ध रिसालत के दायित्व से होता है। इस लिहाज़ से आम इन्सानों के मुक़ाबले में एक नबी को यह प्रमुखता प्राप्त है कि उस पर ग़ैब की वह वास्तविकताऐं रौशन होती हैं जिस तक किसी साधारण मनुष्य की पहुँच संभव नहीं। मगर इन सब बातों का सम्बन्ध अल्लाह की वह्य से है और ग़ैब के इल्म से सम्बन्धित नबी की यह प्रमुखता वास्तव में कोई विवादित मसला नहीं है लेकिन व्यर्थ का विवाद पैदा कर दिया गया है। और जिस तरह अहले किताब स्पष्ट शिक्षाओं के आ जाने के बाद विवाद का शिकार हुए थे उसी तरह ग़ैब के इल्म से सम्बन्धित क़ुर्आन के स्पष्ट इर्शाद के बावजूद मुसलमान मतभेद में पड़ गए।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

कहो, जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो उन की इबादत करने से मुझे मना किया गया है। कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों पर चलने वाला नहीं अगर मैं ने ऐसा किया तो गुमराह हो जाऊँगा और सीधी राह पाने वालों में से न रहुँगा।(अल-क़ुर्आन)

51. तुम इस वह्य के द्वारा [82]उन लोगों को ख़बरदार करो [83] जो इस बात की आशंका रखते हैं कि अपने रब के समक्ष एकत्रित किए जाऐंगे इस हाल में कि उस के सिवा न तो कोई मददगार होगा और न सिफ़ारिशी । ताकि वे तक़वा (परहेज़गारी) अपनाऐं।[84]

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾

52. और उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह और शाम अपने रब को उस की ख़ुश्नूदी (प्रसन्नता) की चाह में पुकारते हैं।[85] उन के हिसाब की कोई ज़िम्मेदारी तुम पर नहीं है और न तुम्हारे हिसाब की ज़िम्मेदारी उन पर है कि तुम उन को दूर करो अगर तुम ने ऐसा किया तो ज़्यादती करने वालों में से हो जाओगे।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ
مَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾

53. इस तरह हम ने इन में से कुछ को कुछ के द्वारा आज़माइश में डाला है और यह इसी का नतीजा है कि वे कहते हैं क्या यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने हमारे बीच से चुन कर अपने फ़ज़्ल (उदार दान) से नवाज़ा है?[86] क्या अल्लाह अच्छी तरह नहीं जानता कि शुक्र करने वाले (कृतज्ञ) कौन हैं ?[87]

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾

54. (ऐ पैग़म्बर !) जब वे लोग तुम्हारे पास आऐं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो उन से कहो तुम पर सलाम हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत लाज़िम (अनिवार्य) कर ली है। जो कोई तुम में से नादानी से कोई बुराई कर बैठा हो फिर उस ने तौबा और इस्लाह कर ली हो तो वह क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।[88]

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ
رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾

55. इस तरह हम अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि मुजरिमों की राह स्पष्ट हो जाए।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ ع

56. कहो, जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो [89] उन की इबादत करने से मुझे मना किया गया है।कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों पर चलने वाला नहीं [90] अगर मैं ने ऐसा किया तो गुमराह हो जाऊँगा और सीधी राह पाने वालों में से न रहूँगा।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ
قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾

82. वह्य के शाब्दिक अर्थ इशारा करने के हैं। अल्लाह अपना पैग़ाम अपने पैग़म्बरों तक जिस गुप्त रुप से भेजता है उस का परिभाषिक नाम वह्य है। यहाँ वह्य से मुराद क़ुर्आन है।

83. क़ुर्आन के द्वारा ख़बरदार करने का जो हुक्म दिया गया है उस का मतलब यह है कि डराने और समझने के लिए सिधे क़ुर्आन को पेश किया जाए क्यों कि अल्लाह के कलाम से बढ़ कर प्रभाव डालने वाली कोई चीज़ नहीं हो सकती। और अल्लाह की हुज्जत (तर्क) भी उस के कलाम ही के द्वारा क़ायम हो सकती है। यह हुक्म नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया था जब कि जिस क़ौम से संबोधन था उस की ज़बान (भाषा) अरबी थी । आज के हालात में इस आदेश के पालन के लिए आवश्यक है कि क़ुर्आन रखने वाले सामने वाले की ज़बान में क़ुर्आन का अनुवाद विशेष रुप से उन आयतों का अनुवाद प्रस्तुत करें जिस में अल्लाह के प्रति डरावा हैं। अर्थात् जिन में इन्कार करने और उद्दंडता दिखाने का अन्जाम आख़िरत में क्या है,बताया गया हो।

84. अर्थात जो लोग अपने आख़िरत में होने वाले अन्जाम के प्रति बेपरवाह हैं और उन की बेहिसी का यह हाल है कि सावधान करने वाले की बात गंभीरतापूर्वक सुनने के लिए भी तैयार नहीं हैं, उन को उन के हाल पर छोड़ दो और उन लोगों की ओर ध्यानाकर्षित करो जिन के दिल अभी ज़िन्दा हैं और जो अपनी सफलता एवं मुक्ति के लिए चिन्तित रहते हैं।

स्पष्ट रहे कि ख़ुदा के सामने उत्तर देने का भय मनुष्य के स्वभाव में है यह और बात है कि इच्छाओं का प्रभुत्व उसे दबा दे। क़ुर्आन का डरावा उस स्वभाविक भय को बलवान और सक्रिय बनाता है जिस के फल्सवरुप इन्सान परहेज़गारी की (अल्लाह से डरते हुए) ज़िन्दगी बसर करने के क़ाबिल हो जाता है।

85. मक्का में क़ुर्आन की दअवत पर हाथ उठाने वालों में ऐसे लोग अधिक संख्या में थे जिन की न कोई माली हैसियत थी और जो न संसारिक वैभव एवं मान रखते थे और कुछ तो गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे थे मगर वे अपने रब के लिए अपने सीने में धड़कता हुआ दिल रखते थे जिस ने उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इर्द गिर्द एकत्रित किया था और वे आप की सभाओं एवं बैठकों में सम्मिलित होते थे। लेकिन क़ुरैश के सरदार उन को तिरस्कृत एवं घृणा की दृष्टि से देखते थे और उन का घमंड इस बात को गवारा नहीं करता था कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस मजलिस (सभा) में आऐं जिस में अमीर ग़रीब सब का दर्जा बराबर रहता था। इस लिए उन की माँग (Demand) यह थी कि इन लोगों को आप अपने पास से हटा दीजिए तो हम आप के पास आऐं। उन की इसी माँग को सख़्ती के साथ रद् कर दिया गया है और सच्चे ईमान वालों का सम्मान बढ़ाया गया है यद्यपि कि वे ग़रीब और बेबस हों।

86. अर्थात् सोसाइटी के ग़रीब और बेबस लोगों को ईमान की तौफ़ीक प्रदान कर के हम ने दौलत और वैभव एवं मान सम्मान रखने वाले लोगों को आज़माइश में डाल दिया है कि अगर वे सूझ से काम लें तो ईमान की दौलत के क़दरदान बन सकते हैं और अगर घमंड में लिप्त रहना चाहते हैं तो इस की नाक़द्री करें। इस आज़माइश में ये लोग नाकाम साबित हो रहे हैं इसी कारण इस का फल यह निकल रहा है कि ये लोग ग़रीब ईमान वालों की नाक़द्री करते हुए उन पर इस तरह की फबतियाँ क़स रहे हैं कि क्या ख़ुदा को नवाज़ने के लिए यही लोग मिल गए?

87. अर्थात् ईमान की तौफ़ीक़ के मामले में असल चीज़ इन्सान की सांसारिक पोज़ीशन नहीं बल्कि उस की वह शुक्र (कृतज्ञता) की भावना है जो अपने रब के लिए वह अपने दिल में रखता है। इस लिए वह अपने कृतज्ञ बन्दों ही को ईमान की दौलत से नवाज़ता है यद्यपि कि वे सांसारिक दृष्टि से कितने ही दुर्दशाग्रस्त हों।

88. काफ़िर, ग़रीब ईमान वालों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उन का दिल दुखाने को तत्पर रहते हैं लेकिन अल्लाह तआला ने इस आयत में उन को ऐसा आत्मविभोर कर देने वाला संदेश सुनाया है जो उन के सारे दुख दूर कर देने के लिए काफ़ी है और उन को वह सम्मान एवं बुलन्दी प्रदान की है जिस की कल्पना भी दुनिया परस्त नहीं कर सकते।

89. पुकारने से मुराद हाजतों को पूरा करने के लिए पुकारना, नाम जपना, और दुआ माँगना है। यह पुकारना इबादत के समानार्थ है, और अल्लाह ही इस का हक़दार है कि उसे पुकारा जाए मगर बहुदेववादी अल्लाह को छोड़ कर अपने मनगढ़ंत ख़ुदाओं को पुकारते हैं, उन के नाम की माला जपते हैं, उन से दुआऐं माँगते हैं और उन के नाम की जय जयकार लगाते हैं।

90. शिर्क और बुत परस्ती का अल्लाह की हिदायत से कोई सम्बन्ध नहीं, बल्कि ये इन्सान की ग़लत इच्छाऐं हैं जिन को धर्म के नाम से प्रस्तुत कर के ख़ुदा के बन्दों को गुमराह करने की कोशिश की जाती है।

❖❖❖❖❖❖❖❖

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ وَهُوَ
خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿٥٧﴾

57. कहो, मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हूँ [91], और तुम ने उसे झुठला दिया है। तुम जिस चीज़ के लिए जल्दी मचा रहे हो वह मेरे इख़्तियार में नहीं है।[92] फ़ैसला करना तो अल्लाह ही के इख़्तियार में है। वह हक़ बात बयान फ़रमाता है और वह बेहतरीन फ़ैसला फ़रमाने वाला है।

قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي
وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

58. कहो जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो अगर वह मेरे इख़्तियार में होती तो मेरे और तुम्हारे बीच (कभी का) फैसला हो चुका होता। और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।[93]

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا
تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ
وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

59. उसी के पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिन को उस के सिवा कोई [94] नहीं जानता ज़मीन और समुद्र में जो कुछ है सब उस के इल्म (ज्ञान) में है। कोई पत्ता नहीं गिरता, मगर यह कि वह उस को जानता है।[95] ज़मीन के अन्धेरे [96] में कोई दाना और कोई सूखी या तर चीज़ ऐसी नहीं जो एक स्पष्ट किताब में लिखित न हो।[97]

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ
ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ
يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

60. और वही है जो रात के समय तुम्हें मौत देता है [98] और जो कुछ दिन में तुम ने किया था उसे जानता है फिर तुम्हें दिन के समय उठा खड़ा करता है ताकि निश्चित अवधि पूरी हो जाए,[99] फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।फिर वह तुम्हें बताएगा कि तुम क्या करते रहे हो।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

61. वह अपने बन्दों पर ग़लबा (प्रभुत्व) रखता है [100] और तुम पर निगरानी करने वाले भेजता है।[101] यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत आ जाती है तो हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उस को (अर्थात् उस की जान को) क़ब्ज़ करते हैं और वे (उस हुक्म के पालन में) कोताही नहीं करते।[102]

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ
الْحَاسِبِينَ ﴿٦٢﴾

62. फिर सब अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाते हैं जो उन का हक़ीक़ी मालिक [103] (वास्तविक स्वामी) है। ख़बरदार ! फैसले का सारा अधिकार उसी को है।[104] और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।[105]

91. मुराद क़ुर्आन है जो अल्लाह की तरफ़ से स्पष्ट आदेश (क़तई हुज्जत) है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीद की दअवत इसी हुज्जत पर आधारित है। वह एक ऐसी बुद्धिसंगत बात है कि हर न्याय प्रिय व्यक्ति की समझ में आ सकती है। वह प्रकृति की आवाज़ और अन्तरात्मा की पुकार है। इस के विपरीत बहुदेववादी जिस चीज़ की तरफ़ बुलाते हैं वह किसी दलील पर आधारित नहीं है बल्कि यह मात्र उन के मस्तिष्क की उपजी इच्छाओं की ग़ुलामी है।

92. अर्थात् अज़ाब ।

93. यहाँ ज़ालिम से मुराद बहुदेववादी (शिर्क करने वाले) हैं। उन्हें ज़ालिम इस लिए कहा गया है कि उन्हों ने शिर्क और सत्य का इन्कार की राह अपना कर के अपनी प्रकृति की आवाज़ को दबा दिया । अपनी अक़्ल पर जिहालत के परदे डाल दिए और अपने रब के साथ बेवफ़ाई की इस तरह वे अपने को बुरे अन्जाम के हवाले कर के अपने आप पर जुल्म ढाने वाले बने।

94. अर्थात् ग़ैब के ख़ज़ानों का वही मालिक है और उन के दरवाज़े उसी के खोलने से खुलते हैं। जो चीज़ भी ग़ैब अर्थात् परोक्ष की स्थिति से अनुभव की स्थिति में आती है उसी के लाने से आती है और उसी पर ब्रह्माण्ड में निहित सारे भेद और छिपे हुए सारे राज़ प्रकट हैं।

95. अर्थात् अल्लाह तआला का इल्म (ज्ञान) हर चीज़ पर हावी है वह सिर्फ बड़ी बड़ी चीज़ों ही को नहीं छोटी छोटी चीज़ों को भी जानता है और केवल सर्व (कुल) ही से नहीं अशं से भी भिज्ञ है।

96. मुराद ज़मीन के अन्दरुनी हिस्से और उस की तहें हैं।

97. अर्थात् अल्लाह तआला के पास सारी घटनाओं और सारे हालात का उन की सारी तफ़सील के साथ अत्यन्त स्पष्ट रुप में रिकार्ड मौजूद है। फिर जिस के पास पूरी दुनिया की क्रॉनोलोजी (Chronology) अर्थात घटनाओं का क्रमानुसार रेकार्ड मौजूद हो उस के पास इन्सानों के आमाल (कर्मों) का रेकार्ड कैसे नहीं होगा?

98. नींद को मौत की उपमा दी गई है क्यों कि नींद की हालत में आदमी दुनिया से उसी तरह बेख़बर हो जाता है जिस तरह कि मौत की हालत में होता है।

99. अर्थात् जो ख़ुदा रात में तुम पर नींद को हावी करता है वह तुम्हारे दिन में किए गए कर्मों से बेख़बर नहीं है। और वही है जो रात गुज़रने के बाद फिर तुम को उठा खड़ा करता है। और यह सोने और जागने का अर्थात मरने फिर जीने का सिलसिला जारी रहता है यहाँ तक कि तुम्हारी निश्चित की गई अवधि पूरी हो जाती है और तुम मौत की गोद में चले जाते हो । गोया मरने के बाद दोबारा उठाए जाने का अनुभव उदाहरण स्वरुप तुम रोज़ाना करते रहते हो फिर क्या इस से मरने के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी की पुष्टि नहीं होती? और क्या यह अनुभव तुम्हारे अन्दर दोबारा उठाए जाने का यक़ीन पैदा नहीं करता?

100. अर्थात सारे बन्दे उस के क़ाबू में हैं और उपद्रवियों एवं शैतानों सभी पर उस का कन्ट्रोल है।

101. मुराद वे फ़रिश्ते हैं जो मनुष्यों के कर्मों का रिकार्ड सुरक्षित करने पर नियुक्त हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्फ़ितार नोट १०.

102. इन्सान की मौत अल्लाह ही के हाथ में है। उस में किसी का यहाँ तक कि फ़रिश्तों का भी कोई दख़ल नहीं। फ़रिश्ते तो बस अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए रुह क़ब्ज़ करते हैं।

103. अर्थात मरने के बाद इन्सान की समाप्ति नहीं होती बल्कि वह अल्लाह के पास पहुँच जाता है।

104. अर्थात होशियार हो जाओ कि तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारी क़िस्मतें उसी के हाथ में होंगी और इस ख़ाम ख़याली में मुब्तिला न रहो कि किसी का दामन पकड़ कर मुक्ति प्राप्त कर सकोगे।

105. अर्थात अरबों खरबों इन्सानों का हिसाब लेने में अल्लाह को कुछ देर नहीं लगेगी।

63. इन से पूछो, कौन है जो तुम्हें ख़ुश्की (शुष्कता) और समुद्र के अन्धकार से नजात (मुक्ति) देता है [106] जब कि तुम गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके उसी को पुकारते हो कि अगर उस ने हम को इस (मुसीबत) से मुक्ति दी तो हम ज़रुर उस के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बन जाऐंगे।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً لَّئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

64. कहो, अल्लाह ही तुम्हें उस (मुसीबत) से और हर तकलीफ़ से मुक्ति देता है लेकिन तुम फिर शिर्क करने लगते हो। [107]

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

65. कहो वह इस पर क़ादिर (पूरी तरह समर्थ) है कि तुम पर ऊपर से कोई अज़ाब भेज दे या तुम्हारे पाँव तले से कोई अज़ाब बरपा करे या तुम को गिरोहों में बाँट कर आपस में भिड़ा दे और एक को दूसरे की ताक़त का मज़ा चखाए। [108] देखो किस तरह हम अपनी आयतें विभिन्न तरीक़ों से बयान करते हैं ताकि वे समझें। [109]

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ
اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ
بَاْسَ بَعْضٍ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

66. तुम्हारी क़ौम ने इसे झुठला दिया है [110] हालाँकि यह हक (सत्य) है। कहो मैं तुम पर दारोगा निर्धारित नहीं हुआ हूँ। [111]

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾

67. हर ख़बर के प्रकट होने का एक समय निश्चित है। [112] और शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

68. और जब तुम देखो कि लोग हमारी आयतों में कटहुज्जती (झगड़ा) कर रहे हैं तो उन से अलग हट जाओ यहाँ तक कि वे किसी दूसरी बात में लग जाऐं। और अगर शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो। [113]

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى
يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ
بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

69. अल्लाह से डरने वालों पर उन के हिसाब की कोई ज़िम्मेदारी नहीं है अलबत्ता नसीहत करना चाहिए ताकि वे भी डरने लगें। [114]

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ
ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

106. अन्धकार से वे अंधकार मुराद हैं जो आफ़तों का रुप धार लें । उदाहरणार्थ, जब घटा टोप अन्धेरा छा जाए और तूफ़ानी हवाऐं चलने लगें। या बियाबान में आँधी आ जाए या समुद्र की मौजें आदमी को अपनी लपेट में ले लें।

107. मतलब यह कि चाहिए तो यह था कि मुसीबत से मुक्ति पाने के बाद अल्लाह का शुक्र अदा करते। मगर तुम शुक्र का नज़राना अपने मन गढ़ंत ख़ुदाओं के सामने पेश करते हो।

108. अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाले जब यह देखते हैं कि गुनाह और बुराई के काम करते रहने के बावजूद ख़ुदा का अज़ाब नहीं आता तो वे चैन की बांसुरी बजाने लगते हैं कि कोई अज़ाब आने वाला नहीं है। ऐसे ही लोगों को यहाँ सावधान किया जा रहा है कि ख़तरे की घंटी हर समय बज रही है लेकिन जिन लोगों ने कानों में उगलियाँ ठूँस ली हैं उन्हें उस की आवाज़ सुनाई नहीं देती। अल्लाह के अज़ाब को आते क्या देर लगती है। हवा का एक तूफ़ान (Cyclone) अचानक आ कर तुम्हारी धज्जियाँ बिखेर सकता है। सैलाब का एक रेला तुम्हारी फ़सलों समेत तुम को बहा ले जाने के लिए काफ़ी है। भूकंप का एक झटका तुम्हारी आबादियों को खण्डहरों में परिवर्तित कर सकता है। और यह भी असंभव नहीं कि तुम्हारे बीच फूट पड़ जाए और तुम आपस में गुत्थम गुत्था हो जाओ या क़ौमों की दुश्मनी के नतीजे में तुम्हें दूसरे की ताक़त का मज़ा चखना पड़े।

109. अर्थात् ये वास्तविकताएं जो क़ुर्आन की आयतों में बयान हुई हैं अलग अलग शैलियों और विभिन्न पहलुओं से प्रस्तुत की गई हैं ताकि बात आसानी से लोगों की समझ में आ सके।

110. अर्थात् क़ुर्आन को ।

111. अर्थात् मेरे सुपुर्द जो काम हुआ है वह लोगों को बताने और नसीहत करने का है। ईमान लाने के लिए ज़ोर ज़बरदस्ती करने की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं डाली गई है।

112. मतलब यह कि क़ुर्आन जो ख़बरें तुम्हें दे रहा है जैसे पैग़म्बर को झुठलाने की सूरत में अज़ाब की ख़बर, क़ियामत की ख़बर, काफ़िरो के लिए जहन्नम की ख़बर आदि तो इन में से हर ख़बर के प्रकट होने का समय निश्चित है और वह अवश्य ही अपने समय पर प्रकट हो कर रहेगी।

113. यह लोगों को नसीहत करने, इस्लाम की ओर बुलाने के सिलसिले में एक महत्वपूर्ण हिदायत है जो ईमान वालों को दी गई है। किसी मजलिस में जहाँ क़ुर्आन का या उस के आदेशों का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो या लोग बहस में उलझ कर कुफ़्र बक रहे हों वहाँ बैठना ईमानी ग़ैरत के ख़िलाफ़ है कोई सच्चा मुसलमान ऐसे लोगों के साथ बैठना गवारा नहीं कर सकता जहाँ उस के दीन को दाग़दार किया जा रहा हो। यहाँ इस हिदायत के साथ यह ताकीद भी कर दी गई है कि अगर कभी शैतान के भुलावे में डालने के कारण यह हिदायत याद न रहे तो ज्यों ही याद आ जाए ऐसी मजलिस से उठ जाओ।

एक तरफ़ यह ताकीदी हिदायत है और दूसरी तरफ़ मौजूदा दौर के धर्म विरोधी मुसलमान हैं जो ग़ैर मुस्लिमों को अपनी मजलिसों में बुला कर उन से ऐसे भाषण कराते हैं जिन में शरीअत का मज़ाक़ उड़ाया जाता है और जहाँ मौक़ा मिलता है खुद भी दीन पर वार करते हैं ताकि उन के बेदीन (Secular) होने की लाज रह जाए।

इस आयत में जो हिदायत दी गई है उस का हवाला सूरह निसा की आयत १४० में भी दिया गया है।

114. अर्थात् ईमान वालों पर इन इन्कार करने वालों की कोई ज़िम्मेदारी नहीं डाली गई है बल्कि केवल याद्देहानी (नसीहत) करने की ज़िम्मेदारी डाली गई है फिर वे क्यों इन के मामले में अनुचित उदारता एवं पक्षपात से काम लें? उन का काम यह है कि बताने, याद दिलाने और नसीहत करने का अगर कोई मौक़ा है तो उसे हाथ से जाने न दें। और अगर देखें कि सामने वाला गंभीर नहीं है और दीन में मीनमेख़ निकाल कर उस का मखौल उड़ा रहा है तो उस के पास से उठ जाएं और उस को उस के हाल पर छोड़ दें।

70. उन लोगों को छोड़ दो जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है।[115]और जिन को दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा है।[116] तुम इस (क़ुर्आन) के द्वारा याददेहानी (नसीहत) करो ताकि ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति अपनी करतूतों के वबाल में गिरफ़्तार हो जाए। इस हाल में कि अल्लाह के मुक़ाबले में न उस का कोई दोस्त हो और न सिफ़ारिश करने वाला। और अगर वह फ़िदय: (बदले) में सब कुछ देना चाहे तो भी क़ुबूल नहीं किया जाएगा।[117] यही लोग हैं जो अपने करतूतों के वबाल में पकड़े जाऐंगे। इन को पीने के लिए ख़ौलता हुआ पानी मिलेगा और उन्हें दुखदायिनी यातना भुगतनी होगी उस कुफ्र के अपराध में जो वे करते रहे हैं।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا
مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ
لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا أُولٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ
شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ٧٠

71. कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उन को पुकारें जो हमें फ़ायदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान ?[118]और जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत की राह दिखा दी है, तो क्या हम उल्टे पाँव फिर जाऐं ? और हमारा हाल उस व्यक्ति की तरह हो जाए जिस को शैतानों ने बियाबान में भटका दिया हो।[119] और वह हक्का बक्का तथा परिशान हो,और उस के साथी उस को सीधी राह की तरफ़ बुला रहें हों कि हमारे पास आओ ।[120] कहो,अल्लाह की हिदायत ही असल हिदायत है।[121] और हमें हुक्म दिया गया है कि हम अपने को रब्बुलआलमीन (सारे जगत के रब) के हवाले करें।[122]

قُلْ أَنَدْعُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰى
أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدٰنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِينُ
فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحٰبٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا
قُلْ إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ٧١

72. और यह कि नमाज़ क़ायम करो और उस से डरते रहो ।[123] उसी के पास तुम इकट्ठे किए जाओगे।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوهُ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ٧٢

73. वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के (उद्देश्य के) साथ पैदा किया [124] और जिस दिन वह फ़रमाएगा हो जा तो हो जाएगा ।[125] उस का क़ौल (वचन) हक़ है।[126] और जिस दिन सूर फूँका जाएगा बादशाहत उसी की होगी ।वह ग़ैब (परोक्ष) और हाज़िर सब का जानने वाला है और वह हिकमत वाला और बाख़बर है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ
يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ
فِي الصُّورِ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ٧٣

115. दीन से मुराद इस्लाम है और इसे उन लोगों से इस कारण सम्बद्ध किया गया है कि अल्लाह ने इस्लाम को पूरी मानवता की रहनुमाई के लिए नाज़िल किया था इस लिए यह दीन हर व्यक्ति का अपना दीन है किन्तु इस की क़द्र न जानने वाले मूर्खों ने अपने इस दीन को अपना रहनुमा बनाने के बजाये खेल तमाशा बना लिया कि उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

इस मानसिकता के लोग हर युग में पाए जाते रहे हैं और आज का आधुनिक (Modern) मानव भी इस्लाम को दक़यानूसी क़रार दे कर उस की शिक्षाओं का मज़ाक़ उड़ाता है और समझता है कि यह रौशन ख़याली है।

116. अर्थात् अल्लाह के दीन की यह अवमानना एवं नाक़द्री वे इस लिए करते हैं कि दुनिया की ज़िन्दगी उन की नज़र में ऐसी जंच गई है कि वे उस से उच्चतम जीवन स्तर की कल्पना तक करने को तैयार नहीं ।

117. पहली बात तो यह कि उस रोज़ फिदय: में देने के लिए उस के पास कुछ होगा नहीं लेकिन मान लिया जाए कि उस के पास दुनिया भर की दौलत होती तो वह सब की सब फ़िदय: में दे कर अपनी जान छुड़ाने के लिए आमादा हो जाता। जब कि दुनिया में माल की ख़ातिर उस ने अपनी ज़िन्दगी को ग़लत दिशा पर डाल दिया था और अपने बुरे अन्जाम की तनिक भी परवाह नहीं की थी।

118. मुराद बुत हैं जो पत्थर के टुकड़े हैं या मिट्टी के ढेर। उन में यह शक्ति कहाँ कि किसी को लाभ या हानि पहुँचा सकें। देवी देवताओं का विचार भी मात्र काल्पनिक है। न तो दौलत की कोई देवी है कि आदमी को मालामाल कर दे और न कष्ट एवं रोगों की कोई देवी है कि आदमी को चेचक आदि रोगों और दूसरी तकलीफ़ों में मुब्तिला करे। यह मात्र अंधविश्वास है। वास्तव में इन ख़ुदाओं का कोई अस्तित्व ही नहीं।

119. शैतान का बियाबान में इन्सान को भटकाना उसी भावार्थ में है जिस भावार्थ में किसी शैतान का इन्सान को भुलावे में डालना।

120. यह उदाहरण है शैतान की छत्र छाया में भटकने वालों का ।

इन्कार करने वालों का यही हाल है कि उन्हें शैतानों ने भटका दिया है और वे ऐसे हलकान हैं कि उन के जो साथी उन्हें सीधे मार्ग की तरफ़ बुला रहे हैं उन की अवाज़ पर कान धरने के लिए आमादा नहीं।

यह उदाहरण प्रस्तुत कर के ईमान वाले इन्कार करने वालों से कह रहे हैं कि तुम ख़ुद भटके हुए हो और चाहते हो कि हम भी तुम्हारी तरह भटक जाएं, हालाँकि होना यह चाहिए था कि तुम हमारी पुकार सुनते और हमारे पास आ कर हिदायत की राह पाने वालों में शामिल हो जाते।

121. अर्थात् ख़ुदा तक पहुँचने की राहें वे नहीं हैं जो लोगों ने अपनी इच्छाओं एवं स्वार्थों या अंधविश्वासों या धार्मिक विचारों या फ़लसफ़े के उलझावपूर्ण औचित्यों के आधार पर तय कर रखी हैं बल्कि उस तक पहुँचने की अकेली राह वह है जिस की पुष्टि उस ने स्वयं कर दी है और जिस का नाम इस्लाम है।

122. और इस्लाम की वास्तविकता यही है कि अपने को पूर्ण रुप से अल्लाह के हवाले कर दिया जाए।

123. अपने को अल्लाह के हवाले करने का पहला प्रतीक नमाज़ है। जब तक आदमी नमाज़ क़ायम नहीं करता इस समर्पण का कोई अर्थ नहीं।

और ''उस से डरते रहो'' (तक़्वा) का प्रैक्टिकल सबूत आदमी शरीअत के आदेशों का पालन कर के ही दे सकता है।

124. अर्थात अल्लाह ने इस ब्राह्माण्ड को उद्देश्य रहित और लक्ष्य हीन नहीं पैदा किया है। बल्कि इस का एक उद्देश्य एवं एक लक्ष्य है। और वह है इनाम और सज़ा का मामला जिस के लिए नई ज़मीन,नए आसमान और नई व्यवस्था की आवश्यकता है। यह नई व्यवस्था इसी ब्राह्माण्ड के कोख से उभरेगी और क़ियामत इसी ब्राह्माण्ड की क्रान्ति का नाम है।

125. अर्थात् क़ियामत, हश्र और आख़िरत (परलोक) बरपा करने में अल्लाह को कोई दुश्वारी पेश नहीं आएगी। बल्कि जिस तरह उस के एक हुक्म से यह कायनात अस्तित्व में आई उसी तरह उस के एक हुक्म से क़ियामत, हश्र और आख़िरत की व्यवस्था स्थापित होगी।

126. अर्थात् उस की बात निश्चित रुप से सत्य साबित होती है। इस लिए क़ियामत के बारे में भी उस की बात सच्ची हो कर रहेगी ।

74. और (याद करो) जब इब्राहीम [127] ने अपने बाप आज़र से कहा था ! क्या आप बुतों को ख़ुदा बनाते हैं।मैं तो आप को और आप की क़ौम को खुली गुमराही में देख रहा हूँ।[128]

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ لِأَبِيهِ ءَازَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا ءَالِهَةً ۖ إِنِّىٓ أَرَىٰكَ وَقَوْمَكَ فِى ضَلَـٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾

75. इसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की हुकूमत (की व्यवस्था) दिखाते थे ताकि वह यकीन करने वालों में से हो जाए।[129]

وَكَذَٰلِكَ نُرِىٓ إِبْرَٰهِيمَ مَلَكُوتَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ ٱلْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾

76. अतः जब रात उस पर छा गई तो उस ने एक सितारा देखा । कहा यह मेरा रब है । फिर जब वह डूब गया तो कहा डूब जाने वालों को मैं पसन्द नहीं करता।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ ٱلَّيْلُ رَءَا كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَـٰذَا رَبِّى ۖ فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَآ أُحِبُّ ٱلْـَٔافِلِينَ ﴿٧٦﴾

77. फिर जब चाँद को चमकते देखा तो कहा यह मेरा रब है लेकिन जब वह भी डूब गया तो कहा अगर मेरे रब ने मेरी रहनुमाई न फ़रमाई तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَءَا ٱلْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَـٰذَا رَبِّى ۖ فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِى رَبِّى لَأَكُونَنَّ مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلضَّآلِّينَ ﴿٧٧﴾

78. फिर जब सूरज को चमकते देखा तो कहा यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। मगर जब वह भी डूब गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो, मैं उन सब से बरी (अलग) हूँ जिन को तुम शरीक (साझीदार) ठहराते हो।[130]

فَلَمَّا رَءَا ٱلشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَـٰذَا رَبِّى هَـٰذَآ أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّآ أَفَلَتْ قَالَ يَـٰقَوْمِ إِنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾

79. मैं ने यकसू (एकाग्र) हो कर अपना रुख उस हस्ती की तरफ़ कर लिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।[131]

إِنِّى وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِى فَطَرَ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾

80. और उस की क़ौम उस से झगड़ने लगी तो उस ने कहा क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझ से झगड़ते हो हालाँकि उस ने मुझे राह दिखा दी है, [132] और मैं उन से नहीं डरता जिन को तुम उस का साझीदार (शरीक)ठहराते हो।हाँ अगर मेरा रब कुछ (नुक़सान पहुँचाना) चाहे तो और बात है।[133] मेरा रब अपने इल्म से हर चीज़ का इहाता (वेष्ठन) किए हुए है [134] फिर क्या तुम नसीहत हासिल न करोगे।

وَحَآجَّهُۥ قَوْمُهُۥ ۚ قَالَ أَتُحَـٰٓجُّوٓنِّى فِى ٱللَّهِ وَقَدْ هَدَىٰنِ ۚ وَلَآ أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَشَآءَ رَبِّى شَيْـًٔا ۗ وَسِعَ رَبِّى كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

127. इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ज़माना लगभग दो हज़ार साल ईसा पूर्व का ज़माना है। उन का वास स्थल इराक के शहर ''उर'' में था जो फ़रात के किनारे स्थित था । आज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पिता का नाम है जो बुत परस्त था। बाइबिल में उस का नाम ''तारेह'' आया है। प्रतीत होता है कि यह नाम बाइबिल के संकलन कर्ताओं अथवा अनुवादकों ने ग़लती से लिख दिया है और संभवत: क़ुर्आन ने उस के असल नाम की पुष्टि इसी लिए की है ताकि इस ग़लती का सुधार हो जाए और इब्राहीम की वंशावली प्रमाणित रुप से सुरक्षित रहे।

128. इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ौम बुत परस्त थी और जब आप ने बुत परस्ती और शिर्क के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानी चाही तो इस की शुरुआत अपने घर ही से की । अत: सब से पहले अपने पिता पर इस गुमराही को स्पष्ट किया और उन को एक ख़ुदा की दास्ता (तौहीद) स्वीकार करने की दअवत दी। शब्द बताते हैं कि यह दअवत अत्यन्त बेलाग तरीक़े पर और पूरे ईमानी साहस के साथ इस तरह प्रस्तुत की थी कि बुत परस्ती और शिर्क का अनुचित एवं बातिल होना स्पष्ट हो जाए।

बुत परस्ती को खुली गुमराही कहा गया क्यों कि समान्य बुद्धि (Common Sense) किसी ऐसी चीज़ को ख़ुदा मानने से इन्कार करती है जिसे इन्सान ने स्वयं गढ़ा हो।

129. यद्यपि इब्राहीम ने एक बुत परस्त परिवार और एक बुत परस्त क़ौम में जन्म लिया था लेकिन अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि से काम लेने के फलस्वरुप जिस तरह उन पर बुत परस्ती की गुमराही स्पष्ट हो गई थी उसी तरह आसमान और ज़मीन की व्यवस्था पर ग़ौर करने से उन्हें अल्लाह के एक मात्र ख़ुदा (एकेश्वर) होने पर भी पूर्ण विश्वास हो गया था। क्यों कि ब्रह्माण्ड की यह व्यवस्था स्वयं साक्षी है कि यहाँ केवल एक ही हस्ती का शासन चल रहा है जिस ने तमाम चीज़ों को अपने नियम में जकड़ रखा है। इब्राहीम ने ख़ुदा और मज़हब के मामले में अपने पुरखों एवं पूर्वजों का अन्धानुकरण नहीं किया बल्कि सूझ बूझ से काम लिया और ब्राह्माण्ड (कायनात) की व्यवस्था पर विचार एवं अनुभव करने से सही नतीजे तक पहुँचने की कोशिश की । इस लिए अल्लाह तआला ने उन को ज्ञान एवं सूझ बूझ प्रदान की और उन की रहनुमाई की। क़ुर्आन में दूसरी जगह फ़रमाया गया है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ (الانبياء-٥١)

''और हम ने इब्राहीम को सूझ बूझ प्रदान की थी।''
(अलअम्बिया -५१)

नबी शुद्ध प्रकृति एवं उचित स्वभाव (सलीम फ़ितरत) का होता है इस लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी इसी पर क़ायम थे। वह अल्लाह ही को अपना रब मानते थे और इस बारे में वह किसी संदेह एवं भ्रम में मुब्तिला नहीं थे। किन्तु अल्लाह के विशाल शासन एवं सामर्थ्य को आँखों देख लेने से उन की तौहीद (एकेश्वरवाद) की धारणा और भी सुदृढ़ हो गई और उन के अन्दर पक्का विश्वास पैदा हो गया। क़ुर्आन इसी अनुभव की दअवत देता है। जो व्यक्ति भी कायनात की व्यवस्था पर इस पहलू से चिन्तन करेगा कि इस का कोई पैदा करने वाला (सृष्टा) है कि नहीं और इस पर एक ख़ुदा का शासन है या अनेक ख़ुदाओं का, तो उस पर तौहीद की हक़ीक़त खुल जाएगी।

वर्तमान काल के वैज्ञानिक और खगोलतज्ञ यो नक्षत्र वैज्ञानिक (Astronomers) चूँकि इस पहलू से कायनात का अध्यन नहीं करते और उन का अध्यन यथार्थ के ज्ञान के लिए अथवा उद्देश्यपूर्ण (Objective) नहीं होता बल्कि वे ख़ुदा से बेपरवाह हो कर या पक्षपात पूर्ण मानसिकता के साथ या फिर निरुद्देश्य अध्यन करते हैं इस लिए वे तौहीद के प्रकाश से वन्चित रहते हैं और उन के अन्दर ईमान और विश्वास का भाव उत्पन्न नहीं होता ।

130. इस घटना को अच्छी तरह समझने के लिए निम्न लिखित बातों को सामने रखना ज़रुरी है।

(A) इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ौम सितारों (ग्रहों एवं नक्षत्रों) को पूजने वाली क़ौम थी। शुक्र ग्रह जिस को ''अश्तरा'' कहा जाता था प्रेम एवं सुन्दरता की देवी थी। चन्द्रमा जिस का नाम ''नन्नार''था खुशहाली का देवता था और सूर्य उन के निकट सब से बड़ा देवता था। और जब उन के नज़दीक ग्रहों एवं नक्षत्रों की हैसियत देवताओं की थी तो उन्होंने उन के नाम पर बहुत से बुत तराश लिए थे जो उन के भ्रमानुसार उन का नेतृत्व करते थे और इस कल्पना से प्रभावित हो कर कि इन बुतों के आगे पूजा अर्चना करना, इन देवताओं को खुश करने और इन के प्रकोप से बचने के उपाय है, वे उन की पूजा करते, उन के साथ वह सम्बन्ध जोड़ते जो खुदा के साथ जोड़ा जाता है। और उन के समक्ष श्रद्धा की वह भेंट अर्पित करते जो ख़ुदा के समक्ष अर्पित किए जाते हैं। इस तरह उन्होंने अपने ख़ुदाओं को स्वयं गढ़ लिया था।

(B) बुत परस्ती का सम्बन्ध चूँकि नक्षत्र पूजा से था इस लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक ऐसा तर्क प्रस्तुत किया जिस ने इन तमाम आसमानी ख़ुदाओं को डूबने पर मजबूर किया और जब वे डूबे तो अपने साथ ज़मीनी ख़ुदाओं को भी ले कर डूबे।

(C) तारे, चाँद और सूरज के निरीक्षण की यह घटना ज़रुरी नहीं एक ही दिन में घटित हुई हो,बल्कि हो सकता है कि बीच में कुछ अन्तराल (Gap) रहा हो। अर्थात एक रात में सितारे के निकलने और डूब जाने का निरीक्षण किया गया हो

और दूसरी रात में चाँद को, और फिर किसी दिन सूरज को आज़माया हो।

(D) यह घटना तर्क वितर्क के ढंग की थी जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है। इस लिए इस को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के चिन्तन का विकास समझना और यह ख़्याल करना कि उन्हों ने तारे, चाँद और सूरज के बारे में هٰذَا رَبِّی (हाज़ा रब्बी) ''यह मेरा रब है'' जो फ़रमाया था वह हक़ की ख़ोज का एक चरण था, बहुत बड़ी ग़लत फ़हमी है। और अफ़सोस है कि यह ठोकर कुछ टीकाकारों (मुफ़स्सिरीन) ने भी खाई है। लेकिन जैसा कि अल्लामा इब्ने कसीर ने स्पष्टीकरण किया है कि यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपनी क़ौम के साथ तर्क वितर्क (मुनाज़िरा) था न कि अपना व्यक्तिगत अध्ययन एवं निरीक्षण। इस लिए ''هٰذَا رَبِّی हाज़ा रब्बी'' (यह मेरा रब है) की बात उन्हों ने तर्क वितर्क के दौरान कही थी जिस का मतलब यह था कि क्या वास्तव में यह मेरा रब है ? सितारा आदि को रब ठहराने पर आश्चर्य की अभिव्यक्ति भी थी और क़ौम के सामने यह सवाल भी कि क्या वास्तव में ये चीज़ें पूज्य अथवा उपास्य बनाने योग्य हैं?

जहाँ तक संदर्भ की बात है इस से पहले इब्राहीम अलैहिस्सलाम के अपने बाप के सामने हक़ की दअवत पेश करने का ज़िक्र हुआ है । और इस घटना के ठीक बाद आयत ८० में क़ौम के इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ तर्क वितर्क का वर्णन है। फिर इस घटना के दौरान इब्राहीम अलैहिस्सलाम चाँद को देख कर जहाँ ''हाज़ा रब्बी'' (यह मेरा रब है) फ़रमाते हैं वहीं यह भी फ़रमाते हैं ''की अगर मेरे रब ने मेरी रहनुमाई न फ़रमाई तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊँगा'' इस का मतलब इस के सिवा और क्या था कि अल्लाह ही वास्तव में मेरा रब है और हिदायत के लिए उसी की ओर पलटना चाहिए वरना गुमराही के सिवा कुछ पल्ले नहीं पड़ सकता । यह बात तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेशवरवादी मानसिकता की परिचायक है। इस लिए इस के बाद सूरज को देख कर उस को अपना रब कहना सामने वाले की दलील को उसी पर उलट देने ही के उद्देश्य से था। और तर्क वितर्क के अवसर पर जो बातें आदमी फ़र्ज कर के अर्थात मान कर के कहता है वह उस का वास्तविक विचार एवं चिंतन नहीं होता और यहाँ संदर्भ प्रमाण है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह बात क़ौम को बेदलील करने के उद्देश्य से कही थी। जिस तरह कि उन्होंने एक दूसरे अवसर पर बुतों को तोड़ने की क्रिया को बड़े बुत से सम्बन्धित बताया था जब कि उन्हों ने ख़ुद ही बुतों को तोड़ दिया था।

(E) इब्रीहीम अलैहिस्सलाम ने ग्रह पूजा एवं नक्षत्र पूजा के ग़लत होने पर जो तर्क प्रस्तुत किया उस का सारांश यह है, कि ग्रह हों या नक्षत्र, चाँद हों या सूरज उन की चमक दमक से धोखा खा कर लोग उन को ख़ुदा या देवी देवता समझने लगे हैं और फिर उन की उपासना आरंभ कर देते हैं लेकिन लोग जहाँ इन के उदय को देखते है वहाँ इन के अस्त (डूबने) को भी देखें तो उन को साफ दिखाई देगा कि उन में से कोई भी ख़ुदा या देवी देवता नहीं है क्यों कि ये सब एक निश्चित एवं निर्धारित व्यवस्था के पाबन्द हैं । यह न समय से पहले निकल सकते हैं और न समय से पहले डूब सकते हैं और वह ख़ुदा ही क्या हुआ जो किसी क़ानून में जकड़ा हुआ हो। उन की यह प्राकृतिक दशा इस बात का प्रमाण है कि उन पर एक उच्चतम हस्ती का शासन है जिस के नियमों में वे जकड़े हुए हैं। अत: पूजा की हक़दार वह उच्चतम हस्ती है जो इन सब की रचयिता है और उन पर अपना स्वामित्व बनाए हुए उन पर शासन कर रही है, न कि ये आसमानी ग्रह एवं नक्षत्र जो बिल्कुल बेबस हैं।

(F) इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ग्रहों एवं नक्षत्रों के देवी देवता होने के विचारों का जो खण्डन किया था उस की पुष्टि आज विमान एवं खगोल शास्त्र द्वारा भी हो रही है क्यों कि साइन्स ने बड़े विस्तार के साथ यह बात हमारे सामने रखी है कि वे किस तरह सौर परिवार (Solar System) में जकड़े हुए हैं और जिन ग्रहों की चमक दमक से आदमी प्रभावित हो कर उन को देवी देवता समझता रहा है उन की हक़ीक़त यह है कि वे अपनी रौशनी के लिए सूरज के मुहताज हैं। और सूरज इस के सिवा कुछ नहीं कि उस में आग दहकती रहती है और धमाके होते रहते हैं। फिर क्या ख़ुदा ऐसा भी होता है जिस के पेट में धमाके होते हों । इसी तरह चाँद पर पहुँच कर उस की ज़मीन को रौंदने का तज्रिबा इन्सान ने कर लिया है, फिर क्या खुदा ऐसा भी हो सकता है जिस को इन्सान अपने पाँव से रौंदने में कामयाब हो जाऐं?

131. यह तौहीद का एलान है जिस में शिर्क से अलग होने का इज़हार भी है और तौहीद का प्रमाण भी कि जो आसमान और ज़मीन का सृष्टा है वही वास्तविक पूज्य एवं उपास्य है। इस लिए तमाम ग़लत पूज्यों एवं उपास्यों से कट कर मैं ने उसी का रुख़ किया है और उसी को अपना लक्ष्य बनाया है। इन प्रवचनों (कलिमों) को इस के भावार्थ को देखते हुए इन को नमाज़ के शुरु में अदा किया जाता है।

132. मालूम हुआ कि तर्क वितर्क की यह घटना जिस का वर्णन ऊपर हुआ उस समय की बात है जब कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम नबी नियुक्त किए जा चुके थे।

133. जब लोगों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़बानी देवी देवताओं के ख़िलाफ़ बातें सुनीं तो उन्हें डराने लगे कि उन की तरफ़ से तुम पर कोई न कोई आफ़त ज़रुर आएगी और तुम

अपशकुन के शिकार अवश्य हो जाओगे । उसी के जवाब में इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे गढ़े हुए पूज्यों से हरगिज़ नहीं डरता। हानि पहुँचाना अल्लाह ही के अधिकार में है वह चाहेगा तो हानि पहुँचेगी, वरना इन बनावटी ख़ुदाओं के बस में कुछ भी नहीं।

134. अर्थात् रबूबिय्यत (स्वामित्व) के लिए विस्तृत ज्ञान की ज़रुरत है। और यह सिफ़त अल्लाह के सिवा किसी की नहीं, फिर उस को छोड़ कर किसी को रब बनाने का क्या औचित्य है? क्या ये बुत लोगों के हालात से भिज्ञ हैं जो इन को लाभ या हानि पहुँचा सकें?

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

81. और मैं इन से कैसे डरुँ जिन को तुम उन का साझीदार ठहराते हो जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक ठहराओ जिस के लिए उस ने तुम पर कोई सनद (प्रमाण) नाज़िल नहीं की।[135] हम दोनों दलों में से कौन अमन (निश्चिन्तिता) का ज़्यादा हक़दार है ?[136] बताओ अगर तुम जानते हो ।

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ
مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ
إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

82. जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को ज़ुल्म से ओत प्रोत नहीं किया।[137] उन ही के लिए अमन (निश्चिन्तिता) है और वही सीधी राह पर हैं।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ
وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

83. यह है हमारा वह तर्क (हुज्जत) जो हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम के मुक़ाबले में प्रदान किया था।[138] हम जिस के लिए चाहते हैं दर्जे बुलन्द कर देते है।[139] निश्चय ही तुम्हारा रब निहायत हिकमत वाला और इल्म वाला है।[140]

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ
مَنْ نَشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

84. और हम ने उस को इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किए।[141] और हर एक को हिदायत बख़्शी [142] और नूह को भी इस से पहले हिदायत बख़्शी थी।[143] और उस की नस्ल से [144] दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ,मूसा और हारुन को भी [145] (हिदायत बख़्शी थी) और हम सत्कर्य का रवैय्या अपनाने वालों को इसी तरह बदला प्रदान करते हैं।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا
مِنْ قَبْلُ ۖ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ
وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

85. और ज़करिया, यह्या, ईसा, और इल्यास को भी।[146] ये सब स्वालिहीन (नेक लोगों) में से थे।[147]

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٨٥﴾

86. और इस्माईल, अल-यसअ,[148] यूनुस और लूत को भी।[149] इन सब को हम ने दुनिया वालों पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) प्रदान की।

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا
عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٦﴾

87. तथा उन के पूर्वजों, उन की औलाद, और उन के भाई बन्धु में से कितनों ही को हम ने हिदायत बख़्शी और चुन लिया [150] और सीधे रास्ते की तरफ़ उन की रहनुमाई की।[151]

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٨٧﴾

135. अर्थात् जो किताबें अल्लाह तआला पैग़म्बरों पर नाज़िल फ़रमाता रहा है उन में से किसी किताब में भी इस बात की पुष्टि नहीं की जा सकती कि उस ने यह फ़रमाया हो कि मेरे ख़ुदा होने में फ़लाँ शरीक हैं। इसी तरह कोई तर्क और कोई दलील भी शिर्क के समर्थन में प्रस्तुत नहीं की जा सकती । फिर बिना किसी प्रमाण एवं दलील के तुम ने दूसरों को ख़ुदा का दर्जा कैसे दे रखा है?

136. अर्थात् सोचो कि अज़ाब का ख़तरा एक ख़ुदा को मानने वालों के लिए है या बिना किसी प्रमाण के उस के ख़ुदा होने में औरों को साझीदार ठहराने वालों के लिए।

137. यहाँ ज़ुल्म से मुराद शिर्क है जैसा कि हदीस में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो सहाबा ने इस को अपने ऊपर भारी महसूस किया और अर्ज किया हम में से कौन है जिस ने अपने को ज़ुल्म से ओत प्रोत न कर लिया हो? यह सुन कर रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस आयत का यह मतलब नहीं है। तुम ने लुक़मान की बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा था ''शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म है।'' (बुख़ारी किताब इस्तिताब: अलमुर्तदीन)

यह आयत पुष्टि करती है कि अल्लाह के यहाँ ईमान वही स्वीकृत एवं मान्य है जो विचार एवं कर्म (अमल) के शिर्क से पाक हो । इस में उन मुसलमानों के लिए भी बहुत बड़ी चेतावनी एवं डरावा है जिन्हों ने ईमान के साथ शिर्क को मिला जुला रखा है ।

138. अर्थात् यह हमारा वह तर्क था जिस की सूझ बूझ हम ने इब्राहीम को प्रदान की थी ताकि वह शिर्क के ग़लत होने और तौहीद के हक़ होने पर तर्क वितर्क करें और तर्क वितर्क द्वारा अपनी क़ौम को लाजवाब कर दें अर्थात् हुज्जत क़ायम कर दें।

इस से स्पष्ट हुआ कि ऊपर जिस घटना का विवरण प्रस्तुत किया गया है वह इब्राहीम का अपनी क़ौम के साथ तर्क वितर्क की घटना थी न कि स्वयं अपने लिए हक़ की ख़ोज की । इस लिए सितारे को देख कर उस को अपना रब कहना इस भावार्थ में था कि क्या यह वह तुम्हारा ख़ुदा है जिस को मैं अपना रब मान लूँ? इस के बाद जब वह डूब गया तो उन्हों ने सामने वाले का तर्क उसी पर उलट दिया। इस स्पष्टीकरण के बाद उन बे सिर पैर की रिवायतों (उल्लेखों) का सहारा लेने की ज़रुरत बाक़ी नहीं रहती जिन में इस घटना को इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बचपन की घटना की हैसियत से प्रस्तुत किया गया है और यह फ़र्ज़ी कहानी गढ़ी गई है कि इब्राहीम का बचपन एक बन्द ग़ार (गुफ़ा) में गुज़रा था। इस लिए जब वह पहली बार गुफा के बाहर आए तो सितारा देख कर उन्हों ने उसे ख़ुदा समझ लिया। अफ़सोस कि इस प्रकार की इस्राईली उल्लेखों ने तफ़्सीरों में जगह हासिल कर ली है।

139. अर्थात् इब्राहीम को यह हुज्जत, यह ज्ञान, यह सूझ बूझ और बहुदेववादी क़ौम को एकेश्वरवाद का न्योता देने का यह हौसला प्रदान कर के हम ने उन के दर्जे बहुत बुलन्द कर दिए थे। और हम इस तरह जिस के चाहते हैं दर्जो को बुलन्द कर देते हैं ।

140. इशारा है इस बात की तरफ़ कि दर्जो की यह बुलन्दी जो अल्लाह तआला अपने ख़ास बन्दों को प्रदान करता है उस के ज्ञान और गहरी समझ का फ़ैज़ान (लाभांश) है।

141. इस्हाक़, इब्राहीम के बेटे हैं और याक़ूब उन के पोते। दोनों नबी थे। याक़ूब का दूसरा नाम इस्राईल है जिन की नस्ल बनी इस्राईल कहलाई।

142. अर्थात् उन को भी इसी तौहीदी दीन (ऐकेश्वरवाद धर्म) की हिदायत प्रदान की थी।

143. नूह अलैहिस्सलाम का ज़माना इब्राहीम अलैहिस्सलाम से काफ़ी पहले का है। और यहाँ उन के ज़िक्र से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जिस ऐकेश्वरवादी दीन की हिदायत इब्राहीम और उन की औलाद को प्रदान की गई थी वह वही दीन है जिस की हिदायत उन से काफी पहले नूह को प्रदान की गई थी। दूसरे शब्दों में अल्लाह का नाज़िल किया हुआ दीन एक ही है जिस का सिलसिला ऊपर से नीचे तक चला आ रहा है। किसी नबी पर कोई और दीन नाज़िल नहीं किया गया था। और क़ुर्आन उसी दीन का अलमबरदार है जो तमाम नबियों का संयुक्त (Common) दीन है।

144. अर्थात इब्राहीम की नस्ल से ।

145. ये मश्हूर और महानुभाव नबी बनी इस्राईल से सम्बन्ध हैं। दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ, मूसा और हारुन नबियों के उस समूह से सम्बन्ध हैं जिन को राजनीतिक प्रभुत्व अथवा नेतृत्व प्राप्त था ।

146. ये सब भी बनी इस्राईल के नबी हैं जिन का दीन भी तौहीद अर्थात् इस्लाम था। इल्यास का नाम बाइबिल में एलियाह आया है जिन्हों ने बनी इस्राईल की बहुदेववादी हरकतों पर पकड़ करते हुए शुद्ध रुप से एकेश्वरवाद पर ज़ोर दिया था। उन का वर्णन राजाओं के वृत्तांत में मौजूद है:

''फिर भेंट चढ़ाने के समय एलियाह नबी समीप जा कर कहने लगा, हे इब्राहीम, इस्हाक़ और इस्राईल के परमेश्वर यहोवा आज यह प्रकट कर कि इस्राईल में तू ही परमेश्वर है और मैं तेरा दास हूँ और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं । हे यहोवा ! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा तू ही परमेश्वर है।'' (१ राजा १८:३६,३७)

ज़करिय्या, यहया, ईसा और इल्यास नबियों के उस समूह से सम्बन्ध रखते हैं जिन्हों ने ''फ़कीरी में बादशाही की।''

147. अर्थात् ये बेहद बुज़ुर्ग हस्तियाँ थीं लेकिन इन में से कोई भी ख़ुदा नहीं था बल्कि सब ख़ुदा के नेक बन्दे थे।

148. अल-यसअ का ज़िक्र बाइबिल की किताब राजा का वृत्तांत में एलीशा के नाम से और इलयास (एलियाह) नबी के नायब (Assistant) की हैसियत से हुआ है। (देखिए १ राजा १९:१६)

149. लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से नहीं थे बल्कि आप के भतीजे थे जो आप पर ईमान लाए थे और अल्लाह तआला ने उन्हें नुबुव्वत प्रदान की थी इस लिए उन का ज़िक्र यहाँ इब्राहीमी खानदान के नबियों की हैसियत से हुआ है ।

150. अर्थात दीन की दअवत और उस की ख़िदमत के लिए चुन लिया ।

151. मुराद दीन इस्लाम है।

यह अल्लाह की हिदायत है जिस से वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, नवाज़ता हे। अगर ये लोग शिर्क करते तो इन का सब किया कराया अकारथ जाता।(अल-क़ुर्आन)

88. यह अल्लाह की हिदायत है [152] जिस से वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, नवाज़ता हे। अगर ये लोग शिर्क करते तो इन का सब किया कराया अकारथ जाता।[153]

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ
اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

89. ये वे लोग हैं जिन्हें हम ने किताब, हुक्म,[154] और नुबुव्वत प्रदान की थी। अब अगर ये लोग इस का इन्कार करते हैं [155] तो (कुछ परवाह नहीं) हम ने यह (दीन की नेमत) ऐसे लोगों के सुपुर्द की है जो उस के मुन्किर (विरोधी) नहीं हैं।[156]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ
يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا
بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾

90. ये वे लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, अतः तुम भी उन ही की राह पर चलो।[157] (और) कहो मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं माँगता।[158]यह तो एक याददेहानी है दुनिया वालों के लिए।[159]

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ
قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى
لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾

91. उन्हों ने अल्लाह की सही क़दर नहीं जानी जब कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी ।कहो फिर वह किताब किस ने उतारी जिस को मूसा ले कर आए थे [160] और जो रौशनी और हिदायत थी लोगों के लिए जिस को तुम पन्ना पन्ना बना कर दिखाते हो और बहुत सी बातों को छिपाते हो। और तुम को (इस के द्वारा) वह बातें सिखाई गई जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा । कहो (वह किताब) अल्लाह ही ने उतारी है और फिर उन्हें उन की कज बहसों (कुतर्कों) में छोड़ दो कि खेलते रहें।[161]

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ
قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى
لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ
وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنْتُمْ وَلَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ
فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾

92. यह किताब है जिसे हम ने उतारा है।[162] बरकत वाली [163] और पुष्टि करने वाली है पिछली किताब की।[164] और इस लिए हम ने उतारी है ताकि तुम उम्मुल कुरा [165] और इस के इर्द गिर्द में रहने वालों को ख़बरदार करो।[166] जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वे इस पर भी ईमान लाते हैं।[167] और अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।[168]

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ
اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ
وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾

152. अल्लाह की हिदायत से मुराद एकेश्वरवादी व्यवस्था अर्थात् इस्लाम है।

153. अर्थात् बुलन्द दर्जे के ये लोग भी अगर शिर्क कर बैठते तो उन का यह बुलन्द स्थान कभी बाक़ी नहीं रहता और उन के सारे कर्म अकारथ जाते क्यों कि शिर्क माफ़ न किया जाने वाला गुनाह है। जो कोई शिर्क करेगा सज़ा का हक़दार ठहरेगा । और जब बड़े बड़े बुज़ुर्ग भी इस क़ानून से बरी नहीं हैं तो तुम उस की पकड़ से क्यों और कैसे बच सकते हो।

154. हुक्म अर्थात् निर्णय की शक्ति,हिकमत और अल्लाह की हिदायत के तहत शरअी आदेश देने का अधिकार।

155. मुराद मक्का वासी हैं।

156. मतलब यह है कि जिस तरह हम ने उन नबियों को जिन का वर्णन ऊपर हुआ, किताब, हुक्म और नुबुव्वत से अलंकृत किया था आज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस से सुसज्जित किया है। और यह मक्का वासियों के लिए आप के माध्यम से बहुत बड़ी नेमत है। लेकिन अगर ये लोग इस से इन्कार करते हैं तो करें वे अपने ही को इस लाभ से वंचित रखेंगे। हम ने तो इस दीन की नेमत को ऐसे लोगों के सुपुर्द किया है और उन्हें इस का ज़िम्मेदार बनाया है जो इस की नाक़द्री एवं अवहेलना करने वाले नहीं हैं। यह इशारा आप के उन साथियों की ओर है जो आप पर ईमान लाए और आप के लाए हुए दीन की क़द्र (आदर एवं मान) करने वाले बने।

157. अर्थात् उस दीन पर चलो जो उन तमाम नबियों का संयुक्त (Common) दीन है। यह दीन एकेश्वरवाद का दीन है और इस का नाम इस्लाम है।

158. अर्थात् मैं इस सेवा पर जो मानवता की सर्वाधिक बड़ी सेवा है, तुम से किसी मज़दूरी एवं प्रतिफल का अभिलाषी नहीं हूँ बल्कि ये तुम्हारे फ़ायदे के लिए कर रहा हूँ। मानोगे तो इस में तुम्हारा भला है और न मानोगे तो अपना ही नुक़सान कर लोगे।

159. अर्थात् क़ुर्आन दुनिया के सारे इन्सानों के लिए याददेहानी और नसीहत है। उस का संदेश सार्वजनिक है और रहती दुनिया तक के लिए है। वह किसी क़ौम और किसी दौर के लिए विशिष्ट नहीं।

160. इशारा यहूदियों की ओर है जिन्हों ने मक्का के बहुदेववादियों के अन्धाधुन्ध समर्थन में यह बात कही थी। वे यद्यपि कि ''रिसालत'' के क़ायल थे और मूसा को नबी और तौरात को ख़ुदा की किताब मानते थे। लेकिन इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थे कि उन की जाति के बाहर भी कोई नबी नियुक्त हो सकता है। इस लिए ज़िद और हठ्धर्मी की मानसिकता के कारण उन्होंने इस वास्तविकता को ही मानने से इन्कार कर दिया कि अल्लाह ने किसी भी इन्सान पर अपना कलाम (वचन) उतारा है। उन की इस बात पर ग़िरफ़्त करते हुए दो बातें यहाँ कही गई हैं। एक यह कि वह्य के अवतरण का इन्कार करने वाला वास्तव में अल्लाह की हिकमत, उस की नीति एवं तत्वदर्शिता का इन्कार करता है क्यों कि यह बात किस तरह हकीमाना (नीतिपूर्ण एवं तत्वपूर्ण) हो सकती है कि अल्लाह इन्सान की सारी आवश्यकताओं का साधन उपलब्ध करे किन्तु उस की हिदायत एवं रहनुमाई (मार्गनिर्देश) का कोई सामान न करे और दूसरी बात यह कि वे परस्पर विपरीत (Contradict) बातें कहते हैं। एक तरफ़ तो वे वह्य के अवतरण का इन्कार करते हैं और दूसरी तरफ़ मूसा को नबी और तौरात को अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब समझते और मानते हैं।

161. अर्थात् यह बता देने के बाद कि अल्लाह ही ने मूसा पर अपना कलाम (वचन) अवतारित किया था और उसी ने आज अपने पैग़म्बर पर क़ुर्आन नाज़िल फ़रमाया है, इन को इन के हाल पर छोड़ दो । जो लोग दलील से बात समझना नहीं चाहते बल्कि मात्र तर्क वितर्क अथवा कटहुज्जती करना चाहते हैं उन से बहस करना व्यर्थ है।

162. अर्थात् यह किताब मानव रचना नहीं बल्कि ब्राह्माण्ड पर एक मात्र शासन करने वाले की ओर से उतारी गई है और इसी कारण अपनी एक ख़ास पहचान और एक ख़ास शान रखती है।

163. अर्थात् यह किताब ख़ैर और बरकत का स्त्रोत है जिस से दुनिया की क़ौमें लाभान्वित होती रहेंगी और जिस की रौशनी से मानव जीवन के सारे पक्ष प्रकाशमान होंगे।

164. मुराद तौरात है।

165. उम्मुल क़ुरा अर्थात बस्तियों और आबादियों का केन्द्र । मुराद मक्का शहर है। इसे उम्मुल क़ुरा इस लिए कहा गया है कि यहाँ अल्लाह का घर है जहाँ हज्ज का विश्व स्तरीय सम्मेलन होता है। इस विशेषता के आधार पर वह सारी दुनिया के लिए एक दीनी और रुहानी केन्द्र क़रार पाया।

166. अर्थात् क़ुर्आन के पैग़ाम को सब से पहले मक्का वासियों को पहुँचाओ और फिर उस के ईर्द गिर्द और अड़ोस पड़ोस के लोगों तक ताकि तुम्हारा प्रचार क्षेत्र विस्तृत होता चला जाए।

रिसालत की तब्लीग़ एवं उस के प्रचार, प्रसार के लिए मक्का नगर का चुनाव इसी लिए किया गया है कि जो आवाज़ केन्द्र से उठेगी उस से विश्व के जंगल जंगल, पर्वत पर्वत तथा बस्ती बस्ती गूँज उठेगी और उस की गूँज (Echo) दुनिया के चप्पे चप्पे में सुनाई देगी।

167. अर्थात् ये हो नहीं सकता कि जो व्यक्ति वास्तव में

आख़िरत को मानता हो और ख़ुदा के सामने जवाबदेही का भय रखता हो वह इस किताब को ख़ुदा की किताब मानने से इन्कार कर दे । ऐसा व्यक्ति अगर इस किताब का थोड़ा भी अध्ययन करेगा तो वह समझ जाएगा कि यह अल्लाह ही का कलाम है, और इस के बाद उसे ईमान लाने में कोई संकोच न होगा।

यहाँ इशारा ख़ास तौर से अहले-किताब के नेक लोगों की तरफ़ है जो आख़िरत पर ईमान रखते थे। ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाया गया कि वे क़ुर्आन पर भी ईमान लाऐंगे।

168. अर्थात् जिस व्यक्ति का आख़िरत पर वास्तव में ईमान हो उस की ज़िन्दगी से ईश भक्ति की अभिव्यक्ति अवश्य होगी और ईश-भक्ति (ख़ुदा परस्ती) का पहला चिन्ह नमाज़ की पाबन्दी है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

निस्संदेह अल्लाह ही दाने और गुठली को फ़ाड़ने वाला है। वही ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और वही निकालने वाला है मुर्दा को ज़िन्दा से।वही है अल्लाह फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो?(अल-क़ुर्आन)

93. और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े [169] या दावा करे कि मुझ पर वह्य की गई है हालांकि उस पर कोई वह्य न की गई हो ।[170] या कहे कि मैं भी ऐसा कलाम उतारुँगा जैसा कलाम कि अल्लाह ने उतारा है ।[171] काश कि तुम ज़ालिमों को उस हालत में देख लेते जब कि वे मृत्यु यातना में होंगे और फ़रिश्ते हाथ बढ़ाए होंगे कि निकालो अपने प्राण, आज तुम्हें अपमानित करने वाला अज़ाब (यातना) दिया जाएगा इस लिए कि तुम अल्लाह की तरफ़ असत्य बातें संबद्ध करते थे और उस की आयतों के मुक़ाबले में अहं करते थे।[172]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ
وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ
وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا
اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا
كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ
تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

94. (फिर अल्लाह फ़रमाएगा) और तुम हमारे हुज़ूर अकेले अकेले आ गए।[173] जैसा कि हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो कुछ हम ने तुम्हें दिया था वह सब तुम पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते जिन के बारे में तुम्हारा गुमान था कि तुम्हारे मामले में वे (अल्लाह के) साझीदार हैं।[174] तुम्हारा रिश्ता टूट गया [175] और तुम्हारे सारे दावे बेहक़ीक़त (निर्मूल) हो कर रह गए।

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ
مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ
زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ
مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع

95. निस्संदेह अल्लाह ही दाने और गुठली को फ़ाड़ने वाला है।[176] वही ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और वही निकालने वाला है मुर्दा को ज़िन्दा से।[177] वही है अल्लाह फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो?

اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ
الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾

96. वही (अंधकार को) फाड़कर प्रभात निकालता है।[178] उसी ने रात को सुकून का कारण और सूरज और चाँद को हिसाब का मियार (मानक) बनाया है।[179] यह मन्सूबा बन्दी (योजना) है उस की जो ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) भी है और इल्म वाला (सर्वज्ञ) भी।[180]

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ
ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾

97. और वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम थल और समुद्र के अंधकारों में इन के द्वारा रास्ता मालूम करो।[181] जानने वालों के लिए हम ने अपनी निशानियाँ खोल खोल कर बयान कर दी हैं।[182]

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

169. किसी धर्म को गढ़ना या कोई धर्म गढ़ कर उस को धर्म का स्वरुप देना, उस को अल्लाह से झूठ सम्बन्धित करना है और ऐसी हरकत करने वाला सब से बड़ा अपराधी है। उस के अपराध की मिसाल ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति खोटे सिक्के ढाल कर उन को चलाने की कोशिश करे और यह चूँकि दुस्साहस वह ख़ुदा के विरुद्ध (Against) करता है इस लिए वह अत्यन्त संगीन जुर्म का अपराधी होता है।

170. इस से यह बात साफ़ हुई कि नबी होने के झूठे दावेदार सब से बड़े अपराधी हैं क्योंकि वे ख़ुदा और बन्दे दोनों के साथ फ़रेब करते हैं।

171. हक़ की दअवत के मुक़ाबले में आदमी जब विरोध का रास्ता मात्र विरोध करने की ख़ातिर (अर्थात् निरुद्देश्य विरोध) अपनाता है तो उस में सन्जीदगी बाक़ी नहीं रहती । फिर वह व्यर्थ की एवं अनुचित बातें कहने पर उतर आता है। आयत में विरोधियों का जो कथन दिया गया वह इस का स्पष्ट उदाहरण है।

172. यह उत्तर है क़ुर्आन का इन्कार करने वालों के बे सिर पैर की आपत्तियों और व्यर्थ के दावों का कि जब ये ज़ालिम दलील से कोई बात समझना नहीं चाहते तो न समझें। उन को होश तब आएगा जब कि मौत की घड़ी आन टपकेगी और फ़रिश्ते उन के मुँह पर तमाँचे रसीद करेंगे।

आयत से यह बात भी स्पष्ट हुई कि मौत के समय मनुष्य पर वे हक़ीक़तें खुल जाती हैं जिन पर ईमान लाने को कहा गया है एवं यह भी कि मौत मात्र आत्मा के शरीर से निकल जाने का नाम है। और सत्य (हक़) का इन्कार करने वालों की रुहें आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में यातना (अज़ाब) में मुब्तिला रहती हैं।

173. अर्थात् क़ियामत के दिन अल्लाह यह इर्शाद फ़रमाएगा ।

174. अर्थात तुम ने दुनिया में यह सोच रखा था कि तुम्हारे काम सिर्फ़ ख़ुदा के बनाने से नहीं बनते बल्कि इस में उन का भी दख़ल है जिन से तुम को श्रद्धा (अक़ीदत) थी । तुम समझते थे कि उन का ख़ुदा के यहाँ ज़ोर है और उन को ख़ुश करने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा । मगर आज यह तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार (Partner) कहाँ ग़ायब हो गए कि तुम्हारी सहायता के लिए कोई भी मौजूद नहीं ।

175. अर्थात् बनावटी पूज्यों एवं उपास्यों के साथ आस्था एवं श्रद्धा और परस्तिश एवं बन्दगी का जो रिश्ता तुम ने स्थापित किया था वह रिश्ता टूट गया।

176. इस से अल्लाह की क़ुदरत के करिश्मों की ओर ध्यानाकर्षित करना अभिप्रेत है। वह कौन है जो दाने और गुठली को प्रस्फुटित करता है और फिर पौधों और हरे भरे वृक्षों के रुप में विकसित कर देता है?क्या उस की इस क़ुदरत में किसी का कोई दख़ल है? अगर नहीं तो फिर तुम्हारी क़िस्मत के बनाने और बिग़ाड़ने में और तुम्हें लाभ और हानि पहुँचाने में किसी का क्या दख़ल हो सकता है?

177. यह भी अल्लाह ही की क़ुदरत का करिश्मा है कि वह ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है। इन्सान इस को रात दिन अपनी आँखों से देखता है। वनस्पति में इस का उदाहरण गुठली से हरा भरा पेड़ और पेड़ से गुठली, जन्तुओं में अन्डे से परिन्दा और परिन्दे से अन्डे इसी प्रकार पदार्थों एवं तत्वों से मनुष्य और मनुष्य से पदार्थ एवं तत्व । इस सिलसिले का एक स्पष्ट उदाहरण ज़िन्दा औरत के गर्भ से मुर्दा बच्चे का जन्म भी है।

178. ऊपर की आयत में ज़मीन पर प्रकट होने वाले क़ुदरत के करिश्मों का वर्णन था। इस आयत में आसमान में प्रकट होने वाले क़ुदरत के करिश्मों का वर्णन है। क्षितिज पर प्रात: का प्रकाश रात के अन्धकार को फ़ाड़ कर प्रकट होता है और अचेत अवस्था में पड़े हुए लोगों को सचेत करता है कि वे अपने जीवन की सुबह की शुरुआत अपने रब के करिश्मों की स्वीकृति से करें।

179. सूरज और चाँद समय और तारीख़ मालूम करने का साधन हैं। दिन और रात का पता सूरज के निकलने और डूबने से चलता है और चाँद की भिन्न भिन्न शक्लों से तारिखों का पता चलता है फिर इसी से महीने और साल बनते हैं। समय और तारीख़ के निश्चित करने का यह मेयार जो आसमान में स्थापित कर दिया गया और जो मनुष्य की एक महत्वपूर्ण ज़रुरत को पूरा करता है,अल्लाह की क़ुदरत का कितना बड़ा करिश्मा है।

180. अर्थात् ज़मीन और आसमान की यह व्यवस्था न अललटप है और न इस में ख़ुदा के साथ किसी और का दख़ल है बल्कि यह सब उस हस्ती की योजना (Planning) है जिस की क़ुदरत भी ज़बरदस्त है और जिस का इल्म (ज्ञान) भी सर्वव्यापी है।

181. सितारे बियाबान और समुद्र का सफ़र करने वालों के लिए अन्धेरों में रौशनी का काम देते हैं। और इन के द्वारा दिशा का निर्धारण भी होता है। इस लिए वैज्ञानिक आविष्कारों से पहले मानव सितारों की रहनुमाई में सफ़र तय करता था और आज भी जहाज़ रानी (Navigation,नौसंचालन एवं विमान संचालन) में इस से मदद ली जाती है। दूसरे शब्दों में सितारों को अल्लाह तआला ने इन्सान की ख़िदमत के लिए पैदा किया है। किन्तु मानव ने अपनी मूर्खता से इन को सेवक की जगह स्वामी समझ लिया और फिर इन की पूजा करने लगे।

182. अर्थात जो लोग बुद्धि एवं विवेक से काम लेते हैं वे इन निशानियों पर ग़ौर कर के वास्तविकता को जान लेते हैं।

98. और वही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया।[183] और फिर हर एक के लिए एक ठहरने की जगह है और एक सुपुर्द किए जाने की।[184] समझने वालों के लिए हम ने अपनी निशानियाँ खोल कर बयान कर दी हैं।[185]

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ
وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

99. और वही है जिस ने आसमान से पानी बरसाया,[186] फिर हम ने [187] उस से हर प्रकार की वनस्पति उगाई, फिर उस से हरी भरी शाखें निकालीं जिन से हम परत दर परत दाने पैदा कर देते हैं और ख़जूर के गाभों से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार, परस्पर मिलते जुलते भी और एक दूसरे से भिन्न भी।[188] इन के फलों को देखो। जब वे फलते हैं और इन के पकने को भी देखो।[189] इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ
شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ
مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ
وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ
اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

100. इन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहराया है, हालाँकि उसी ने उन्हें पैदा किया है।[190] और इन्हों ने बे जाने बूझे उस के लिए बेटे और बेटियाँ रच लीं।[191] वह पवित्र (निर्लिप्त) एवं उच्च है उन बातों से जो ये बयान करते हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾

101. वह आसमानों और ज़मीन का अविष्कारक [192] (ईजाद करने वाला) है, उस के औलाद कैसे हो सकती है जब कि उस की कोई बीवी नहीं,[193] और उस ने तमाम चीज़ों को पैदा किया और वह हर चीज़ का इल्म रखता है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ
صَاحِبَةٌ ۭ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

102. यही अल्लाह तुम्हारा रब (पालनहार) है उस के सिवा कोई पूज्य (माबूद) नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला। अतः तुम उसी की इबादत करो।[194] वह हर चीज़ की कफ़ालत (ज़रुरतों को पूरा) करने वाला है।[195]

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ
عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾

103. निगाहें उस को नहीं पा सकतीं वह निगाहों को पा लेता है।[196] वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और बाख़बर (अवगत) है।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ
الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾

183. इस की व्याख्या सूरह निसा नोट२,और३ में गुज़र चुकी ।

184. ठहरने की जगह से मुराद दुनिया में रहने और बसने की जगह है और सुपुर्द किए जाने की जगह से मुराद वह जगह है जहाँ वह मौत के बाद सुपुर्द किया जाता है। मतलब यह है कि इन्सान अल्लाह ही की ज़मीन पर बसता और अल्लाह ही की ज़मीन में दफ़न होता है। और जब मनुष्य जन्म से ले कर मृत्यु तक उसी की सल्तनत में रहता है तो फिर उस से बग़ावत का दुस्साहस कैसे करता है।

185. अर्थात् जो लोग समझ बूझ से काम लेते हैं वे इन निशानियों के द्वारा तौहीद को पा लेते हैं जिस की दअवत क़ुर्आन दे रहा है।

186. पानी चूँकि आसमान की तरफ़ से अर्थात् बुलन्दी से बरसता हैं, इस लिए मुहावरे में आसमान से पानी बरसना कहते हैं। ऐसे मौक़े पर शाब्दिक अर्थ अभिप्रेत नहीं होते।

187. पहले वाक्य में अल्लाह तआला ने अपने लिए अन्य पुरुष का सर्वनाम (Third person pronoun) ''जिस ने'' इस्तेमाल किया और दूसरे वाक्य में मध्यम पुरुष का सर्वनाम (Second person pronoun) ''हम ने'' इस्तेमाल किया है। सर्वनाम (Pronoun) का यह परिवर्तन शैली की दृष्टि से भी होता है और दूसरे पहलुओं से भी । यहाँ सर्वनाम का परिवर्तन इस लिए हुआ है कि कलाम का रुख़ अल्लाह की क़ुदरत के बयान से रुबूबियत के बयान की तरफ़ हो गया है।

188. अर्थात् रुप एवं आकृति में मिलते जुलते हैं किन्तु स्वाद एवं विशेषताओं में भिन्न।

189. इन्सान के लिए ज़मीन पर जो दस्तरख़्वान बिछा दिया गया है उस में हर तरह का अनाज भी है और तरह तरह के फल भी । ये चीज़ें जिस तरह पैदा होती, बढ़ती, और पकती हैं उन पर अगर आदमी ग़ौर करे तो उसे हर चीज़ में कारीगरी के आश्चर्यचकित कर देने वाले नमूने और रुबूबियत के हैरत अंगेज़ करिश्मे दिखाई देंगे। अगर उस की आँखें खुली हैं और दिल जागृत है तो उस का मस्तिष्क इस कारीगरी से उस के कारीगर की तरफ़ और क़ुदरत की इस सुव्यवस्थित व्यवस्था से कायनात के रब (प्रभु) की तरफ़ अवश्य मुड़ेगा और उस की सही पहचान उस के अन्दर पैदा होगी।

आज वनस्पति विज्ञान (Botany) ने मानव पर वनस्पति का संसार इस तरह उज्जवल कर दिया है कि क़ुदरत के बेशुमार करिश्मे इस विज्ञान के क्षेत्र में आ गए हैं मगर चूँकि इन चीज़ों का अध्ययन इस पक्षपात पूर्ण मानसिकता के साथ किया जाता है कि उन्हें इस मसले को छेड़ना ही नहीं है कि इन का कोई रचयिता है या नहीं और न उस का परिचय एवं पहचान प्राप्त करने से उन्हें कोई दिलचस्पी है। अत: ज्ञान के इस भंडार में असल हक़ीक़त दब कर रह जाती है। और क़ुदरत की इस सुव्यवस्थित व्यवस्था में कायनात के रब का जलवा दिखाई नहीं देता ।

190. अन्धविश्वासी लोग जिन्नों के बारे में यह धारणा रखते हैं कि वे उन पर बला बन कर नाज़िल हो सकते हैं। उन की क़िस्मतों पर प्रभाव डाल सकते हैं और उन्हें रोगों आदि में मुब्तिला कर सकते हैं। अरब के बहुदेववादी इसी तरह के अंधविश्वास में लिप्त थे और आफतों से बचने के लिए वे जिन्नों की पूजा करते और उन को नज़रें तथा भेंट अर्पित करते थे। भारत के बहुदेववादी भी इस अन्धविश्वास में अरब के बहुदेववादियों से पीछे नहीं बल्कि दो क़दम आगे ही हैं। जिन्नों की धारणा उन के यहाँ भूत और राक्षस के रुप में पाई जाती है और उन के नुक़्सान से बचने के लिए वे उन की परस्तिश भी करते हैं उन पर भेंट भी चढ़ातें हैं और उन की जय जयकार भी करते हैं।

क़ुर्आन इन सब चीज़ों को व्यर्थ एवं ख़ुराफ़ात ठहराता है और जिन्नों के बारे में इस वास्तविकता से अवगत कराता है कि वे अल्लाह की पैदा की हुई एक मख़लूक़ (सृष्टि) हैं अत: उन को सृष्टा के बराबर समझना परले दर्जे की मूर्खता है। जिस तरह इन्सान एक बेबस सृष्टि है उसी तरह जिन्न भी बेबस सृष्टि हैं। लाभ, हानि कुछ भी उन के अधिकार में नहीं है। वे न बीमारियाँ ला सकते हैं और न क़िसमतों (भाग्य) को बना या बिगाड़ सकते हैं इस लिए उन से डरते रहना और उन की परस्तिश करना कदापि ग़लत है।

191. मक्का के बहुदेववादियों की फ़रिश्तों के बारे में यह धारणा थी कि वे ख़ुदा की बेटियाँ हैं और ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा क़रार देते हैं मगर इस पर वैज्ञानिक प्रमाण नहीं प्रस्तुत करते बल्कि केवल अज्ञानता के कारण लोगों ने इस तरह के विचार गढ़ लिए हैं।

192. अर्थात् अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला और बिना किसी उदाहरण और नमूने के पैदा करने वाला।

193. ख़ुदा की पत्नी होने के न तो मक्का के बहुदेववादी क़ायल थे और न अहले-किताब फिर भी वे उस की औलाद होने की धारणा रखते थे। गोया वे यह महसूस करते थे कि ख़ुदा की पत्नी होने की धारणा उस की शान के ख़िलाफ़ और एक घटिया कल्पना है जो ख़ुदा की कल्पना के साथ मेल नहीं खाती। लेकिन उन का यह एहसास उस समय मुर्दा हो जाता था जब कि वे ख़ुदा की औलाद होने की कल्पना गढ़ते थे। यहाँ उन के मन के इसी विरोध को स्पष्ट किया गया है।

यह तो था अरब के बहुदेववादियों की ख़ुदा के बारे में धारणा एवं कल्पना। किन्तु भारत के बहुदेववादियों की ईश्वर की

कल्पना इस से अधिक विचित्र है। इन्हों ने जो बहुत से ख़ुदा बना रखे हैं तो साथ ही उन की पत्नियाँ भी गढ़ रखी हैं। और कुछ देवताओं के बारे में तो उन का ख़्याल है कि उन की कई कई पत्नियाँ थीं । इस तरह उन्होंने ख़ुदा को इन्सान की सतह पर लाने में कोई कसर उठा नहीं रखी । सत्यता यह है कि मनुष्य जब शिर्क (बहुदेववाद) में लिप्त होता है तो वह ख़ुदा की क़द्र (Value) भी घटा देता है और साथ ही अपनी मानसिकता की संकीर्णता एवं उस के दिवालिया पन का सबूत देता है।

194. इस तर्क का सार यह है कि जब अल्लाह ही तुम्हारा और हर चीज़ का पैदा करने वाला (सृष्टा) है तो वही सब का प्रभु एवं स्वामी भी है। दूसरा कोई सृष्टा नहीं तो प्रभु एवं स्वामी कैसे हो सकता है और इबादत का हक़दार कैसे बन सकता है। अत: मनुष्य के लिए यही सही विचारधारा है कि वह अल्लाह ही को प्रभु, स्वामी एवं पूज्य माने और उस के लिए सही कार्य पद्धति यही है कि वह उसी की इबादत करे।

195. अल्लाह ही कफ़ील अर्थात आवश्यकताओं का पूरा करने वाला है अत: उसी से आस लगाओ।

196. अर्थात् यद्यपि कि तुम ख़ुदा को अपनी आँख से देख नहीं पाते लेकिन वह अच्छी तरह तुम्हें देख रहा है। अत: कोई व्यक्ति इस ख़ाम ख़्याली में मुब्तिला न रहे कि जब ख़ुदा दिखाई नहीं देता तो उस का अस्तित्व ही नहीं। वास्तविक सत्यता यह है कि मनुष्य की निगाहें ख़ुदा को देखने का भार सहन नहीं कर सकतीं। जब मनुष्य की निगाहें भौतिक एवं प्रकृतिक संसार की कितनी ही चीज़ों को देखने से वन्चित रहती हैं। जैसे वह रुह को जो इन्सान ही के शरीर में रहती है, देख नहीं पाता । हवा और बिजली के प्रवाह (Current) यद्यपि महसूस होने वाली चीज़ें हैं किन्तु आँखों के बस की बात नहीं कि उसे देख सकें। आसमान से आगे जो कायनात है उस को देखने से भी आँखे वन्चित हैं तो फिर वे महिमावान ख़ुदा को देखने की ताब कहाँ से ला सकती हैं?

अत: सर की आँखों से ख़ुदा को देखने की कोशिश एक व्यर्थ की चेष्टा है इस के लिए कितना ही और कैसे ही रियाज़ एवं परिश्रम किया जाए। अलबत्ता संसार में फैली हुई निशानियों का अवलोकन कर के मनुष्य ख़ुदा की पहचान एवं उस का ज्ञान प्राप्त कर सकता है और दिल की आँखों में ज्योति हो तो हर पुष्प और हर वृक्ष में उस की महिमा, और उस का जलवा देख सकता है।

❖❖❖❖❖❖

ये लोग अल्लाह की कड़ी क़समें खा कर कहते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आ जाए तो वे ज़रुर ईमान लाऐंगे ।कहो निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं और तुम्हें क्या मालूम कि अगर वे भी आ जाऐं तो ये ईमान नहीं लाऐंगे।(अल-क़ुर्आन)

104. तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास बसीरत की (आँखें खोल देने वाली) बातें आ चुकी हैं, तो जो कोई सूझ बूझ से काम लेगा वह अपना ही भला करेगा और जो अन्धा बना रहेगा वह अपना ही नुक़्सान करेगा । मैं तुम पर निगराँ (देख रेख करने वाला) नहीं नियुक्त किया गया हूँ।[197]

قَدْ جَآءَكُم بَصَآئِرُ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ
عَمِىَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَآ أَنَا۠ عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾

105. इस तरह हम विभिन्न तरीक़ों से आयतें बयान करते हैं और इस लिए बयान करते हैं ताकि वे कहें कि तुम ने (अच्छी तरह) पढ़ कर सुना दिया तथा इस लिए कि जो लोग जानते हैं उन के लिए हम इस को रौशन करें।[198]

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ ٱلْءَايَٰتِ وَلِيَقُولُوا۟ دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُۥ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٥﴾

106. तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर जो वह्य नाज़िल हुई है उस की पैरवी करो। उस के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और बहुदेववादियों से बच कर रहो।[199]

ٱتَّبِعْ مَآ أُوحِىَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ
عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾

107. अगर अल्लाह चाहता तो ये शिर्क न करते,[200] और हम ने तुम को इन पर निगराँ नहीं मुक़र्रर किया है और न तुम इन के ज़िम्मेदार हो ।[201]

وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشْرَكُوا۟ ۗ وَمَا جَعَلْنَٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ
وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾

108. और ये लोग अल्लाह के सिवा जिन को पुकारते हैं उन को बुरा भला न कहो कि फिर वे भी सीमोल्लंघन कर के बिना समझे बूझे अल्लाह को बुरा भला कहने लगें।[202] इस तरह हम ने हर गिरोह के लिए उस के अमल को ख़ुशनुमा (शोभायमान) बना दिया है।[203] फिर उन्हें अपने रब ही की तरफ़ पलट कर जाना है। उस समय वह उन्हें बता देगा कि वे क्या करते रहे हैं।

وَلَا تَسُبُّوا۟ ٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ فَيَسُبُّوا۟ ٱللَّهَ عَدْوًۢا
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم
مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾

109. ये लोग अल्लाह की कड़ी क़समें खा कर कहते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आ जाए[204] तो वे ज़रुर ईमान लाऐंगे । कहो निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं[205] और तुम्हें क्या मालूम[206] कि अगर वे भी आ जाऐं तो ये ईमान नहीं लाऐंगे।

وَأَقْسَمُوا۟ بِٱللَّهِ جَهْدَ أَيْمَٰنِهِمْ لَئِن جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ
بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا ٱلْءَايَٰتُ عِندَ ٱللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَآ إِذَا
جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

110. हम इसी तरह इन के दिलों और इन की निगाहों को उलट रहे हैं जिस तरह ये पहली बार इस पर ईमान नहीं लाए[207] और हम इन्हें छोड़ रहे हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें।

وَنُقَلِّبُ أَفْـِٔدَتَهُمْ وَأَبْصَٰرَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا۟ بِهِۦٓ أَوَّلَ
مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِى طُغْيَٰنِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾ ع

197. यह अल्लाह का कलाम है किन्तु इस में उत्तम पुरुष (First Person) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

मैं तुम पर ''निगराँ नहीं हूँ'' अर्थात् तुम्हारे कर्मो का कोई दायित्व मुझ पर नहीं डाला गया है।

198. अर्थात तौहीद (एकेश्वरवाद) की ये दलीलें जो ऊपर बयान हुई, कई पहलुओं से और विभिन्न शैलियों में क़ुर्आन में बार बार बयान की गई हैं जिन से दो बातें अभिप्रेत हैं। एक यह कि लोगों पर आदेश स्पष्ट हो जाएं और उन पर तर्क प्रस्तुति हो जाए और वे आज नहीं तो कल इस बात को स्वीकार करें कि पैग़म्बर ने हमें तौहीद का सबक पढ़ाने में कोई कसर उठा नहीं रखी बल्कि अच्छी तरह पढ़ा दिया था। दूसरी बात यह कि जो लोग अकल से काम लेते हैं और जानते हैं कि अल्लाह ही उन का रब है उन पर तौहीद की हक़ीक़त पूरी तरह ख़ुल जाए।

199. यहाँ बहुदेववादियों से विमुखता अपनाने अथवा उन से बच कर रहने का मतलब यह है कि तौहीद के इन स्पष्ट प्रमाणों को प्रस्तुत करने के बाद भी अगर बहुदेववादियों को अपनी आस्थाओं, धारणाओं एवं कार्मो पर अड़े रहने की ज़िद है तो उन को उन के हाल पर छोड़ दो ।

200. अर्थात् अल्लाह अगर दीन के मामले में लोगों को मजबूर करना चाहता तो कोई व्यक्ति भी शिर्क नहीं कर सकता था लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी यह न हुई बल्कि उस ने चाहा कि मनुष्य की आज़माइश हो और इस के लिए उस पर सत्य और असत्य की राहें स्पष्ट कर के उस को उन में से किसी एक राह को चुन लेने की आज़ादी दे दी जाए। अत: अल्लाह की प्रदान की हुई इस आज़ादी का कोई व्यक्ति ग़लत इस्तेमाल करना चाहता है और तुम्हारी बात पर कान धरना नहीं चाहता है तो उस को उस के हाल पर छोड़ दो ।वह उस का भुगतान भुगतेगा। तुम्हें परेशान होने की ज़रुरत नहीं है।

201. अर्थात हम ने तुम को पैग़म्बर (संदेष्टा) बनाया है लोगों की धारणाओं और उन के कर्मो का ज़िम्मेदार नहीं बनाया कि तुम से उन के रवैया के बारे में पूछ ताछ हो।

202. ईमान वालों को यह हिदायत की गई है कि वे तब्लीग़ (प्रचार) के जोश में बहुदेववादियों के माबूदों को बुरा भला न कहें वरना संभव है कि वे उत्तेजित हो कर अल्लाह को बुरा भला कहने लगें। अरब के बहुदेववादी अल्लाह को मानते थे फिर भी यह प्रतिक्रिया हो सकती थी कि वे उत्तेजना की दशा में ख़ुदा को बुरा भला कहने लगें।

इस का मतलब यह नहीं है कि उन के साथ उदारता बरतते हुए उन के माबूदों एवं उपास्यों को ग़लत न कहा जाए। क्यों कि हक़ (सत्य) को स्पष्ट करने के लिए असत्य एवं ग़लत को असत्य एवं ग़लत कहना ज़रुरी है। अगर विष को विनाशकारी न कहा जाए तो मालूम नहीं कितने लोग विष का सेवन कर के अपने जीवन से हाथ धो बैठेंगे। और अगर आग से बच्चे को दूर न रखा जाए तो वे उस की ज्वाला को ज्योति समझ कर तथा उस से प्रभावित हो कर अपना हाथ उस में डाल ही देगा। अत: अगर लोगों को विनाश से बचाना है तो अनुचित उदारता और बेढब रिआयत के बग़ैर विनाशकारी को विनाशकारी कहना ही पड़ेगा । इसी लिए क़ुर्आन में बुतों की बेबसी और बुतपरस्ती के बुरे अन्जाम को दो टोक अन्दाज़ में पेश किया गया है।

203. अर्थात् जिस तरह हम ने बहुदेववादियों के अमल को उन की नज़रों में प्रिय बना दिया है उसी तरह हर गिरोह के लिए उस के अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है।

मतलब यह है कि हर गिरोह अपने अमल को बेहतर समझ कर ही उस पर कार्यरत होता है चाहे वास्तव में वह बेहतर नहीं बल्कि ख़राब हो । अत: किसी भी गिरोह के तौर तरीक़ों पर अनुचित हमले करने से उस का सुधार नहीं हो सकता बल्कि सन्जीदगी और हिकमत के साथ उन का ग़लत और बातिल होना उन पर स्पष्ट कर देने से सुधार की आशा की जा सकती है।

स्पष्ट रहे कि हर गिरोह को उस के अमल का ख़ुशनुमा दिखाई देना भी क़ुदरत के क़ानून के अन्तर्गत होता है। और यह क़ुदरत का क़ानून अल्लाह ही का बनाया हुआ है। इस लिए ख़ुशनुमा कर के दिखाने की निस्बत अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ की है।

204. यहाँ निशानी से मुराद महसूस करने वाली निशानी अर्थात् मोअजज़ा (चमत्कार) है।

205. इस की व्याख्या नोट ६५ में गुज़र चुकी ।

206. सम्बोधन मुसलमानों से है जो चाहते थे कि मोअजज़ा प्रकट हो जाए ताकि काफ़िर ईमान लाए।

207. अर्थात् जिस प्रकार पहली बार ईमान लाने में उन के दिल और उन की निगाहों की संकीर्णता एवं ख़राबी रोड़ा रही उसी तरह अब भी रोड़ा है और अल्लाह की सुन्नत (प्राकृतिक विधान) यह है कि जो उल्टी खोपड़ी से सोचता है उस को हर चीज़ उल्टी दिखाई दे इस लिए ऐसे लोगों को मोअजज़े दिखाना भी किसी परिणाम को सामने नहीं लाता । अलबत्ता अगर वे समझने का तरीक़ा अपनाऐं तो जो तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत किए गऐं है उन की रौशनी में वे हक़ (सत्य) को पा सकते हैं।

111. अगर हम इन की तरफ़ फ़रिश्ते उतार देते और मुर्दे इन से बातें करने लगते और इन के सामने सारी चीज़ें जमा कर देते तब भी ये ईमान लाने वाले न थे यह और बात है कि अल्लाह ही की मशिय्यत (मर्ज़ी)हो [208]। अगर बहुतेरे लोग जिहालत की बातें करते हैं।[209]

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَآ إِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَ
حَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوٓا إِلَّآ أَن يَشَآءَ
اللّٰهُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ١١١

112. और इसी तरह हम ने इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया है [210] जो फरेब देने के लिए एक दूसरे के दिल में लुभावनी बातें डालते हैं।[211] अगर तुम्हारा रब चाहता तो वे ऐसा न कर पाते। अतः तुम इन्हें छोड़ दो कि वे झूठारोपण करते रहें।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ
يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَآءَ
رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ١١٢

113. और (उन्हें यह ढील इस लिए दी जा रही है) ताकि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल उस की ओर झुकें।[212] और उस को पसन्द करें और जो कमाई इन्हें करना है कर लें।

وَلِتَصْغٰٓى إِلَيْهِ أَفْـِٔدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْأٰخِرَةِ
وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ١١٣

114. क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और फ़ैसला करने वाला तलाश करुँ हालाँकि वही है जिस ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है जो खोल खोल कर बातें बयान करने वाली है।[213] और जिन को हम ने (इस से पहले) किताब प्रदान [214] की, वे जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ नाज़िल हुई है। अतः तुम शक करने वालों में से न हो जाओ।[215]

أَفَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِيٓ أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ
مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ ءَاتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ
مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ١١٤

115. और तुम्हारे रब की बात सच्चाई और इन्साफ़ के साथ पूरी हो गई।[216] कोई नहीं जो उस की बातों को बदल सके और वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।[217]

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهِۦ ۚ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ١١٥

116. और ज़मीन पर बसने वालों में बहुतेरे लोग ऐसे हैं कि अगर तुम उन के कहे पर चलो तो वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे। वे केवल गुमान पर चलते हैं और अटकल की बातें करते हैं।[218]

وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ
إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ١١٦

208. जो लोग ज़िद या विद्वेष के कारण हक को क़ुबूल न करने का मन बना चुके हों उन को हक़ का क़ायल नहीं किया जा सकता चाहे उन को एक से एक चकित कर देने वाले मोअजज़े क्यों न दिखा दिए जाऐं क्यों कि जब उन्हें मानना ही नहीं है तो वे हर मोअजज़े से बचने का कोई न कोई अर्थ निकाल लेंगे। अलबत्ता अगर अल्लाह उन्हें ईमान लाने के लिए मजबूर करना चाहता तो कोई व्यक्ति भी ईमान लाए बग़ैर न रहता मगर यह अल्लाह तआला की उस योजना के विरुद्ध है जिस के अन्तर्गत उस ने इन्सान को ईमान लाने या न लाने का इख़्तियार प्रदान किया है।

209. अर्थात अल्लाह की उस योजना को नज़रंदाज कर के वे जो बातें करते हैं वो मात्र जज़्बाती (भावनात्मक) होती हैं। वो ज्ञान एवं वास्तविकता पर नहीं बल्कि अज्ञानता एवं जिहालत पर आधारित होती हैं।

210. अर्थात् आज नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ मुख़ालफ़तों का जो तूफ़ान उठ खड़ा हुआ है जिस में इन्सानों और जिन्नों में पाए जाने वाले शैतान आगे आगे हैं तो यह कोई नई बात नहीं बल्कि यह मामला हर नबी के साथ पेश आता रहा है।

शैतानों को उपद्रव उत्पन्न करने का यह मौक़ा अल्लाह तआला की दी हुई मुहलत ही के फलस्वरुप मिलता है इस लिए इस वास्तविकता को ''नबी का दुश्मन बना कर खड़ा कर देना'' कहा गया है। मतलब यह है कि शैतान ये उपद्रव एवं फितना बरपा नहीं कर सकते थे अगर अल्लाह उन्हें इस की मुहलत न देता। लेकिन अल्लाह ने इस की मुहलत उन्हें इस लिए दी है ताकि हक़ और बातिल की इस कश्मकश में असल जौहर छट कर सामने आ जाए।

211. ''ज़ुख़रुफ़लक़ौल'' (लुभावनी बात) से मुराद वे झूठी बातें हैं जिन को ऐसा बनाया गया हो कि लोग उस की ओर आकर्षित हों मिसाल के तौर पर क़ुर्आन में जब मुर्दार के हराम होने का हुक्म नाज़िल हुआ तो कुफ़्फ़ार ने लोगों को वरग़लाने के लिए यह शोशा छोड़ दिया कि जिस जानवर को इन्सान ने मारा हो वह तो हलाल लेकिन जिस को अल्लाह ने मारा हो वह हराम। यह कैसी बात है !

और मौजूदा ज़माने में नये अन्दाज़ से चिकनी चुपड़ी बातें पेश की जा रही हैं जैसे यह कि ''सारे धर्म सच्चे हैं'' या यह कि ख़ुदा तक पहुँचने की राहें अलग अलग हैं किन्तु मन्ज़िल सब की एक ही है।'' या परिवार नियोजन का यह लुभावना नारा कि ''हम दो हमारे दो'' तीसरा अभी नहीं और उस के बाद कभी नहीं। इसी तरह ''धर्म का सम्बन्ध निजी जीवन से है।'' ''स्त्री-पुरुष समानता'' और ''धर्म अफ़ीम है'' जैसे लुभावने नारे मनचले एवं उपद्रवी मानसिकता वालों के ही गढ़े हुए हैं।

212. और वह वास्तविकता है कि दीन के बारे में फ़ितना फैलाने वालों की लुभावनी बातें, ऐसे ही लोगों को अपील करती हैं जिन का मन आख़िरत की धारणा से ख़ाली होता है।

213. अर्थात् हक़ (सत्य) क्या है और बातिल (असत्य) क्या है इस के फैसले का इख़्तियार अल्लाह ही को है। वह सृष्टा भी है और रब अर्थात् पालनहार भी और उस ने अपना फ़ैसला क़ुर्आन के रुप में नाज़िल फ़रमाया है। इस लिए तमाम उलझे एवं फंसे हुए मामलों में यह किताब निर्णायक है और अल्लाह के प्रमाण की हैसियत रखती है, मगर तुम चाहते हो कि मैं अल्लाह को छोड़ कर किसी और को निर्णायक मान लूँ और धारणाओं, तथा हलाल और हराम के सम्बन्ध में किसी ऐसी चीज़ की ओर झुकूँ अथवा पलटूँ जो अल्लाह द्वारा प्रमाणित नहीं है। जैसे वे बातें जो धर्म के नाम से चल पड़ी हैं या वह सभ्यता जो बाप दादाओं द्वारा छोड़ी गई हैं या वे अंधविश्वास एवं ख़ुराफ़ात जो मात्र जाहिलिय्यत की पैदावार हैं।

214. मुराद अहले किताब के गिरोह से सम्बन्ध रखने वाले सच्चे और ईमानदार लोग हैं।

215. सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है किन्तु बात का इशारा हर क़ुर्आन पढ़ने वाले की तरफ़ है और समझाना यह अभिप्रेत है कि क़ुर्आन का अवतरण कोई अनोखी बात नहीं हैं। इस से पहले भी अल्लाह तआला किताबें नाज़िल कर चुका है जिस के गवाह अहले किताब हैं और उन में जो लोग सत्यप्रिय हैं वे क़ुर्आन की आवाज़ सुन कर पहचान लेते हैं कि यह आसमानी आवाज़ है। इस लिए क़ुर्आन के अल्लाह की किताब होने के बारे में मामूली संदेह की भी गुनजाइश नहीं।

216. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी नियुक्त होने से सम्बन्धित जो वादा अल्लाह तआला ने अहले-किताब से किया था और जिस का वर्णन तौरात और इन्जील में मौजूद है वह पूरा हो कर रहा। इस तरह ख़ुदा के फ़रमान की सच्चाई भी साबित हो गई और न्याय का तक़ाज़ा भी पूरा हो गया। अर्थात क़ुर्आन के अवतरण से अल्लाह की हुज्जत (तर्क) लोगों पर क़ायम हो गई।

217. अर्थात् अल्लाह तआला जानता है कि कौन उस की बातों को झुठलाता है और कौन उस की बातों की सच्चाई पर विश्वास करता है।

218. हक़ और बातिल (सत्य और असत्य) के मामले

में कसौटी, तर्क एवं प्रमाण है न कि लोगों की संख्या में बहुत या कम होना। ख़ुदा और मज़हब जैसे बुनियादी मामलों में दुनिया की भारी संख्या हमेशा जिहालत में मुब्तिला रही है। और अटकल के तीर चलाती रही है यही कारण है कि मानवता का इतिहास नैतिक एवं व्यवहारिक पतन का इतिहास बन कर रह गया है। और आज के दौर में तो कोई बुराई ऐसी नहीं जिस ने सार्वजनिक महामारी का रुप न धार लिया हो। ऐसी परिस्थिति में मनुष्यों की भारी तादाद लोगों की रहनुमाई तो करने से रही अलबत्ता उन की गुमराही में वृद्धि अवश्य कर सकती है। इस लिए क़ुर्आन का कहना है कि सत्य और असत्य के मामले में जनता की भारी संख्या, या सार्वजनिक राय हुज्जत (तर्क) नहीं हो सकती बल्कि हुज्जत या तो वे निशानियाँ हो सकती हैं जो कायनात में और स्वयं मनुष्य के अपने अस्तित्व में फैली हुई हैं या फिर अल्लाह की किताब जो अल्लाह के प्रमाण की हैसियत रखती है।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

फिर जिस (ज़बीहे) पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे खाओ अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो।(अल-क़ुर्आन)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

117. निस्संदेह तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन लोग उस के रास्ते से भटके हुए हैं और क़ौन सीधी राह पर हैं।[219]

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

118. फिर जिस (ज़बीहे) पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे खाओ अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो।[220]

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ
لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا
لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

119. और वह ज़बीहा तुम क्यों न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो जब कि उस ने तुम पर जो कुछ हराम किया है उसे खोल कर बयान कर दिया है साथ ही मजबूरी की हालत में इस की अनुमति भी दी है।[221] और बहुत से लोग ऐसे हैं जो इल्म के बग़ैर मात्र अपनी इच्छाओं के कारण लोगों को गुमराह करते हैं। इन हद से गुज़रने वालों को तुम्हारा रब अच्छी तरह जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾

120. और खुले गुनाह को भी छोड़ दो और छिपे गुनाह को भी।[222] जो लोग गुनाह कमाते हैं वे ज़रुर अपनी कमाई का बदला पाऐंगे।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ
الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ
أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

121. और जिस (ज़बीहे) पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसे न खाओ। यह नाफ़रमानी है।[223] और शैतान अपने साथियों के दिलों में वसवसे डालते हैं ताकि वे तुम से झगड़ें। लेकिन अगर तुम ने उन का कहा माना तो तुम भी मुश्रिक हो जाओगे।[224]

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ
فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ
كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

122. क्या वह व्यक्ति जो मुर्दा था फिर हम ने उसे ज़िन्दा कर दिया और उस को रौशनी प्रदान की जिस को ले कर वह लोगों के बीच चलता है, उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अन्धेरों में पड़ा हुआ हो और उन से निकल ही न सके।[225] इसी तरह काफ़िरों के लिए उन के कर्म लुभावने बना दिए गए है।[226]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا
فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

123. इसी तरह हम ने हर आबादी में बड़े बड़े मुजरिमों को उठा खड़ा किया है ताकि वे चाल बाज़ियाँ करें ।[227] और वास्तव में ये चालबाजियाँ वे अपने ही विरुद्ध कर रहे हैं। मगर उन्हें इस का एहसास नहीं।[228]

219. इस लिए अपने रब की रहनुमाई स्वीकार करो और लोगों के किसी तरफ़ भारी संख्या में जाने से धोखा न खाओ।

220. अर्थात् लोगों ने गुमान के आधार पर जो तौर तरीक़े प्रचलित कर रखे हैं उन में खाने के सिलसिले की अनावश्यक पाबन्दियाँ भी हैं अत: अरब के बहुदेववादियों ने चौपायों की एक क़िस्म को हराम ठहरा दिया था। जैसे वह ऊँटनी जिस ने इतने और इतने बच्चे जने हों । अगर उस को अल्लाह का नाम ले कर ज़बह किया गया हो तब भी वे उस का गोश्त खाना हराम समझते थे। इस लिए फ़रमाया गया कि जिन जानवरों को अल्लाह ने हलाल ठहराया है उन को ज़बह करते समय यदि अल्लाह का नाम लिया गया हो तो फिर उन का गोश्त खाने में ईमान वालों को कोई संकोच नहीं होना चाहिए। इस मामले में संकोच का अर्थ यही है कि बहुदेववादी अंधविश्वास का असर अभी बाक़ी है।

ख़ाने के मामले में भ्रम एवं अंधविश्वास पर विश्वास भारत के बहुदेववादियों के रग रग में इस प्रकार से पेवस्त हो गया है कि न केवल कुछ हलाल चौपायों के सम्बन्ध में वे ऐसे संवेदनशील साबित हुए हैं बल्कि सिरे से मांस खाने ही को उन्हों ने हराम ठहरा दिया है।

221. इशारा है सूरह नहल की आयत ११५ की तरफ़ जिस में यह हुक्म बयान हुआ है:

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ . (النحل-١١٥)

"उस ने तुम पर हराम ठहराया है सिर्फ मुर्दार, ख़ून, सुअर का गोश्त और वह (ज़बीहा) जिस पर ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा किसी और) का नाम पुकारा गया हो। अलबत्ता जो व्यक्ति मजबूर हो जाए और न तो उस का अभिलाषी हो और न सीमोल्लंघन करने वाला, तो अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है। (अन्-नहल -११५)

इस से यह भी मालूम हुआ कि सूरह नह्ल सूरह अन्आम से पहले नाज़िल हो चुकी थी।

222. अर्थात गुनाह के केवल ज़ाहिरी पहलू से बचना ही काफी नहीं बल्कि उस के अन्दरुनी प्रभाव से भी बचना ज़रुरी है। यह एक सामान्य हिदायत है जो हर तरह के गुनाहों के बारे में है किन्तु संदर्भ की दृष्टि से इशारा उस गुनाह की तरफ़ है जिस का ज़िक्र ऊपर हुआ है अर्थात् जिन जानवरों को अल्लाह ने हलाल ठहराया है, उन का गोश्त केवल अंधविश्वास के आधार पर न खाना। यहाँ ताकीद की गई है कि न केवल इन बहुदेववादी तौर तरीकों को छोड़ दो बल्कि साथ ही अपने मन मस्तिष्क को भी उस के असर से पाक करो। बहुदेववादी अंधविश्वास की तरफ़ दिल का झुकाव या उस का कोई असर जो दिल में मौजूद हो, गुनाह ही है यद्यपि छिपा हुआ है।

223. अगर किसी जानवर को ज़बह करते समय अल्लाह का नाम न लिया गया हो तो उस का गोश्त खाना हराम है। इस आदेश में बड़ी कड़ाई बरती गई है और स्पष्ट कर दिया गया है कि ऐसा करना अल्लाह की खुली नाफ़रमानी है।

जानवर को ज़बह करते समय अल्लाह का नाम लेना इस लिए ज़रुरी ठहराया गया है ताकि यह एहसास हमारे अन्दर ज़िन्दा रहे कि किसी जानवर की जान लेना कोई मामूली बात नहीं है। यह अधिकार हमें अल्लाह की इजाज़त से ही प्राप्त हुआ है जो प्राण का सृष्टा है। इस में कृतज्ञता की अभिव्यक्ति भी है और तौहीद के अक़ीदे को बल पहुँचाने का सामान भी। तथा इस से शिर्क का दरवाज़ा भी बन्द हो जाता है। क्यों कि बहुदेववादी जानवरों को ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा किसी और) के नाम पर ज़ब्ह करते हैं और उन की क़ुर्बानियाँ पेश करते हैं। गोया यह तरीक़ा पूजा के कर्म काण्डों ही में से है इस लिए क़ुर्आन ने इस तरीक़े को भी अल्लाह ही के लिए खास कर दिया और इस को ख़ुदा परस्ती का प्रतीक ठहराया।

224. जब जानवर को ज़ब्ह करते समय अल्लाह का नाम लेना तौहीद का प्रतीक और उस का नाम न लेना शिर्क (बहुदेववाद) का प्रतीक ठहरा तो इस मामले में ईमान वालों के लिए किसी प्रकार की रिआयत करने या उदारता दिखाने का सवाल पैदा ही नहीं होता । और अगर वे इस मामले में असावधानी बरतेंगे तो यह एक अपराधिक असावधानी होगी। अगर उन्हें मालूम हो कि ज़ब्ह करते समय अल्लाह का नाम नहीं लिया गया है या वे जानते हों कि जिन लोगों के हाथ का यह ज़बीहा है उन का तरीक़ा ही यह नहीं है कि अल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह करें तो ऐसे ज़बीहे का गोश्त खाने से अवश्य परहेज़ करना चाहिए। इस मामले में किसी मुसलमान के ढील बरतने का मतलब यह है कि वह एक ऐसे मामलें में ढील बरत रहा है जिस के डांडे शिर्क से मिले हुए हैं और शिर्क के साथ साज़गारी पैदा करना अपने को शिर्क के हवाले करना है। इसी लिए यहाँ सावधान कर दिया गया है कि अगर तुम ने शैतानों की बात मान ली तो तुम भी मुश्रिक हो जाओगे।

225. इस मिसाल में मौत से मुराद जिहालत और ग़फ़लत की हालत है और हयात (जिन्दगी) से मुराद ज्ञान और विवेक और ख़ुदा से भिज्ञ होने की मनोदशा है। रौशनी से मुराद हिदायत की रौशनी और अन्धेरों से मुराद गुमराहियाँ हैं।

इस मिसाल से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि ईमान वाले जिन के लिए इस्लाम का संदेश जीवन देने वाला साबित हो रहा

है उसे छोड़ कर वे जाहिलिय्यत की बातें क्यों कर स्वीकार कर सकते हैं जो उन के लिए मौत का संदेश है।

226. जो लोग हक़ (सत्य) के स्पष्ट हो जाने के बाद भी उसे क़ुबूल करने के लिए आमादा नहीं होते तो क़ुदरत का विधान यही है कि जो जिस चीज़ को पसन्द करता है उस की नज़र में वह चीज़ लुभा दी जाए। दूसरे शब्दों में सत्य को रद्द कर देने के बाद आदमी का स्वभाव एवं मानसिकता ऐसी बन जाती है कि ग़लत कामों को वह अपने जीवन का कारनामा समझने लगता है।

227. जब किसी आबादी में हक़ की दअवत बुलन्द होती है तो अपराधिक मनोवृत्ति के लोग उसे अपने स्वार्थ के विरुद्ध पा कर उस की मुख़ालफ़त करने लगते हैं और उन के सरग़ने (Boss) सत्य पर जमे रहने वालों के ख़िलाफ़ शातिराना चालें चलने लगते हैं। यह स्थिति चूँकि मुहलत देने के उस विधान के अनुसार सामने आती है जो अल्लाह तआला ने इस दुनिया के लिए नियत किया है। इस लिए इस हक़ीक़त को अल्लाह तआला ने इस तरह बयान फ़रमाया है कि ''हम ने हर बस्ती में बड़े बड़े मुजरिमों को उठा खड़ा किया है ताकि वे चालबाज़ियाँ करें।''

228. अर्थात् ये हरकतें कर के वे अपने ही लिए तबाही का सामान कर रहे हैं मगर चूँकि नतीजे पर उन की निगाह नहीं है इस लिए वे महसूस नहीं कर पाते कि किस बुरे अन्जाम की तरफ़ जा रहे हैं ।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

और यह तुम्हारे रब का रास्ता है, बिल्कुल सीधा। हम ने अपनी आयतें तफ़सील से बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो याददेहानी (नसीहत) हासिल करते हैं । (अल-क़ुर्आन)

124. जब उन के पास कोई आयत आती है तो वे कहते हैं, हम मानने वाले नहीं जब तक कि हमें वैसी ही चीज़ न दी जाए जैसी अल्लाह के रसूलों को दी गई। अल्लाह बेहतर जानता है कि अपनी रिसालत (का पद) किसे प्रदान करे।[229] जो लोग जुर्म कर बैठे हैं उन्हें उन की चालबाज़ियों के बदले में अल्लाह के यहाँ अपमान और कठोर अज़ाब (यातना) का सामना करना होगा।[230]

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ
مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ
سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ
شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

125. अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है [231] और जिस को गुमराह करना चाहता है उस के सीने को तंग और भींचा हुआ कर देता है (और उसे ऐसा महसूस होता है) गोया उसे ऊँचाई पर चढ़ना पड़ रहा है।[232] इस तरह अल्लाह उन लोगों पर नापाकी डाल देता है जो ईमान नहीं लाते।[233]

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ
وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا
يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾

126. और यह तुम्हारे रब का रास्ता है, बिल्कुल सीधा। हम ने अपनी आयतें तफ़सील से बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो याददेहानी (नसीहत) हासिल करते हैं।[234]

وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

127. उन के लिए सलामती का घर है [235] उन के रब के पास और वह उन का साथी होगा उन की (बेहतर) कारकर्दगी (कार्यक्षमता) के कारण।

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾

128. और जिस दिन वह इन सब लोगों को जमा करेगा, इर्शाद फ़रमाएगा ऐ जिन्नों के गिरोह।[236] तुम ने इन्सानों की बड़ी तादाद को गुमराह किया। इन्सानों में से जो उन के साथी थे वे कहेंगे ऐ हमारे रब ! हम ने (गुमराही के कामों में) एक दूसरे को ख़ूब इस्तेमाल किया [237] और (आख़िरकार) हम उस समय को पहुँच गए जो तूने हमारे लिए निश्चित किया था।[238] इर्शाद होगा, तुम्हारा ठिकाना आग है जिस में तुम हमेशा रहोगे, मगर जो अल्लाह चाहे।[239] बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला और इल्म वाला है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ
اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ ۖ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا
اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ لَنَا ۚ
قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ
رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

229. काफ़िरों का कहना यह था कि अगर अल्लाह की तरफ़ से रसूलों पर वह्य नाज़िल होती है तो हम पर भी नाज़िल होनी चाहिए। जब तक कि हम पर सीधे वह्य नाज़िल न हो हम अल्लाह की आयतों पर ईमान लाने वाले नहीं। इस का जवाब यह दिया गया है कि रिसालत ऐसी चीज़ नहीं है कि यह कार्यभार हर किसी को प्रदान कर दिया जाए, अल्लाह बेहतर जानता है कि इस महान दायित्यपूर्ण पद का सर्वाधिक योग्य व्यक्ति कौन है और ऐसे ही योग्य व्यक्ति को वह इस से सम्मानित करता है।

इस से यह बात भी स्पष्ट हुई कि रिसालत कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे इन्सान प्राप्त करने का प्रयास करे बल्कि यह अल्लाह की देन है वह जिसे चाहे दे।

230. अर्थात् इस प्रकार की माँग करने वाले मुजरिम हैं और वे अपने जुर्म की सज़ा भुगत कर रहेंगे।

231. सीना खोल देने का मतलब इस्लाम के सत्य धर्म होने पर संतुष्ट कर देना है कि किसी प्रकार का संदेह बाक़ी न रहे और आदमी उसे नि:संकोच स्वीकार कर ले ।

232. अर्थात् ऐसे लोगों को इस्लाम का रास्ता एक कठिन चढ़ाई मालूम होता है जिस की कल्पना से उन का सीना तंग होने और उन का दम घुटने लगता है।

233. नापाकी से मुराद कुफ्र की नापाकी है। मतलब यह है कि उन के ईमान न लाने का असली कारण कुफ्र की गन्दगी है जिस ने उन के दिल और दिमाग़ को अपवित्र कर रखा है। इस लिए अल्लाह का पाक़ीज़ा दीन उन के दिल और दिमाग़ में उतर नहीं पाता।

234. अर्थात् इस्लाम की राह बिल्कुल सीधी है इस में कोई पेंच नहीं और यह बात प्रमाण एवं तर्कों द्वारा बड़े विस्तार के साथ बयान कर दी गई है। लेकिन इस से फ़ायदा वही लोग उठा सकते हैं जो तर्क एवं प्रमाण को समझना और नसीहत हासिल करना चाहें।

235. सलामती का घर अर्थात् जन्नत जहाँ शान्ति ही शान्ति होगी और इन्सान पूरी तरह चैन की ज़िन्दगी गुज़ार सकेगा। न कोई आफ़त आएगी और न कोई ख़तरा लगा होगा बल्कि हर प्रकार की तकलीफ़ों एवं शंकाओं से सुरक्षित होगा।

236. संबोधन शैतान सिफ़त जिन्नों से होगा।

237. उद्दंड जिन्न गुमराही फैलाने के लिए इन्सानों को अपना हथियार बनाते रहे और इस काम के लिए उन्होंने वस्वसों और फरेब देने वाली लुभावनी बातों से दिल और दिमाग़ को मोहित करने का तरीक़ा अपनाया । और रहे उद्दंड मानव, तो उन्होंने जिन्नों को ख़ुदा का साझीदार ठहरा कर और क़ुर्बानिया और भेंट चढ़ा कर उन के अहंकार में वृद्धि कर दी । एवं ज्योतिष, जादू, टोना, टोटका, और सिफली अमल के सिलसिले में इन से सम्पर्क बनाते रहे और इन के इशारों पर लोगों को चक्मा देते रहे और अपना उल्लू सीधा करते रहे।

238. अर्थात् क़ियामत का दिन।

239. यह अपवाद अल्लाह के इख़्तियार को स्पष्ट करने के लिए है कि उद्दंड जिन्नों और इन्सानों को यद्यपि हमेशा के लिए जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा लेकिन इस मामले में अन्तिम निर्णय की बात उस की मर्जी ही है और उस का हर फ़ैसला इल्म और हिकमत (ज्ञान एवं तत्वदर्शिता) पर आधारित होता है।

129. इस तरह हम ज़ालिमों को एक दूसरे का साथी बनाऐंगे उस कमाई के कारण जो वे करते रहे।[240]

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾

130. ऐ जिन्नों एवं इन्सानों के गिरोह ! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए [241] जो तुम को मेरी आयतें सुनाते थे और तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से तुम को डराते थे। वे कहेंगे हम अपने ख़िलाफ़ ख़ुद गवाही देते हैं। वास्तव में इन को दुनिया की जिन्दगी ने धोखे में रखा और वे अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि वे काफ़िर थे।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

131. यह इस लिए कि तुम्हारा रब ऐसा नहीं है कि आबादियों को नाइन्साफ़ी के साथ तबाह कर दे जब कि उन के बाशिन्दे बेख़बर हों।[242]

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰي بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

132. और हर एक के लिए दर्जा है उस के अमल के लिहाज़ से [243] और जो काम ये लोग करते हैं उस से तुम्हारा रब ग़ाफ़िल (बेख़बर) नहीं है।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

133. और तुम्हारा रब बेनियाज़ (बे परवाह) है रहमत वाला। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और तुम्हारी जगह जिस को चाहे ले आए (उसी तरह) जिस तरह उस ने एक दूसरे गिरोह की नस्ल से तुम्हें उठाया है।[244]

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

134. जिस चीज़ का तुम से वादा किया जा रहा है वह आ कर रहेगी [245] और तुम हमारे क़ाबू से निकलने वाले नहीं हो।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

135. कहो, ऐ मेरी क़ौम के लोगो ![246] तुम अपनी जगह अमल करो मैं अपनी जगह अमल कर रहा हूँ। बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आख़िरत का अन्जाम किस का अच्छा है। निश्चय ही ज़ालिम कभी कामयाब नहीं होंगे।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

240. अर्थात् ये ज़ालिम जिस तरह जुल्म में एक दूसरे के शरीक रहे हैं उसी तरह ज़ुल्म की सज़ा भुगतने में भी एक दूसरे के शरीक (Partner) होंगे।

241. यह सम्बोधन जिन्नों और इन्सानों के मुशतरका गिरोहों से होगा। इस लिए अल्लाह तआला का इर्शाद ''क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए।'' का मतलब---- और वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान अल्लाह ही को है-----यह है कि रसूल यद्यपि इन्सानों की नस्ल में से थे लेकिन वे इन्सानों और जिन्नों दोनों गिरोहों के लिए नबी नियुक्त होते थे। क्योंकि जिन्न इस मामले में इन्सानों के अधीन हैं। जैसे जिन्नों का यह बयान कि ''हम ने ऐसी किताब सुनी जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है।''(अल-अहकाफ़ आयत-३०)''उन का सुलैमान अलैहिस्सलाम के अधिन होना''। (अन्नमल-१७)''उन का क़ुर्आन सुनना और उस पर ईमान लाना'' (सूरह जिन्न-१,२) और क़ुर्आन और सही हदीसों में कहीं यह पुष्टि नहीं है कि जिन्नों की तरफ़ जिन्नों ही में से रसूल बना कर भेजे गए थे । अलबत्ता कुछ मुफ़स्सिरों (टीकाकारों) ने यह बात ज़रुर कही है मगर वह एक अकेला मत है।

242. अर्थात् रसूल इस लिए भेजे गए ताकि अल्लाह की हुज्जत (तर्क) लोगों पर क़ायम हो और इस के बाद अगर वे न संभले तो अपनी तबाही के वे खुद ज़िम्मेदार ठहरेंगे। अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं है कि किसी बस्ती पर अपनी हुज्जत क़ायम किए बग़ैर (अपना आदेश स्पष्ट किए बग़ैर) और इस हाल में कि लोग सत्यमार्ग से बिल्कुल अनभिज्ञ हों जुल्म के तौर पर उन का विनाश कर दे।

243. अर्थात् जिस दर्जे का अमल होगा अच्छा या बुरा उसी दर्जे की कामयाबी या नाकामी होगी।

244. अर्थात् यह न समझो कि अल्लाह तुम्हारा मुहताज है, अगर तुम न रहो तो उस की सल्तनत में कोई कमी आ जाएगी बल्कि वह हर चीज़ से बेनियाज़ (बेपरवाह) है, और यह उस की मेहरबानी है कि तुम्हारे कुकर्मों के बावजूद तुम्हें कर्म की मुहलत दे रहा है, ताकि तुम अपना सुधार करो वर्ना वह तुम्हारे अस्तित्व को समाप्त कर के तुम्हारी जगह दूसरी क़ौमों को ला सकता है और इस की मिसाल ख़ुद तुम्हारा अपना क़ौमी वजूद है कि यह इन्सानी नस्ल के सिलसिले ही से सम्बन्ध रखता है। एक गिरोह जाता है और दूसरा गिरोह इस की जगह ले लेता है। इस लिए किसी को अपने क़ौमी अस्तित्व पर गर्व नहीं करना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि जिस हस्ती ने उन को अस्तित्व प्रदान किया है उस का एक इशारा उन के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए काफ़ी है।

245. अर्थात् क़ियामत का दिन जब ख़ुदा के सामने सब की पेशी होगी।

246. पैग़म्बर जिन लोगों के बीच पैदा होता है उन को मेरी क़ौम कह कर सम्बोधित करता है जिस से अपनाइयत, सहानुभूति और हितैषी होने की अभिव्यक्ति होती है। ऐसे मौक़े पर ''या क़ौमी''के शब्द ''ऐ मेरे लोगो!'' के सादा अर्थों में इस्तेमाल होते हैं। इस लिए इस को उस अर्थ में समझना जो आज के परिभाषिक अर्थ में लिया जाता है बिलकुल ग़लत है और उस से धार्मिक या राजनीतिक राष्ट्रीयता के सिद्धान्त के सम्बन्ध में तर्क वितर्क करना भी ग़लत है।

136. और उन्हों ने अल्लाह ही की पैदा की हुई खेती और मवेशियों (चौपायों) में अल्लाह का एक हिस्सा मुक़र्रर किया है और मात्र अपने गुमान के आधार पर कहते हैं कि ये अल्लाह का है और ये हमारे (ठहराए हुए) साझीदारों का। फिर जो हिस्सा उन के साझीदारों का होता है वह तो अल्लाह की तरफ़ नहीं जा सकता। मगर जो अल्लाह का होता है वह उन के साझीदारों की तरफ़ जा सकता है। क्या ही बुरा फ़ैसला है जो ये लोग करते हैं।[247]

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا
فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ
فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ
لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾

137. और इसी तरह बहुत से मुशिरकों (बहुदेववादियों) के लिए उन के (ठहराए हुए) साझीदारों ने उन की औलाद की हत्या को लुभावना बना दिया [248]ताकि उन्हें विनाश में डालें [249] और उन के दीन (धर्म) को उन पर संदिग्ध कर दें।[250] अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते, तो इन को छोड़ दो कि झूठ गढ़ते रहें।

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ
اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ
دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ
وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۷﴾

138. कहते हैं ये खेत और ये मवेशी निषिद्ध (ममनूअ्) हैं। इन को वही लोग खा सकते हैं जिन को हम खिलाना चाहें। ये बातें उन्हों ने मात्र गुमान से तय कर रखी हैं [251]और कुछ चौपायों की पीठ (सवारी और बोझ ढोने) को हराम ठहराया गया है और कुछ चौपायों पर वह (ज़ब्ह करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते। ये सब उन की मनगढ़ंत बातें हैं जो उन्हों ने उस से सम्बन्धित कर रखी हैं।[252] बहुत जल्द अल्लाह इन को इन झूठारोपण का बदला देगा।

وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ
نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ
لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ
بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

139. और कहते हैं इन चौपायों के पेट में जो (बच्चा जिन्दा) है वह ख़ास हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है। और अगर मुर्दा हो तो उस में सब शरीक हैं।[253] बहुत जल्द अल्लाह इन को इन मनगढ़ंत बातों की सज़ा देगा । बेशक वह हिकमत वाला और जानने वाला है।[254]

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا
وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ
شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۳۹﴾

247. बहुदेववादियों ने धार्मिक रीतियों का जो विधान गढ़ रखा था उस का एक महत्वपूर्ण अंश उन की वह ख़ैरात थी जो ख़ुदा और उन के दूसरे पूज्यों (बुत आदि) के नाम से करते थे। इस उद्देश्य के लिए वे पैदावार और मवेशियों में एक हिस्सा जिस की मात्रा उन्होंने स्वयं ही निर्धारित कर रखी थी, ख़ास कर देते थे। ख़ुदा के हिस्से की ख़ैरात तो फ़क़ीरों में बटती। रही उन के पूज्यों के नाम की ख़ैरात तो वह बुतों पर चढ़ावे की सूरत में पेश की जाती और फिर पुजारी और परोहित इस के हक़दार बनते। अगर किसी हादसे की वजह से बुतों के हिस्से में कोई कमी हो जाती तो उस की पूर्ती ख़ुदा के हिस्से से की जाती, लेकिन अगर ख़ुदा के हिस्से में कमी हो जाती तो उस की पूर्ति बुतों के हिस्से से नहीं की जा सकती थी। अर्थात उन के नज़दीक प्रमुख अधिकार बुतों का था उस के बाद ख़ुदा का।

उन का यह तरीक़ा बहुदेववादी भी था और मूर्खतापूर्ण भी था। ख़ुदा के दिए हुए रिज़्क (आजीविका) में उन के मन गढ़ंत माबूदों (पूज्यों) का हिस्सा कहाँ से निकल आया? और उन का यह बटवारा कितना भोंडा था?

यह मक्का के बहुदेववादियों की जिहालत का एक नमूना है। दूसरे बहुदेववादियों के यहाँ भी जिहालत के ऐसे कितने नमूने देखे जा सकते हैं। और मुसलमानों में भी बुज़ुर्गों की नज़र एवं नियाज़ के नाम से जो कुछ होता है उस के पीछे भी ग़लत मानसिकता ही काम कर रही होती है। लेकिन बुज़ुर्ग परस्ती (पूर्वज पूजा) औलिया परस्ती (ईश-भक्तों की पूजा) और क़ब्र परस्ती पर इस्लाम का ख़ुशनुमा लेबल लगा कर इन को मुसलमानों में प्रचलित कर दिया गया है।

248. अर्थात् जिस तरह शैतानों ने उन के अन्दर यह बात डाल दी कि वे अपने माल का एक हिस्सा अपने गढ़े हुए पूज्यों को भेंट स्वरुप अर्पित करने के लिए निश्चित करें उसी तरह उन्हों ने अपने इन चेलों को यह पट्टी भी पढ़ा दी है कि वे अपने पूज्यों पर अपनी सन्तान् की बलि चढ़ाए।

आयत में ''शुरकाउहुम'' شُرَكَاۤؤُهُمْ (उन के शरीक) से मुराद शैतान हैं जिन के इशारों पर बहुदेववादी तरह तरह की ग़लत हरकतें करते हैं। यहाँ तक कि उन्हें अपने बच्चों की हत्या करने पर भी संकोच नहीं होता । वे उन के मन में यह ख़याल डाल देते हैं कि फलाँ और फलाँ माबूद (जिन्न, देवी, आदि) की क्षति से बचने के लिए तुम्हें अपने बच्चों की भेंट देना होगी । अरब में जहाँ शैतानों के प्रभाव में आकर लड़कियों को ज़िन्दा दफ़ना दिया जाता था वहाँ एक तरीक़ा यह भी प्रचलित था कि आदमी मन्नत मान लेता कि अगर मेरी इतनी और इतनी औलाद हुई तो मैं इन में से एक को फ़लाँ माबूद पर भेंट चढ़ाऊँगा । अत:सीरत इब्ने इस्हाक़ में इस घटना का उल्लेख है कि अबदुल मुत्तलिब ने इसी प्रकार की मन्नत ''हुबुल'' बुत के पास खड़े हो कर मानी थी। और जब उन के काफ़ी औलाद हुई तो अब्दुल्लाह की जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पिता हैं, भेंट देना चाहा लेकिन क़ुरैश ने उन्हें इस का फिदय: (मुक्तिप्रतिदान) देने पर आमादा कर लिया इस लिए उन की जान बच गई। (सीरतुन्नबी, इब्ने हश्शाम जिल्द १ पृष्ट १६६)

आज भी इस प्रकार की घटनाऐं होती रहती हैं। अंधविश्वासी किसी जिन्न या देवता को ख़ुश करने या किसी बला से बचने या किसी सिफली अमल के उद्देश्य से मासूम बच्चों की जानें ले लेते हैं। इस पाशविक कुर्कम पर उन का दिल इस लिए आमादा हो जाता है कि शैतान इस चीज़ को धर्म का लोभ दे कर या इस का कोई मनभावन अर्थ बता कर उन की निगाह में लुभा कर बसा देता है।

इन शैतानों को ''शरीक'' इस लिए कहा गया है कि बहुदेववादी अपनी विकृत धारणाओं एवं विचारों के वशीभूत उन का इस तरह पालन करते हैं जिस तरह अल्लाह का आज्ञापालन करना चाहिए। वे इन शैतानों के बहकावे में आ कर बड़े से बड़ा गुनाह का काम करने से नहीं चूकते। जिस की मिसाल बच्चों को भेंट चढ़ाना या ग़रीबी (निर्धनता) के भय से उन को ज़िन्दा गाड़ देना है।

249. सन्तान की हत्या का नतीजा इस के सिवा क्या है कि आदमी औलाद जैसी नेमत से महरुम हो जाए और अल्लाह के प्रकोप का हक़दार बने।

250. मक्का के बहुदेववादी जिस धर्म के उत्तराधिकार थे वह इब्राहीम और इस्माईल अलैहिस्सलाम का धर्म अर्थात इस्लाम था। लेकिन शैतानों की बातों में आ कर उन्हों ने अपने इस दीन में तरह तरह की नई नई बातें (बिदअतें) निकालीं, नतीजा यह कि अल्लाह का दीन अपनी वास्तविक शक्ल में बाक़ी न रहा बल्कि बातिल (असत्य) के साथ ख़लत मलत हो कर रह गया।

251. अरब के बहुदेववादियों ने कुछ रस्में तो ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा औरों) को भेंट अर्पित करने के लिए चला रखी थी और कुछ रस्में ऐसी थीं जिन का सम्बन्ध अन्धविश्वास से था। पैदावार का जो हिस्सा वे अपने बुतों के लिए ख़ास करते उस के बारे में उन्हों ने एक नियम बना रखा था कि इस को कौन लोग खा सकते हैं और कौन नहीं। इसी तरह का एक नियम जानवरों का गोश्त खाने सम्बन्धी भी था जिस की तफ़सील आगे की आयतों में बयान हुई है। ये मात्र ढकोसले थे जिस का कोई सम्बन्ध अल्लाह के दीन से न था। इस से

जिस उसूली बात पर रौशनी पड़ती है वह यह है कि वे तमाम रस्में मरदूद (अस्वीकृत) हैं जिन को धार्मिक या संवैधानिक चोले में प्रचलित किया गया हो। जब कि अल्लाह के संविधान का प्रमाण उन को प्राप्त न हो ।

252. अर्थात् ये बातें हैं तो उन की स्वरचित एवं मनगढ़ंत किन्तु इन को मजहबी रंग दे कर इस तरह उन की पाबन्दी कराई जा रही है कि लोग मान लें कि यह अल्लाह की शरीअत है।

253. कुछ चौपायों के पेट से जो बच्चा पैदा होता वह ज़िन्दा पैदा होने की सूरत में मर्दों के लिए हलाल होता अर्थात् वह उस का गोश्त खा सकते थे। लेकिन औरतों के लिए उस का गोश्त हराम होता और अगर मुर्दा पैदा हो तो फिर औरत और मर्द दोनों के लिए उस का खाना जायज़ होता।

254. अर्थात् अल्लाह की हिकमत एवं उस की नीति का तक़ाज़ा है कि संविधान रचने एवं गढ़ने वालों को सज़ा दे और जिन लोगों ने यह दुस्साहस किया है उन को वह जानता है।

और मवेशियों में बोझ उठाने वाले भी पैदा किए और ज़मीन से लगे हुए भी। खाओ उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है और शैतान के पद चिन्हों का अनुसरण न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(अल-क़ुर्आन)

140. निश्चय ही वे लोग तबाह हुए जिन्हों ने अपनी औलाद को मात्र अपनी मूर्खता से और जाने बूझे बग़ैर क़त्ल किया और अल्लाह ने उन्हें जो रिज़्क़ दिया था उसे अल्लाह पर मिथ्यारोपण कर के हराम कर दिया। वे गुमराह हुए और हिदायत क़ुबूल करने वाले न बने।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ
ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

141. और वही है जिस ने बाग़ पैदा किए। वह भी जिन्हें टट्टरों पर चढ़ाया जाता है [255] और वह भी जिन्हें नहीं चढ़ाया जाता,[256] और खजूर और खेतियाँ, जिन की पैदावार भिन्न होती हैं, और ज़ैतून और अनार, एक दूसरे से मिलते जुलते भी और (स्वाद में) भिन्न भी।[257] खाओ इन के फ़ल जब कि वे फलें और इस का हक अदा करो फसल कटने के दिन [258] और इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) न करो।[259] अल्लाह इस्राफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता।

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَّاتٍ مَعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ
مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ
وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ
كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ
حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾

142. और मवेशियों में बोझ उठाने वाले भी पैदा किए और ज़मीन से लगे हुए भी।[260] खाओ उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है और शैतान के पद चिन्हों का अनुसरण न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ
وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٤٢﴾

143. आठ नर एवं मादा हैं।[261] भेड़ की जाति से दो और बकरी की जाति से दो, इन से पूछो कि अल्लाह ने इन के नर हराम किए हैं या इन के मादा, या वे बच्चे जो उन मादाओं के पेट में हों ?अगर तुम सच्चे हो तो मुझे बताओ इल्मी (वैज्ञानिक) सबूत के साथ।[262]

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ
قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ
أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤٣﴾

144. इसी तरह ऊँट की जाति से दो और गाय की जाति से दो । पूछो इन के नर हराम किए हैं या मादा या वे बच्चे जो उन मादाओं के पेट में हों ?क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने इस का हुक्म दिया था ?[263] फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह की तरफ़ झूठ बात मन्सूब करे। निस्संदेह अल्लाह ज़ालिमों को सीधी राह नहीं दिखाता।

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ
حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ
أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٤﴾

255. अर्थात् अंगूर आदि जिन की बेलें टट्टरों पर चढ़ाई जाती हैं।

256. "जिन्हें टट्टरों पर चढ़ाया नहीं जाता से मुराद तनावर (शक्तिशाली) पेड़ भी हैं और वे पौधे भी हैं जो ज़मीन ही पर फलते हैं जैसे ककड़ियाँ, तरबूज़ आदि।

257. इस से जिस हक़ीक़त की तरफ़ ध्यानआकर्षित करना अभिप्रेत है वह यह कि इन्सान के लिए ज़मीन पर जो दस्तरख़्वान बिछा दिया गया है उस में तरह तरह के खाने हैं जो मनुष्य की सिर्फ़ बुनियादी ज़रुरतों ही को पूरा नहीं करते बल्कि उस की अभिरुचि की संतुष्टि का सामान भी करते हैं वरना ज़िन्दा रहने के लिए तो सिर्फ रोटी ही काफ़ी हो सकती थी। मगर इन्सान को जिसे उत्तम प्रवृत्ति का बनाया गया है उस की अभिरुचि को देखते हुए हर तरह के फल भी पैदा किए। यह सब अल्लाह तआला की रुबिबिय्यत (पालनहारी) और उस की कृपा की देन है ताकि इन्सान उस का शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) हो मगर इन्सान का मामला अजीब है कि वह उस की प्रदान की हुई नेमतों से फ़ायदा तो उठाता है लेकिन नाशुक्रा बना रहता है या शुक्र अदा करता है तो उस का नहीं बल्कि अल्लाह को छोड़ कर औरों का। अत: पैदावार का एक हिस्सा वह अपने माबूदों (पूज्यों) के लिए निश्चित कर देता है कि ये दौलत तो लक्ष्मी देवी की प्रदान की हुई है और ये फ़लाँ देवी की। इस लिए उन के शुक्रिये के तौर पर उन के नाम से यह दान पुण्य किया जाए। इसी से मिलती जुलती सूरत वह है जो बिदअती अपनाते हैं। वह अपने पीरों, वलियों, और बुज़ुर्गों के लिए भेंट अर्पित (नज़्र और नियाज़) करते हैं और इस का औचित्य यह बताते हैं कि इन्ही के माध्यम से हमें ये नेअमतें मिली हैं। इस तरह दोनों गिरोहों कि एक विशेषता यह है कि इन को जो नेमतें प्राप्त होती हैं उन को वे सीधे सीधे अल्लाह का इनाम नहीं समझते और उस का शुक्र भी सीधे अदा नहीं करते । वे माध्यमों (वास्तों) और वसीलों के चक्कर में इस तरह रहते हैं कि उन की शुक्र गुज़ारी उन ही तक पहुँच कर रह जाती है। अल्लाह तक पहुँच ही नहीं पाती।

258. यहाँ जो बात मस्तिष्क में बिठाना अभिप्रेत है वह यह है कि इन्सान का यह समझना सरासर ग़लत है कि ख़ुदा की इन नेमतों से फ़ायदा उठाने का हक़ तो मुझे पहुँचता है लेकिन इन में ख़ुदा का कोई हक़ नहीं है जिस को अदा करने की ज़िम्मेदारी मुझ पर लागू होती हो। ये तमाम नेमतें उस ने आज़माइश के तौर पर इन्सान को प्रदान की हैं और उन में अपना हक़ निश्चित कर दिया है ताकि देखें कि कौन उस का हक़ अदा कर के उस की शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) का सबूत देता हैं और कौन उस से बेपरवाह हो कर नेमतों का इन्कार (कुफ्र) करता है।

पैदावार और फलों में अल्लाह का हक़ क्या है इस की तफ़्सील हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाई है। यहाँ अल्लाह के हक़ की अदायगी का संक्षिप्त आदेश दिया गया है ताकि सब से पहले इन्सान में यह एहसास पैदा हो कि अल्लाह का हक़ अदा करना है इस के बाद इस की विस्तृत जानकारी के लिए वह शरीअत की ओर रुजुअ कर सकता है।

यह सूरह मक्की है जिस में अल्लाह का हक़ अदा करने का हुक्म दिया गया है जिस से स्पष्ट हुआ कि पैदावार और फलों में ज़कात की अदायगी का हुक्म मक्का ही में नाज़िल हुआ था। इस से अन्दाज़ा होता है कि ज़कात को इस्लाम ने कितना अहम मक़ाम दिया है।

आयत में खेती और फ़लों का ज़िक्र हुआ है और साथ ही यह हुक्म दिया गया है कि फ़सल कटने के दिन उस का हक़ अदा करो। इस से एक शरअी उसूल यह स्पष्ट हुआ की हर प्रकार की आहार वस्तुऐं और हर तरह के फ़ल और मेवे में अल्लाह का हक़ है। इस हक़ की व्याख्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह फ़रमाई है:

فيما سقت السماء والعيون او كان عثريا العُشر
و فيما سقى با النضح نصف العشر (بخارى)

"जिसे बारिश या नदियों ने सींचा हो या जो सैलाब आदि के पानी से सींची गई हो उस में उशर है और जिसे स्वयं पानी दे कर सींचा गया हो उस में आधा उशर है।"(बुख़ारी)

उशर अर्थात् पैदावार का दसवाँ हिस्सा (दस प्रतिशत) आधा उशर अर्थात बीसवाँ हिस्सा (पाँच प्रतिशत) ज़कात के रुप में अदा करना होगा।

और तीसरा उसूल यह कि फ़सल कटने पर अविलम्ब ज़कात अदा करनी चाहिए।

259. इस्राफ़ का मतलब खर्च करने में संतुलन की सीमा का खयाल न करना और उस से आगे बढ़ जाना है। जो व्यक्ति अललटप इधर उधर ख़र्च करता है वह अपना शौक़ ही पूरा नहीं कर पाता, ख़ुदा के बन्दों के अधिकार कहाँ से अदा करेगा।

260. मवेशियों में तो कुछ ऊँचे क़द के हैं जो सवारी और बोझ ढोने के काम में आते हैं जैसे ऊँट बैल आदि। और कुछ दबते कद के हैं गोया ज़मीन ही से लग कर चलते हैं जैसे भेड़ बकरी, जिन के गोश्त और दूध वग़ैरह से आदमी फ़ायदा उठाता है।

261. जिन चौपायों को दूध और गोश्त के लिए पाला जाता है और जिन को अरबवासी अनआम (मवेशी) कहते थे, चार तरह के हैं। भेड़, बकरी,ऊँट और गाय, भैंस की गिन्ती भी

गाय ही में है। मगर यह अरब में पाई नहीं जाती थी।

इन चार पालतू जानवरों के नर और मादा कुल आठ हुए जिन को अरब वासी हलाल तो मानते थे किन्तु बहुदेववादी अंधविश्वास के कारण कुछ अवस्था में उन को भी हराम ठहरा देते थे। जैसे कुछ चौपायों के पेट से अगर बच्चा जिन्दा पैदा होता तो वह मर्दों के लिए हलाल होता लेकिन औरतों के लिए उस का गोश्त खाना हराम होता। और अगर बच्चा मुर्दा पैदा होता तो औरत मर्द दोनों खा सकते थे। इसी प्रकार उन के नज़दीक कुछ चौपायों का दूध और कुछ का सवारी के लिए इस्तेमाल वर्जित था। (देखिए सूरह माइदा आयत १०३ और नोट २४९) यहाँ इन के इसी अंधविश्वास की वास्तविकता स्पष्ट की जा रही है।

262. अर्थात् मात्र गुमान और अंधविश्वास के आधार पर किसी चीज़ को हराम समझना सही नहीं हैं क्यों कि किसी चीज़ को हराम समझने का मतलब यह है कि अल्लाह ने उसे हराम ठहराया है। और अल्लाह से कोई बात मात्र गुमान एवं अंधविश्वास के आधार पर सम्बन्धित करना सरासर झूठ है। उस से वही बात सम्बन्धित की जा सकती है जिस की इल्मी शहादत (वैज्ञानिक प्रमाण) मौजूद हो । स्पष्ट है कि यह इल्मी शहादत अल्लाह की वह्य ही हो सकती है। इस लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम की शिक्षाओं में इस की कहीं निशानदेही की जा सकती हो या पिछली आसमानी किताबों में इस का कोई हुक्म - स्वस्थप्रमाण सहित-मौजूद हो तो पेश करो।

वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करने की यह माँग जो क़ुर्आन ने की है, अरब वासियों ही से नहीं बल्कि उन तमाम क़ौमों से है जो अपने स्वार्थों, इच्छाओं या अंधविश्वासों के आधार पर कुछ मवेशियों का गोश्त हराम ठहराते हैं. जैसे गाय का गोश्त या गोश्त ही को हराम समझते हैं चाहे वह किसी जानवर या परिन्दे का गोश्त हो।

263. अर्थात् आख़िर तुम्हें मालूम कैसे हुआ कि फ़लाँ क़िस्म की ऊँटनी या फ़लाँ क़िस्म की गाय या उन के फ़लाँ क़िस्म के बच्चे अल्लाह ने तुम पर हराम ठहराए हैं? नबियों द्वारा पेश किए गए संविधान (शरीअत) में तुम उस की निशानदेही कर नहीं सकते, फिर क्या तुम को ख़ुदा ने स्वयं हुक्म दिया था और तुम ने उसे अपने कानों से सुन लिया था? और जब ये दोनों बातें सही नहीं हैं तो फिर इन चीज़ों के हराम ठहराने का मतलब इस के सिवा क्या है कि तुम ने रस्मों की एक शरीअत खुद गढ़ ली है, जिस को झूठ बोल कर ख़ुदा से सम्बन्धित कर रहे हो।

कहो दिल में उतर जाने वाली हुज्जत (तर्क) तो अल्लाह ही के पास है। अगर वह चाहता तो सब को हिदायत दे देता । (अल-क़ुर्आन)

145. कहो जो वह्य मुझ पर की गई है उस में कोई चीज़ मैं ऐसी नहीं पाता जो किसी खाने वाले पर जिसे वह खाए हराम हो, सिवाय इस के कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो, या सुअर का गोश्त हो क्यों कि वो नापाक हैं या फ़िस्क़ (आज्ञोल्लंघन) हो कि अल्लाह के सिवा किसी का नाम उस पर पुकारा गया हो [264] फिर जो व्यक्ति मजबूर हो जाए और न तो उस का अभिलाषी हो और न हद से आगे बढ़ने वाला तो निश्चय ही तुम्हारा रब क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।[265]

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِیْ مَآ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰی طَاعِمٍ یَّطْعَمُهٗۤ
اِلَّآ اَنْ یَّكُوْنَ مَیْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ
خِنْزِیْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَیْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۴۵﴾

146. और हम ने उन लोगों पर जो यहूदी हुए तमाम नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए थे और गाय और बक़री की चर्बी भी सिवाय उस के जो उन की पीठ या आँतों से लगी हुई हो या किसी हड्डी के साथ मिली हुई हो। यह उन की सरकशी की सज़ा थी जो हम ने उन्हें दी थी [266] और नि:संदेह हम सच्चे हैं।[267]

وَعَلَی الَّذِیْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِیْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ
وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَیْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ
ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَایَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ
ذٰلِكَ جَزَیْنٰهُمْ بِبَغْیِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

147. फिर अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि तुम्हारा रब विशाल रहमत वाला है [268] मगर इस का अज़ाब मुजरिमों से टाला नहीं जा सकेगा।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا یُرَدُّ
بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۴۷﴾

148. ये बहुदेववादी कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप दादा। और न ही किसी चीज़ को हम हराम ठहराते। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो इन से पहले गुज़र चुके हैं। यहाँ तक कि उन्हों ने हमारे अज़ाब का मज़ा चख लिया। कहो तुम्हारे पास कोई इल्म है [269] जिसे हमारे सामने पेश कर सको? तुम तो मात्र गुमान पर चल रहे हो।[270] और अटकल की बातें करते हो।

سَیَقُوْلُ الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ
اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِیْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰی ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ
مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾

149. कहो दिल में उतर जाने वाली हुज्जत (तर्क) तो अल्लाह ही के पास है। अगर वह चाहता तो सब को हिदायत दे देता।[271]

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۴۹﴾

264. आयत का मतलब समझने के लिए उस संदर्भ को सामने रखना ज़रुरी है जो ऊपर से चला आ रहा है। बहस मवेशियों के हलाल और हराम होने से सम्बन्धित पैदा हो गई थी। अरब वासी उन मवेशियों का गोश्त जिन का ज़िक्र ऊपर आयत 143 और 144 में हुआ गिज़ा (आहार) के तौर पर इस्तेमाल करते थे लेकिन कुछ अवस्था में मात्र अंधविश्वास के कारण उन्हों ने उन का गोश्त हराम ठहरा लिया था। साथ ही कुछ हराम चीज़ों को हलाल ठहरा दिया था। ये थीं मुर्दार, बहाया हुआ ख़ून सुअर का गोश्त, और अल्लाह के सिवा औरों के नाम का ज़बीहा । यहाँ इन्हीं परिचर्चित चीज़ों के बारे में फ़रमाया गया है कि पैग़म्बर पर जो आदेश अवतरित हुए हैं उन में तुम्हारी हराम ठहराई हुई चीज़ों में से कोई भी चीज़ हराम नहीं सिवाय इन चार चीज़ों के अर्थात् मुर्दार आदि। इस लिए आयत का यह मतलब लेना सही न होगा कि इस्लाम में उन चार चीज़ों के अलावा कोई चीज़ भी हराम नहीं है। क़ुर्आन ने दूसरी जगह पर यह उसूली बात स्पष्ट कर दी है:

وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ الۡخَبٰٓئِثَ (الاعراف:۱۵۷)

“यह पैग़म्बर उन के लिए पाक चीज़ों को हलाल ठहराता है और नापाक चीज़ें इन पर हराम करता है।” (अल आराफ़:१५७)

और हदीस में इस की तफ़सील बयान हुई है। मिसाल के तौर पर सही मुस्लिम की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كلّ ذی نابٍ من السباع فأكله حرامٌ

“किसी भी कुचली (कुत्ता दाँत, या नोंकदार दाँत) वाले दरिन्दे का गोश्त खाना हराम है।”

نهٰى رسول الله ﷺ عن كلّ ذى ناب من السباع وعن كل ذى مخلبٍ من الطير۔ (صحیح مسلم کتاب الصید والذبائح)

“रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हर कुचली वाले दरिन्दे और हर पंजे वाले परिन्दे (का गोश्त खाने) से मना फ़रमाया है।” (सही मुस्लिम,किताबुस्सैद वज़्ज़बाइह)

क़ुर्आन के नाज़िल होने के समय यह बहस खड़ी नहीं हुई थी कि दरिन्दे का गोश्त खाना कैसा है या चूहे, साँप, बिच्छू और कीड़े मकोड़े आदमी खा सकता है या नहीं क्यों कि मनुष्य का स्वभाव इसे अपवित्र एवं घृणित ठहराता है और तबीअत सामान्य रुप से इन चीज़ों को खाने से नफ़रत करती है। फिर इन में से कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जिस की क़ुर्बानी बुतों के लिए दी जाती हो। इस लिए इन चीज़ो के हराम होने का हुक्म इस एहतिमाम के साथ बयान करने की ज़रुरत नहीं थी जिस एहतिमाम एवं तैयारी के साथ ख़ून और अल्लाह के सिवा औरों के नाम का ज़बीहा जैसी चीज़ों का हराम होना बयान करना ज़रुरी था । यही कारण है कि क़ुर्आन ने इन चार चीज़ों का हराम होना जिन का ज़िक्र इस आयत में हुआ है बड़े ज़ोर और शिद्दत के साथ बयान किया एवं कई सूरों में इसे दोहराया ताकि लोगों की सोच और उन के व्यवहार में सुधार हो ।

रहे दूसरे ख़बीस (अपवित्र) जानवर तो उन को हराम ठहराने का काम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर छोड़ दिया गया ।

وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ الۡخَبٰٓئِثَ

(यह नबी इन पर ख़बीस चीज़ों को हराम करता है) से स्पष्ट है। अत: महरमों की तफ़सील हमें सही हदीसों में मिलती हैं ।

265. इस की एवं मुर्दार आदि की व्याख्या सूरह बक़र: नोट 209 से 214 में गुज़र चुकी।

266. चौपायों के हलाल और हराम होने के सिलसिले में क़ुर्आन ने चार चीज़ो को अलग कर के बाक़ी तमाम मवेशियों को जो हलाल ठहराया तो उस का इशारा इस बात की तरफ़ था कि इब्राहीम की मिल्लत में यही चार चीज़ें हराम थीं। इस में जो कुछ रद्दोबदल एवं काट छाँट हुई है वह अरब के बहुदेववादीयों की अपनी बिदअतें (नई गढ़ी हुई चीज़ें) हैं अल्लाह की शरीअत से इस का कोई सम्बन्ध नहीं है। क़ुर्आन के इस बयान से यह सवाल पैदा हो सकता था कि अगर पहले से ये चार चीज़ें ही हराम चली आ रही हैं तो फिर यहूदियों पर जो अहले-किताब हैं, किस तरह दूसरी चीज़ें हराम हुई? इस का जवाब इस आयत में दिया गया है कि इन चार चीज़ों के अलावा यहूदियों पर कुछ और चीज़ें भी निश्चय ही हराम कर दी गई थीं मगर इस लिए नहीं कि वे चीजें अपने आप में अथवा अपने अस्तित्व से नापाक थीं बल्कि वे वास्तव में पाक थीं लेकिन उन की उद्दंडता के कारण सज़ा के तौर पर उन पर शरीअत सख़्त कर दी गई थी। यह एक अस्थाई आदेश था जो उन के उपद्रवी मानसिकता को देखते हुए दिया गया था। जिस तरह कि एक हकीम रोग की जटिलता को देखते हुए रोगी को अच्छे आहार से भी परहेज़ करने के लिए कहता है। इस लिए अब जब कि क़ुर्आन के रुप में एक स्थाई शरीअत का अवतरण हो रहा है तो इस में उन तमाम अस्थाई (Temporary) पाबन्दियों को ख़त्म कर दिया गया है इस लिए इस में तमाम पाकीज़ा चीज़ें हलाल हैं और केवल ख़बीस (अपवित्र) चीज़ें ही हराम हैं।

यहूदियों पर जैसा कि इस आयत में स्पष्ट कर दिया गया है दो पाक चीज़ें हराम कर दी गई थीं । एक हर तरह के नाख़ुन

वाले जानवर चाहे वह चरिन्द (चरने वाले) हों या परिन्द (उड़ने वाले) हों। और दूसरे गाय और बक़री की चर्बी सिवाय इस के जो पीठ,आँतों या हड्डियों से लगी हुई हों क्यों कि उस को आसानी से अलग नहीं किया जा सकता था।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि यह दो चीज़ें बनी इस्राईल पर उस समय हराम की गई जब कि उन्हों ने उद्दंडता द्वारा यहूदियत अपना ली वरना इस से पहले ये चीज़ें उन पर हराम नहीं थी।

267. यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि अगर इस से भिन्न कोई बात मौजूदा तौरात में पाई जाती है तो वह ग़लत है और उसे अल्लाह से सम्बन्धित करना सही नहीं।

268. इस लिए तुम्हारी अपराधिक कृत्यों के बावजूद तुम पर फौरन अज़ाब नाज़िल नहीं कर रहा है। बल्कि तुम्हें सुधार कर लेने का अवसर दे रहा है।

269. किसी चीज़ को हराम ठहराने का मतलब यह होता है कि अल्लाह को यह चीज़ पसन्द नहीं है इस लिए उस ने रोका है अगर कोई व्यक्ति या कोई क़ौम किसी चीज़ के बारे में यह अक़ीदा रखती है कि वह हराम है तो उसे बताना चाहिए कि हराम ठहराने की बुनियाद क्या है? अर्थात उसे किस तरह मालूम हुआ कि उस चीज़ को अल्लाह ने हराम ठहराया है। अगर इस का कोई प्रमाण या तर्क मौजूद नहीं हैं तो फिर यह मात्र अंधविश्वास या अटकल के तीर तुके चलाना नहीं तो और क्या है? ख़ुदा के बारे में कोई बात इल्म की बुनियाद ही पर कही जा सकती है। वरना सख्त ग़ैर ज़िम्मेदाराना बात होगी।

270. अर्थात तुम्हारी आस्थाऐं ज्ञान पर आधारित नहीं हैं बल्कि मात्र गुमान का नतीजा हैं क्यों कि ख़ुदा की मर्ज़ी मालूम करने का तुम्हारे पास कोई साधन नहीं है।

271. अर्थात् अगर ख़ुदा चाहता तो बल पूर्वक सब को हिदायत की राह पर चलाता । लेकिन उस की मर्ज़ी यह नहीं हुई बल्कि उस ने इन्सान को यह मौक़ा दिया कि वो हिदायत और गुमराही दोनों में से जिस राह का चाहे चुनाव करे और हिदायत की राह स्पष्ट करने के लिए उस ने ऐसी हुज्जत (तर्क) नाज़िल फ़रमायी जो दिलों में उतर जाने वाली है। इस हुज्जत के मुक़ाबले में तुम्हारा यह तर्क कि ''अगर अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते'' और इसी प्रकार के दूसरे तर्क अर्थरहित, प्रभाव रहित एवं परिणाम रहित हैं।

और यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ मगर बेहतर तरीक़े पर, यहाँ तक कि वे अपनी पक्की उम्र को पहुँच जाऐं और नाप तौल इन्साफ़ के साथ पूरा करो हम किसी जान पर उस के सामर्थ्य से अधिक ज़िम्मेदारी नहीं डालते। और जब बात कहो इन्साफ़ की कहो चाहे (तुम्हारा) कोई नातेदार ही क्यों न हो और अल्लाह के वचन को पूरा करो । ये वे बातें हैं जिन की अल्लाह ने तुम्हें हिदायत की है ताकि तुम याददेहानी हासिल करो। (अल-क़ुर्आन)

150. इन से कहो अपने गवाहों को लाओ जो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह ने उन चीज़ों को हराम ठहराया है। फिर अगर वे गवाही दें तो तुम उन के साथ गवाही न दो।[272] और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है। जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने रब का हमसर (सहकक्ष) ठहराते हैं।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ
حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٠﴾

151. कहो ! आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ तुम्हारे रब ने क्या चीज़ें हराम की हैं।[273] ये कि किसी चीज़ को उस का साझीदार न ठहराओ।[274] माता पिता के साथ नेक सुलूक करो।[275] अपनी सन्तान की निर्धनता के कारण हत्या न करो। हम तुम्हें भी रिज़्क देते हैं और उन को भी देंगे।[276] बेहयाई की बातों के करीब भी न जाओ चाहे वे खुली हों या छिपी।[277] और किसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम (आदरणीय) ठहराया है, क़त्ल न करो। यह और बात है कि हक़ की बुनियाद पर क़त्ल करना पड़े।[278] ये हैं वे बातें जिन की उस ने तुम्हें हिदायत की है ताकि तुम अक़्ल से काम लो।[279]

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ
شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ
اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا
بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾

152. और यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ मगर बेहतर तरीक़े पर,यहाँ तक कि वे अपनी पक्की उम्र को पहुँच जाऐं [280] और नाप तौल इन्साफ़ के साथ पूरा करो [281] हम किसी जान पर उस के सामर्थ्य से अधिक ज़िम्मेदारी नहीं डालते।[282] और जब बात कहो इन्साफ़ की कहो चाहे (तुम्हारा) कोई नातेदार ही क्यों न हो [283] और अल्लाह के वचन को पूरा करो। ये वे बातें हैं जिन की अल्लाह ने तुम्हें हिदायत की है ताकि तुम याददेहानी हासिल करो।[284]

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى
يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ
نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ
وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۙ ﴿١٥٢﴾

153. और यह कि यही मेरा रास्ता है बिल्कुल सीधा अत: उसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि तुम्हें उस के रास्ते से हटा कर तफ़रक़ा (विभेद) में डाल दें।[285] ये हैं वे बातें जिन की हिदायत उस ने तुम्हें की हैं ताकि तुम तक़वा (ईशभय) अपनाओ।[286]

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

272. अर्थात् गवाही ज्ञान के आधार पर दी जानी चाहिए अगर ये लोग इस ज़िम्मेदारी को नहीं समझते और झूठी गवाही देने के लिए तैयार हो जाऐं तो तुम उन की गवाही की पुष्टि न करो कि अल्लाह के तर्क (हुज्जत) के मुक़ाबले में उन की गवाही (शहादत) बेवज़न और ग़लत है। दरअसल इन से गवाही का मुतालबा इस लिए किया गया है ताकि वे अपनी आत्मा को टटोलें और उन्हें अन्दाज़ा हो कि वे कितने दुस्साहस के साथ यह दावा कर रहे हैं कि ख़ुदा ने फ़लाँ चीज़ को हराम ठहराया है। हालाँ कि इस का कोई सबूत इन के पास नहीं है।

273. अर्थात् अटकल पच्चू एवं निराधार बातों पर चलने और रितियों एवं अंधविश्वासों की जकड़बन्दियों में रहने के बजाय उन पाबन्दियों को क़ुबूल करो जिन का हुक्म वास्तव में अल्लाह ने दिया है। और उन के अल्लाह की ओर से होने के लिए क़ुर्आन का प्रमाण काफी है। ये पाबन्दियाँ सिर्फ खाने के मामले ही में नहीं बल्कि इन का सम्बन्ध संपूर्ण वैचारिक एवं व्यवहारिक जीवन से है ताकि मनुष्य के विचारों में पवित्रता एवं निखार पैदा हो और वह एक नियमबद्ध तथा साफ़ सुथरा जीवन व्यतीत कर सके।

यहाँ जो आदेश दिए गए हैं वे मुसलमानों को सम्बोधित कर के नहीं बल्कि बहुदेववादियों को सम्बोधित कर के दिए गए हैं। इस लिए इन पर अमल दरामद का मुतालबा (Demand) मुसलमानों ही से नहीं ग़ैर मुस्लिमों से भी है। दूसरे शब्दों में क़ुर्आन का मुतालबा हर मनुष्य से है कि वे अपने रब के इन आदेशों को स्वीकार कर के उस का फ़रमाँबरदार बन्दा बन जाए।

274. अर्थात् शिर्क हराम चीज़ों में सब से पहली हराम चीज़ है जिस से इस गुनाह की तीव्रता एवं कठोरता का अन्दाज़ा किया जा सकता है।

शिर्क की व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट १११.

275. माता पिता के साथ अच्छे बर्ताव का आदेश सकारात्मक रुप में दिया गया है ताकि प्रभावित हो सके। इस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो गई कि माता पिता के साथ बुरा बर्ताव हराम है।

276. सन्तान की हत्या का एक स्वरुप अरब वासियों में यह था कि निर्धनता के कारण वे अपने बच्चों की हत्या कर देते थे। वे समझते थे कि हम अपने बेटों की आजीविका (रिज़्क) के ज़िम्मेदार हैं। हालाँकि एक पिता की हैसियत इस से अधिक कुछ नहीं होती कि वह अपने बच्चों का कफ़ील (Gaurdian) होता है न कि राज़िक (आजीविका उत्पन्न करने वाला) राज़िक तो अल्लाह ही की हस्ती है। रही बात ख़ुशहाली या बदहाली की तो वह भी उसी के इख़्तियार में है और दोनों हालतों में इन्सान की आज़माइश होती है।

अल्लाह के राज़िक (पोषक) होने पर जिन को विश्वास नहीं होता वे बच्चों की पैदाइश से घबरा जाते हैं और फिर उन की तादाद को सीमित करने के लिए ग़लत तरीक़े अपनाने लगते हैं। सच्चाई यह है कि बच्चा सिर्फ़ पेट लेकर दुनिया में नहीं आता बल्कि दो हाथ और दो पाँव भी ले कर आता है इसी लिए हम देखते हैं कि जनसंख्या में वृद्धि के साथ आजीविका जुटाने के साधनों में भी वृद्धि हो रही है। क्या यह अल्लाह के राज़िक़ (पोषक) होने का खुला प्रमाण नहीं है।

277. बेहयाई की बातों (अश्लीलता) में व्यभिचार, कुकर्म, नग्नता, नंगी तस्वीर या फिल्में देखना, इश्क लड़ाना, अशलील गाने गाना या सुनना, औरतों का नाच गाना और गाली जैसी तमाम चीज़ें शामिल हैं और इन सब में ज़िना (व्यभिचार) प्रथम श्रेणी की बेहयाई है।

बेहयाई की बातें कहने या बेहयाई के काम कर बैठने की मनाही नहीं की गई है बल्कि उस के पास फ़टकने से भी मना किया गया है। अर्थात् इस के लिए प्रेरित करने, उकसाने और प्रोत्साहन देने वाली चीज़ों से भी बचना चाहिए और इस मामले में इतना सतर्क एवं सावधान होना चाहिए कि इस गुनाह से ऊपर से ही नहीं बल्कि अन्दर से भी मन पाक रहे। अपने मन एवं अपनी इच्छाओं को ऐसा वशीभूत रखा जाए कि बुरे विचार पनप न सकें। बेहयाई का यही छिपा पहलू है जिस पर इस आयत में सावधान किया गया है।

इमाम राज़ी ने इस आयत की तफ़सीर में बड़ी अहम् बात बयान की है फ़रमाते हैं: ''इन्सान जब बाहर के गुनाह से बचता है लेकिन अन्दर से नहीं बचता तो इस का यह मतलब यह है कि उस का बचना अल्लाह की ओर झुकने और उस को मानने के उद्देश्य से नहीं होता बल्कि वह इस लिए बचता है कि उसे लोगों की तरफ़ से निन्दित एवं तिरस्कृत किए जाने का डर होता है और यह चीज़ ग़लत है क्यों कि जिस के नज़दीक लोगों का निन्दा करना अल्लाह की सज़ा से बढ़ कर हो उस के बारे में तो कुफ्र की आशंका है। लेकिन जो व्यक्ति गुनाह को बाहरी तौर पर त्याग देता है और अन्दरुनी तौर पर भी वह इस बात का सबूत देता है कि उस ने गुनाह को केवल अल्लाह के आदेश के आदर, उस के प्रकोप के भय और उस की ओर झुकने और लौ लगाने के कारण त्याग दिया है।

(अत्तफ़्सीरुल कबीर लिर्राज़ी जिल्द १३ पृष्ट २३३)

278. अर्थात् हर इन्सानी जान मुहतरम (आदरणीय) है। अगर किसी को क़त्ल किया जा सकता है तो केवल उसी अवस्था में जब कि शरीअत ने इस का हक़ दिया हो।

279. अर्थात् अगर तुम अक़्ल से काम लो तो तुम्हें ये

आदेश अत्यन्त उचित नज़र आऐंगे, और तुम्हारी समझ में आ जाएगा कि ये मानव जीवन के लिए वास्तव में बेहतरीन हिदायतें हैं।

280. व्याख्या के लिए देखें सूरह निसा नोट १७

281. व्याख्या के लिए देखें सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन नोट १

282. यह एक अहम् और उसूली बात है जो यहाँ बयान हुई है जिस का सम्बन्ध नाप तौल से भी है और दूसरी तमाम ज़िम्मेदीरियों से भी। नाप तौल के मामले में जो ज़िम्मेदारी डाली गई है वह यह कि आदमी बाँट और तराज़ू का सही प्रयोग करे और नाप तौल में कोई कमी न करे। इस के बावजूद अगर अनजाने में कोई भूल चूक हो जाए तो उस पर कोई पकड़ नहीं होगी। यही उसूल दूसरी ज़िम्मेदारियों के बारे में भी है कि आदमी अपनी सामर्थ्य भर अपनी ज़िम्मेदारियों को सही तौर से अदा करने की कोशिश करे। इस के बावजूद अगर कोई कमी रह जाए तो उस से कोई पूछ ताछ न होगी । दूसरे शब्दों में किसी भी ज़िम्मेदारी की अदायगी के सिलसिले में आदमी के बस में जो कुछ है उसे और उस की नीयत को देखा जाएगा।

यह एक मार्गदर्शक उसूल है जिस से आज के हालात में जब कि ग़ैर इस्लामी समाज और ग़ैर इस्लामी व्यवस्थाओं ने इस्लाम पर अमल करने वालों के लिए क़दम क़दम पर रुकावटें खड़ी कर दी हैं और स्वरचित एवं मनगढ़ंत क़ानूनों की जकड़ बन्दियां शरीअत के आदेशों के पालन में रोड़ा बन रही हैं, यह रहनुमाई हासिल होती है कि अगर आदमी ईमानदारी के साथ अल्लाह के आदेशों का पालन करने की कोशिश करे तो जिस हद तक वास्तविक विवशताऐं होंगी उन पर अल्लाह की तरफ़ से पकड़ नहीं होगी क्यों कि हर व्यक्ति अपने सामर्थ्य भर कर्म करने का ज़िम्मेदार है।

283. अर्थात् मुँह से जो बात भी निकले हक़ और इन्साफ़ की हो। अगर मामला किसी नातेदार का है तब भी किसी पक्षपात और हीले बहाने से काम लिए बग़ैर वह बात कहना चाहिए जो न्याय पर आधारित हो।

284. अर्थात् यह सबक़ कोई नया सबक़ नहीं है। मानव स्वभाव इस पाठ से पहले ही से परिचित है और नबियों की शिक्षाओं में ये बातें तो बुनियादि उसूल की हैसियत से शामिल रही हैं। इस लिए क़ुर्आन के ये आदेश दिए हुए सबक़ ही की याददेहानी हैं।

285. सीधे रास्ते से मुराद दीन इस्लाम है जो अल्लाह की बन्दगी की सही राह है और जिस पर चलने की दअवत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दे रहे हैं। और दूसरे रास्तों से मुराद अल्लाह की बन्दगी से विमुखता का मार्ग है चाहे वह धर्म का मार्ग हो या अधर्म का मार्ग । और अल्लाह के इन्कार करने का मार्ग हो या अल्लाह को न मानने का । इस्लाम के सिवा जिस मार्ग को भी अपनाया जाएगा वह ख़ुदा का मार्ग न होगा और वास्तविक राजमार्ग से हटने का अनिवार्य परिणाम विभेद एवं फूट है । अतः हम देखते हैं कि इस्लाम की राह पर चलने से इन्कार कर के इन्सानियत का क़ाफ़िला छिन्न भिन्न हो गया है और अनगिनत वर्ग एवं सम्प्रदाय अस्तित्व में आ गए हैं। इस लिए इन्सानियत में फूट डालने वाले यही ''फ़िरक़ा परस्त'' लोग हैं न कि इस्लाम के सच्चे अनुयायी, क्यों कि असल इन्सानी क़ाफिले से, जो इन्सानियत की शुरुआत ही से इस्लाम के राज मार्ग पर चल रहा था, जुदा होने और अपना अलग फ़िरक़ा बनाने वाले लोग वे हैं जिन्हों ने नई नई राहें निकाली। (अधिक व्याख्या के लिए देखिये सूरह बक़रः नोट ३०९)

286. तक़वा (ईश-भय) की राह यह है कि आदमी उन बातों से बचे जिन की मनाही इन आयतों में की गई है और उन बातों पर कार्यबद्ध हो जिन पर अमल करने की ताकीद की गई है। ऊपर जो एहकाम बयान हुए हैं वे कुल दस हैं और इन की हैसियत बुनियादी एहकाम की है जिन की पाबन्दी अपनाए बग़ैर कोई व्यक्ति भी मुत्तकी (परहेज़गार) नहीं बन सकता।

बनी इस्राईल को भी दस आदेश (Ten Commandments) दिये गये थे जो तौरात में इस तरह बयान हुए हैं:-

''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर कर के न मानना। तू अपने लिए कोई मूर्ति खोद कर न बनाना...तू उन को दण्डवत् न करना और न उन की उपासना करना...तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना...तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना...तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना....तू ख़ून न करना, तू व्यभिचार न करना, तू चोरी न करना। तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।'' (निर्गमन अध्याय २०)

इम में बहुतेरी बातें समान (Common) हैं लेकिन क़ुर्आन के आदेश अधिक व्यापक, अर्थपूर्ण एवं बुराईयों से रोकने में सक्षम हैं।

क्या ये लोग इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते उन के सामने आऐं या तुम्हारा रब खुद आ जाए। या तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ प्रकट हो जाऐं । जिस रोज़ तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ प्रकट हो जाऐंगी तो किसी ऐसे व्यक्ति के लिए उस का ईमान लाना कुछ भी लाभकारी न होगा जो पहले ईमान न लाया हो या जिस ने अपने ईमान में नेकी न कमाई हो। कहो तुम इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार करते हैं।(अल-क़ुर्आन)

154. फिर हम ने मूसा को किताब प्रदान की थी [287] जो नेक रवैया अपनाने वाले के हक़ में नेअमत की पूर्णता थी और जिस में हर बात खोल खोल कर बयान की गई है।[288] और जो सरासर हिदायत और रहमत थी ताकि लोग अपने रब की मुलाक़ात पर ईमान लाऐं।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا
لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾

155. और (अब) हम ने यह किताब उतारी है, बरकत वाली।[289] अतः इस की पैरवी करो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾

156. (और यह इस लिए उतारी है) ताकि तुम यह न कहो कि किताब तो बस हम से पहले के दो गिरोहों पर उतारी गई थी।[290] और वह जो कुछ पढ़ते पढ़ाते थे उस से हम बिल्कुल बेख़बर थे।[291]

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا
وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٦﴾

157. या यह न कहो कि अगर हम पर किताब नाज़िल की गई होती तो हम इन से अधिक हिदायत पाने वाले होते। तो देखो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से ख़ुली हुज्जत (स्पष्ट प्रमाण) और हिदायत और रहमत आ गई है। फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उन से मुँह मोड़े। जो लोग हमारी आयतों से मुँह मोड़ते हैं उन्हें बहुत जल्द इस विमुखता के बदले में बदतरीन (बुरी से बुरी) सज़ा देंगे।

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ
لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ
الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾

158. क्या ये लोग इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते उन के सामने आऐं या तुम्हारा रब खुद आ जाए। या तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ प्रकट हो जाऐं।[292] जिस रोज़ तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ प्रकट हो जाऐंगी तो किसी ऐसे व्यक्ति के लिए उस का ईमान लाना कुछ भी लाभकारी न होगा जो पहले ईमान न लाया हो या जिस ने अपने ईमान में नेकी न कमाई हो।[293] कहो तुम इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार करते हैं।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ
بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا
إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ
انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾

287. अर्थात् इन्सान के लिए हलाल क्या है और हराम क्या है इस को मालूम करने का सही माध्यम अल्लाह की वह्य है और इस वह्य के द्वारा हम हमेशा इन्सान की सही रहनुमाई करते रहे हैं। अत: इब्राहीम की मिल्लत के द्वारा हम ने इन्सान की रहनुमाई की थी और फिर मूसा को तो एक संपूर्ण किताब प्रदान की थी जिस में स्पष्ट रुप से दीन की तमाम बातें बयान कर दी गई थीं। इस लिए यह ख़याल करना सही नहीं कि हलाल और हराम ठहराने के सिलसिले में इन्सान की रहनुमाई का कोई साधन अल्लाह की तरफ़ से नहीं हुआ था या नहीं हुआ है।

288. अर्थात् दीन (जीवन व्यस्था) और शरीअत (क़ानून) से सम्बन्धित तमाम बातें स्पष्ट रुप से पेश की गई थी।

289. इस की व्याख्या नोट १६३ में गुज़र चुकी ।

290. दो गिरोह से मुराद यहूदी और ईसाई हैं। क़ुर्आन के अवतरण के समय यही दो गिरोह ऐसे थे जिन के पास अल्लाह की किताब थी इस लिए इन्ही को अहले-किताब कहा गया। रही दुनिया की दूसरी क़ौमें तो उन के पास धार्मिक ग्रंथ रहे हों या न रहे हों, अल्लाह की किताब का कोई अन्श और कोई भाग उन के पास मौजूद नहीं था इस लिए उन में से किसी को भी अहले किताब नहीं कहा गया। जैसे मजूस जिन के पास धार्मिक ग्रंथ था और अरबवासी जो अपने धर्म को इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सम्बन्ध जोड़ते थे लेकिन उन में से किसी की गिनती भी अहले-किताब में नहीं की गई।

291.अर्थात् क़ुर्आन के उतरने से इस तर्क की समाप्ति हो गई और केवल अरब वासियों ही के तर्क की समाप्ति नहीं हो गई बल्कि दूसरी क़ौमों को भी यह तर्क प्रस्तुत करने का मौक़ा बाक़ी नहीं रहा। क्यों कि इस किताब को अल्लाह तआला ने ऐसी प्रसिद्धि प्रदान की और इस के संदेश को संसार के सभी वर्गों क़ौमों तक पहुँचाने का ऐसा इन्तिज़ाम किया कि कोई क़ौम भी इस से अपरिचित नहीं है और ऐसे साधन पैदा कर दिए हैं कि जिस क़ौम के लोग भी इस किताब को समझना चाहें समझ सकते हैं।

292. मुराद ऐसी निशानियाँ हैं जो ग़ैब की हक़ीक़त से परदा हटा दें और आदमी सर की आँखों से उन को देखने लगे।

293. अर्थात् जिस दिन ख़ुदा की वे ख़ास निशानियाँ प्रकट हो जाऐंगी जो ग़ैब की हक़ीक़तों को बेनिक़ाब करने वाली होंगी तो आज़माइश का मौक़ा बाक़ी नहीं रहेगा इस लिए न किसी काफ़िर का ईमान लाना मान्य होगा और न किसी ऐसे व्यक्ति का ईमान उस के लिए लाभदायक सिद्ध होगा जो ईमान लाने का दावेदार तो था लेकिन उस के व्यवहारिक जीवन में ईमान का कोई असर ज़ाहिर नहीं हुआ।

क़ुर्आन में दूसरे स्थान पर फ़रमाया गया है कि जिन क़ौमों पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल हुआ वे अज़ाब को देख लेने के बाद ईमान लाई थीं। लेकिन उस समय उन का ईमान लाना बिलकुल लाभहीन था''(सूरह मोमिन आयत ८४,८५)

हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस आयत के हवाले से सावधान करते हुए फ़रमाया है कि क़ियामत के निकट आने पर सूरज पश्चिम से उदय होगा। और ऐसी खुली और प्रबल निशानी को देख कर किसी का ईमान लाना उस के लिए लाभकारी न होगा । अत:बुख़ारी की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

لاَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا ، فَاِذَا طَلَعَتْ فَرَآهَا النَّاسُ آمَنُوْا اَجْمَعُوْنَ فَذٰلِکَ حِيْنَ لَا يَنْفَعُ نَفْساً اِيْمَانُهَا ۔(بخاری کتاب الرقاق)

''क़ियामत ख़ड़ी न होगी जब तक कि सूरज पश्चिम से उदय न हो, जब सूरज पश्चिम से निकलेगा और लोग देख लेंगे तो सब ईमान ले आएंगे। लेकिन उस समय किसी का ईमान उस के लिए लाभदायक न होगा'' ।

(बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़)

159. जिन लोगों ने [294] अपने दीन में अलग अलग राहें निकाली और गिरोहों में बट गए उन से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं।[295] इन का मामला अल्लाह ही के हवाले है फिर वह उन्हें बतलाएगा कि वे क्या कुछ करते रहे हैं।[296]

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ
إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

160. जो नेकी ले कर आएगा उस के लिए दस गुना बदला है और जो बदी ले कर आएगा उस को उसी के बराबर बदला दिया जाएगा और लोगों के साथ नाइन्साफ़ी नहीं की जाएगी।[297]

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

161. कहो मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया है बिल्कुल सही दीन,[298] इब्राहीम का तरीक़ा जो रास्त रौ (सीधे मार्ग पर चलने वाला) था और हरगिज़ बहुदेववादियों में से न था।[299]

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

162. कहो मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना (सब कुछ) अल्लाह रब्बुलआलमीन (सारे जगत के मालिक) के लिए है।[300]

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

163. उस का कोई साझीदार नहीं। मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला मुस्लिम हूँ।[301]

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

164. कहो क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूँ हालाँकि वह हर चीज़ का रब है और हर व्यक्ति पर उस की अपनी कमाई की ज़िम्मेदारी है। कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।[302] फिर तुम्हारे रब ही की तरफ़ तुम को लौटना होगा। उस समय वह तुम्हें बताएगा कि जिन बातों में तुम मतभेद करते थे उन की हक़ीक़त क्या थी।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ
إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

165. वही है जिस ने तुम को ज़मीन का ख़लीफ़ा [303] बनाया और तुम में से कुछ के दर्जे कुछ पर बुलन्द किए ताकि उस ने तुम्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में तुम्हारी आज़माइश करे।[304] निश्चय ही तुम्हारा रब सज़ा देने में भी तेज है और क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला भी है।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ
لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٥﴾

294. सूरह की शुरुआत से बहुदेववादियों के साथ जो बहस चली आ रही थी उस को यहाँ कुछ उसूली बातें बयान कर के ख़त्म कर दिया गया है। ये उसूली बातें दीन के राजमार्ग को स्पष्ट करती हैं और इन से यह बात साफ़ हो जाती है कि दीन क्या है और क्या नहीं है।

295. अर्थात् अल्लाह की तरफ़ से इन्सान की रहनुमाई के लिए जो दीन नाज़िल हुआ था वह शुद्ध रुप से तौहीद की राह थी। लेकिन लोगों ने अपने इस दीन में अलग और नई नई राहें निकालीं जिस का नतीजा यह हुआ कि वे फिरक़ों में बट गए । यहूदीवाद हो, ईसाईवाद हो, अरब वासियों का बहुदेववाद हो या किसी देश और किसी क़ौम का कोई और धर्म सब की वास्तविकता यह है कि धर्म चलाने वालों ने अल्लाह के दीन के राजमार्ग से हट कर अलग अलग पगडन्डियाँ निकालीं। अत: इबादतों की जगह बिदअतों (नई नई रीतियों) ने और ख़ुदा के संविधान (शरीअत) की जगह मनगढ़न्त संविधानों ने ले ली यहाँ तक कि एक ख़ुदा की जगह कई ख़ुदा भी रच लिए गए । अब विभिन्न धर्मों के नाम से जो वर्ग और संप्रदाय पाए जाते हैं उन में से किसी की भी राह हक़ की राह नहीं है। इस लिए अल्लाह का रसूल इन तमाम राहों से बिलकुल बेपरवाह है और इन से उस का कोई सम्बन्ध नहीं है और हर उस व्यक्ति को जो हक़ की राह पर चलना चाहता हो उसे इन तमाम धर्मों, सिद्धांतों, व्यवस्थाओं और वर्गों एवं संप्रदायों से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए।

296. अर्थात् पैग़म्बर का काम सत्यमार्ग स्पष्ट करना है। इस के बाद भी यदि धर्म चलाने वाले अपनी सांप्रदायिकता से बाज़ नहीं आते तो उन को उन के हाल पर छोड़ दो। उन का मामला अल्लाह के हवाले है। वे क़ियामत के दिन अपना अन्जाम देख लेंगे।

297. अर्थात् क़ियामत के दिन हर व्यक्ति को अपनी नेकी और बदी का बदला मिलेगा। और उस बदले के लिए उसूल यह होगा कि नेकी का बदला कम से कम दस गुना लेकिन बदी का बदला बदी ही के समान । और इस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि ईमान और सज़ा के मामले में नाइन्साफ़ी तो किसी के साथ भी नहीं होगी । अलबत्ता नेकी की भेंट ले कर आने वालों का अल्लाह तआला इस तरह मान बढ़ाएगा कि उन्हें हर नेकी का कम से कम दस गुना बदला (ईनाम) मिलेगा।

स्पष्ट रहे कि नेकी वही मान्य होगी जो अल्लाह को अकेला इलाह (पूज्य एवं उपास्य) मान कर उस की प्रसन्नता प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई हो।

298. अर्थात् जो दीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया गया है वह सही अर्थों में अल्लाह का दीन है यह दीन हर प्रकार के टेढ़ से पाक है। यहूदियों, ईसाईयों और बहुदेववादियों ने अल्लाह के दीन का जो हुलिया बिगाड़ दिया था उस से पाक कर के उस को अपनी असल शकल में पेश कर दिया गया है। अब इस के स्वरुप को देख कर ही पहचाना जा सकता है कि यह है सच्चा दीन।

299. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अरब के बहुदेववादी अपने धर्म को इब्राहीम से सम्बन्ध बताते हैं लेकिन इब्राहीम हरगिज़ बहुदेववादी नहीं थे। बल्कि हनीफ़ अर्थात एकाग्रता और सत्यनिष्ठा के साथ अल्लाह के दीन पर चलने वाले थे । और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन भी वही तौहीद का दीन है जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दीन था । स्पष्ट रहे कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम केवल अरब वासियों ही के पेशवा नहीं थे बल्कि सारी दुनिया के पेशवा थे। अल्लाह तआला ने उन को लोगों का इमाम बनाया था। इस लिए उन का दीन उन के अनुयायियों के द्वारा विभिन्न देशों और विभिन्न क़ौमों तक पहुँचा था। यह और बात है कि उन क़ौमों ने बाद में बिद्अतें ईजाद कर के इब्राहीम के दीन को बिगाड़ा और उस का एक नया नाम रखा ।

300. स्पष्ट हुआ कि यह दीन दोरंगी और पंचरंगी नीतीयों का क़ायल नहीं बल्कि एक रंगी नीती का क़ायल है। खालिस ख़ुदा परस्ती की नीती का रंग जो पूरी ज़िन्दगी पर चढ़ा हुआ हो। परस्तिश जो अत्यन्त उच्च भावना है अल्लाह के लिए विशिष्ट (खास) हो। जीवन अल्लाह के आदेशानुसार व्यतीत किया जाए और जान की बाज़ी लगा दी जाए तो उसी की राह में और उसी की ख़ातिर। दीन का अनुसरण दिखावटी तौर पर नहीं बल्कि इसी उद्देश्य और इसी स्पिरिट के साथ किया जाए ।

301. अर्थात् कोई उस के हुक्म को माने या न माने और उस के दीन को क़ुबूल करे या न करे मैं ने सब से पहले उस के हुक्म को मान लिया है और उस के दीन इस्लाम को सब से पहले स्वीकार करने वाला (मुस्लिम) मैं हूँ।

302. अर्थात् गुनाह का बोझ ।

303. ख़लीफ़ा अर्थात् वह जिसे इख़्तियारात (अधिकार) सौंपा गया हो । इन्सान को ज़मीन पर एक इख़्तियार रखने वाली सृष्टि बना कर पैदा किया गया है। ये इख़्तियारात अल्लाह की तरफ़ से अमानत हैं और वह इस बात का ज़िम्मेदार है कि इन इख़्तियारात को उस के निर्देशानुसार प्रयोग करे ।

अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ४१

304. अर्थात् क्षमता, कार्यशक्ति और साधनों के लिहाज़ से इन्सानों और इन्सानों के बीच दर्जो का फ़र्क़ है। और यह फ़र्क़ इस लिए रखा गया है ताकि उन्हें आज़माया जाए कि कौन ख़ुदा का शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बन्दा बनता है और कौन नाशुकरा। कौन सब्र का दामन थाम लेता है और कौन छोड़ देता है, कौन बन्दों के अधिकारों को अदा करता है और कौन नहीं, कौन इन्साफ करता है और कौन ज़ुल्म। सारंश यह कि दर्जो में फ़र्क के बग़ैर न इन्सानियत का जौहर खुल सकता था और न उस का खोट जाहिर हो सकता था।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

७. सूरह अल-अअ्राफ़

नाम : आयत 46 में अअ्राफ़ (बुलंदियों) का ज़िक्र आया है जो विशेष महत्व रखता है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-अअ्राफ़ है।

नाज़िल होने का समय : मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह 'अन्आम' के बाद नाज़िल हुई होगी। सूरह अन्आम में रिसालत से सम्बन्धित कुछ संदेहों को दूर किया गया था, इस सूरह में रिसालत के मसले पर इतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं ।

केन्द्रीय विषय : रिसालत (ईश-दौत्य) पर ईमान लाने का निमंत्रण है और रिसालत का इन्कार करने पर होने वाले स्वभाविक एवं वास्तविक अन्जाम से डराया गया है। यह पहलू ग़ालिब है!

कलाम की तरतीब: आयत 1 से 10 की हैसियत भूमिका की है जिस में क़ुर्आन के उतारने का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है कि अचेतावस्था (ग़फ़लत) में पड़े हुए लोगों को चौंकाना एवं सचेत करना है।

आयत 11 से 25 में आदम और इब्लीस का किस्सा बयान किया गया है जिस से शैतान की धोखेबाज़ी स्पष्ट होती है और इस से यह सबक़ मिलता है कि आदमी शैतान के चकमों में न आए। वरना हमेशा के लिए जन्नत से वंचित हो जाएगा।

आयत 26 से 34 में उन गुमराहियों से आगाह किया गया जिन की तरफ़ शैतान इंसान को धोखा दे कर ले जाना चाहता है।

आयत 35 से 53 में इस वास्तविकता को स्पष्ट करते हुए कि अल्लाह ने आरम्भकाल ही में इंसान को इस बात से आगाह किया था कि वह हिदायत के लिए रसूलों को भेजेगा और कामयाब वही होंगे जो उन का आज्ञापालन एवं अनुसरण करेंगे, बताया गया है कि इसी उद्देश्य के लिए पैग़म्बर नियुक्त होते रहे हैं इस लिए उन का आज्ञापालन एवं अनुसरण करने वालों और इस से इन्कार करने वालों का अन्जाम आख़िरत में एक दूसरे से बहुत भिन्न होगा। उस अन्जाम की एक झलक इन आयतों में दिखाई गई है ताकि जो व्यक्ति यह चाहता हो कि उस का अन्जाम अच्छा हो वह रसूल के अनुसरण का मार्ग अपनाए।

आयत 54 से 58 में संक्षिप्त रूप से एकेश्वरवाद (तौहीद) के तर्क प्रस्तुत किए गए हैं ताकि एकेश्वरवाद की ओर बुलाना जो सारे नबियों का एक ही उद्देश्य रहा है, स्वीकार करने के लिए दिल आमादा हो जाएं।

आयत 59 से 93 में कुछ मशहूर पैग़म्बरों के किस्से बयान हुए हैं जिन्हों ने एकेश्वरवाद की ओर लोगों को बुलाया था तथा उस पर जम जाने का न्योता दिया था। और उन की क़ौमों ने इन्कार का रवैया अपनाया था तो वे किस तरह दुनिया ही में अल्लाह के अज़ाब से दोचार हुईं।

आयत 94 से 102 में मानव समूहों को झिंझोड़ा गया है कि वे इन घटनाओं से सबक़ लें।

आयत 103 से 137 में हज़रत मूसा और फ़िरऔन की दास्तान पेश की गई है जो इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि अल्लाह का प्रकोप फ़सादी मनोवृत्ति के लोगों ही पर भड़का है और अल्लाह के रसूल की पैरवी करने वालों पर उस की रहमत ही नाज़िल होती रही है।

आयत 138 से 171 में बनी इस्राईल की उद्दंडता की कुछ मिसालें प्रस्तुत की गई हैं जिस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि अल्लाह की रहमत केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो रसूल का पालन सच्चे मन से करें। आज्ञापालन का मात्र दावा करने से कोई व्यक्ति या समूह अल्लाह की रहमत का हक़दार नहीं बनता । बनी इस्राईल इस का जीवित उदाहारण हैं और आज भी ये लोग अल्लाह की रहमत की छाया में शरण पा सकते हैं बशर्ते कि ये अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान ला कर उन का अनुसरण करें जिन के बारे में पहले से आसमानी किताबों में भविष्यवाणियाँ मौजूद हैं। लेकिन अगर ये इस नबी पर ईमान लाने से मुकरते हैं तो इन के पिछले उद्दंड रवैया को देखते हुए यह बात इन से असंभव नहीं और न ही चकित करने वाली है। इस लिए लोगों को इस नबी पर ईमान लाने के मामले को तर्क एवं प्रमाण की रौशनी में तय करना चाहिए।

आयत 172 से 198 में बहुदेववादियों पर यह स्पष्ट करते हुए कि अल्लाह का साझीदारी ठहराना उस से (प्रकृति से) की गई प्रतिज्ञा की अवहेलना है, एकेश्वरवाद (तौहीद) को मनमोहक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। क़ियामत से संबंधित इस सवाल का कि वह कब आएगी जवाब दिया गया है और उन के संदेहों को दूर करते हुए शिर्क का बुद्धि से परे होना और उस का कदापि ग़लत होना स्पष्ट किया गया है।

आयत 199 से 206 उपसंहार अथवा अन्तिम शब्द हैं जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और आप के माध्यम से आप के अनुयायियों को धैर्य, दृढ़ता और अल्लाह की चर्चा (ज़िक्र) करने की हिदायत की गई है।

७-सूरह अल-अअ्राफ़

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ

आयतें : २०६

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. अलीफ़, लाम, मीम, सॉद। [1]

الٓمّٓصٓ ۚ ﴿١﴾

2. यह किताब है जो तुम पर नाज़िल की गई है [2] (तो देखो) इस की वजह से तुम्हारे दिल में कोई तंगी पैदा न हो।[3] यह इस लिए उतारी गई है कि तुम इस के द्वारा लोगों को होशियार करो [4] और ईमान लाने वालों के लिए याददेहानी (नसीहत) हो। [5]

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِىْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

3. (लोगो !) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से जो कुछ तुम पर नाज़िल हुआ है उस की पैरवी करो और उस को छोड़ कर दूसरे सरपरस्तों की पैरवी न करो।[6] तुम कम ही नसीहत क़ुबूल करते हो।

اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾

4. और कितनी ही आबादियाँ हैं जिन को हम हलाक (नष्ट) कर चुके हैं।अतः उन पर हमारा अज़ाब रात के समय आया या दोपहर में जब कि वे आराम कर रहे थे।[7]

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾

5. और जब हमारा अज़ाब आया तो उन की पुकार इस के सिवा कुछ न थी कि वास्तव में हम ज़ालिम थे।[8]

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

6. तो (याद रखो) हम उन लोगों से ज़रुर पूछ ताछ करेंगे जिन की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गए और निश्चय ही पैग़म्बरों से भी पूछेंगे।[9]

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ ﴿٦﴾

7. फिर हम पूरे इल्म के साथ सारा किस्सा (वृत्तांत) उन के सामने बयान करेंगे। और हम कहीं ग़ायब तो नहीं थे।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾

8. वज़न उस रोज़ हक़ (सत्य) होगा। तो जिन की मीज़ानें (पलड़े) भारी होंगी वही सफ़ल होंगे।[10]

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ۣالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾

1. हुरूफ़े-मुक़त्तआत (विभक्त अक्षरों) की व्याख्या सूरह बक़र: नोट १ और सूरह आले-इमरान नोट १ में गुज़र चुकी।

ये अक्षर सूरह के कुछ मज़मून (विषयों) की तरफ़ इशारा करते हैं जो अपना विशेष महत्व रखते हैं। इस सूरह के विषयों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि अलिफ़ का इशारा अल्लाह की तरफ़ अर्थात एकेश्वरवाद के विषयों की तरफ़ और लाम का इशारा ला इलाहा इल्ला हुव (आयत :158) अर्थात शिर्क (बहुदेववाद) के खंडन के विषयों की तरफ़ है। इसी तरह मीम का इशारा मुर्सलीन (आयत :६) अर्थात रिसालत (ईश-दौत्य) के विषयों की तरफ़ है जो इस सूरह में बयान हुए हैं। अत: नबियों की दअवत से इन्कार के नतीजे में बस्तियों के विनाश के किस्से सुनाने के बाद फ़रमाया:

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْبَآئِهَا

''ये बस्तियाँ हैं जिन के क़िस्से हम तुम्हें सुना रहे हैं''(आयत 101) इस आयत में शब्द 'नुक़ुस्सु' का आख़िरी अक्षर सॉद है। इसी तरह आयत 176 में ''फ़क़्सुसील्क़स-सा''(ये क़िस्से लोगों को सुनाओ) का अन्तिम अक्षर सॉद है।

गोया ये अक्षर सूरह का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हैं कि इस में चार महत्वपूर्ण विषय बयान हुए हैं; तौहीद की दअवत, शिर्क का खण्डन, रिसालत पर ईमान लाने का न्योता और इन्कार का रवैया अपनाने वाली बस्तियों की तबाही के क़िस्से। (और अल्लाह ही अपने कलाम के भेद को भली भाँति जानता है)

2. संबोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

3. अर्थात वास्तविक सच्चाई यह है कि यह किताब अल्लाह ही ने नाज़िल फ़रमाई है लेकिन विरोधी इस को अल्लाह की किताब मानने के लिए तैयार नहीं हैं। वे इस को तुम्हारी रचना ठहराते हैं। इस परिस्थिति से तुम्हें परेशान और दिल तंग नहीं होना चाहिए। तुम संतोष रखो कि वास्तविकता अपनी जगह वास्तविकता है चाहे कोई माने या न माने।

4. यह है क़ुर्आन नाज़िल करने का प्रथम उद्देश्य अर्थात अचेतावस्था में पड़ी मानवता को सचेत करना कि वह बदले के दिन से भिज्ञ हो और इन्कार करने वालों को अल्लाह के अज़ाब से सावधान करना।

5. यह है क़ुर्आन नाज़िल करने का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य। जो लोग इन्ज़ार (तम्बीह) के नतीजे में क़ुर्आन की दअवत स्वीकार कर लें उन के लिए याददेहानी और नसीहत का सामान हो। दूसरे शब्दों में क़ुर्आन से वास्तविक लाभ उठाने वाले वही लोग होंगे जो उस पर ईमान लाऐंगे।

6. अर्थात जीवन के तमाम मामलें में अल्लाह की किताब क़ुर्आन की पैरवी की जानी चाहिए। इस से मुँह मोड़ कर किसी भी मज़हबी पेशवा या सियासी लीडर या विचारक आदि के विचारों, धारणाओं, सिद्धान्तों को मान लेना और उस के पीछे चलना, ख़ुदा को छोड़ कर उस को अपना सरपरस्त बना लेना है। और वास्तव में यह शैतान की पैरवी है।

7. अर्थात् अज़ाब की सख़्ती अचानक प्रकट हुई और ऐसे समय प्रकट हुई जो उन के आराम का समय था। और आराम के समय जो कष्ट पहुँचते हैं वह बहुत तेज़ महसूस होते हैं।

8. अर्थात अज़ाब (प्रकोप) के आसार देखते ही उन्हों ने अपने ग़लत होने एवं अपराधी होने को मान लिया । लेकिन अमल की मुहलत ख़त्म होने के बाद मानने का क्या लाभ?

9. जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गए उन से क़ियामत के दिन पूछा जाएगा कि क्या हमारे पैग़म्बर तुम्हारे पास नहीं आए थे, और क्या उन्होंने इस दिन से ख़बरदार नहीं किया था? फिर तुम ने उन के साथ क्या बर्ताव किया? और पैग़म्बरों से पूछा जाएगा कि क्या उन्होंने अल्लाह का पैग़ाम ज्यों का त्यों अपनी उम्मतों तक पहुँचा दिया था ? और उम्मत की तरफ़ से उस का क्या जवाब मिला?

10. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़ारिअ: नोट ६.

9. और जिन की मिज़ानें (पलड़े) हल्की होंगी [11] तो ये वही लोग होंगे जिन्हों ने अपने आप को घाटे में डाला क्यों कि वे हमारी आयतों के साथ नाइन्साफ़ी करते रहे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُم
بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

10. और हम ने तुम्हें ज़मीन में इख़्तियार वाला बनाया[12] और तुम्हारे लिए गुज़र बसर का सामान एकत्र किया मगर तुम कम ही शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) होते हो।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۗ
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿١٠﴾

11. हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत [13] बनाई, फिर फ़रिश्तों से कहा की सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया [14] मगर इब्लीस,[15] कि सज्दा करने वालों में शमिल न हुआ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا
لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿١١﴾

12. फ़रमाया कि किस चीज़ ने तुझे सज्दा करने से रोका जब कि मैं ने तुझे हुक्म दिया था? उस ने कहा मैं उस से बेहतर हूँ ,तूने मुझे आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से।[16]

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي
مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ﴿١٢﴾

13. फ़रमाया यहाँ से उतर जा। तुझे हक़ नहीं है कि यहाँ घमंड करे। निकल जा कि तू अपमानित होने वालों में से है।[17]

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَن تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ
مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿١٣﴾

14. बोला, मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब लोग (मरने के बाद) उठाए जाएंगे।

قَالَ أَنظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

15. फ़रमाया तुझे मुहलत दी गई।[18]

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾

16. कहा चुँकि तूने मुझे गुमराह कर दिया है [19] इस लिए मैं तेरी सीधी राह पर इन की घात में बैठा रहूँगा।[20]

قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

17. फिर इन के आगे से भी इन पर हमला करुँगा और पीछे से भी, दाऐं से भी करुँगा और बाऐं से भी।[21]और तू इन में से बहुतेरों को कृतज्ञ न पाएगा।

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَن
شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

18. फ़रमाया निकल जा यहाँ से ज़लील और ठुकराया हुआ। इन में से जो तेरी पैरवी करेंगे तो मैं तुम सब से जहन्नम को भर दूँगा।[22]

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۖ لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ
جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

11. व्याख्या के लिए देखिए सूरह क़ारिअ: नोट 7

12. अर्थात् दूसरी सृष्टियों के मुक़ाबले में इन्सान को यह श्रेष्ठता प्राप्त है कि वह ज़मीन पर इख़्तियार एवं अधिपत्य रखने वाली सृष्टि है। स्पष्ट है यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है। इस नेमत से नवाज़े जाने का तक़ाज़ा यह है कि इन्सान अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा बन कर रहे।

13. अर्थात जिस की रचना इस प्रकार हुई कि पहले इस के शरीर का ढाँचा तैयार किया गया फिर उस की सूरत बनाई गई । यहाँ मानव जाति की रचना कब और कैसे हुई इस का वर्णन हुआ है जिस के प्रथम व्यक्ति आदम हैं और जिनकी रचना मिट्टी से हुई थी।

14. इस की व्याख्या सूरह बक़र:नोट ४७ में गुज़र चुकी

15. इस की व्याख्या सूरह बक़र:नोट ४८ में गुज़र चुकी

16. आग एक साफ एवं कोमल वस्तु है और मिट्टी गाढ़ी एवं गन्दी वस्तु है। इब्लीस जिन्नों में से था और जिन्न चूँकि आग से पैदा किए गए हैं इस लिए इब्लीस अपने रचनात्मक पदार्थ का ख़्याल कर इस ख़ब्त में लिप्त हो गया कि वह आदम से बेहतर है और फिर जब ख़ुदा ने उस को आदम के आगे सज्दा करने का हुक्म दिया तो अपना यह तर्क ख़ुदा के सामने प्रस्तुत कर के सज्दा करने से मुकर गया, हालाँकि न उस का यह तर्क उचित था और न ख़ुदा के हुक्म के आगे किसी प्रकार का तर्क रखना ही उचित है। बन्दे का काम तो स्वामी की आज्ञा का पालन करना है। न कि उस के सामने तर्क वितर्क करना। अत: फ़रिश्तों ने अल्लाह के हुक्म का पालन नि:संकोच किया। इस से स्पष्ट हुआ कि ख़ुदा की वास्तविक बन्दगी की राह वही है जो फ़रिश्तों ने अपनाई। रहा इब्लीस का अपने रचनात्मक पदार्थ को देखकर श्रेष्ठता-मनोग्रंथि (Superiority Complex) में मुब्तेला होना उस की निगाह की ख़राबी थी वरना जिन्नों के मुक़ाबले में श्रेष्ठ गुणों वाली सृष्टि इन्सान ही है, अत: धरती के प्रतिनिधित्व का दायित्व मानव ही के सर पर रखा गया है न कि जिन्नों के सर पर।

17. इब्लीस ने ख़ुदा का हुक्म नहीं माना बल्कि घमंड किया इस लिए उस को जन्नत से निकल जाने का हुक्म हुआ। इस से कर्मफल का यह उसूल भी स्पष्ट हुआ कि जो कोई जानते बूझते ख़ुदा के हुक्म को रद्द करेगा और स्वयं को तुच्छ समझने तथा दासता का रवैया अपनाने के बजाय अहं एवं घमंड का रवैया अपनाएगा वह कदापि इस योग्य नहीं है कि जन्नत जैसे सर्वोच्च स्थान में जगह पा सके। उस के हिस्से में निचाई ही है।

18. इब्लीस को यह मुहलत क़ियामत तक के लिए दी गई है और यह मुहलत उस योजना के अन्तर्गत है जिस की ख़ातिर अल्लाह तआला ने इन्सान को ज़मीन का ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बनाया है। देखिए सूरह बक़र: नोट 46)

19. इब्लीस ने अपनी गुमराही की ज़िम्मादारी अल्लाह तआला पर डाल दी हालाँकि अल्लाह तआला ने उसे उस की उद्दंडता के फलस्वरुप गुमराह किया । इस लिए यद्यपि इब्लीस अल्लाह के उस नियमानुसार गुमराह हुआ हो जो गुमराह होने के लिए निश्चित है किन्तु उस की गुमराही का ज़िम्मेदार वह स्वयं है ।

20. सीधी राह से मुराद तौहिद और सत्य धर्म की राह है। इब्लीस को चुँकि मनुष्य से जलन पैदा हो गई थी इस लिए उस ने यह चैलेन्ज दिया कि मैं मानव जाति को तौहीद (एकेश्वरवाद) की राह से हटा कर शिर्क (बहुदेववाद) में लिप्त करने और सत्य धर्म से फेर कर गुमराह करने में कोई कसर उठा न रखूँगा।

21. अर्थात शैतान का हमला इन्सान पर हर तरफ़ से होगा । वह इन्सान को ग़लत धारणाओं एवं सिद्धान्तों से प्रभावित करने, उसे बुराई पर आमादा करने और दुनिया में उपद्रव करने कराने पर उभारने के लिए हर प्रकार के जतन और हर तरह की साजिशें करेगा इन्सान को शैतान के हमलों से बचने के लिए चौमुखी लड़ाई लड़ना होगी।

22. यह जवाब है अल्लाह तआला की तरफ़ से शैतान के चैलेन्ज का कि तू इन्सान को गुमराह करने के लिए पूरी शक्ति लगा ले लेकिन जो भी तेरा अनुसरण करेंगे चाहे उन की संख्या कितनी ही अधिक क्यों न हो उन सब को मैं तुझ समेत जहन्नम में झोंक दूँगा।

दुनिया में इन्सान को चूँकि आजमाइश के लिए भेजा जा रहा है इस लिए शैतान को यह मौक़ा रहेगा कि वह इन्सान को सुनहरे सपने दिखाए और इन्सान को यह आज़ादी रहेगी कि जो लोग उस की बातों में आना चाहते हैं आए लेकिन वे याद रखें कि उन सब का अन्जाम अल्लाह ही के हाथ है और वह क़ियामत के दिन शैतान और उस का अनुसरण करने वाले तमाम इन्सानों को जहन्नम की सज़ा दे कर रहेगा।

19. और ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो [23] और जहाँ से चाहो खाओ मगर उस वृक्ष के क़रीब भी न जाना [24] वरना ज़ालिमों में से हो जाओगे।

وَيٰۤاٰدَمُ اسۡكُنۡ اَنۡتَ وَزَوۡجُكَ الۡجَـنَّةَ فَكُلَا مِنۡ حَيۡثُ شِئۡتُمَا
وَلَا تَقۡرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوۡنَا مِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۱۹﴾

20. फ़िर शैतान ने उन के दिलों में वस्वसा डाला [25] ताकि उन की गुप्त इन्द्रियाँ जो उन से छिपाई गई थीं उन पर खोल दे [26] उस ने कहा तुम्हारे रब ने तुम्हें उस वृक्ष से केवल इस लिए रोका है कि तुम कहीं फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें अनंत जीवन न प्राप्त हो जाए।

فَوَسۡوَسَ لَهُمَا الشَّيۡطٰنُ لِيُبۡدِىَ لَهُمَا مَا وٗرِىَ عَنۡهُمَا مِنۡ
سَوۡاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰٮكُمَا رَبُّكُمَا عَنۡ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ
اِلَّاۤ اَنۡ تَكُوۡنَا مَلَـكَيۡنِ اَوۡ تَكُوۡنَا مِنَ الۡخٰلِدِيۡنَ ﴿۲۰﴾

21. और उस ने क़सम खा कर उन से कहा कि मैं तुम्हारा शुभ चिंतक हूँ।[27]

وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّىۡ لَـكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيۡنَ ﴿۲۱﴾

22. इस तरह वह इन को अपने फरेब में ले आया।[28] फिर जब उन्हों ने उस वृक्ष का मज़ा चखा तो उन की गुप्त इन्द्रियाँ उन पर खुल गईं [29] और वे अपने को जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे।[30]और उन के रब ने उन्हें पुकारा '' क्या मैं ने तुम्हें उस वृक्ष से रोका न था और कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?''

فَدَلّٰٮهُمَا بِغُرُوۡرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتۡ لَهُمَا سَوۡاٰتُهُمَا وَطَفِقَا
يَخۡصِفٰنِ عَلَيۡهِمَا مِنۡ وَّرَقِ الۡجَـنَّةِ ؕ
وَنَادٰٮهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمۡ اَنۡهَكُمَا عَنۡ تِلۡكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّـكُمَاۤ اِنَّ الشَّيۡطٰنَ
لَـكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۲۲﴾

23. उन्हों ने कहा ऐ हमारे रब ! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया और अगर तूने हमें क्षमा नहीं किया और रहम नहीं फ़रमाया तो हम तबाह हो जाऐंगे।[31]

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا وَاِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَـنَا وَتَرۡحَمۡنَا لَـنَكُوۡنَنَّ مِنَ
الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۲۳﴾

24. फ़रमाया उतर जाओ।[32] तुम एक दूसरे के दुश्मन हो [33] और तुम्हारे लिए एक निश्चित समय तक ज़मीन में ठिकाना और गुज़र बसर का सामान है।[34]

قَالَ اهۡبِطُوۡا بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَـكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ
مُسۡتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۲۴﴾

25. और फ़रमाया, इसी में तुम जियोगे, इसी में मरोगे और इसी में से तुम निकाले जाओगे।[35]

قَالَ فِيۡهَا تَحۡيَوۡنَ وَفِيۡهَا تَمُوۡتُوۡنَ وَمِنۡهَا تُخۡرَجُوۡنَ ﴿۲۵﴾

26. ऐ आदम की औलाद ! हम ने तुम पर लिबास उतारा है [36] कि तुम्हारी सत्र् (गुप्तांग) ढांके भी और सज्जा (जीनत) का साधन भी हो [37] और तक़्वा का लिबास तो बेहतरीन लिबास है।[38] यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग याददेहानी (नसीहत) हासिल करें।[39]

يٰبَنِىۡۤ اٰدَمَ قَدۡ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمۡ لِبَاسًا يُّوَارِىۡ سَوۡاٰتِكُمۡ وَرِيۡشًا ؕ
وَلِبَاسُ التَّقۡوٰى ذٰلِكَ خَيۡرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمۡ
يَذَّكَّرُوۡنَ ﴿۲۶﴾

23. इस की व्याख्या सूरह बक़र:नोट 50 में गुज़र चुकी ।

24. इस की व्याख्या सूरह बक़र: नोट 51 में गुज़र चुकी ।

25. शैतान इब्लीस का दूसरा नाम है जिस का ज़िक्र ऊपर हुआ उसे यद्यपि कि जन्नत से बाहर निकाल दिया गया था लेकिन चूँकि आदम का इम्तिहान लेना था कि वह शैतान के बहकावे में आता है या नहीं इस लिए शैतान को वस्वसा डालने की ऐसी शक्ति प्रदान की गई थी कि वह जन्नत के बाहर रह कर भी आदम से सम्पर्क स्थापित कर सकता था। वर्तमान युग में जब कि मानव हवा में रह कर ज़मीन वालों से बात चीत कर लेता है और टेलिविज़न पर प्रकट हो जाता है, शैतान के जन्नत के बाहर से आदम के लिए प्रकट होने या अपनी बात उन पर ज़ाहिर करने की कल्पना कुछ मुश्किल नहीं और शैतान का अपनी बात आदम पर ज़ाहिर करने का काम गुप्त रुप से होता है अत: इस के लिए उचित शब्द वस्वसा डालना ही है।

26. जन्नत में आदम और उन की बीवी को ऐसी शाही पोशाक पहनाई गई थी कि उन को नग्नता का कभी एहसास ही नहीं हुआ। लेकिन शैतान के बहकावे में आने के बाद वह पोशाक उन से उतर गई और उन्हें अपने नग्न होने का एहसास हुआ।

27. ग़ौर करने की बात यह है कि शैतान किस तरह शुभ चिन्तक बन कर आता है और किस प्रकार सुनहरे स्वप्न दिखाता है।

28. आदम और हव्वा से जो गुनाह हुआ वह इस बात का परिणाम था कि वे शैतान के फ़रेब का शिकार हो गए। इस के विपरीत शैतान ने जो गुनाह किया था वह अहंकार के कारण किया था।

स्पष्ट रहे कि क़ुर्आन के इस बयान के अनुसार शैतान के फ़रेब का शिकार आदम और हव्वा दोनों हो गए थे इस लिए यह जो मशहूर है कि शैतान ने हव्वा को बहकाया और हव्वा ने आदम को वृक्ष का फल खाने को उकसाया, सही नहीं है।

29. अर्थात जन्नत की पोशाक उन से उतर गई इस लिए उन्हें नगन्ता का एहसास हुआ।

30. इस से स्पष्ट हुआ कि लज्जा मानव का स्वाभाविक गुण है और शरीर के आवश्यक अंगों को छिपाना (सतर पोशी) प्रकृति की माँग है।

31. देखिए सूरह बक़र: नोट 54 ।

32. इस की व्याख्या सूरह बक़र: नोट 55 में गुजर चुकी।

33. अर्थात इन्सान और शैतान दोनों एक दूसरे के दुशमन हैं। शैतान की इन्सान दुश्मनी तो स्पष्ट ही है,रही बात इन्सान की शैतान दुशमनी की तो जो घटना मानव इतिहास के आरंभ में घटी उस को देखते हुए इन्सान की हैसियत शैतान के दुश्मन की ही निश्चित हो जाती है। इसी लिए इन्सान उस पर लानत भेजता है। उस के साथ मित्रता का संबंध इस के बावजूद कि उस ने इन्सान को गुमराह करने का बीड़ा उठाया है वही लोग स्थापित करते हैं जो दोस्त और दुश्मन में फ़र्क़ करने की क्षमता नहीं रखते।

34. मानव जाति के लिए ठिकाना ज़मीन ही को बनाया गया । और मानव जीवन की सारी आवश्यक वस्तुएं ज़मीन पर मुहैय्या कर दी गई हैं। हवा में या अंतरिक्ष में इन्सान का जाना एक अस्थाई बात एवं अपवाद है। इन्सानी आबादी को क़ियामत तक के लिए ज़मीन ही पर आबाद होना है।

35. अर्थात क़ियामत के दिन इन्सान को जो दोबारा जिन्दा किया जाएगा तो उसे ज़मीन ही के अन्दर से निकाला जाएगा और यही ज़मीन हश्र का मैदान बनेगी।

36. लिबास जिन चीज़ों से तैयार किया जाता है वह अल्लाह ही की पैदा की हुई हैं और वह योग्यता एवं क्षमता जो उस को तैयार करने में इन्सान लगाता है वह भी अल्लाह ही कि प्रदान की हुई है और चूँकि लिबास इन्सान के लिए अल्लाह तआला का अमूल्य उपहार और उस की रहमत की देन है इस लिए इसे नाज़िल करना कहा है

37. यहाँ लिबास के दो महत्वपूर्ण उद्देश्य बयान किए गये हैं। एक यह कि इन्सान अपने गुप्तांगो को ढाकें और दूसरे यह कि उस की सज्जा एवं शोभा का सामान हो। इस से उस धार्मिक विचारों का खंडन होता है जो नाग्नता को धार्मिक श्रद्धा का दर्जा देता है और हिप्पी इज़्म जैसे विचारों का भी जो इन्सान से इन्सानियत का लिबास उतरवाकर उसे जानवरों की श्रेणी में लाना चाहते हैं।

लिबास को अल्लाह ने सजाने एवं शोभा बढ़ाने का साधन बनाया है, अत: अच्छा और सुन्दरता बढ़ाने वाला लिबास बशर्ते कि यह संतुलन की सीमा में हो और अहं से दूर हो एक पसंदीदा चीज़ है। इस से उस कट्टरता का खण्डन होता है जो इबादत में हद से आगे बढ़ने वालों के यहाँ पाया जाता है।

38. मौक़े की मुनासिबत से शरिरिक लिबास से रूहानी लिबास की ओर ध्यानाकर्षित कराया गया है कि जिस तरह तन का लिबास सुन्दरता बढ़ाने का साधन है उसी तरह बल्कि उस से कहीं बढ़कर तक़वा अर्थात परहेज़गारी एवं धर्म

परायणता का लिबास, इंसान के मन को संवारने वाला और उस को वास्तविक सुन्दरता प्रदान करने वाला है। इस लिए इन्सान को चाहिए कि तक़्वा के लिबास से अपने को सजाए।

39. लिबास मानव स्वाभाव की मांग है और इस माँग को पूरा करने का सामान जिस भारी पैमाने पर और जिस उत्तमता के साथ किया गया है उस पर मनुष्य ग़ौर करे तो उसे साफ़ नज़र आएगा कि उस के पैदा करने वाले ने उसे हैवान नहीं बनाया है बल्कि इंसान बनाया है और संवार कर और सभ्य बना कर मानवता के उच्च स्थान पर रखना चाहता है। इस तरह अल्लाह तआला ने लिबास में भी अपनी निशानी रखी है ताकि इंसान अपने पैदा करने वाले को पहचाने और उस ने उस का क्या स्थान निश्चित किया है उस से परिचित हो।

और ये लोग जब बेहयाई का कोई काम करते हैं तो कहते हैं, हम ने इसी तरीक़े पर अपने बाप दादा को पाया है और अल्लाह ने हम को इस का हुक्म दिया है। कहो अल्लाह कभी बेहयाई का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं।(अल-क़ुर्आन)

27. ऐ आदम की औलाद !ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे [40] जिस तरह उस ने तुम्हारे माता-पिता को (बहका कर) जन्नत से निकलवाया था और उन के लिबास उतरवा दिए थे ताकि उन के सतर (गुप्तांग) उन्हें दिखा दे।[41]वह और उस का गिरोह तुम्हें वहाँ से देखता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते।[42] हम ने शैतानों को उन का सरपरस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ
يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ لِلَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

28. और ये लोग जब बेहयाई का कोई काम करते हैं तो कहते हैं, हम ने इसी तरीक़े पर अपने बाप दादा को पाया है और अल्लाह ने हम को इस का हुक्म दिया है।कहो अल्लाह कभी बेहयाई का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात कहते हो जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं।[43]

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۗءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا
بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَي اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

29. कहो मेरे रब ने न्याय का हुक्म दिया है [44] और यह कि अपना रुख़ (उस की तरफ़) सीधा रखो। हर इबादतगाह में,[45] और उसी को पुकारो दीन (इताअत) को उस के लिए ख़ालिस कर के।[46] जिस तरह उस ने तुम्हारी पैदाइश का प्रारंभ किया उसी तरह तुम लौटोगे।

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڛ كَمَا بَدَاَكُمْ
تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ۭ

30. एक गिरोह को उस ने हिदायत दी और दूसरे गिरोह पर गुमराही मुसल्लत हो गई।उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को अपना साथी बना लिया है और समझते हैं कि सीधी राह पर हैं।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ اِنَّهُمُ
اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

31. ऐ आदम की औलाद ! हर मस्जिद की हाज़िरी के समय अपने को लिबास से सुसज्जित करो।[47]और खाओ और पियो [48] और इसराफ़ (अपव्यय या फ़ुज़ूल ख़र्च) न करो कि अल्लाह इसराफ़ करने वालों को पसंद नहीं करता।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا
تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ۧ

32. कहो किस ने हराम किया है अल्लाह की उस ज़ीनत (सज्जा) को जो उस ने अपने बन्दों के लिए पैदा की है और रिज़्क़ की पाकीज़ा चीज़ों को?[49] कहो यह चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में ईमान वालों के लिए और क़ियामत के दिन सिर्फ और सिर्फ उन्हीं के लिए होंगी।[50] इस तरह हम अपने अहकाम खोल खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानने वाले हैं।[51]

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ
الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

40. शैतान के आदम को बहकाने का जो क़िस्सा ऊपर बयान हुआ वह सच्ची घटना और मानव इतिहास के वे पन्ने हैं जो किसी को मालूम न थे। इन को क़ुर्आन इस लिए रौशनी में लाया ताकि इन्सान अपने पैदाइशी दुश्मन शैतान को पहचाने और उस की उपद्रवी मनोवृत्ति एवं कार्यक्रमों से होशियार रहे।

क़ुर्आन शैतान (इब्लीस) का परिचय इस लिहाज़ से कराता है कि वह सूझ बूझ और योजना रखने वाली हस्ती है जिस का संबंध जिन्न जाति से है। वह अल्लाह की वैसी ही बेबस सृष्टि है जैसी दूसरी तमाम बेबस सृष्टियाँ । उस ने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की और उद्दंड हो गया। इस लिए अल्लाह तआला ने उसे गुमराह कर दिया । उसे इस बात की इर्ष्या हो गई थी कि आदम को उस पर प्रधानता क्यों दी गई, और इस ईर्ष्या ही के कारण वह इन्सान का सदा सर्वदा का दुश्मन बन गया। अल्लाह तआला का मन्सूबा इस दूनिया के लिए यह था कि इन्सान का भले और बुरे के मामले में इम्तिहान हो इस लिए उस ने शैतान के मुहलत माँगने पर उसे मौक़ा दिया कि वह दुनिया में अपने उपद्रव एवं अशान्ति फैलाने का काम करता रहे और इन्सानों में से जो लोग उस के बहकाने में आना चाहते हैं आ जाएं अल्बत्ता उस को यह शक्ति नहीं प्रदान की गई है कि वह ज़बरदस्ती किसी को गुमराह करे। उस को बुराई और फितने फैलाने का जो मौक़ा दिया गया है वह अल्लाह की नीति (हिकमत) का तक़ाज़ा है वरना वह अल्लाह के क़ाबू से हरगिज़ बाहर नहीं है। और क़ियामत के दिन उसे उस के तमाम भक्तों समेत जहन्नम की आग में झोंक देने वाला है।

इस वास्तविकता को देखते हुए यह समझना सही नहीं कि शैतान का कोई व्यक्तिक अस्तित्व नहीं बल्कि यह एक मिसाल है जो बुराई और फ़ितने से बचने के लिए प्रस्तुत की गई है। और न शैतान को ख़ुदा के बराबर समझना सही है जैसा कि अग्नि की पूजा करने वाले समझते हैं और जिस के लिए उन्होंने ''अह्रमन'' (बदी का ख़ुदा) का नाम गढ़ लिया है। इसी तरह शैतान को देवताओं का साझीदार भी समझना ग़लत है जैसा कि बहुदेववादी धर्म में समझा जाता है। यह सब विचार धाराएं ग़लत और वास्तविकता के विरुद्ध हैं।

41. आदम और हव्वा एक जोड़े की हैसियत से जन्नत में रहते थे जहाँ न शौच आदि का कोई प्रश्न था और न संतान उत्पन्न करने का । इस जन्नत के लिबास के द्वारा उन के सत्र् (गुप्तांग) इस तरह छिपा कर रखे गए थे कि ख़ुद उन पर ज़ाहिर न हो सके थे । लेकिन शैतान जब उन को फ़रेब देने में कामयाब हो गया, और उन से गुनाह हो गया तो उन के सत्र् उन पर खुल गए और उन्हें जन्नत से निकलना पड़ा यह जन्नत से निकलना चूँकि शैतान की धोखेबाज़ी के फलस्वरुप हुआ इस लिए इस को इस तरह बयान किया गया है कि शैतान ने दोनों को जन्नत से निकलवाया।

42. शैतान ऐसा दुश्मन है जिस को इन्सान देख नहीं पाता किन्तु उस को प्रत्यक्ष रुप से न देख पाना उस के अस्तित्व को नहीं नकारता जब कि कायनात का पैदा करने वाला उस के अस्तित्व से हमें सूचित कर रहा है और मानव इतिहास में भलाई और बुराई में जो संघर्ष छिड़ते रहे हैं और दुनिया में बुराई एवं उपद्रव का जो गर्म वातावरण है वह इस बात का खुला सबूत है कि एक अदृश्य शक्ति इन्सानों को बहकाने और उन्हें बुराई एवं उपद्रव पर उभारने के लिए सक्रिय है।

आज कितनी चीज़ें हैं जिन को दूरबीन और माइक्रो स्कोप से देखा जाने लगा है किन्तु इन यंत्रों की खोज होने से पहले इन्सान इन चीज़ों के अस्तित्व से परिचित न था। इस लिए किसी ऐसी चीज़ का इन्कार जो इन्सान के अनुभव एवं प्रयोग में न आई हो कोई बुद्धिसंगत बात नहीं जब कि उस के होने की ख़बर हमें दृढ़ एवं विश्वसनीय माध्यम से मिल रही हो ।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि शैतान और उस के गिरोह को जो जिन्न जाति से संबंध रखता है इन्सान देख नहीं सकता यह और बात है कि अल्लाह तआला ने कोई अपवादिक सूरत पैदा की हो। जिस तरह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए उस ने पैदा की थी। अत: शैतान या जिन्नों को देखने की कोशिश करना व्यर्थ है एवं सामान्य रुप में जो विचित्र विचित्र बातें जिन्नों को देखने के सिलसिले में बयान की जाती हैं वह विश्वासनीय नहीं।

43. अरब वासी ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ नग्नावस्था में करते थे मर्द दिन में और औरतें रात में निर्वस्त्र हो कर तवाफ़ करतीं अलबत्ता क़ुरैश इस से अलग थे। इस प्रथा को आदर एवं श्रद्धा का दर्जा प्राप्त था इस लिए वे अपने धर्म को जो उन के बाप दादा से चला आ रहा था और जिस में अन्य गुमराहियों के अलावा निर्वस्त्र तवाफ़ करने की कुप्रथा भी शामिल हो गई थी, ख़ुदा की तरफ़ से समझते थे। और इस कुप्रथा के पीछे यह धारणा निहित थी कि कपड़े सांसारिक शोभा की वस्तु हैं और तवाफ़ जैसी इबादत को इस सांसारिक वस्तु से पाक रखना चाहिए। इस तरह धर्म का चोला ओढ़ कर वह एक लज्जाजनक काम के अपराधी हो रहे थे क्यों कि मानव स्वाभाव नग्नता को लज्जाजनक ठहराता है। रहा यह दावा कि ख़ुदा ने ऐसे करने का हुक्म दिया है तो इसका कोई

सबूत नहीं है और न ही यह बात स्वीकार की जा सकती है कि ख़ुदा ने बेहयाई एवं अशलीलता के प्रदर्शन का आदेश दिया होगा । अत: यह दावा ज्ञान पर नहीं अज्ञानता पर आधारित है।

अशलीलता एवं नग्नता को आदर श्रद्धा की श्रेणी में रखने वाले आज भी देखे जा सकते हैं। साधू संयासी लोग एक लंगोटी पर ही बस करते हैं और इन में से कुछ लोग तो बिल्कुल निर्वस्त्र हो कर अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन करते हैं। वास्तविकता यह है कि इन्सान जब शिर्क और कुफ्र की राह पर चल पड़ता है तो उस की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

44. यहाँ ''क़िस्त'' (न्याय) का शब्द विस्तृत अर्थ में इस्तेमाल हुआ हैं दुरुस्त,संतुलित, उचित और न्याय इस के भावार्थ में शामिल हैं । मतलब यह है कि अल्लाह ऐसी अशलील और बेहूदा बातों का हुक्म नहीं देता कि उस की इबादत के लिए आदमी निर्वस्त्र हो जाए बल्कि उस के आदेश न्याय पर आधारित होते हैं इन के द्वारा मानव स्भाव के साथ पूरा पूरा इन्साफ़ किया जाता है। वह ऐसा कोई हुक्म नहीं देता जो मनुष्य के स्वभाव पर और उस की नैतिकता पर ज़ुल्म ढाने वाला हो । उस के आदेश असंतुलित नहीं होते बल्कि उन में उत्तम श्रेणी का संतुलन होता है। और वे मानव जीवन के लिए अति उचित होते हैं। उस ने हर मामले में टेढ़ से विमुख हो कर सीधे सच्चे रास्ते को अपनाने का हुक्म दिया है। फिर इन्सान अन्धा बन कर उन तौर तरीक़ों को क्यों अपनाता है जो धर्म के नाम से प्रस्तुत किए जाते हैं लेकिन जिन का नैतिक अपराध होना इतना स्पष्ट हो कि कोई भी बुद्धि रखने वाला आदमी इस को महसूस किए बिना न रह सके।

45. अर्थात इबादत में तुम्हारा रुख अल्लाह ही की तरफ़ होना चाहिए तुम प्रतिष्ठित मस्जिद खाना-ए-काबा में हो या किसी और इबादतगाह में। अल्लाह के सिवा किसी और का ख़याल तक दिल में नहीं आना चाहिए।

अल्लाह की तरफ़ अपना रुख सीधा रखने के मफ़हूम में यह बात भी शामिल है कि इन्सान सीधे सीधे अल्लाह की इबादत करे और किसी को माध्यम और वसीला करार दे कर उस की इबादत न करे।

46. व्यख्या के लिए देखिए सूरह बैय्यिन: नोट 9

47. अर्थात् चाहे मस्जिद-हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद अर्थात ख़ाना-ए-काबा) हो या कोई और मस्जिद उस में हाज़िरी लिबास उतार कर नहीं बल्कि लिबास पहन कर होनी चाहिए। क्यों कि ख़ुदा के दरबार की उपस्थिति के लिए सुसभ्य होना आवश्यक है।

48. मक़सद धर्म के संयास योग एवं तप की धारणाओं का खंडन करना है जो वस्त्र और खाने पीने (से दूर रहने के) मामले में इतना कट्टर बना देता है गोया कि ये दुनिया की गंदगी है जिन को त्याग देना ही बेहतर है। फिर यह धारणा मनुष्य को इस बात पर आमादा करती है कि वह खाने पीने की चीज़ों को अल्लाह की नेअमत क़रार देता है जो इन्सान के लाभ ही के लिए पैदा की गई हैं अल्बत्ता जैसा कि आयत में आगे कहा गया है अपव्यय से बचना चाहिए।

49. यह सवाल योग और तप की धारणाओं पर करारी चोट है।

मतलब यह है कि वस्त्र जैसी चीज़ जो मनुष्य को सुन्दरता प्रदान करने वाली और खाने पीने की साफ़ और स्वच्छ चीज़े जो इन्सान के लिए रिज़्क का सामान हैं इस लिए पैदा कर दी गई हैं कि इन्सान अल्लाह तआला की इन नेअमतों से फ़ायदा उठाए। फिर किसी को क्या हक़ है कि वह इन चीज़ों को उस के बन्दों पर हराम ठहराए या ख़ुदा और धर्म के नाम पर उन के इस्तेमाल के संबंध में अपनी ओर से पाबन्दियाँ लागू करे। यह आयत इस प्रकार की तमाम पाबन्दियों को निरस्त करती है.

50. अर्थात यद्यपि दुनिया में ये नेअमतें सर्वजनिक रुप से ख़ुदा के बन्दों के लिए हैं लेकिन ख़ुदा के वफ़ादार बन्दों (ईमान वालों) को उन से लाभ उठाने का अधिकार प्रथम है और क़ियामत के दिन तो ये नेअमतें उन ही का हिस्सा होंगी। काफ़िर इन से बिलकुल वंचित रहेंगे।

51.अर्थात इन अहकाम से जो इतने स्पष्ट रुप से क़ुर्आन में बयान किये गए हैं व्यवहारिक रुप से इस से वही लोग रहनुमाई हासिल कर सकेंगे जो जिहालत में लिप्त नहीं हैं बल्कि जिन्होंने फैसला कर लिया है कि वे अपने जीवन की यात्रा ज्ञान की रौशनी में तय करेंगे।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

ऐ आदम की औलाद ! अगर तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल आऐं जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो कोई अल्लाह से डरेगा और अपनी इस्लाह (सुधार) कर लेगा तो ऐसे लोगों के लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे दुखी होंगे।(अल-क़ुर्आन)

33. कहो मेरे रब ने जिन चीज़ों को हराम ठहराया है वे तो ये हैं, बेहयाई की बातें चाहे वे खुली हों या छिपी,[52] और गुनाह [53] और नाहक़ की ज़्यादती [54] और ये कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराओ जिस के लिए उस ने कोई सनद (प्रमाण) नहीं उतारी [55] एवं यह कि अल्लाह के नाम से ऐसी बात कहो जिस का तुम्हें कोई ज्ञान नहीं।[56]

قل انما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها وما بطن والاثم
والبغي بغير الحق وان تشركوا بالله ما لم ينزل به سلطنا
وان تقولوا على الله ما لا تعلمون ﴿٣٣﴾

34. और हर उम्मत के लिए एक समय निश्चित है फिर जब उन का समय आ गया तो वे न एक क्षण पीछे रह सकते हैं और न एक क्षण आगे।[57]

ولكل امة اجل فاذا جاء اجلهم لا يستاخرون ساعة
ولا يستقدمون ﴿٣٤﴾

35. ऐ आदम की औलाद ! अगर तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल आऐं जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो कोई अल्लाह से डरेगा और अपनी इस्लाह (सुधार) कर लेगा तो ऐसे लोगों के लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे दुखी होंगे।[58]

يبني ادم اما ياتينكم رسل منكم يقصون عليكم ايتي فمن
اتقى واصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٣٥﴾

36. और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाऐंगे और उन के मुक़ाबले में घमंड करेंगे। वे दोज़ख़ वाले हैं, हमेशा दोज़ख़ में रहने वाले।

والذين كذبوا بايتنا واستكبروا عنها اولئك اصحب النار
هم فيها خلدون ﴿٣٦﴾

37. फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह के नाम से झूठ गढ़े या उस की आयतों को झुठलाए? ऐसे लोग अल्लाह के लिखे के अनुसार अपना हिस्सा पाते रहेंगे [59] यहाँ तक कि हमारे दूत इन (की रुहों) को क़ब्ज़ करने के लिए पहुँच जाऐंगे। उस समय वे उन से पूछेंगे. कहाँ हैं तुम्हारे वे पूज्य जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते थे? वे कहेंगे कि वे हम से खोए गए और वे ख़ुद अपने खिलाफ़ गवाही देंगे कि वास्तव में वे काफ़िर थे।[60]

فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا او كذب بايته
اولئك ينالهم نصيبهم من الكتب حتى اذا جاءتهم
رسلنا يتوفونهم قالوا اين ما كنتم تدعون من
دون الله قالوا ضلوا عنا وشهدوا على انفسهم انهم
كانوا كفرين ﴿٣٧﴾

38. हुक्म होगा तुम भी उन उम्मतों (समुदायों) के साथ जो जिन्नों और इन्सानों की तुम से पहले गुज़र चुकी हैं, जहन्नम की आग में दाखिल हो जाओ। जब भी कोई उम्मत उस में दाखिल हो गी अपनी साथी उम्मत (समुदाय) पर लानत करेगी [61] यहाँ तक कि जब सब वहाँ जमा हो जाऐंगे तो पिछली उम्मत पहली उम्मत के बारे में कहेगी कि ऐ हमारे रब ! इन ही लोगों ने हमें गुमराह किया अतः इन्हें आग का दोहरा अज़ाब दे। इर्शाद होगा हर एक के लिए दोहरा अज़ाब है [62] लेकिन तुम जानते नहीं हो।

قال ادخلوا في امم قد خلت من قبلكم من الجن والانس
في النار كلما دخلت امة لعنت اختها حتى اذا اداركوا فيها
جميعا قالت اخرىهم لاولىهم ربنا هؤلاء اضلونا فاتهم
عذابا ضعفا من النار قال لكل ضعف
ولكن لا تعلمون ﴿٣٨﴾

52. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट 277 में गुज़र चुकी ।

यहाँ धर्म चलाने वालों के उस रवैये पर पकड़ की गई है कि जो अच्छी और पाक चीज़ें अल्लाह ने हलाल ठहराई थीं उन को तुम ने हराम ठहरा लिया । लेकिन जो बूरी और अशलील बातें अल्लाह ने हराम ठहराई थीं उन को तुम ने हलाल ठहरा लिया ।

53. अर्थात हर प्रकार के गुनाह के काम ।

54. अर्थात् ज़ुल्म और ज़्यादती के काम जो सरासर सत्य के विरुद्ध हैं और जिन का कोई औचित्य नहीं।

55. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट:१३५

56. अर्थात ख़ुदा से ऐसी बात सम्बन्धित करना जिस के बारे में नहीं मालूम कि उसे वास्तव में ख़ुदा ने कहा है या उस का हुक्म दिया है। दीन में नई नई बातें (बिदअतें) निकालना और प्रचलित करना, धर्म का अविष्कार करना और मन माने तरीक़े पर शरीअत (संविधान) बनाना, सब पर यह लागू होता है।

57. यहाँ उम्मत से मुराद रसूल की उम्मत है जैसा कि सूरह यूनुस आयत ४७ में इर्शाद हुआ है:-

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ـ

अर्थ: ''हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब रसूल उन के पास आ जाता है तो उन के बीच इंसाफ़ के साथ फैसला किया जाता है और उन के साथ हरगिज़ नाइन्साफ़ी नहीं की जाती ।''

मतलब यह है कि जब कोई रसूल किसी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता है तो उस क़ौम के लिए एक अवधि निश्चित कर देता है। वह इस अवधि के दौरान रसूल की दअवत को क़ुबूल करे और उद्दंडता से बाज़ आ जाए। लेकिन अगर वह क़ौम इस अवधि में रसूल की दअवत को क़ुबूल नहीं करती बल्कि कुफ्र का रवैया अपनाती है तो फिर जैसे ही निश्चित अवधि पूरी होती है इस दुनिया ही में उस को पकड़ लिया जाता है। और यह पकड़ इस तरह ठीक समय पर होती है कि एक क्षण भी इधर उधर नहीं हो पाता ।

58. यह उस सबक़ की याददेहानी है जो मानव जाति को आरंभ में दिया गया था।

59. अर्थात जितने दिन और जैसी जिन्दगी उन के भाग्य में लिखी है, पूरी करेंगे।

60. यह सवाल और जवाब मौत के फ़रिश्तों और रुह के बीच होता है और बहुदेववादियों की रुह स्वीकार कर लेती है कि जिन को वह ख़ुदा समझ कर पुकारता रहा है वे सब झूठे ख़ुदा थे और सच्चे ख़ुदा का इन्कार कर के उस ने बहुत बड़े अपराध का काम किया है।

पता चला कि आँख बंद होते ही ग़ैब (परोक्ष) की वास्तविकताऐं खुलने लगती हैं।

61. दुनिया में गुमराह क़ौमें धर्म, संस्कृति, सभ्यता और दूसरे मामलों में अपने पूर्व की गुमराह क़ौमों का अन्धा अनुकरण करती रही हैं और ऐसा भी हुआ है कि एक गुमराह क़ौम अपनी समकालीन क़ौमों का नेतृत्व करती रही हैं । अंधानुकरण करने वाले अपने पूवर्जों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते और अपने गुमराह पेशवाओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे हैं। लेकिन क़ियामत के दिन जब जहन्नुम में सब इकट्ठे हो जाएंगे तो वे अपने पूर्व के लोगों और नेताओं पर लानत के डोंगरे बरसाएंगे कि उन्होंने ग़लत मिसालें क़ायम की थीं। जिस के कारण वे गुमराह हुए।

62. अर्थात जो क़ौम भी गुमराह हुई है उस ने दूसरी क़ौमों और आने वाली नस्लों के लिए गुमराही का सामान किया है। इस लिए हर क़ौम दोहरे अपराध की भागीदार हुई है और दोहरी सज़ा की हक़दार है।

39. और पहली उम्मत (समुदाय) पिछली उम्मत (समुदाय) से कहेगी कि तुम को हम पर कोई प्रधानता प्राप्त नहीं हुई। अतः तुम भी अपनी कमाई के बदले में अज़ाब का मज़ा चखो।[63]

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

40. निःसंदेह जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन के मुक़ाबले में घमंड किया उन के लिए आसमान के दरवाज़े हरगिज़ नहीं खोले जाऐंगे [64] और न वे जन्नत में दाखिल हो सकेंगे जब तक कि ऊँट सुई के नाके से न गुज़र जाए।[65] हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ
أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي
سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

41. उन के लिए जहन्नम ही का बिछौना होगा और ऊपर से ओढ़ना भी उसी का होगा हम ज़ालिमों को इसी तरह बदला देते हैं।

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

42. और जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने नेक अमल (सदाचारा) किए और हम किसी जान पर उस की ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालते।[66] वे जन्नत वाले हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾

43. उन के दिलों में जो वैमनस्य होगा उसे हम निकाल लेंगे।[67] उन के तले नहरें प्रवाहित होंगी और वे कहेंगे शुक्र अल्लाह का जिस ने हमें इस की हिदायत प्रदान की।[68]अगर अल्लाह हमें हिदायत न प्रदान करता तो हम कभी हिदायत न पाते। हमारे रब के रसूल हक़ ले कर आए थे और उन से पुकार कर कहा जाएगा कि यह है जन्नत जिस के तुम अपने कर्मों के बदले में वारिस बनाए गए हो।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ ۖ
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا
أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ۖ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَنْ
تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

44. और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकार कर कहेंगे कि हमारे रब ने हम से जो वादा किया था उस को हम ने सच्चा पाया फिर क्या तुम ने भी उस वादे को सच्चा पाया जो तुम्हारे रब ने तुम से किया था? वे जवाब देंगे, हाँ। उस समय एक पुकारने वाला उन के बीच पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो ज़ालिमों पर।[69]

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا
رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۖ قَالُوا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ
مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَنْ لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

45. जो अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में टेढ़ पैदा करना चाहते थे [70]और आख़िरत का इन्कार करने वाले थे।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٤٥﴾

63. अर्थात् हम ने अगर तुम्हारे लिए बुरी मिसाल क़ायम की थी तो तुम ने दूसरों के लिए कौन सी अच्छी मिसाल क़ायम की कि तुम्हारा जुर्म कम हों। अगर तुम हमारा अंधानुकरण कर के गुमराह हुए तो तुम्हारा अंधानुकरण कर के दूसरी क़ौमें गुमराह हुई अतः तुम्हारा अपराध अपनी जगह है और उस के फ़ल के तुम स्वयं ज़िम्मेदार हो।

64. अर्थात उन के लिए ऊपर उठना नहीं बल्कि नीचे गिरना निश्चित है। उन के लिए प्रगति की सारी राहें बन्द होंगी वे न आसमानी दुनिया में प्रवेश पा सकेंगे और न उन को मान्यता ही प्राप्त हो सकेगी अर्थात उन्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा ।

65. अर्थात जिस प्रकार सुई के नाके से ऊँट का गुज़रना असंभव है उसी तरह इन काफ़िरों और उद्दंड लोगों का जन्नत में प्रवेश असंभव है। इंजील में भी इस से मिलती जुलती बात बयान हुई है:-

''तब यीशु ने अपने चेलों से कहा मैं तुम से सच कहता हूँ कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।फिर तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है।''

(मत्ती १९:२३,२४)

इस बयान में जन्नत को ''परमेशवर का राज्य'' कहा गया है।

66. इस की व्याख्या सूरह बक़रः नोट 482 में गुज़र चुकी ।

67. अर्थात ईमान वालों के बीच आपस में जो कलह एवं रंजिश रही होगी वह दूर कर दी जाएगी और कटुता के जो दाग़ होंगे वे मिटा दिए जाऐंगे। अल्लाह तआला उन के दिल पाक साफ कर के उन को जन्नत में दाख़िल करेगा अतः वे अपने को सच्चे मित्रों के बीच पाऐंगे।

68. ईमान वाले जन्नत में दाख़िल होने के बाद अपने किये पर गर्व नहीं कर रहे होंगे कि हम ने कारनामा ही ऐसा दिखाया था कि जन्नत के हम हक़दार हुए बल्कि वे इसे अल्लाह की कृपा, उदारदान एवं एहसान समझेंगे और उस का शुक्र अदा करेंगे कि उस की रहनुमाई और तौफ़ीक़ से इस योग्य हुए कि कामयाबी की मंजिल को पहुँच सके।

69. जन्नत वालों की दोज़ख़ वालों से बात चीत जब कि दोनों के बीच बहुत बड़ा फ़ासला होगा यह स्पष्ट करती है कि परलोक में सुनने और देखने की शक्ति दुनिया के मुक़ाबले में कई गुना बढ़ी हुई होगी और प्रसारण के साधन भी असीमित होंगे। यह बात वर्तमान वैज्ञानिक युग के मानव को तनिक भी चकित करने वाली नहीं है क्यों कि वह टेलिफोन और टेलिविज़न के द्वारा हज़ारों मील की दूरी तक अपनी आवाज़ और अपनी तस्वीर स्थानान्तरित (Transfer) कर सकता है और अंतरिक्ष में उड़ने वाले मनुष्य से सम्पर्क स्थापित कर सकता है।

70. व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इमरान नोट 125.

46. और दोनों के बीच एक ओट होंगी [71] और ''अअ्राफ़'' (बुलन्दियों) पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उस के चिन्हों से पहचान लेंगे।[72] वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे सलामती हो तुम पर [73]--वे अभी उस में दाख़िल नहीं हुए मगर इस की उम्मीद रखते होंगे।[74]

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ
وَنَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا
وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾

47. और जब उन की निगाहें दोज़ख़ वालों की तरफ़ फ़ेर दी जाऐंगी तो कहेंगे, ऐ हमारे रब हमें इन लोगों में शामिल न कर।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا
تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

48. और अअ्राफ़ (बुलन्दियों) वाले कुछ व्यक्तियों को उन के चिन्हों से पहचान कर पुकारेंगे कि न तो तुम्हारे जत्थे तुम्हारे काम आए और न वे चीज़े जिन पर तुम्हें घमंड था।[75]

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا
مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٨﴾

49. और क्या ये (ईमान वाले) वही लोग नहीं हैं जिन के बारे में तुम क़समें खा खा कर कहते थे कि इन्हें अल्लाह कभी अपनी रहमत से नहीं नवाज़ेगा ? (लेकिन आज उन से कहा गया कि) दाख़िल हो जाओ जन्नत में तुम्हारे लिए न कोई भय है और न किसी तरह का शोक।[76]

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ
لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

50. और दोज़ख़ वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि थोड़ा सा पानी हम पर डाल दो। या जो रिज़्क अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से कुछ दे दो।वे जवाब देंगे कि ये चीज़ें अल्लाह ने काफ़िरों पर हराम कर दी हैं।[77]

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ
الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى
الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

51. जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बनाया था।[78] और जिन को दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा था तो आज हम भी उन्हें उसी तरह भुला देंगे [79]जिस तरह उन्हों ने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
فَالْيَوْمَ نَنْسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾

52. और हम इन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिस में हम ने ज्ञान के आधार पर खोल खोल कर बातें बयान कर दी हैं [80] और जो हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाऐं।

وَلَقَدْ جِئْنَاهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

71. जन्नत और दोज़ख़ के बीच एक ओट होगी जो सीमा रेखा (Border) का काम देगी एक तरफ़ स्वर्ग लोक होगा तो दूसरी तरफ़ नरक लोक ।

72. इस ओट (Border) की बुलन्दियों से जिसे अअ्राफ़ कहा गया है, कुछ लोगों को जन्नत और दोज़ख़ का अनुभव कराया जाएगा और वे उन लोगों को जिन से दुनिया में उन को वास्ता रहा है देख कर पहचान लेंगे कि यह फ़लाँ आदमी है और यह फ़लाँ । जन्नत और जहन्नम में जन समूह के बावजूद ख़ास लोगों को पहचानना इस लिए संभव होगा कि हर जन्नती और हर जहन्नमी के लिए एक ख़ास चिन्ह होगा जो उस के व्यक्तित्व को प्रकट कर रहा होगा।

73. अअ्राफ़ वाले जब इन जन्नतियों को देखेंगे जिनको वे दुनिया में जानते पहचानते थे तो उन को सलामती का पैग़ाम देंगे। यह गोया उन की कामयाबी पर अअ्राफ़ वालों की ओर से मुबारकबाद होगी।

74. अर्थात् अअ्राफ़ वाले अभी जन्नत में दाख़िल नहीं हुए होंगे लेकिन उस के उम्मीदवार होंगे। अल्लाह तआला के इस बयान से स्पष्ट होता है कि वह इन को दोज़ख़ वालों और जहन्नम वालों का हाल दिखाने के बाद जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।ये अअ्राफ़ वाले कौन लोग होंगे इस की पुष्टी क़ुर्आन ने नहीं की लेकिन संदर्भ से पता चलता है कि ईमान वालों में से ये वह लोग होंगे जिन का अमल (कर्म) उस श्रेणी का नहीं होगा कि जन्नत में जाने वालों की दौड़ में आगे निकल जाएं इस लिए उन को जन्नतियों और दोज़ख़ियों की अनुभूति कराने के बाद जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

75. अर्थात् दोज़ख़ियों में से वे उन लोगों को पहचान लेंगे जिन्हें वे दुनिया में जानते पहचानते थे। जिन्हें धन दौलत, और सत्ता शक्ति पर घमंड था और उन का यह घमंड हक़ बात क़ुबूल करने में रोक साबित हुआ। ऐसे लोगों को उन के ख़ास चिन्हों द्वारा पहचान लेने के बाद वे उन्हें याद दिलाएंगे कि ये चीज़ें जिन पर तुम्हें मान था आज तुम्हारे क्या काम आई।

मालूम हुआ कि फ़िरऔन, हामान, अबूलहब, अबूजेहल और इस श्रेणी के दूसरे लीडर अपने ख़ास चिन्हों द्वारा जहन्नम में पहचाने जाएंगे और अअ्राफ़ वाले जब उन को याद दिलाएंगे कि उन की मान अभिमान की पूंजी कुछ काम न आई तो इस से उन के अपमान और रुसवाई में वृद्धि ही होगी।

76. अर्थात् दुनिया में तुम ईमान वालों को घृणा की दृष्टि से देखते थे और इस बात का दावा करते थे कि अल्लाह की नज़र में भी इन का कोई मान नहीं और न उस की रहमत में ये जगह पाने वाले हैं लेकिन आज आँखें खोल कर देख लो कि इन ही लोगों को अल्लाह ने श्रेष्ठता प्रदान की है और इस सम्मान से अलंकृत किया है कि ''जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम्हारे लिए ख़ौफ़ का मौक़ा है न दुख का''।

77. अर्थात् जन्नत में जो चीज़ें खाने पीने की मुहैय्या होंगी उन से अल्लाह तआला ने काफ़िरों को वंचित कर दिया होगा इस लिए कोई चीज़ उन को न दी जा सकेगी।

78. यह अल्लाह तआला की ओर से स्पष्टीकरण है कि काफ़िरों की हरकतें दुनिया में ये और ये रही हैं फिर वे आख़िरत में इनामों के हक़दार किस तरह हो सकते हैं?

79. अल्लाह तआला किसी चीज़ को भूलता नहीं है। यहाँ जो फ़रमाया कि हम उन्हें भुला देंगे तो इस का मतलब अल्लाह तआला का उन से विमुख होना, उन्हें नज़रंदाज करना और उन की ओर से अपनी कृपा दृष्टि फेर लेना है।

80. अर्थात इस किताब में हिदायत की तमाम बातें साफ साफ, खोल कर बयान की गई हैं। कोई बात ऐसी नहीं जो हिदायत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और बुनियाद की हैसियत रखती हो, और वह गोल मोल, भ्रामक एवं उलझे हुए अन्दाज़ में प्रस्तुत की गई हो। फिर इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इस में अनुमानित एवं ख़याली बातें नहीं बयान की गई हैं बल्कि इस में जो कुछ भी बयान किया गया है । ठोस इल्म की बुनियाद पर बयान किया गया है । इस लिए कि इस का नाज़िल करने वाला अल्लाह तआला है जिस का ज्ञान (इल्म) ठोस और विश्वस्त है।

क़ुर्आन की यह विशेषता उसे दुनिया की उन तमाम किताबों से अलग एवं प्रमुख ठहराती है, जो ब्रहमाण्ड की वास्तविकता और मनुष्य के अस्तित्व लक्ष्य के बारे में अनुमानों, ख़याली बहसों और उलझे विचारों पर आधारित होती हैं।

53. क्या ये लोग इस बात की प्रतिक्षा में हैं कि इस की हक़ीक़त ज़ाहिर हो जाए। जिस दिन इस की हक़ीक़त सामने आ जाएगी तो वे लोग जो इसे पहले भुला बैठे थे बोल उठेंगे कि निःसंदेह हमारे रब के रसूल हक़ ले कर आए थे।[81] फिर क्या अब कोई सिफ़ारिशी हैं जो हमारी सिफ़ारिश करे या (है कोई सूरत कि दुनिया में हमें) वापस भेज दिया जाए ताकि जो काम हम करते रहे हैं उस से अलग काम करें। उन्होंने अपने को तबाही में डाला और जो बातें वे गढ़ा करते थे वे सब उन से गुम हो गईं।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ يَقُولُ
الَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ
فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي
كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا
كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾

54. निःसंदेह तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया।[82] फिर वह अर्श (राज सिंहासन) पर बिराजमान हुआ।[83] वह रात को दिन पर ढाँक देता है जो उस के पीछे दौड़ा चला आता है। और उस ने सूरज और चाँद और सितारे पैदा किए जो उस के हुक्म से मुसख़्ख़र (वशीभूत) हैं।[84] याद रखो पैदा करना भी उस के लिए ख़ास है और हुक्म देना भी।[85] बड़ा बा बरकत है अल्लाह,[86] सारे जगत का रब।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ
حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا
لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

55. अपने रब को पुकारो, गिड़गिड़ाते हुए और चुपके चुपके।[87] वह हद से गुज़रने वालों को पसन्द नहीं करता ।[88]

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

56. और ज़मीन में उस की इस्लाह (सुधार) के बाद फ़साद बरपा न करो [89] और उसी को पुकारो ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ।[90] निःसंदेह अल्लाह की रहमत अच्छे कर्म वालों से करीब है।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا
وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

57. वही है जो अपनी रहमत [91]के आगे आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी लिए हुए भेजता हैं। फिर जब वे बोझल बादल उठा लेती हैं तो हम उस को किसी मुर्दा ज़मीन की ओर हाँक ले जाते हैं और वहाँ पानी बरसा कर हर प्रकार के फल पैदा करते हैं। इस तरह हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं ताकि तुम नसीहत हासिल करो।[92]

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ
حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ
كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

81. अर्थात् क़ुर्आन जिन बातों की ख़बर दे रहा है उन को क्या ये लोग हक़ीक़त के रुप में देखना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो इन्हें मालूम होना चाहिए कि जिस दिन ये बातें घटनाओं के रुप में घटित होंगी और सच्चाई बिल्कुल बेनिक़ाब हो कर सामने आएगी तो यही लोग जो आज ग़ैब (परोक्ष) की हक़ीक़तों को देखी अनदेखी कर रहे हैं उस समय इन की सच्चाई को स्वीकार करने लगेंगे, मगर वह समय करने का नहीं बल्कि फ़ल पाने का होगा। इस लिए उस समय उन का मानना उन के लिए कुछ भी लाभदायक न होगा।

82. मुराद अल्लाह के दिन हैं क्योंकि हमारे 24 घंटे वाले दिन का अस्तित्व आसमान और ज़मीन की पैदाइश से पहले नहीं था एवं क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर फ़रमाया गया है कि अल्लाह के नज़दीक एक दिन एक हज़ार साल का होता है। इस से पता चलता है कि क़ुर्आन में ऐसे मौक़े पर दिन का लफ़्ज़ दौर (Period) के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है इस लिए छ दिन से मुराद छ दौर हैं जिन की माप अल्लाह ही को मालूम है।

83. अल्लाह तआला के अर्श अर्थात राजसिंहासन पर बिराजमान होने की दशा हमारे ज्ञान और समझ से परे है इस लिए जैसा कि हमारे सच्चे,आदरणीय एवं सदाचारी पूर्वजों का तरीक़ा रहा है इस पर बहस करने या इस का कोई अर्थ एवं औचित्य प्रस्तुत करने से परहेज़ करना अक़ीदे की सलामती के लिए ज़रुरी है। इमाम मालिक से जब इस के बारे में सवाल किया गया तो फ़रमाया अल्लाह का राजसिंहासन (अर्श) पर बिराजमान होना मालूम है, उस की दशा एवं अवस्था बुद्धि की परिधि में आने वाली बात नहीं है। उस पर ईमान लाना आवश्यक है और उस के बारे में सवाल करना बिद्अत है।

(रूहुलमआनी जिल्द ८ पृष्ठ १३४)

रहा यह सवाल कि फिर इस के वर्णन का उद्देश्य क्या है तो इस का उद्देश्य संदर्भ (Context) से बिल्कुल स्पष्ट है। यहाँ इस वास्तविकता को मास्तिष्क में बिठाना अभिप्रेत है कि आसमानों और ज़मीन को पैदा करने के बाद अल्लाह तआला ने उन से संबन्ध विच्छेद नहीं कर लिया है और ना ही उन की ओर से बेपरवाह है। बल्कि सारी सृष्टि उस की सल्तनत (सत्ता) ठहरी और वह सत्ता के सिंहासन पर बिराजमान हो कर ब्रहमाण्ड की व्यवस्था को चलाने लगा। उस की सत्ता पूरे ब्रहमाण्ड पर स्थापित है और वही इस पर कन्ट्रोल कर रहा है। इस ब्रहमाण्ड के प्रबंध में किसी का कोई साझा नहीं। बल्कि एक ख़ुदा ही के आदेश आसमान से ले कर ज़मीन तक हर जगह और हर कोने में लागू होते हैं। क़ुर्आन में कई जगहों पर राजसिंहासन (अर्श) पर बिराजमान होने का वर्णन है लेकिन इस के ठीक बाद तदबीर (व्यवस्था) आदि का वर्णन भी है जैसे सूरह यूनुस आयत ३ में फ़रमाया :

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُالْاَمْرَ

'' फिर वह राजसिंहासन (अर्श) पर बिराजमान हुआ और व्यवस्था चला रहा है।''

अर्थात सत्ता की बागडोर उसी के हाथ में है और वही तमाम कामों की देख रेख कर रहा है। इस तरह संदर्भ से राज सिंहासन पर बिराजमान होने का एक भावार्थ अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है।

84. अर्थात उस सेवा में लगे हुए हैं जो उन के सुपुर्द की गई है।

85. अर्थात किसी वस्तु को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाना उसी की विशेषता है और उसी का गुण है और उस की सृष्टि (मख़्लूक़) पर उसी के आदेश लागू होते हैं उस की सल्तनत में किसी और का हुक्म नहीं चलता।

86. अर्थात् वह बड़ी ख़ूबियों वाला है और उस के सारे काम भलाई और बरकत वाले होते हैं अत: यह न समझो कि इस कायनात को पैदा कर के उस ने बुराई एवं फितने को अस्तित्व प्रदान किया है नहीं बल्कि उस ने बहुत बड़ी भलाई को अस्तित्व प्रदान किया है। दूसरे शब्दों में ब्रहमाण्ड की रचना के पीछे जो उद्देश्य निहित है वह अत्यंत महान और सरासर ख़ैर और भलाई है।

87. अर्थात जब अल्लाह ही तुम्हारा रब (प्रभु) है तो वही तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला और मुश्किलों को दूर करने वाला भी है अत: उसी को पुकारो और उसी के आगे विनय कामना की भेंट अर्पित करो।

अल्लाह को पुकारने का जो तरीक़ा हमारी विवशता और दासता के गौरव को पूरी तरह उजागर करता है वह है उस के सामने गिड़गिड़ाना अत: वह जो कुछ उस से मांगे गिड़गिड़ा कर मांगे। दूसरी ज़रूरी बात अल्लाह को सच्चे मन से पुकारना है अर्थात् उस की दुआएं प्रार्थनाएं स्वार्थ और दिखावे से पाक हों। चुपके चुपके अल्लाह को पुकारने की सूरत में इन्सान पाखण्ड के फितने से सुरक्षित रहता है। इस लिए धीरे धीरे पुकारने और चुपके चुपके दुआएं मांगना बेहतर है।

88. अर्थात जो लोग अल्लाह के साथ और माबूदों (पूज्यों) को पुकारने लगते हैं या ख़ुदा का इन्कार कर के सिरे से उस को पुकारते ही नहीं हैं। पहली चीज़ शिर्क (बहुदेववाद) है तो दूसरी चीज़ इल्हाद (अनिश्वरवाद) और दोनों ही चीज़ें दासता और बन्दगी की सीमा का उल्लंघन करने की हैं।

89. ज़मीन से मुराद ज़मीन वाले अर्थात मानव समाज है।

और ''उस की इस्लाह (सुधार) के बाद उस में फ़साद बरपा न करो'' का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने मानव समाज को सुधरी हुई हालत में पैदा किया है। अत: वह स्वभावत: एकेश्वरवाद (तौहीद) ही से परिचित है और ख़ैर (भलाई) ही को पसंद करता है। एवं इस को ठीक हालत में बाक़ी रखने के लिए वह रसूलों के द्वारा तौहिद की शिक्षाऐं और न्याय का विधान नाज़िल फ़रमाता रहा है। इस के बाद मानव समाज में शिर्क और शर (बहुदेववाद और फ़ितना) फैलाना उस के बनाव को बिगाड़ में परिवर्तित करना है। बहुदेववादी और नास्तिक वादी इसी के अपराधी होते हैं।

90. अल्लाह को आशा और भय के साथ पुकारने का अर्थ यह है कि बन्दा अपने दिल में उसी का भय रखे और उसी से आशान्वित हो और जब अल्लाह को पुकारे या दुआ माँगे तो इन मिली जुली भावनाओं के साथ माँगे।

91. रहमत से मुराद बारिश की रहमत है।

92. अर्थात् अपनी आँखों से यह तो तुम रात दिन देखते रहते हो कि जो ज़मीन मुर्दा पड़ी हुई थी बारिश के होते ही उस में ज़िन्दगी के आसार पैदा हो गए । और वह अपने ख़ज़ाने उगलने लगी । जिस ख़ुदा की क़ुदरत का करिश्मा तुम देखते रहते हो उस के लिए मुर्दा इन्सानों को ज़िन्दा करना क्या मुश्किल है? फिर क़ियामत की जो ख़बर क़ुर्आन दे रहा है उस को क्यों नहीं स्वीकार करते?

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ ❐

हम ने नूह को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा। उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं । मुझे भय है कि एक होलनाक दिन का अज़ाब तुम पर मुसल्लत न हो जाए।(अल-क़ुर्आन)

58. और अच्छी ज़मीन से उस के रब के हुक्म से ख़ूब पैदावार निकलती है और ख़राब ज़मीन से ख़राब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता।[93]इस तरह हम अपनी निशानियाँ विभिन्न तरीक़ों से बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो शुक्र करने वाले (कृतज्ञ) हैं।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبُثَ
لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

59. हम ने नूह को [94]उस की क़ौम की तरफ़ भेजा।[95] उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो [96] अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं।[97] मुझे भय है कि एक होलनाक दिन [98] का अज़ाब तुम पर मुसल्लत न हो जाए।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا
لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾

60. उस की क़ौम के सरदारों ने कहाः हम तो देख रहे हैं कि तुम खुली गुमराही में पड़ गए हो।[99]

قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾

61. उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम ! मैं गुमराही में नहीं पड़ा हूँ बल्कि सारे जगत के रब का रसूल हूँ।

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾

62. तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचाता हूँ और तुम्हारी भलाई चाहता हूँ और अल्लाह की तरफ़ से वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।[100]

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

63. क्या तुम्हें इस बात पर आशचर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की नसीहत तुम ही में से एक व्यक्ति के द्वारा पहुँची [101] ताकि तुम्हें ख़बरदार करे [102] और तुम डरो और तुम पर रहम किया जाए।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ
لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾

64. मगर उन्हों ने उस को झुठलाया तो हम ने उन लोगों को जो उस के साथ नाव में (सवार) थे बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी निशानियाँ झूठलाई थीं उन को डूबो दिया।[103] निःसंदेह वे अंधे लोग थे।[104]

فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾

65. और आद [105] की तरफ़ हम ने उन के भाई हूद को भेजा।[106] उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं। फिर क्या तुम डरते नहीं।[107]

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم
مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾

93. बारिश की मिसाल से मरने के पश्चात मिलने वाले जीवन पर तर्क प्रस्तुत करने के बाद इस का एक दूसरा शिक्षाप्रद पहलू सामने लाया जा रहा है। बारिश की देन सार्वजनिक है किन्तु वही ज़मीन फलती फ़ूलती है जो उपजाऊ हो। निकम्मी (बंजर) ज़मीन उस से कोई लाभ नहीं उठाती । जिन में सत्य स्वीकारने की क्षमता होती है किन्तु जो लोग सत्य स्वीकाने की क्षमता खो चुके होते हैं वे इस से कोई लाभ नहीं उठा पाते। इसी वास्तविकता को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस में इस तरह बयान फ़रमाया कि :-

''अल्लाह तआला ने जिस ज्ञान और हिदायत के साथ मुझे भेजा है उस की मिसाल ऐसी है जैसे बारिश कि जब वह ज़मीन पर बरसी तो उस ने पानी को अपने अन्दर सोख लिया, और उस पर ख़ूब घास फूस उग आई, और उस का जो भाग विनष्ट था उस ने पानी को रोके रखा, इस तरह अल्लाह ने उस के द्वारा लोगों को फ़ायदा पहुँचाया अत: उन्होंने ख़ुद भी पानी पिया और दूसरों को भी पिलाया किन्तु ज़मीन का जो भाग चटियल मैदान था उस पर जब बारिश हुई तो न वह पानी को रोक सका न उस पर घास उग सकी, तो यह (पहली) मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने अल्लाह के दीन का ज्ञान और सूझ बूझ प्राप्त की और अल्लाह ने उस ज्ञान और हिदायत से जिस के साथ में भेजा गया हूँ उन्हें फ़ायदा पहुँचाया। अत: उन्हों ने ख़ुद भी (दीन का) ज्ञान प्राप्त किया और दुसरों को भी इस की शिक्षा दी । और यह (दूसरी) मिसाल उन लोगों की है जिन्हों ने इस ज्ञान की ओर कोई ध्यान न किया और जिस हिदायत के साथ मैं भेजा गया हूँ उसे स्वीकार नहीं किया।''(मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल)

94. यहाँ नबियों के इतिहास के उन हिस्सों को प्रस्तुत किया जा रहा है जिन से साबित होता है कि अल्लाह इन्सानों की हिदायत के लिए रसूल भेजता रहा है। इन रसूलों ने अल्लाह के तर्क (हुज्जत) अपनी अपनी क़ौमों पर स्पष्ट किए। और जब उन्होंने इनकी रिसालत को मानने से इन्कार किया और उस पैग़ाम को क़ुबूल करने के लिए वे आमादा नहीं हुए जिसे रसूल पेश कर रहे थे तो अल्लाह का दंड विधान हरकत में आया और उस ने उन इन्कार करने वालों को ऐसी सज़ा दी कि वे दुनिया से मिट गई अलबत्ता इतिहास के पन्नों पर इबरत के निशान बाक़ी रह गए।

95. हज़रत आदम ने अपनी औलाद को उस हिदायत पर छोड़ा था जो उन्हें अल्लाह की तरफ़ से मिली थी लेकिन जब उन की नस्ल बढ़ी और उस ने एक क़ौम अर्थात समाज का रुप धार लिया तो धीरे धीरे वह उस हिदायत की राह से हटती चली गई जिस पर आदम ने उन्हें छोड़ा था। परिणाम यह कि उन में अत्याधिक गुमराही पैदा हो गई। उन को इस गुमराही से निकालने और उन पर हिदायत की राह खोल देने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत नूह को रसूल बना कर भेजा । गोया हज़रत नूह हज़रत आदम के बाद पहले रसूल हैं जो पहली इन्सानी आबादी की तरफ़ भेजे गए।

नूह अलैहिस्सलाम का ज़माना चार पाँच हज़ार वर्ष ई.पू. का रहा होगा (और सही ज्ञान अल्लाह ही को है) नूह की क़ौम का वतन अथवा ठिकाना दजला और फ़ुरात नदियों के बीच अर्थात इराक़ के उत्तरी क्षेत्र में शहर ''मूसिल'' के आस पास में था।

96. क़ौम का शब्द वहाँ मानव जाति के सादा अर्थ में इस्तेमाल हुआ है।

97. नूह की क़ौम में बुत परस्ती प्रचलित हो गई थी जिस के पीछे यह धारणा थी कि अल्लाह के सिवा हाजतों को पूरा करने वाले और भी हैं और उन को ख़ुश करने के लिए उन की पूजा आवश्यक है। नूह अलैहिस्सलाम ने उन को इस गुमराही से निकालने की कोशिश की और उन के सामने तौहीद की दअवत पेश की ।

98. होलनाक दिन (यौमुन अज़ीम) से मुराद अज़ाब नाज़िल होने का दिन है।

99. नूह अलैहिस्सलाम के सत्य की ओर बुलाने के विरोध में उन की क़ौम के सरदार आगे आगे रहे। उन की नज़र में नूह का बुतों की ख़ुदाई पर विश्वास न रखना अक़ीदे की ख़राबी थी जिस को वे गुमराही ठहराते थे।

100. पैग़म्बर को अल्लाह की तरफ़ से एक ख़ास तरीक़े का ज्ञान स्त्रोत प्राप्त होता है जो साधारण मनुष्यों को प्राप्त नहीं होता। इस लिए ग़ैब (परोक्ष) की जो हक़ीक़तें उस पर प्रकट होती हैं उन की ख़बर वह लोगों को देता है और चूँकि उस ख़बर की पुष्टि दलीलों से होती है एवं उस के पीछे पैग़म्बर के पवित्र आचरण और उस की सत्यनिष्ठा होती है अत: वह ग़ैब (परोक्ष) की जो ख़बरें सुनाता है उस में संदेह की कदापि गुन्जाइश नहीं होती और इन के द्वारा इन्सान पर अल्लाह की हुज्जत (तर्क) क़ायम हो जाती है।

101. हज़रत नूह की रिसालत के सिलसिले में उन की क़ौम इस संदेह को व्यक्त कर रही थी कि उन ही जैसे एक व्यक्ति को अल्लाह ने किस तरह अपना रसूल (दूत) बनाया होगा । यही संदेह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के बारे में आप के विरोधी भी व्यक्त करते थे । मालूम हुआ कि यह एतिराज़ नया नहीं बल्कि हज़ारों साल पुराना है जो हज़रत नूह के समय से चला आ रहा है।

102. इस में उन के एतिराज़ का जवाब निहित है कि

रसूल को भेजने का मक़सद किसी अजूबा और ''चमत्कार'' का प्रदर्शन नहीं है बल्कि ग़फ़लत (अचेतावस्था) में पड़े हुए इन्सानों को ग़लत अक़ीदों और कर्मों के बुरे परिणाम से सावधान करना है। और इस काम को अन्जाम देने के लिए इन्सान को रसूल बना कर भेजना ही औचित्यपूर्ण और हिकमत का तक़ाज़ा है।

103. यह निर्णायक अज़ाब था जिस से नूह अलैहिस्सलाम की सत्यता भी सिद्ध हुई और उन की दअवत की सच्चाई भी। क्यों कि यह अज़ाब नूह अलैहिस्सलाम द्वारा पहले से ख़बरदार करने के बाद आया और इस अज़ाब से जो तूफ़ान के रुप में आने वाला था, बचने के लिए उन्हों ने पहले ही से एक बहुत बड़ी नाव तैयार कर ली थी, तथा इस अज़ाब की ज़द में वही लोग आए जिन्होंने नूह अलैहिस्सलाम को झूठलाया था। उन पर ईमान लाने वाला कोई व्यक्ति भी इस की ज़द में नहीं आया। अगर यह ज़मीन पर ज़ाहिर होन वाली सामान्य घटनाओं में से कोई घटना होती तो न हज़रत नूह को इस की पहले से ख़बर हो सकती थी और न इस की ज़द में सिर्फ काफ़िर आ सकते थे क्यों कि सामान्य घटनाओं की ज़द में मोमिन और काफ़िर सभी आते हैं। लेकिन किसी रसूल के अपनी क़ौम पर तर्क स्पष्ट करने के बाद जो अज़ाब आता है उस की स्थिति बिल्कुल भिन्न होती है। इस लिए उस को सामान्य घटना समझना सत्यप्रियता नहीं है।

104. अर्थात् वे दिल के अन्धे थे।

105. आद क़ौम के ज़माने (काल) और उस के ठिकाने (वास स्थान) आदि की तफ़्सील के लिए देखिए सूरह ''फज्र'' नोट 8 से 11)

106. अर्थात हूद अलैहिस्सलाम आद की क़ौम के ही नागरिक थे।

107. यह वही दअवत थी जो सब से पहले नूह अलैहिस्सलाम ने पेश की थी ।

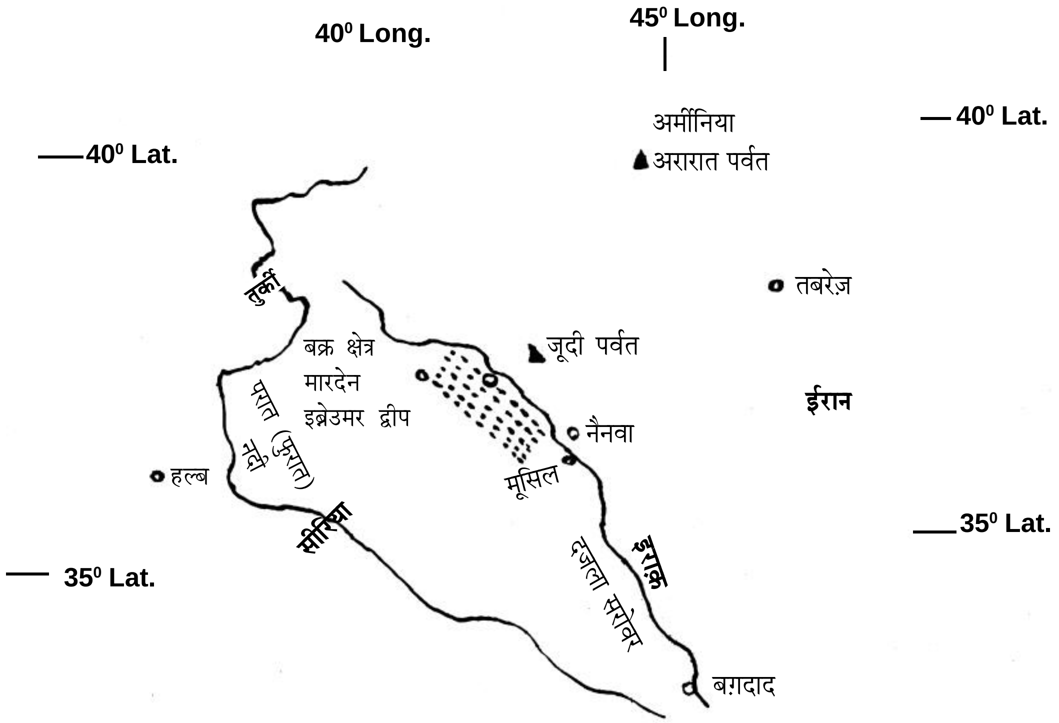

Scale

0 100 km.

नूह की क़ौम का ठिकाना

उत्तरी इराक़ में दजला के किनारे.

66. उस की क़ौम के सरदारों ने जिन्होंने कुफ्र की राह इख्तियार की थी, कहा : हम तो देखते हैं तुम मुर्खता में लिप्त हो [108] और हमारे ख़्याल में तुम झूठे हो।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي
سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ٦٦

67. उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! मैं मुर्खता में लिप्त नहीं हूँ बल्कि जगत के रब (प्रभू) का रसूल हूँ।

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن
رَّبِّ الْعَالَمِينَ ٦٧

68. तुम्हें अपने रब के संदेश पहुँचाता हूँ और तुम्हारा हितैषी हूँ , विश्वासपात्र।[109]

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ٦٨

69. क्या तुम्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की नसीहत तुम ही में से एक व्यक्ति द्वारा आई ताकि वह तुम्हें ख़बरदार करे ? याद करो जब कि उस ने नूह की क़ौम के बाद तुम्हें आधिपत्य सौंपा और तुम्हें ज़बरदस्त शरीरिक शक्ति प्रदान की।[110] तो अल्लाह के एहसानों को याद रखो ताकि तुम कामयाब हो।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ
لِيُنذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ
قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْطَةً ۖ
فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ٦٩

70. उन्हों ने कहाः क्या तुम इस लिए हमारे पास आए हो कि हम एक अल्लाह ही की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिन की इबादत हमारे बाप दादा करते आए?[111] अगर तुम सच्चे हो तो लाओ दिखाओ वह अज़ाब जिस की हमें धमकी देते हो।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ٧٠

71. उस ने कहाः तुम पर तुम्हारे रब की फिटकार पड़ गई और प्रकोप टूट पड़ा। क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। जिन के लिए अल्लाह ने कोई सनद (प्रमाण) नहीं उतारी।[112] अच्छा तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।[113]

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ
أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا
نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ
الْمُنتَظِرِينَ ٧١

72. फिर हम ने हूद को और उस के साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया और उन लोगों की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी निशानियों को झुठलाया था और ईमान लाने वाले न थे।[114]

فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ٧٢

108. बुत परस्ती आद क़ौम का राष्ट्री धर्म था इस लिए जब हूद अलैहिस्सलाम ने उन को इस गुमराही से निकालने की कोशिश की और उन के सामने तौहीद की दअवत पेश की तो उन्हों ने इस को मूर्खता की संज्ञा दी।

109. स्पष्ट रहे कि क़ौम की भलाई चाहना वास्तव में यही है कि ख़ुदा के पैग़ाम को बिना किसी काट छांट, और कमी बेशी के उस के सामने पेश किया जाए और इस को मान लेने का न्योता दिया जाए।

110. अल्लाह तआला ने उन को जो शक्ति और आधिपत्य प्रदान किया था उस का तक़ाज़ा था कि वह अल्लाह के शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) बन्दे बन कर रहते मगर वे अपने बल पर घमंड करने लगे और दावा करने लगे कि है कोई हम से अधिक बलवान?

وَقَالُوا مَنْ اَشَدُّمِنَّا قُوَّةً -(حٰمٓ السَّجدة- ١٥)

अधिक व्यख्या के लिए देखिए सूरह फज्र नोट ११

111. सत्य को मान लेने की राह में सब से बड़ी रुकावट अंधानुकरण (अंधी तक़लीद) है। पैग़म्बर की दअवत तर्क और दलीलों पर आधारित होती है और उस का मार्ग बुद्धि एवं विवेक का मार्ग होता है। मगर जो लोग बाप दादा के तौर तरीक़ों (रीतियों) को अपना राष्ट्री धरोहर और वास्तविक संस्कृति समझते हैं वे लक़ीर के फ़क़ीर बन जाते हैं। और जब वह दलील की रौशनी में कोई बात सुनने के लिए आमादा नहीं होते तो उन पर हिदायत की राह नहीं खुलती ।

112. अर्थात यह नाम ही नाम हैं जिन के पीछे कोई नामक नहीं हैं। दूसरे शब्दों में ये गढ़े हुए पूज्य हैं जिन का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं। बहुदेववादी अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुज्य बनाते हैं वे उन के मात्र गढ़े हुए ख़ुदा होते हैं मगर ये मस्तिष्क पर इस तरह छा जाते हैं कि आदमी सत्य को परखने की क्षमता गंवा बैठता है। फिर कोई दलील भी उस को प्रभावित नहीं करती । यही कारण है कि वर्तमान युग के बहुदेववादी भी ज्ञान का मार्ग भली भांती प्रशस्त हो जाने के बावजूद मनगढ़ंत ख़ुदाओं से मुक्ति नहीं पा सके हैं।

113. अर्थात दलील से अगर तुम मानना नहीं चाहते और अन्जाम ही देखना चाहते हो तो इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ अन्जाम का इन्तिज़ार करता हूँ।

114. अर्थात उस को ऐसा विनष्ट कर दिया कि नाम और निशान तक बाक़ी नहीं रहा। हूद की क़ौम के इस अन्जाम ने हूद अलैहिस्सलाम की और उन की दअवत की सत्यता सिद्ध कर दी।

73. और समूद [115] की तरफ़ हम ने उन के भाई स्वालेह को भेजा।[116] उस ने कहा : ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं।[117] तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक स्पष्ट दलील आ गई है।[118] यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है [119] लिहाज़ा उस को छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में चरती फिरे।उस को किसी तरह की हानि न पहुँचाओ वरना एक दुखदायी अज़ाब तुम्हें आ लेगा।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا
لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ
هَٰذِهِۦ نَاقَةُ ٱللَّهِ لَكُمْ ءَايَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِىٓ
أَرْضِ ٱللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

74. याद करो जब कि अल्लाह ने आद के बाद तुम्हें आधिपत्य सौंपा और ज़मीन पर आबाद किया कि तुम उस के मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को काट (तराश) कर घर बनाते हो।[120] तो याद रखो अल्लाह के एहसानों को और ज़मीन में फ़साद बरपा न करो।[121]

وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ
فِى ٱلْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ
ٱلْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَٱذْكُرُوٓا۟ ءَالَآءَ ٱللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾

75. उस की क़ौम के सरदारों ने जो घमंड में डूबे थे कमज़ोर लोगों से जो उन में से ईमान लाए थे कहा क्या तुम्हें विश्वास है कि स्वालेह अपने रब का भेजा हुआ है ? उन्हों ने जवाब दिया जिस पैग़ाम के साथ उन्हें भेजा गया है उस पर हम ईमान रखते हैं।

قَالَ ٱلْمَلَأُ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوا۟ مِن قَوْمِهِۦ لِلَّذِينَ
ٱسْتُضْعِفُوا۟ لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَٰلِحًا مُّرْسَلٌ
مِّن رَّبِّهِۦ ۚ قَالُوٓا۟ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلَ بِهِۦ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾

76. जो लोग बड़ाई के घमंड में डूबे थे उन्हों ने कहा: जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो हम उस का इन्कार करने वालों में से हैं।

قَالَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَكْبَرُوٓا۟ إِنَّا بِٱلَّذِىٓ ءَامَنتُم بِهِۦ
كَٰفِرُونَ ﴿٧٦﴾

77. फिर उन्हों ने उस ऊँटनी की कूचें (घुटने की नसें) काट दीं [122] और पूरी ढिटाई के साथ अपने रब के हुक्म की अवहेलना की और कहा: ऐ स्वालेह ! ले आओ वह अज़ाब जिस की तुम हमें धमकी देते हो, अगर तुम वास्तव में पैग़म्बर हो।

فَعَقَرُوا۟ ٱلنَّاقَةَ وَعَتَوْا۟ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا۟
يَٰصَٰلِحُ ٱئْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ
ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾

78. आख़िर कार उन्हें एक हिला देने वाली आफ़त ने आ लिया [123] और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।[124]

فَأَخَذَتْهُمُ ٱلرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا۟ فِى دَارِهِمْ جَٰثِمِينَ ﴿٧٨﴾

79. और वह उन को छोड़ कर यह कहता हुआ निकल गया [125] कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं ने अपने रब का पैग़ाम तुम्हें पहुँचा दिया और तुम्हारा हित चाहा मगर तुम हितैषियों को पसन्द नहीं करते।[126]

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّى
وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ ٱلنَّٰصِحِينَ ﴿٧٩﴾

115. समूद के ज़माने (काल) और ठिकाने (वतन अथवा स्थान) की तफ़सील के लिए देखिए सूरह फज्र नोट १२,१३।

116. अर्थात् स्वालेह को पैग़म्बर बना कर समूद क़ौम की तरफ़ भेजा जो उस कौम ही के एक व्यक्ति थे।

117. समूद क़ौम भी एक बुत परस्त क़ौम थी इस लिए हज़रत स्वालेह ने असंख्य ख़ुदाओं और पूज्यों की धारणा को ग़लत ठहराते हुए उन के सामने एक अल्लाह को मान लेने की दअवत पेश की।

118. अर्थात हज़रत स्वालेह का चरित्र और उन की दअवत इस बात का स्पष्ट सबूत हैं कि वे अल्लाह की तरफ़ से पैग़म्बर नियुक्त किए गए हैं।

119. ऊँटनी को एक निशानी के तौर पर सामने लाया गया था इस लिए वह अवश्य ही एक असाधारण तरह की ऊँटनी रही होगी और हर दूसरा दिन जो उस के पानी पीने की बारी के लिए निश्चित किया गया था । इस से भी यह पता चलता है कि वह एक ख़ास तरह की ऊँटनी थी जो भारी मात्रा में पानी पी लेती थी । ऊँटनी का यह चमत्कार अल्लाह तआला ने समूद क़ौम के मुतालबे पर पेश किया था इस लिए वह उन के लिए बहुत बड़ी आज़माइश बन गई थी । ऊँटनी के मोअजज़े (चमत्कार) के बारे में इस से अधिक तफ़्सील न क़ुर्आन ने बयान की है और न किसी सही हदीस में बयान हुई है। इस लिए कमज़ोर रिवायतों (उल्लेखों) का सहारा लिए बग़ैर हमें क़ुर्आन के बयान पर संतोष करना चाहिए ।

120. समूद को निर्माण कला में बहुत दक्षता प्राप्त थी। मैदानों में वे शानदार महल का निर्माण करते थे और पहाड़ो को काट काट कर घर बना लेते थे । निर्माण का यह काम एक हद तक तो आवास की आवश्यकता को पूरा करने के लिए था इस लिए उन को अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए था कि उस के प्रदान किए हुए साधनों और क्षमताओं के कारण वे इस क़ाबिल हुए कि अपने लिए सुरक्षित भवन बना सकें,लेकिन उन के अन्दर कृतज्ञता के बजाय कृतघ्नता की भावना उत्पन्न हो गई और जीवन निर्माण के बजाए महल निर्माण का शौक उभरा। फिर वे शानदार इमारतें और स्मारक निर्माण करने को अपना असल कारनामा समझने लगे। उन के ये कारनामें आज भी खंडहरों की शक्ल में मौजूद हैं और विचार करने का निमंत्रण दे रहे हैं कि:

''देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो''

121. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह के प्रदान किए गए आधिपत्य का अनुचित इस्तेमाल और उस की प्रदान की हुई रचनात्मक क्षमताओं का बेजा और दिखावटी इस्तेमाल इन्सानी सोसाइटी में बिगाड़ का कारण है और इस से एक बिगाड़ से भरा समाज तथा विकृत सभ्यता उत्पन्न होती है।

122. व्याख्या के लिए देखिए सूरह शम्स नोट१५

123. मुराद ज़ोरों की कड़क है जिस ने कपकपी पैदा कर दी और बिल्कुल हिला कर रख दिया । क़ुर्आन में दूसरी जगह पर इस अज़ाब के लिए सॉइक़: (कड़क) का शब्द इस्तेमाल हुआ है।

124. इस हिला देने वाली आफ़त ने उन्हें औंधे मुँह गिरा दिया और फिर इसी हाल में वे विनष्ट हो गए।

125. अर्थात स्वालेह अलैहिस्सलाम अज़ाब आने से पहले उस बस्ती से निकल गए।

126. कितने दर्द भरे शब्द हैं जो क़ौम से रुख़्सत होते समय स्वालेह अ्लैहिस्सलाम की ज़बान से अदा हुए हैं।

इस से बढ़ कर एक क़ौम की भलाई क्या हो सकती है कि उस को हक़ की राह दिखाई जाए और ग़लत कर्मो के मार्ग के अन्जाम से उसे सावधान कर दिया जाए। मगर क़ौमों के नज़दीक भलाई और वफ़ादारी का आदर्श क़ौमी धारे में सम्मिलित होना होता है। चाहे यह क़ौमी धारा जहन्नम ही में जा कर क्यों न गिरता हो ।

80. और लूत को हम ने पैग़म्बर बना कर भेजा।[127] जब उस ने अपनी क़ौम से कहा :[128] क्या तुम ऐसी बेहयाई (निर्लज्जता) का काम करते हो जो तुम से पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया?[129]

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَتَأْتُونَ ٱلْفَٰحِشَةَ مَا سَبَقَكُم
بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٠﴾

81. तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी काम वासना पूरी करते हो ! तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो।[130]

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ ٱلرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ ٱلنِّسَآءِ ۚ
بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾

82. तो उस की क़ौम का जवाब इस के सिवा कुछ न था कि निकालो इन को बस्ती से यह बड़े पाकबाज़ बनते हैं।[131]

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓا۟ أَخْرِجُوهُم
مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾

83. आख़िरकार हम ने उस को और उस के घर वालों को बचा लिया मगर उस की बीवी, कि वह पीछे रह जाने वालों में से थी।[132]

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا ٱمْرَأَتَهُۥ كَانَتْ
مِنَ ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿٨٣﴾

84. और उन पर एक ख़ास तरह की बारिश बरसाई।[133] तो देखो मुजरिमों का क्या अन्जाम हुआ।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ
ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

85. और मद्यन की तरफ़ [134] हम ने उन के भाई शुअैब को भेजा।[135] उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई ख़ुदा नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से ख़ुली हुज्जत (दलील) आ गई है।[136] अतः नाप तौल पूरी किया करो, लोगों को उन की चीज़े घटा कर न दो [137] और ज़मीन में उस के सुधार के बाद फ़साद बरपा न करो।[138] यह तुम्हारे पक्ष में बेहतर है अगर तुम ईमान लाने वाले हो।[139]

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ
مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن
رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا۟ ٱلْكَيْلَ وَٱلْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا۟ ٱلنَّاسَ
أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَٰحِهَا ۚ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

86. और रास्तों पर इस उद्देश्य से जा न बैठो कि (लोगों को) डराने धमकाने, [140] ईमान वालों को अल्लाह की राह से रोकने और उस में टेढ़ पैदा करने के तत्पर हो जाओ। याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हारी तादाद बढ़ाई।[141] और यह भी देख लो कि फ़साद बरपा करने वालों का क्या अन्जाम हुआ।

وَلَا تَقْعُدُوا۟ بِكُلِّ صِرَٰطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن
سَبِيلِ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِهِۦ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ
وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَٱنظُرُوا۟
كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

87. और अगर तुम में से एक गिरोह उस पैग़ाम पर ईमान लाया जिसे दे कर मैं भेजा गया हूँ और दूसरा गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फैसला कर दे , और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है ।

وَإِن كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنكُمْ ءَامَنُوا۟ بِٱلَّذِىٓ
أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا۟ فَٱصْبِرُوا۟ حَتَّىٰ
يَحْكُمَ ٱللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٧﴾

127. लूत का ज़माना हज़रत इब्राहीम का ज़माना है। वह हज़रत इब्राहीम के भतीजे थे और इराक़ से आप के साथ हिजरत कर के निकले थे। अल्लाह तआला ने उन को सदोम की तरफ़ पैग़म्बर बना कर भेजा था। सदोम का क्षेत्र मृत सागर (Dead Sea) के किनारे था जो जार्डन महानदी की तरफ़ स्थित है। बाइबिल में हज़रत लूत और सदोम और अमोरा की बस्तियों का ज़िक्र है। (उत्पति अध्याय 14 और 19)

128. लूत सदोम की क़ौम में पैदा नहीं हुए थे लेकिन चूँकि उन्होंने वहीं निवास कर लिया या और वहाँ की भाषा को भी अपना लिया था इस लिए उस क़ौम को लूत से संम्बन्धित बताया गया कि वह गोया उन की अपनी क़ौम थी।

129. लूत की क़ौम एक घिनावने रोग से पीड़ित थी और वह था मर्दों का मर्दों के साथ शारीरिक सहवास (समलैंगिकता अथवा (Homo Sexuality) करना। इस अनैतिकता ने एक महामारी का रुप धार लिया था और यह पहली क़ौम है जिस ने निर्लज्जता की यह बदतरीन मिसाल दुनिया में क़ायम की।

मालूम होता है कि यह क़ौम बुत परस्त नहीं थी बल्कि ख़ुदा से बे ख़ौफ़ (निर्भीक) हो कर इस गंदगी में लिप्त हो गई थी। इस लिए हज़रत लूत ने सब से पहले इस बुराई के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। फिर भी उसूली तौर पर उन की दअवत भी वही थी जो अन्य नबियों की रही है। अत: सूरह शुअरा में स्पष्टीकरण है कि उन्हों ने अपनी क़ौम को अल्लाह से डरने और रसूल का अनुपालन करने का न्योता दिया था।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ

"अल्लाह से डरो और मेरा अनुपालन करो"। (अश्शुअरा 163)

130. अर्थात् नैतिकता, स्वभाव और दीन सब की सीमा तोड़ कर तुम अपनी काम इच्छा के ग़ुलाम बन गए हो।

131. यह मज़ाक था जो ये लोग हज़रत लूत और उन के साथियों का उड़ा रहे थे। वे गंदगी में ऐसे लतपत हो गए थे कि किसी व्यक्ति को भी पाकीज़ा देखना पसंद नहीं करते थे। फिर वे हज़रत लूत की दअवत को जो सरासर आत्मा और आचरण को पवित्रता प्रदान करने वाली दअवत थी किस तरह बरदाश्त कर सकते थे।

132. लूत की बीवी ने काफ़िरों का साथ दिया था इस लिए वह भी अज़ाब की ज़द में आ गई। हज़रत लूत जब अपने साथियों के साथ उस बस्ती से निकले तो वह उन के साथ नहीं निकली बल्कि उस बस्ती ही में रह गई। इस लिए जब अज़ाब आया तो वह भी उस की चपेट में आ गई। मालूम हुआ कि पैग़म्बर से रिश्ता यहाँ तक कि पत्नी का संबन्ध भी अल्लाह के अज़ाब से बचा नहीं सकता। उस के अज़ाब से बचाने वाली चीज़ पैग़म्बर का अनुकरण है न कि सम्बन्ध ।

133. लूत की क़ौम पर जो अज़ाब आया उस की तफ़सील सूरह हूद (आयत 82) और अन्य सूरों में बयान हुई हैं । यहाँ उसे एक ख़ास तरह की बारिश बताया गया है। मुराद पत्थरों की बारिश है।

134.मद्यन क़बीले का भी नाम है और जगह का भी । यह क़बीला हज़रत इब्राहीम के बेटे मद्यन की नस्ल से था। जो आप की तीसरी पत्नी क़तूरा से पैदा हुआ था। बाइबिल में है:-

" तब इब्राहीम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिस का नाम कतुरा था उस से......मिद्यान और......उत्पन्न हुए (उत्पत्ति 25:1)

जगह का नाम उस क़बीले के नाम से मश्हूर हुआ।

मद्यन का निवास स्थल लाल सागर के किनारे अरब के उत्तर पश्चिम में था । उस का ज़माना लग भग १६०० ई.पू. अर्थात् हज़रत मूसा के नबी नियुक्त होने से पहले का है।

135. हज़रत शुअेब मद्यन क़ौम के थे। उन्हें अल्लाह ने रसूल बना कर उन की क़ौम की तरफ़ भेजा।

136. पैग़म्बर अपने चरित्र की दृष्टि से अत्यन्त उच्च स्थान पर होता है। और जब वह अल्लाह के पैग़ाम को जो उस पर वह्य के द्वारा नाज़िल होता है, लोगों के सामने पेश करता है तो उस की हस्ती अल्लाह की हुज्जत (दलील) बन कर उन के सामने आ जाती है और उसे पहचानने में उन लोगों को कोई कठिनाई नहीं होती जो अपनी प्रकृति एवं स्वभाव पर दृढ़ होते हैं।

137. मद्यन एक व्यापारी क़ौम थी जिस में बेईमानी छल कपट कूट कूट कर भरा था। वे बड़े फ़रेबी ढंग से माप घटाते और ख़रीदारों को वस्तुएं कम मात्रा में देते।

नाप तौल में कमी एक बहुत बड़ा गुनाह है जिस की संगीनी का अंदाज़ा सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन की शुरु की आयतों के अध्यन से होगा।

138. इस की व्याख्या नोट 89 में गुज़र चुकी।

139. अर्थात् अगर तुम ईमान लाओ तो तुम्हें साफ दिखाई देगा कि ज़िन्दगी के मामलों में जिस रवैया को अपनाने की तुम्हें हिदायत की जा रही है वही तुम्हारे लिए बेहतर है।

140. मालूम होता है मद्यन के लोग अपराधिक मनोवृत्ति के थे। वे रास्तों पर मुसाफ़िरों की ताक में बैठते और जब कोई राहगीर या क़ाफ़िला गुज़रता तो उसे डरा धमका कर लूट लेते।

141. अर्थात् मद्यन का वंश शुरु में एक छोटा वंश था लेकिन अल्लाह तआला ने उस की जन संख्या इस तरह बढ़ा दी कि उस ने एक बड़े क़बीले और एक क़ौम का रुप धार लिया। लेकिन बजाय इस के कि वे लोग ख़ुदा की इस नेमत के कृतज्ञ होते उन्होंने कृतघ्नता को अपनी नीति बना ली।

लूत की क़ौम और शुऐब की क़ौम के वास स्थान (ठिकाने)

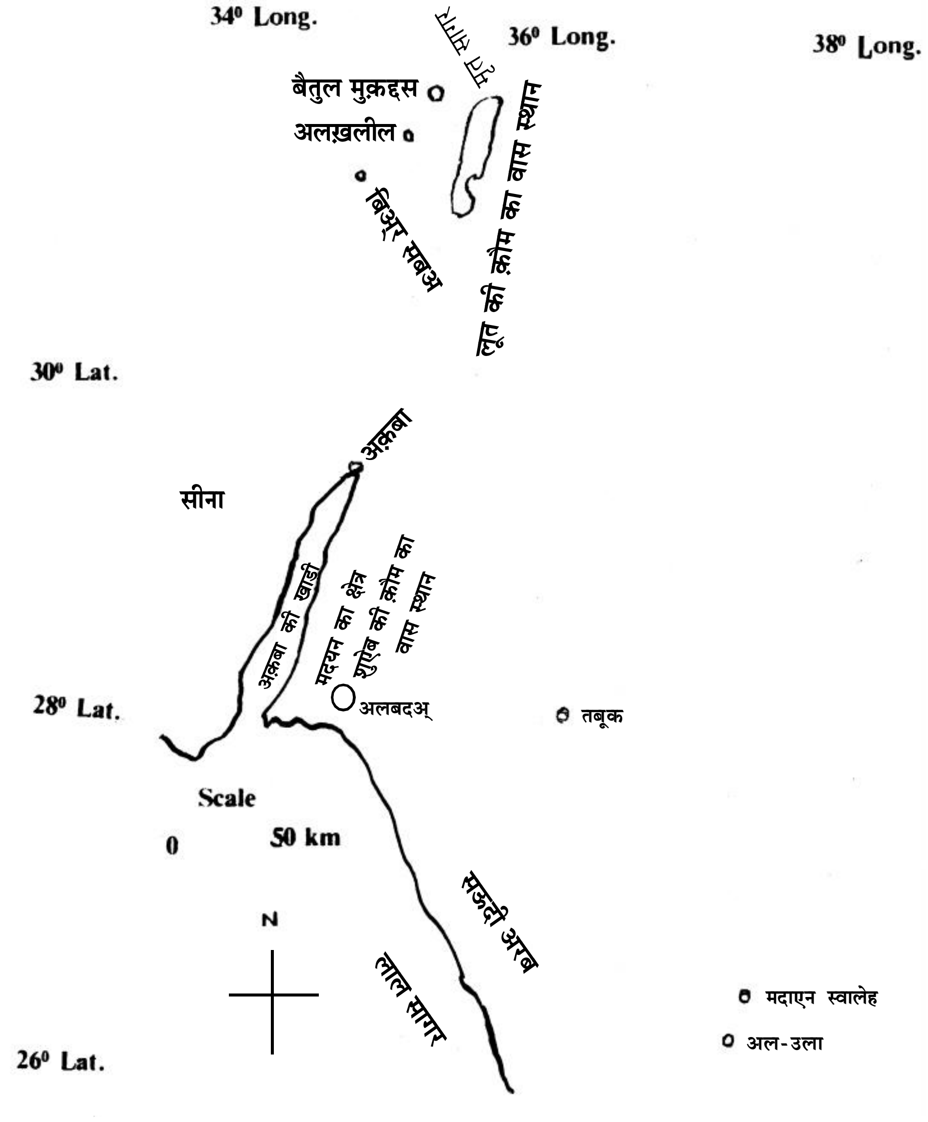

समूद के चिन्ह (पुरातत्व)

पहाड़ को काट कर बनाई हुई एक इमारत

88. उस की क़ौम के सरदारों ने जो घमंड में लिप्त थे [142] कहा: ऐ शुऐब ! हम तुम को और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल बाहर करेंगे या फिर तुम लोगों को हमारे दीन में लौट आना होगा। उस ने कहा क्या उस सूरत में भी जब कि हम तुम्हारे दीन से बेज़ार (अप्रसन्न) हों ?[143]

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ
يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا
قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾

89. हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अगर तुम्हारे दीन में लौट आएं जब कि अल्लाह हमें इस से मुक्ति दे चुका है।[144] हमारे लिए यह संभव नहीं कि इस में वापस जाएं यह और बात है कि हमारा रब ही चाहे।[145] हमारे रब का इल्म (ज्ञान) हर चीज़ को घेरे हुए है। हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। ऐ हमारे रब ! हमारे और हमारी क़ौम के बीच हक़ के साथ फ़ैसला कर दे और तू बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا
اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ
وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾

90. उस की क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे (लोगों से) कहने लगे: अगर तुम ने शुऐब की पैरवी की तो तुम तबाह हो जाओगे ।[146]

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ
شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾

91. आख़िरकार उन को हिला देने वाली आफ़त ने आ लिया [147] और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾

92. जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया था उन का हाल यह हुआ कि जैसे उन में कभी बसे ही न थे। शुऐब को झुठलाने वाले ही बरबाद हो कर रहे।[148]

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا
شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾

93. और शुऐब यह कहते हुए वहाँ से निकल गया [149] कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! मैं ने अपने रब का संदेश तुम तक पहुँचा दिया और तुम्हारा हित चाहा। अब मैं उस क़ौम पर कैसे अफ़सोस करूँ जो काफ़िर है।

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي
وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾

94. और हम ने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा वहाँ के निवासीयों को तंगी और तकलीफ़ में मुब्तला किया ताकि वे गिड़गिड़ाऐं ।[150]

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ
وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾

95. फिर हम ने बदहाली को ख़ुशहाली से बदल दिया यहाँ तक कि वे फले फूले और कहने लगे कि तकलीफ़ और राहत तो हमारे बाप दादा को भी पहुँचती रही है। तो हम ने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे बिल्कुल बेख़बर थे।[151]

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ
آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩٥﴾

142. दौलत हो या यश एवं प्रभुत्व इन्सान में अहं एवं घमंड की मानसिकता पैदा करते हैं। फिर वे सत्य को मूल्यहीन और उसे मान लेने वालों को तुच्छ आंकने लगते हैं। भूतकाल में जो मानसिकता किसी क़ौम के सरदारों की रही है वही मानसिकता वर्तमान काल के लीडरों और बड़े बड़े पूँजी पतियों में भी देखी जा सकती हैं।

143. अर्थात यह ज़बरदस्ती किस लिए?क्या बस इस लिए कि वह तुम्हारा राष्ट्री धर्म है? अगर कोई व्यक्ति अपनी क़ौम (राष्ट्र) के धर्म को ग़लत समझता हो और उस के साथ जुड़ा रहना न चाहता हो तो क्या उसे उस धर्म में रहने के लिए मजबूर किया जाएगा? अगर ऐसा किया जाए तो विचारों की स्वतंत्रता कहाँ बाकी रहेगी जो इन्सान का पैदाइशी हक़ है और सोचने समझने फिर एक सिद्धांत निश्चित कर उस पर चलने के मामले में ज़बरदस्ती करने का वज़न बुद्धि की तराज़ू में क्या है?

144. इस का यह अर्थ नहीं कि हज़रत शुअैब पहले बहुदेववादी धर्म पर थे और बाद में उस से निकल कर इस्लाम में आए बल्कि यह बात उन्होंने अपने उन साथियों के लिए कही जो बहुदेववादी धर्म को तयाग कर इस्लाम की छत्र छाया में आए थे। क्यों कि जहाँ तक एक नबी की बात है, वह नबी होने से पहले भी प्राकृतिक धर्म पर होता है और शिर्क से उस का दामन कभी नहीं लुथड़ता।

145. अर्थात् हमारा यह आख़िरी फ़ैसला है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) की व्यवस्था को हम किसी भी क़ीमत पर छोड़ेंगे नहीं लेकिन भरोसा हम अपने आप पर नहीं बल्कि अल्लाह ही पर करते हैं। क्यों कि ईमान और कुफ्र की कशमकश में ईमान पर जमें रहना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ पर निर्भर है।

146. अर्थात् तुम्हारी दुनिया तबाह हो जाएगी।

दुनिया परस्त हमेशा नबीयों की शिक्षाओं पर चलने और सच्चाई और पाकीज़गी की ज़िन्दगी गुज़ारने को भौतिक प्रगति में रुकावट और सांसारिक हानि का कारण समझते रहे हैं।

147. दूसरी जगह इसे ''सैह:'' (हौलनाक आवाज़, धमाका) कहा गया है। मालूम होता है कि बिजली कड़ाके की चिंघाड़ के साथ उन पर गिर गई थी और उस ने उन को ऐसा हिला दिया कि वे औंधे मुँह ज़मीन पर गिर गए और ऐसे गिरे कि फिर उठ न सके।

148. उन्हों ने कहा था कि शुअैब के मानने वाले तबाह हो जाऐंगे परन्तु वे खुद तबाह हुए। यह अज़ाब जो शुअैब की क़ौम पर आया उस की चपेट में केवल वे लोग आए जिन्हों ने शुअैब को झुठलाया था और अल्लाह के पैग़ाम को मानने से इन्कार कर दिया था।

149. हज़रत शुअैब को अल्लाह तआला ने अज़ाब के समय से पहले ही सुचित कर दिया था इस लिए वे अपने मोमिन साथियों को लेकर अज़ाब आने से पहले ही उस बस्ती से निकल गए थे और निकलते समय उन्हों ने बहुत ही हसरत भरे शब्द क़ौम से कहे थे।

150. इस की व्याख्या सूरह अन्आम नोट 72 में गुज़र चुकी ।

151. इस की व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्आम नोट 74 ।

96. अगर बस्तियों के लोग ईमान लाते और तक़्वा (ईश-भय) अपनाते तो हम आसमान और ज़मीन की बरकतों के दरवाज़े उन पर खोल देते।[152] लेकिन उन्होंने झुठलाया इस लिए हम ने उन की कमाई के बदले में उन को पकड़ लिया।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾

97. फिर क्या बस्तियों के लोग इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि हमारा अज़ाब रात के समय आ जाए जब कि वे सोए पड़े हों?

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ
نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾

98. या बस्तियों के लोग इस बात की तरफ़ से निश्चिन्त हो गए हैं कि हमारा अज़ाब दिन दहाड़े आ नाज़िल हो जब कि वे खेल रहे हों?

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى
وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾

99. क्या ये लोग अल्लाह की तदबीर से बेख़ौफ़ हो गए हैं ?[153] अल्लाह की तदबीर से तो वही लोग बेख़ौफ़ होते हैं जो तबाह होने वाले हों।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾

100. क्या उन लोगों को जो ज़मीन के अगले बाशिन्दों के बाद इस के वारिस होते हैं,यह सबक़ नहीं मिला कि अगर हम चाहें तो उन के गुनाहों के कारण उन्हें पकड़ लें।[154] मगर हम उन के दिलों पर मुहर लगा देते हैं [155] इस लिए वे कुछ नहीं सुनते।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ
اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

101. यह बस्तियाँ हैं जिन के क़िस्से (वृत्तांत) हम तुम्हें सुना रहे हैं। उन के पास उन के रसूल खुली खुली निशानियाँ ले कर आए थे मगर चूँकि वे पहले झुठला चुके थे इस लिए ईमान लाने वाले न थे।[156] इस तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

102. और हम ने उन में से बहुतेरों में प्रतिज्ञा निर्वाह न पाया [157] और हम ने बहुतेरों को फ़ासिक (उल्लंघन कारी) ही पाया।[158]

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ
اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

103. फिर उन के बाद हम ने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन [159] और उस के सरदारों के पास भेजा। मगर उन्होंने भी हमारी निशानियों के साथ ज़ुल्म किया तो देखो उन फ़सादियों का क्या अन्जाम हुआ।[160]

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

152. माली (आर्थिक) ख़ुशहाली पैदावार की अधिकता पर निर्भर है। और अधिक पैदावार के लिए बारिश और हवा पानी का अनुकूल एवं नियमित होना आवश्यक है। यह अनुकूलता एवं नियमितता इन्सान के बस की बात नहीं बल्कि अल्लाह ही के इरादे पर आश्रित है। अगर किसी क्षेत्र या किसी देश के लोग सामूहिक रुप से ईमान ला कर अल्लाह से वफ़ादारी का सम्बन्ध बनाऐं और उस से डरते हुए ज़िन्दगी गुज़ारें तो अल्लाह तआला उन के लिए आसमान और ज़मीन को अनुकूल बनाएगा और पैदावार की अधिकता के परिणाम स्वरुप उन को आर्थिक संपन्नता मिलेगी । और यह संपन्नता एवं खुशहाली चूंकि बरकत और भलाई के ख़ज़ानों को लिए हुए होगी,इस लिए उस ख़ुशहाली से बिल्कुल भिन्न होगी जो काफ़िरों को सामयिक रुप से मिल जाती है। और जिस का उद्देश्य उन को ढील देना होता है ताकि वे अपना पैमाना भर लें।

इस से स्पष्ट हुआ कि वास्तविक ख़ुशहाली का रहस्य लक्ष्मी पूजा में नहीं बल्कि ख़ुदा की पूजा और उसकी भक्ति में निहित है।

153. मतलब यह है कि अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) किसी क़ौम पर ऐसे समय आ सकता है जब कि बाह्य रुप से प्रकोप के आसार दिखाई न देते हों और लोग अपनी दुनिया बनाने में ऐसे लीन हों कि किसी आफ़त के आ जाने की बात उन के ख़यालों में भी न हो लेकिन ख़ुदा का अदृश्य हाथ उस क़ौम के ख़िलाफ़ काम का रहा है और उस की तबाही के साधन इस तरह से कर दे कि उसे महसूस भी न हो कि उस की तबाही के दिन क़रीब आ गए हैं। इसी को अल्लाह की गुप्त तदबीर कहा गया है।

154. अर्थात् बाद में आने वाली क़ौमें अपने पूर्व की क़ौमों के पतन से काफ़ी सबक़ ले सकती हैं। जो क़ौम भी तबाह हुई है उस ने अपने पीछे तबाही के जो कारण छोड़े हैं जिन का सम्बन्ध वैचारिक और नैतिक बिगाड़ से होता है लेकिन बाद में आने वाली क़ौमें वृत्तांतों और घटनाओं को उन के वास्तविक रुप में देखने की कोशिश नहीं करतीं बल्कि उन का ग़लत अर्थ समझने लगती हैं।

155. दिलों पर मुहर लगाने का मतलब सूरह बक़र: नोट 15 में स्पष्ट किया जा चुका है।

156. आदमी जब पहली बार किसी विद्वेष या घमंड के कारण सत्य स्वीकार करने से इन्कार करता है तो उस की मानसिकता ऐसी बन जाती है कि फिर उस को स्वीकार करना उसके लिए आसान नहीं रहता।

157. प्रतिज्ञा से मुराद प्रकृति से की गई प्रतिज्ञा भी है और वह प्रतिज्ञा भी जो इन्सान मुसीबत में अपने रब को पुकार कर करता है।

158. फ़ासिक अर्थात अपनी प्रकृति एवं स्वभाव के प्रतिकूल चलने वाला, नैतिकता की सीमा को लांघने वाला और अपने रब का अवज्ञाकारी ।

159. व्यख्या के लिए देखिए सूरह नाज़िआत नोट.13.

160. यहाँ इस किस्से को बयान करने का महत्वपूर्ण उद्देश्य फ़सादियों के अन्जाम से इबरत दिलाना है।

104. मूसा ने कहा: ऐ फ़िरऔन मैं सारे जगत के रब का रसूल हूँ।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾

105. मेरा फ़र्ज़ (पद भार) है कि अल्लाह के नाम से कोई बात हक़ (सत्य) के सिवा न कहूँ। मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे रब की तरफ़ से ख़ुली निशानियाँ ले कर आया हूँ अत: तू बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने दे।[161]

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۰۵﴾

106. उस ने कहा: अगर तू कोई निशानी ले कर आया है [162] और सच्चा है तो उसे पेश कर।

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۰۶﴾

107. मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो सहसा वह एक जीता जागता अज़दहा था।[163]

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۷﴾

108. और अपना हाथ निकाला तो देखने वालों के लिए वह चमक रहा था।[164.]

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

109. फ़िरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे निश्चय ही यह बड़ा माहिर जादूगर है।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۹﴾

110. तुम्हें तुम्हारे मुल्क से बाहर निकालना चाहता है [165] तो तुम्हारा क्या सुझाव है?

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

111. उन्हों ने (फ़िरऔन से) कहा: मूसा और उस के भाई को अभी छोड़ दे और शहरों में हरकारे भेज दे।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۱۱۱﴾

112. कि वे तमाम माहिर जादूगरों को इकट्ठा कर के तेरे पास ले आऐं।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۱۱۲﴾

113. चुनान्चे जादूगर फ़िरऔन के पास आ गए। उन्होंने कहा: अगर हम विजयी हुए तो हमें इनाम ज़रुर मिलेगा?[166]

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ
الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۳﴾

114. फ़िरऔन ने कहा हाँ ज़रुर मिलेगा और तुम (हमारे) निकटस्थ (सम्मानित) लोगों में शामिल हो जाओगे।

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

115. (फिर जब मुक़ाबला हुआ तो) उन्होंने कहा मूसा या तो तुम (पहले) डालो या हम डालते हैं।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِىَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

161. मूसा अलैहिस्सलाम के इस मुतालबे (Demand) को समझने के लिए उन परिस्तिथियों को सामने रखना आवश्यक है जिन में यह मुतालबा पेश किया गया था। एवं ख़ुदा की उस योजना को भी जो उस ने बनी इस्राईल को पवित्र धरती फ़िलस्तीन) में आबाद करने के सिलसिले में बनाया था।

बनी इस्राईल का असली वतन कन्आन (फिलस्तीन) था। हज़रत यूसुफ़ जो हज़रत याक़ूब (इस्राईल) के बेटे थे,मिस्र में जब सत्ता में आए तो उन के निमंत्रण पर यह पूरा खानदान मिस्र स्थानांतरित हो गया जहाँ उन्हें सम्मान का स्थान प्राप्त हुआ और वे प्रभावकारी रहे। उन की नस्ल वहाँ ख़ूब बढ़ी यहाँ तक कि कुछ सदियों में वे एक बड़ी क़ौम बन गए लेकिन मिस्र के बहुदेववादी वातावरण और भौतिकतावादी समाज में रहते रहते उन के अन्दर नैतिक तथा व्यवहारिक कमज़ोरियाँ पैदा हो गईं और फ़िरऔन ने जो वहाँ का ज़ालिम शासक था उन्हें ग़ुलाम बना लिया और उन पर कड़े अत्याचार तोड़ना शुरू किए। उन से कठिन परिश्रम का काम लिया जाता और उन्हें तरह तरह की यातनाएं दी जातीं । उन की जन संख्या घटाने के लिए उस ने यह अन्यायपूर्ण योजना तैयार की कि उन के लड़कों को पैदा होते ही मार दिया जाए। इन कड़ी आज़माइशों से गुज़रने के बावजूद वे अल्लाह के दीन पर जो उन्हें उन के पूर्वज इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब अलैहिस्सलाम से विरासत में मिला था, कायम रहे यहाँ तक कि अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई और उस ने उन को फ़िरऔन के पन्जों से छुड़ाने के लिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जो बनी इस्राईल ही में से थे रसूल बना कर भेजा।

बनी इस्राईल के बारे में अल्लाह तआला की योजना यह थी कि उन्हें फ़िरऔन के आधिपत्य से मुक्त कर दिया जाए अर्थात वे मिस्र से हिजरत (Migration) कर जाऐं । और इस हिजरत में फ़िरऔन कोई रुकावट पैदा न करे। इस के बाद कुछ समय तक सीना के बियाबान में ठहरा कर उन की इस तरह तरबियत की जाए कि उन की गुलामी की मानसिकता समाप्त हो और उन के अन्दर ऐसे गुण पैदा हो जाऐं जो उन्हें अल्लाह की शरीअत का उचित रुप से भारवाहक बना सकें। इस प्रशिक्षण शिबिर (Training Camp) से उन को गुज़ारने और तूर पर्वत के दामन में शरीअत प्रदान करने के बाद उन्हें फ़िलस्तीन की धरती पर बसाया जाए जो उन का पितृ देश है ताकि दअवत का केन्द्र होने की हैसियत जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसे दी थी, बहाल हो जाए और दुनिया वालों पर तौहीद के दीन की सत्यता स्पष्ट होती रहे।

तौरात में है कि जिस समय मूसा अलैहिस्सलाम को नुबुव्वत मिली उस समय उन्हें बता दिया गया था कि बनी इस्राईल को मिस्र से निकाल कर कन्आन (फिलस्तीन) ले जाना है।

''फिर यहोवा ने कहा, मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उन के दुख को निश्चय देखा है और उन की जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है उस को भी मैं ने सुना है और उन की पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है। इस लिए मैं अब उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ और उस देश से निकाल कर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है अर्थात कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी लोगों के स्थान में पहुँचाऊ सो अब बनी इस्राईलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है और मिस्रियों का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है। इस लिए आ, मैं तुझे फ़िरऔन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी इस्राईली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए। (निर्गमन ३:७,८,९,१०)

और यह भी हिदायत कर दी गई थी कि वे बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों पर स्पष्ट करें कि ख़ुदा उन्हें फ़िलस्तीन ले जाना चाहता है:

''इस लिए अब जा कर इस्राईली पुरनियों को इकट्ठा कर और उन से कह कि ..... मैं ने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दुखों में से निकाल कर कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी हिब्बी और यबूसी लोगों के देश में ले चलूँगा ।'' (निर्गमन ३:१६,१७)

लेकिन फ़िरऔन पर यह ज़ाहिर नहीं किया गया था कि बनी इस्राईल की आख़िरी मंज़िल कहाँ है क्यों कि ऐसा करना मसलहत के विरुद्ध था । यह बात की फ़िलस्तीन उन की आख़िरी मंज़िल है, बताने का अर्थ यह था कि समय से पहले फ़िलस्तीनियों को जंग की दअवत दी जाए इस लिए मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन के सामने केवल शुरू के चरणों का जिक्र किया मिसाल के तौर पर यह कि वह बनी इस्राईल को बियाबान में ले जाना चाहते हैं ताकि वे उन जानवरों की क़ुर्बानी करें जिनकी वे मिस्र में रह कर नहीं कर सकते । या यह कि वे अल्लाह की इबादत के लिए और ईद मनाने के लिए ले जाना चाहते हैं। अत: तौरात में है:

''इस के पश्चात मूसा और हारून ने जा कर फ़िरऔन से कहा, इस्राईल का परमेश्वर यहोवा यूँ कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरे लिए पर्व करें। फ़िरऔन ने कहा यहोवा कौन है कि मैं उस का वचन मान कर इस्राईलियों को जाने दूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता और मैं इस्राईलियों को नहीं जाने दूँगा । उन्होंने कहा, इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट की है, सो हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिए बलिदान करें। (निर्गमन ५:१,२,३)

''और तब यहोवा ने फिर मूसा से कहा फ़िरऔन के पास जा कर कह, यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे ताकि वे मेरी उपासना करें।''(नर्गमन८:१)

इस से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो कर सामने आती है कि मूसा अलैहिस्सलाम का यह मुतालबा (Demand) कोई क़ौमी

मुतालबा नहीं था बल्कि यह एक ऐसा मुतालबा था जिस के पीछे अल्लाह तआला की एक महान योजना थी और इस से कई महत्त्वपूर्ण दीनी मसलहतें सम्बन्धित थीं। यही कारण है कि इस को पूरे ज़ोर के साथ और शुरू ही में फ़िरऔन के सामने पेश करने का हुक्म दिया गया था। जैसा कि क़ुर्आन की कई आयतों और तौरात के बयान से स्पष्ट है। इस मुतालबे के साथ तौहीद की दअवत को भी पेश करने का हुक्म दिया गया था ताकि फ़िरऔन पर अल्लाह के आदेश स्पष्ट हों और हुज्जत क़ायम हो । अत: सूरह नाज़िआत में है।

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۔ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى۔
وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۔(سورہ النازعات ١٧ تا ١٩)

“फ़िरऔन के पास जाओ। वह उद्दंड हो गया है और उस से कहो क्या तू चाहता है कि पाकीज़गी अपनाए और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊँ कि तू उस से डरने लगे।” (अन्नाज़िआत १७,१८,१९)

और मूसा और हारून अलैहिस्सलाम ने जो दअवत फ़िरऔन के सामने प्रस्तुत की थी सूरह “ताहा” में विस्तार के साथ बयान हुई है। यह वही दअवत है जिस को दूसरे नबी प्रस्तुत करते रहे हैं। लेकिन चूँकि मूसा अलैहिस्सलाम को एक काफ़िर क़ौम ही से नहीं बल्कि एक मुस्लिम क़ौम से भी वास्ता था इस लिए उन को एक ख़ास अभियान पर रवाना कर दिया गया था और यह ख़याल करना सही नहीं कि अल्लाह तआला नबियों को सिर्फ दअवत, प्रचार, प्रसार के काम के लिए भेजता है बल्कि दूसरे अहम काम भी कई नबीयों के सुपुर्द करता रहा है। अत: इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हाथों ख़ाना-ए-काबा का निर्माण, हज़रत दाऊद के हाथों ख़िलाफ़त व्यवस्था की स्थापना, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम द्वारा विराट इस्लामी राज्य की स्थापना और जिन्नों और परिन्दों पर उन की हुकूमत जैसे महान कारनामे इस के जीवित उदाहरण हैं। मूसा अलैहिस्सलाम के मुतालबे का एक स्पष्टीकरण यह किया जाता है कि शुरू में फिरऔन के सामने सिर्फ दअवत को पेश किया गया था और बनी इस्राईल की रिहाई का मुतालबा बाद के मरहले में जब कि फ़िरऔन के ईमान लाने की तरफ़ से निराशा हो गई थी,पेश कर दिया गया। अगर फ़िरऔन ईमान ले आता तो न रिहाई का मुतालबा पेश किया जाता और न बनी इस्राईल को मिस्र छोड़ने की ज़रूरत पेश आती । किन्तु यह सरासर तकल्लुफ़ है और क़ुर्आन का बयान यह है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़िरऔन को मोअजज़ा (चमत्कार) दिखाने से पहले ही बनी इस्राईल की रिहाई का मुतालबा पेश किया था जैसा कि इस आयत (जिस की तफ़्सीर चल रही है) के बाद की आयतों से स्पष्ट है।

इस से इस विचार का भी खंडन होता है जो मौजूदा दौर में दअवती काम करने वालों के मन में आम तौर से उभरता है कि एक मुल्क में जहाँ ग़ैरमुस्लिम अधिक संख्या में और मुस्लिम कम संख्या में हैं सिर्फ़ दअवती काम की ओर ध्यान देना चाहिए और मुसलमानों की समस्याओं से हक़ की दअवत देने वालों को उलझना नहीं चाहिए वरना उन की इमेज (तस्वीर) क़ौम परस्ती की (वर्तमान परिभाषा में फ़िरक़ा परस्ती की) बन जाएगी । सवाल यह है कि एक नबी से बढ़ कर हक़ की दअवत प्रस्तुत करने वाला कौन हो सकता है? मगर हम देखते हैं कि मूसा अलैहिस्सलाम ने एक साथ दोनों काम किए और इस बात की कोई परवाह नहीं की कि फ़िरऔन की नज़र में उन की इमेज दाओ (दअवत देने वाले) की बनती है या बनी इस्राईल के रहनुमा की। वास्तविकता यह है कि किसी मुल्क में जहाँ कुफ्र का अधिपत्य हो मुसलमानों के उन मसलों से जो उन की जान व माल और उन के दीन एवं शरीअत की सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हों, मुँह फेरना और यह समझना कि हमारी ज़िम्मेदारी केवल दअवत पेश करने की है या यह कि इन समस्याओं में रूचि लेने की सूरत में हम अपनी मुख्य धारा से अलग हट जाऐंगे एक ऐसी बात है. जिस का अनुमोदन न क़ुर्आन और सुन्नत से होता है और न नबियों के आचरण और व्यवहार से । मुख्य धारा (उसूली मौक़िफ़) की यह कल्पना सिद्धान्तिक अति (ग़ुलू) पर आधारित और दीन के कुछ महत्त्वपूर्ण व्यवहारिक तक़ाज़ों की तरफ़ से लापरवाही का कारण है।

162. मुराद मोअज्ज़ा (चमत्कार) है।

163. अर्थात मूसा की लाठी वास्तव में साँप बन गई थी।

164. यह दूसरा मोअज्ज़ा (चमत्कार) था जो मूसा अलैहिस्सलाम को दिया गया था। उन मोअज्ज़ों को देख कर इस बात का दृढ़ विश्वास पैदा होता था कि मूसा को ब्राह्माण्ड के संचालक ने अपना रसूल बना कर भेजा है.

165. यह उन की आपस की बात चीत है। जब वे सच्चाई को न मान सके तो एक राजनीतिक आरोप मूसा अलैहिस्सलाम पर रख दिया और यह न सोचा कि वे परस्पर विरोधी बातें कर रहे हैं क्यों कि जिस व्यक्ति को वे जादूगर कह रहे थे उस से यह ख़तरा कैसे हो सकता था कि वह देश से उस के निवासियों को कैसे बेदख़ल कर देगा? क्या जादू के बल पर सत्ता प्राप्त की जा सकती है? और क्या किसी जादूगर ने करतब दिखा कर किसी देश पर विजय अर्जित की है?

166. इस से जादूगरों की नैतिकता का अन्दाज़ा होता है। वे ईनाम के लालच में करतब दिखाने आए थे हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

और हम ने मूसा पर वह्य की कि डाल दो अपनी लाठी। उस का डालना था कि वह उन के झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगा। इस तरह हक़ साबित हुआ और उन का बना बनाया बातिल (असत्य) हो कर रह गया। उन को पराजित होना पड़ा और वे अपमानित हो कर रह गए। (अल-क़ुर्आन)

116. उस ने कहा तुम ही डालो।फिर जब उन्होंने (अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ)डाल दीं तो लोगों की निगाहें जादू से मार दीं [167]और उन को भयभीत कर दिया और बहुत बड़े जादू का प्रदर्शन किया।

قَالَ أَلْقُوا ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ
وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

117. और हम ने मूसा पर वह्य की कि डाल दो अपनी लाठी। उस का डालना था कि वह उन के झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगा । [168]

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ
مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾

118. इस तरह हक़ साबित हुआ और उन का बना बनाया बातिल (असत्य) हो कर रह गया।[169]

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾

119. उन को पराजित होना पड़ा और वे अपमानित हो कर रह गए।[170]

فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَاغِرِينَ ﴿١١٩﴾

120. और जादूगर अपने आप ही सज्दे में गिर गए।[171]

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿١٢٠﴾

121. कहने लगे हम रब्बुलआलमीन (सारे जगत के स्वामी) पर ईमान लाए।[172]

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾

122. मूसा और हारून के रब पर।[173]

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾

123. फिरऔन ने कहा: मेरी अनुमति के बिना तुम उस पर ईमान ले आए।[174] यह एक साज़िश है जो तुम ने इस शहर में की है ताकि इस के निवासियों को इस से निकाल बाहर करो।[175] अच्छा तो (इस का परिणाम) तुम्हें मालूम हो जाएगा।

قَالَ فِرْعَوْنُ آمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا
لَمَكْرٌ مَكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ
تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

124. मैं तुम्हारे हाथ पाँव उल्टे सीधे काट डालूंगा और फिर तुम सब को सूली पर चढ़ाऊँगा।[176]

لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ
ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٢٤﴾

125. उन्होंने कहा: हमें पलट कर तो अपने रब ही की तरफ़ जाना है।[177]

قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿١٢٥﴾

126. तू हम से केवल इस बात का बदला ले रहा है कि जब हमारे परवरदिगार की निशानियाँ हमारे सामने आ गई तो हम उन पर ईमान ले आए ऐ हमारे परवरदिगार हम पर सब्र उंडेल और इस हाल में मौत दे कि हम मुस्लिम हों।[178]

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا ۚ رَبَّنَا
أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ﴿١٢٦﴾

167. मालूम हुआ कि जादू की वास्तविकता नज़र का धोखा, मायाजाल एवं धूर्तता से अधिक कुछ भी नहीं। जादूगरों की रस्सियाँ और लाठियाँ वास्तव में साँप नहीं बन गई थीं बल्कि लोगों को ऐसा दिखाई दिया कि वे साँप बन गई हैं।

168. अर्थात मूसा के साँप ने जादूगरों के तंत्र को देखते देखते समाप्त कर दिया यह किस्सा तौरात में भी संक्षेप में बयान हुआ है:-

''तब मूसा और हारून ने फ़िरऔन के पास जा कर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया। और जब हारुन ने अपनी लाठी को फ़िरऔन और उस के कर्मचारियों के सामने डाल दिया तब वह अजगर बन गया। तब फ़िरऔन ने पण्डितों और जादू करने वालों को बुलवाया और मिस्र के जादूगरों ने आ कर अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही किया। उन्हों ने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया और वे भी अजगर बन गए पर हारून की लाठी उन की लाठियों को निगल गई। परन्तु फ़िरऔन का मन और हठीला हो गया और यहोवा के वचन के अनुसार उस ने मूसा और हारून की बातों को नहीं माना। (निर्गमन ७:१०,११,१२,१३)

169. फ़िरऔनियों ने मूसा अलैहिस्सलाम के मोअजज़े (चमत्कार) को जादू क़रार दिया था लेकिन इस मुक़ाबले ने जादू और मोअजज़े को स्पष्ट कर दिया। जादू किसी चीज़ की वास्तविकता और उस के मूल तत्वों को परिवर्तित नहीं करता बल्कि वह मात्र नज़र का धोखा होता है जब कि मोअज्ज़ा (चमत्कार) वस्तु की वास्तविकता और उस की मूलता एवं प्रकृति को परिवर्तित कर देता है वह नज़र का धोखा या मायाजाल अथवा तंत्र मंत्र नहीं होता। जादू दिखाने वाले तुच्छ चरित्र और हल्के आचरण वाले होते हैं तथा भरोसे के योग्य नहीं होते। इस के विपरीत मोअज्ज़ा दिखाने वाली हस्तियाँ पवित्र एवं उच्च चरित्र और ऊँचे आचरण के लोग होते हैं। और जब उन के हाथों मोअजज़ा प्रकट होता है तो विश्वास होने लगता है कि यह ब्रहमाण्ड के शासक का चिन्ह है जो प्रकट हुआ है। और जब मोअज्ज़ा का मुक़ाबला जादू से होता है तो वह जादू पर हावी हो जाता है।

170. फिरऔन ने दावे के साथ कहा था कि मूसा का मोअजज़ा, मोअजज़ा नहीं बल्कि जादू है और चैलेन्ज किया था। कि वह जादूगरों के मुक़ाबले में बाज़ी जीत कर दिखाऐं। मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन के चेलेन्ज को क़ुबूल किया था। फ़िरऔन को यकीन था कि वह जादूगरों द्वारा लाठी को साँप बना कर दिखाने में कामयाब हो जाएगा और फ़िर मूसा के मोअजज़ों की कोई अहमियत बाक़ी न रहेगी। इस लिए उस ने प्रोग्राम यह बनाया कि जनता की प्रचंड भीड़ में इस का प्रदर्शन किया जाए लेकिन जब मूसा ने बाज़ी जीत ली और जादूगरों को पराजय हो गई तो फ़िरऔन की योजना धूल में मिल गई। और उसे तमाम जनता के सामने बुरी तरह अपमान का सामना करना पड़ा ।

171. जब जादूगरों का माया जाल भस्म हुआ तो उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा की लाठी का साँप बन जाना जादू नहीं बल्कि एक ख़ुदा की क़ुदरत का जलवा है इस लिए वे नि:संकोच आप ही सजदे में गिर पड़े। वे यद्यपि जादूगर थे लेकिन उन के अन्दर सत्यप्रियता की भावना कुछ कुछ विद्यमान थी इस लिए उन को सत्य स्वीकारने की तौफ़िक़ नसीब हुई।

172. यह इस बात का सबूत है कि ईमान मनुष्य के अन्दर असाधारण साहस उत्पन्न कर देता है फिर वह अपने रब से वफ़ादारी का एलान करने में किसी फ़िरऔन को ख़ाक नहीं समझता ।

173. अर्थात जिस को मूसा और हारून अपना रब कहते हैं उसी को हम ने अपना रब मान लिया है। इस स्पष्टीकरण से फिरऔन के सामने हक़ (सत्य) की अभिव्यक्ति बेलाग करनी अभिप्रेत थी।

174. मालूम हुआ कि फ़िरऔन के अन्यायी शासन में धर्म परिवर्तन की स्वतंत्रता नहीं थी।

175. जब जनसमूह में फिरऔन का निरादर एवं अपमान हुआ तो उस ने अपने अपमान को छिपाने के लिए हज़रत मूसा और जादूगरों पर साज़िश का आरोप लगाया और आरोप भी राजनीति सम्बन्धी । ताकि उन को विद्रोही ठहरा कर लोगों को उन से दूर रखा जा सके। राजनीतिज्ञ सत्य पर दृढ़ रहने वालों के विरुद्ध ऐसे ही हथकण्डे प्रयोग किया करते हैं।

176. अनुमानत: फ़िरऔन के शासन में विद्रोह की यह सज़ा थी ।

177. कितना सुन्दर और ईमान को रौशन करने वाला जवाब है जो जादूगरों ने दिया और कैसा ईश-भय है जो ईमान लाते ही जादूगरों के अन्दर पैदा हो गया।

178. जादूगर फ़िरऔन से ईनाम मिलने के लालच में मुक़ाबले के लिए आए थे जिस से उन के गिरे हुए आचरण का अन्दाज़ा होता है लेकिन ईमान ने पलक झपकते उन के मन और आचरण में महान क्रान्ति उत्पन्न कर दी। अब वे साहस और दृढ़ संकल्प के उच्च स्थान पर पहुँच गए थे और उन के अन्दर ऐसी ईमानी शक्ति पैदा हो गई कि फ़िरऔन की सत्ता से भी टक्कर लेने के लिए आमादा हो गए । जैसे कि वे कह रहे हों

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ू-ए-क़ातिल में है

127. और फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने (फ़िरऔन से) कहा: क्या तू मूसा और उस की क़ौम को छोड़ देगा कि वे मुल्क में फ़साद फैलाऐं [179] और तुझे और तेरे माबूदों (पूज्यों) को त्याग दें।[180] उस ने कहा हम उन के लड़को को क़त्ल करेंगे।[181] और उन की लड़कियों को ज़िन्दा रहने देंगे। हम तो इन पर पूरा प्रभुत्व रखते हैं।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ
لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ
أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾

128. मूसा ने अपनी क़ौम से कहा: अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो।[182] ज़मीन अल्लाह की है।वह अपने बन्दों में से जिस को चाहता है उस का उत्तराधिकारी बनाता है और अंततः (सफ़लता) मुत्तकियों ही के लिए है।[183]

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ
الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾

129. उन्हों ने कहा : आप के आने से पहले भी हम सताए गए और आप के आने के बाद भी सताए जा रहे हैं। उस ने कहा: करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुशमन को विनष्ट कर दे और तुम को ज़मीन में [184] ख़लीफ़ा बनाए फिर देखे कि तुम क्या रवैया अपनाते हो।[185]

قَالُوا أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ
قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي
الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

130. और हम ने फिरऔन के लोगों को अकाल और उपज की कमी में मुब्तिला किया ताकि उन को तंबीह हो।

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ
الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

131. लेकिन जब ऐसा होता कि ख़ुशहाली आ जाती तो कहते हम इसी के पात्र हैं और अगर कोई आफ़त आती तो मूसा और उस के साथियों की अपशकुनी ठहराते। हालाँकि उन की अपशकुनी अल्लाह ही के पास थी।[186] किन्तु इन में से बहुतेरे जानते नहीं थे।

فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَٰذِهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

132. उन्होंने कहा : हम पर अपना जादू चलाने के लिए तुम कैसी ही निशानी लाओ। हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं हैं।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ
لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

133. फि हम ने उन पर तूफ़ान [187]और टिड्डियां [188] और जूऐं [189] और मेंढक [190] और ख़ून [191]भेजा, कि सब अलग अलग निशानियाँ थीं [192] मगर उन्होंने घमंड किया और वे थे ही मुजरिम लोग।[193]

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ
وَالدَّمَ آيَاتٍ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا
قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾

179. एक पैग़म्बर से बढ़ कर दुनिया में सुधार का काम कौन कर सकता है। मगर क़ाफ़िरों की नज़र में उन का यह काम फ़साद का काम होता है हालांकि वे खुद बहुत बड़े फ़सादी होते हैं।

180. स्पष्ट हुआ कि फ़िरऔन ख़ुद भी माबूद (पूज्य) बन बैठा था उस ने दूसरे माबूद भी बना रखे थे। प्राचीन काल में सामान्य रुप से राजा प्रजा से अपनी परस्तिश कराते थे और जहाँ तक फ़िरऔन का सम्बन्ध है यह सूरज देवता का अवतार होने का दावा करता था एवं मिस्री क़ौम स्वयं ग्रहों, नक्षत्रों तथा बुतों की पुजारी कौम थी।

'' मिस्र में भी सामिया-ए-औला के ज़माने में इस तरह की नक्षत्र पूजा जारी थी। सर्वाधिक बड़ा देवता सूर्य था जिस को वे अपनी भाषा में रअ् कहते थे। उन के दारुलहुकूमत का नाम ''मदीनतुश्शम्स'' था जिस को मिसरी ''अन'' कहते थे। यहीं सूर्य देवता का मन्दिर था। राजा सूर्य देवता का पुत्र समझा जाता था इस लिए उस का उपनाम रअमसीस होता था अर्थात सूर्यपुत्र। यही कारण है कि मिस्र के राजा ख़ुदा होने के दावेदार हुआ करते थे।''(अर्ज़ुलक़ुर्आन- अल्लामा सुलैमान नदवी जिल्द २ पृष्ट १६०)

इंसाइक्लोपीडिया आफ रेलिजन एंड एथिक्स की निम्न पंक्तियों से भी स्पष्ट होगा कि मिस्र में रअ् अर्थात सूर्य देवता की परस्तिश की जाती थी और राजा अपने को इस हैसियत से पेश करते थे कि वे रअ् देवता की औलाद हैं।

"Ra, the sun god, was specially worshipped at Heliopolis –Every king of Egypt afterwards had a Ra –name Ra was thus move constantly: recognised than any other god."

(Ency. of Religion & Ethics Vol. V. P. 248).

"Thence forward the Pharaos regularly designated themselves as sons of Ra." (Vol. VI. P. 278).

इस के अलावा मिस्रवासी गाय को भी पूजते थे। रहा फ़िरऔन का दावा कि :

اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى۔(النازعات)

''मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ ''(अन-नाज़िआत-२४)

तो यह मात्र मूसा अलैहिस्सलाम को तंग (चुप) करने के लिए था क्यों कि मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा था कि मैं उस का रसूल (दूत) हूँ जो सारे जगत का रब है। यह वही मन्तिक़ थी जो नमरूद ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तौहीद की दअवत के जवाब में छाँटी थी। जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ۔(البقرۃ۔۲۵۸)

''मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है''

तो उस ने फ़ौरन कहा:

اَنَا اُحْیٖ وَاُمِیْتُ ۔(البقرۃ۔۲۵۸)

''मैं भी जिलाता और मारता हूँ''(अलबक़र: २५८)

खुली बात है कि यह जवाब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को चुप कराने के लिए था वरना वह यह बेतुकी बात कैसे कह सकता था। जब कि वह ख़ुद अपने जीवन और मृत्यु पर सामर्थ्य न रखता था ।

फ़िरऔन ने मिस्र में देवी देवताओं की पूजा अवैध नहीं ठहराई क्यों कि यह परस्तिश उस के ख़ुदा होने के दावे का रोड़ा नहीं थी। लेकिन मूसा के ख़ुदा को मान लेने की अवस्था में फ़िरऔन समेत तमाम माबूदों का खंडन होता था और एक अल्लाह की प्रभुसत्ता को स्वीकार करना पड़ता था जिस के बाद उस के आदेशों को भी मानना पड़ता। ख़ास तौर से उस के इस हुक्म को कि मूसा के साथ बनी इस्राईल को जाने दो इस लिए न वह स्वयं मूसा के ख़ुदा को मानने के लिए तैयार हुआ और न अपनी प्रजा को इस की अनुमति दी। उस के निकट समय का सर्वाधिक बड़ा ख़ुदा देश का राजा था जो पूजा का भी अधिकारी था और आज्ञा पालन का भी । उस का यह ऐलान

مَاعَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ اِلٰهٍ غَيْرِیْ۔ (القصص۔۳۸)

''मैं नहीं जानता कि मेरे सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा है''(अलक़सस-३८) इसी भावार्थ में था । अत: यह समझना सही नहीं कि फ़िरऔन नास्तिक था या यह कि उस ने इसी भावार्थ में ख़ुदा होने का दावा किया था कि वह आसमान और ज़मीन का रचयिता है या उन पर उस का शासन चल रहा है, बल्कि वह इस बात का दावेदार था कि मिस्र पर उस की सत्ता स्थापित है इस लिए वह यह भी हक़ रखता है कि उस की पूजा की जाए और यह भी हक़ रखता है कि उस की आज्ञा का पालन किया जाए। ''और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के बीच पुकार कर कहा:

وَنَادٰی فِرْعَوْنُ فِیْ قَوْمِهٖ قَالَ یٰقَوْمِ اَلَیْسَ لِیْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِیْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ۔(الزخرف۔۵۱)

मेरी क़ौम के लोगो ! क्या मिस्र पर मेरी प्रभुसत्ता नहीं है? और क्या यह नहरें मेरे नीचे नहीं बह रही हैं? क्या तुम देखते नहीं?'' (अज़्ज़ुख़रुफ़-५१) (अधिक व्याख्या के लिए देखिए

सूरह नाज़िआत नोट १३, और १८)

181. बनी इस्राईल की संख्या घटाने के लिए फ़िरऔन यह हथकन्डा पहले भी इस्तेमाल कर चुका था मगर उस में कोई विशेष सफ़लता नहीं हुई थी । अब उस ने इसे दोबारा इस्तेमाल करने का इरादा ज़ाहिर किया । बाइबिल में है:

''तब फ़िरऔन ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील में डाल देना और सब बेटियों को जीवित रख छोड़ना''(निर्गमन १:२२)

182. किसी अत्याचारी एवं अन्यायी शासन में रहते हुए मुसलमानों के करने का असल काम यही है कि वह अल्लाह से रिश्ता मज़बूत कर के उस की मदद के अभिलाषी बनें जिस की बेहतरीन शक्ल नमाज़ है और हालात से तनिक भी प्रभावित हुए बिना सत्य पर जमें रहें।

183. अर्थात् शासन और सत्ता प्रदान करना अल्लाह ही के हाथ में है और वह अपनी हिकमत और मसलहत के अनुसार जिस को चाहता है सत्ता प्रदान करता है। अगर उस ने एक ज़ालिम शासक को सत्ता प्रदान की है तो इस का यह अर्थ नहीं कि वह उस से खुश है बल्कि मक़सद यह है कि दुनिया की ज़िन्दगी के साथ जो आज़माइशी मसलहतें जुड़ी हुई हैं उन के लिहाज़ से विपत्ति की घड़ियाँ लाई जाएं और फिर अल्लाह ज़ालिमों को उन के कुपरिणाम तक पहुँचाए। और उन मज़लूमों को जिन्होंने परीक्षा की भट्टी से गुज़र कर अपने को अल्लाह का वफ़ादार और नेक बन्दा साबित कर दिखाया, हमेशा रहने वाली नेअमतों से सुसज्जित किया जाए।

184. मुराद फ़िलस्तीन की सरज़मीन है।

185. ईमान वालों को जो सत्ता सौंपी जाती है उस में भी उन की आज़माइश होती है कि वे इस सत्ता को पा कर अल्लाह के कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) बन्दे बनते हैं या कृतघ्न (नाशुकरे) और उस सत्ता को अल्लाह के क़ानून और आदेश जारी करने और न्याय एवं समता स्थापित करने के लिए इस्तेमाल करते हैं या उद्दंडता और अन्याय के लिए।

186. अर्थात् वे अपनी ग़लत धारणाओं के कारण इन आफ़तों एवं विपतीओं को मूसा और उन के साथियों का अपशकुन ठहराते थे हालांकि इस की असल हक़ीक़त यह थी कि अल्लाह तआला उन की करतूतों के कारण सावधान करने के लिए ये आफ़तें नाज़िल कर रहा था।

187. तूफ़ान की तफ़सील बाइबिल में इस तरह बयान हुई है ।

''तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया और यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही । इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाए....... और वे ओले इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था तब से मिस्र भर में ऐसे ओले कभी न गिरे थे। इस लिए मिस्र भर के खेतों में, क्या मनुष्य क्या पशु जितने थे सब ओलों से मारे गए, और ओलों से खेतों की सारी उपज नष्ट हो गई। और मैदान के सब वृक्ष भी टूट गए। केवल गोशेन देश में जहाँ इस्राइली बसते थे ओले नहीं गिरें।'' (निर्गमन ९:२३,२४,२५,२६)

188. टिड्डी दल के बारे में बाइबिल में है:

और मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया, तब यहोवा ने दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई आँधी बहाई और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई आँधी में टिड्डीयाँ आईं। और टिड्डीयों ने चढ़ के मिस्र देश के सारे स्थानों में बसेरा किया,उन का दल बहुत भारी था, वरना न तो उन से पहले ऐसी टिड्डीयाँ आई थीं और न उन के पीछे ऐसी फिर आऐंगी। वे तो सारी धरती पर छा गई यहाँ तक कि देश में अंधेरा हो गया और उस का सारा अन्न आदि और वृक्षो के सब फल निदान जो कुछ ओलों से बचा था सब को उन्होंने चट कर लिया, यहाँ तक कि मिस्र देश भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ हरयाली रह गई और न खेत में अनाज रह गया। (निर्गमन १०:१३,१४,१५)

189. जूओं (कुटकियों) की आफ़त के बारे में बाइबिल में है:

'' फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून को आज्ञा दे कि तू अपनी लाठी बढ़ा कर भूमि की धूल पर मार जिस से वह मिस्र देश भर में कुटकियाँ बन जाएं। और उन्होंने वैसा ही किया अर्थात् हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ा कर भूमि की धूल पर मारा तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियाँ हो गई और सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियाँ बन गईं।'' (निर्गमन ८:१७,१७)

190. मेढकों का अज़ाब जिस रुप में आया उस की तफ़सील बाइबिल में इस तरह बयान हुई है:

''और फिर यहोवा ने फिर मूसा से कहा फिरऔन के पास जा कर कह, यहोवा तुम से इस प्रकार कहता है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे जिस से वे मेरी उपासना करें। और यदि तू उन्हें जाने न देगा तो सुन, मैं मेंढक भेज कर तेरे सारे देश को हानि पहुँचाने वाला हूँ। और नील नदी मेंढकों से भर जाएगी, और वे तेरे भवन में, और तेरे कर्मचारियों के घरों में और तेरे प्रजा पर, और तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी चढ़ जाऐंगे। और तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे कर्मचारियों, सभों पर मेंढक चढ़ जाऐंगे। फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी कि हारून से कह दे कि नदियों, नहरों, और झीलों के ऊपर लाठी के साथ अपना

हाथ बढ़ा कर मेंढकों को मिस्त्र देश पर चढ़ा ले आए। तब हारून ने मिस्त्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढकों ने मिस्त्र देश पर चढ़ कर उसे छा लिया। (निगर्मन ८: १, २, ३, ४, ५, ६)

191. ख़ून के अज़ाब के बारे में बाइबिल का बयान है कि:

" तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा ही के अनुसार किया, अर्थात उस ने लाठी को उठा कर फ़िरऔन और उस के कर्मचारियों को देखते नील नदी के जल पर मारा और नदी का सब जल लहू बन गया। और नील नदी में जो मछलियाँ थी वे मर गईं और नदी से दुर्गन्ध आने लगी । और मिस्त्री लोग नदी का पानी न पी सके, और सारे मिस्त्र देश में लहू हो गया। (निर्गमन ७:२०,२१)

192. अर्थात् ये निशानियाँ एक साथ नहीं बल्कि समय समय से दिखा दी गई थीं ताकि उन्हें बार बार तंबीह हो और एक नहीं तो दूसरे अवसर पर उन्हें अपने ग़लत होने का एहसास हो जाए।

193. अर्थात् अपराध करते करते वे अपराधिक मानसिकता के बन गए थे। इस लिए उन तंबिहों का कोई असर उन्होंने क़ुबूल नहीं किया।

134. जब उन पर अज़ाब नाज़िल होता तो कहते ऐ मूसा तुम्हारे रब ने तुम से जो वादा किया है उस के आधार पर हमारे लिए दुआ (प्रार्थना) करो ।[194] अगर तुम ने हम से यह अज़ाब दूर कर दिया तो हम ज़रूर तुम्हारी बात मान लेंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेज देंगे।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَٰمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا
عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ
وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٣٤﴾

135. फिर जब हम उन पर से एक समय तक के लिए जिस को वे पहुँचने ही वाले थे अज़ाब दूर कर देते तो वे फ़ौरन प्रतिज्ञा तोड़ने लगते।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ هُمْ بَٰلِغُوهُ إِذَا
هُمْ يَنْكُثُونَ ﴿١٣٥﴾

136. आख़िर कार हम ने उन को सज़ा दी और उन्हें समुद्र में डूबा दिया [195] क्यों कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। और उन से बेपरवाह हो गए थे।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا
بِـَٔايَٰتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَٰفِلِينَ ﴿١٣٦﴾

137. और जिन लोगों को कमज़ोर बना कर रखा गया था उन को हम ने उस सरज़मीन के पूरब और पश्चिम का वारिस बना दिया जिस में हम ने बरकतें रखी थीं ।[196] और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे रब का बेहतरीन वादा बनी इस्राईल के हक़ (पक्ष) में पूरा हुआ।[197] क्यों कि उन्हों ने सब्र (धैर्य) से काम लिया था।[198] और फ़िरऔन और उस की क़ौम ने जो कुछ बनाया था और जो इमारतें बुलन्द की थीं वह सब हम ने मलियामेट कर दीं।[199]

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَٰرِقَ
الْأَرْضِ وَمَغَٰرِبَهَا الَّتِي بَٰرَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا
مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

138. और बनी इस्राईल को हम ने समुद्र पार करा दिया।[200]फिर उन का गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जो अपने बुतों की परस्तिश में लगी हुई थी।[201]कहने लगे ऐ मूसा ! हमारे लिए भी एक ऐसा पूज्य (माबूद) बना दीजिए जिस तरह इन के पूज्य हैं।[202] उस ने कहा तुम बड़े जाहिल लोग हो।

وَجَٰوَزْنَا بِبَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ
عَلَىٰٓ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۚ قَالُوا يَٰمُوسَى اجْعَلْ لَنَآ إِلَٰهًا كَمَا لَهُمْ
ءَالِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

139. ये लोग जिस की परस्तिश में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है।[203] और जो अमल वे कर रहे हैं वह सरासर बातिल (तथ्यहीन) है।

إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَا هُمْ فِيهِ وَبَٰطِلٌ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾

194. फ़िरऔन और उस की क़ौम मूसा के रब अर्थात ब्रहमाण्ड के रचयिता से बिलकुल अनभिज्ञ नहीं थी वरना वह मूसा से विनती न करती कि हमारे लिए उस से दुआ करो।

195. डूबने की घटना विस्तार के साथ सूरह यूनुस आयत 90 से 93 में एवं दूसरी सूरों में भी बयान हुई है।

196. मुराद फ़िलस्तीन की पावन धरती है जो दीनी बरकतों से मालामाल है। यहाँ कितने ही बड़े बड़े नबी भेजे गए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे हज़रत इस्हाक़ को यहीं बसाया था जिन की नस्ल (वंश) में अल्लाह तआला ने बड़ी बरकत रखी और उसे दुनिया की प्रमुख़तम क़ौम की हैसियत से उठाया,यहीं हज़रत सुलेमान के हाथों बैतुलमुक़द्दस का निर्माण हुआ जिस ने यहाँ के वातावरण को पवित्र और रूहानी बना दिया ।

197.अर्थात् अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को सत्ता प्रदान करने का जो वादा किया था वह पूरा हुआ बाइबिल में इस वादे का कई जगह वर्णन हुआ है जैसे:

''और मैं ने उन के साथ अपनी वाचा दृढ़ की है, अर्थात् कनान देश जिस में वे परदेशी हो कर रहते थे, उसे उन्हें दे दूँ।''..... और जिस देश के देने की शपथ मैं ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से खाई थी उसी में मैं तुम्हें पहुँचा कर उसे तुम्हारा भाग कर दूँगा ख़ुदावन्द मैं हुँ ।'' (निर्गमन ६:४,८)

हज़रत मूसा के जीवन के अन्तिम दिनों में बनी इस्राईल ने मोआब क्षेत्र को जीत लिया था जो फ़िलस्तीन की सरहद से लगा हुआ है और आप की मृत्यु के बाद यहोशू पुत्र नून के नेतृत्व में कन्आन देश (फ़िलस्तीन) को जीत लिया:

''जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था वैसा ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया और उसे इस्राईल के गोत्रों और कुलों के अनुसार बाँट कर के उन्हें दे दिया । और देश को लड़ाई से शान्ति मिली । '' (यहोशू ११:२३)

198. बनी इस्राईल में यद्यपि कमज़ोरियाँ थी लेकिन फ़िरऔन के अत्यधिक अन्याय और सत्याचार के बावजूद वे अपने दीन पर क़ायम रहे और मूसा के नेतृत्व में उन्हों ने मिस्र से हिज़रत (Migration) की।

199. अर्थात् उन की सारी सांस्कृतिक प्रगति ख़ाक में मिल कर रह गई और वे भव्य भवन जो उन्होंने बनी इस्राईल से कठोर परिश्रम करा के निर्माण कराए थे, विनष्ट हो गए। यह विनाश सम्भवत: पुरवा हवा के चलने से हुआ था जिस ने एक तरफ़ मिस्र में तबाही मचाई और दूसरी तरफ़ फ़िरऔन और उस के लश्कर को समुद्र में डूबा देने का सामान किया।

200. बनी इस्राईल को अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रुप से समुद्र पार करा दिया था।

201. जब वे क़ुल्ज़म (लाल सागर) को पार कर के सीना के बियाबान में आए तो उन्होंने तूर पर्वत (होरेब) की दिशा पकड़ी इस सफ़र के दौरान उन का ग़ुज़र ऐसे लोगों के पास से हुआ जो अपने बुतों की परस्तिश में मगन थे।

202. ऊपर गुज़र चुका है कि बनी इस्राईल ने सब्र (धैर्य) से काम लिया था इस लिए अल्लाह तआला ने उन को फ़िरऔन से मुक्ति प्रदान की और प्रतिष्ठित किया। यहाँ बताया जा रहा है कि उन्होंने फ़िरऔन से मुक्ति पाने के बाद कैसी नाशुक्री (कृतघ्नता) की कि मूसा से एक पूज्य की मांग कर बैठे। ये दोनों बातें इस लिहाज़ से सही हैं कि बनी इस्राईल में भाँति भाँति के लोग मौजूद थे। अच्छे चरित्र के लोग भी और बुरे चरित्र के लोग भी। और चूँकि सामूहिक रुप से वे फ़िरऔन के मुक़ाबले में डटें रहे, और उन्होंने मूसा को अपना नायक मान लिया था इस लिए वे मान सम्मान के अधिकारी हुए। लेकिन इन में जो लोग मिस्र के बहुदेववादी वातावरण में रह कर विचार और कर्म, अक़ीदा और अमल की कमज़ोरी में मुब्तिला हो गए थे वे ऐसी हरकतें करते रहे जो सरासर मूर्खतापूर्ण, जाहिलाना और बनी इस्राईल के क़ौमी अस्तित्व पर बदनुमा दाग़ थीं। ऐसी ही एक जाहिलाना एवं मूर्खतापूर्ण हरकत का वर्णन यहाँ हुआ है और उन की दूसरी जाहिलाना हरकतों का वर्णन क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर हुआ है।

203. अर्थात उन का बनाया हुआ बुत जिसको वे ख़ुदा बना बैठे हैं, मिट्टी में मिल कर समाप्त हो जाने वाला है जब कि तुम्हारा ख़ुदा हमेशा ज़िन्दा और बाक़ी और क़ायम रहने वाली हस्ती है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

140. एवं उस ने कहा: क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मअबूद तुम्हारे लिए ढूँढूँ हालांकि वही है जिस ने दुनिया की क़ौमों पर तुम को श्रेष्ठता प्रदान की है।[204]

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

141. और याद करो जब हम ने फ़िरऔन वालों से तुम को मुक्ति दी जो तुम्हें कड़ी यातनाऐं देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते और तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा रहने देते।[205] और इस में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश थी।

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ
يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ
بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾

142. और हम ने मूसा से तीस रातों का वादा किया और दस रातों की वृद्धि कर के उसे पूरा कर लिया।[206] इस तरह उस के रब की निर्धारित की हुई अवधि चालीस रातों में पूरी हो गई। उस ने अपने भाई हारून से कहा था: मेरी क़ौम में मेरी जगह रहना।[207]और सुधार के काम करना और बिगाड़ पैदा करने वालों की राह पर न चलना।[208]

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ
مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ
هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾

143. और जब मूसा हमारे निश्चित किए हुए समय पर उपस्थित हुआ और उस के रब ने उस से बातचीत की [209] तो विनती की कि ऐ मेरे रब ! जलवा फ़रमा (दर्शन दे) ताकि मैं तुझे देख सकूँ।[210] फ़रमाया तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे।[211] अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देखो, अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो मुझे देख सकोगे फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर तजल्ली (अध्यात्मज्योति) की तो उस को चूर चूर कर दिया और मूसा बेहोश हो कर गिर पड़ा।[212] जब होश आया तो बोल उठा: पाक है तू मैं तेरे हुज़ूर तौबा (दृढ़ प्रतिज्ञा) करता हूँ [213] और सब से पहला ईमान लाने वाला मैं हूँ।[214]

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْۤ
اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ
فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ
لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ
قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

144. फ़रमाया: ऐ मूसा मैं ने तुम्हें पैग़म्बरी और हमकलामी (परस्पर वार्तालाप) द्वारा लोगों पर श्रेष्ठ किया है, तो जो कुछ मैं तुझे दे रहा हूँ [215] उसे लो और कृतज्ञ बन जाओ।

قَالَ يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَ
بِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

204. अर्थात् तुम को अल्लाह तआला ने इमामत (नेतृत्व) के पद पर बिठाया है ताकि तुम सारे जगत के लोगों की रहनुमाई का माध्यम बनो लेकिन तुम हो कि गुमराह क़ौमों का अन्धानुकरण करना चाहते हो, तुम्हें न अपने उच्च स्थान का लिहाज़ है और न तुम अपने परोपकारी का सम्मान करने वाले हो।

205. ताकि वह बड़ी हो कर फ़िरऔनियों की सेवा कर सकें ।

206. हज़रत मूसा को अल्लाह तआला ने तूर पर्वत पर तीस रात और दिन के लिए बुलाया था ताकि उन्हें हमकलामी (परस्पर वार्तालाप) का मान दिया जाए जैसा कि इस के बाद की आयत से स्पष्ट है। बाद में इस ए'तिकाफ़ (एकान्तवास) की मुद्दत में अल्लाह तआला ने दस दिन अधिक बढ़ा दिया ये अल्लाह तआला का फ़ज़्ल था जो मूसा पर हुआ क्यों कि उन के रब का उन से बराहे-रास्त कलाम (परस्पर वार्तालाप) करना उन को रहमतो तथा बरकतों से मालामाल करने के मुतारादिफ़ (बराबर) था । इस लिए मुद्दत में इज़ाफ़ा हज़रत मूसा के लिए अधिक सआदत की बात थी। इस घटना का ज़िकर तौरात में भी है:-

"और मूसा घटा के बीच में हो कर पर्वत पर चढ़ गया और वह पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा"(खुरूज २४:१८)

207. हज़रत मूसा ने हारून को जो नबी थे अपनी अनुपस्थिति में बनी इस्राईल के नेतृत्व के लिए अपनी जगह पर नियुक्त किया था।

208. यह ताकीद उन्हों ने हज़रत हारून को की थी लेकिन वास्तव में इस के सम्बोधित बनी इस्राईल थे क्यों कि हज़रत हारून तो नबी थे उन से बिगाड़ की क्या आशंका हो सकती थी। अलबत्ता बनी इस्राईल से यह आशंका थी की वे कहीं बिगाड़ में लिप्त न हो जाऐं।

209. व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट २७४

210. अल्लाह से वार्ता (कलाम) के आनन्द ने उन के अन्दर दर्शन की अभिलाषा को उत्पन्न कर दिया। और उल्लास में वह अपनी इस कामना को प्रकट कर बैठे। तौरात में है:

"उस ने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे।"

(निर्गमन ३३:१८)

211. क्यों कि आँखें ख़ुदा को देखने की शक्ति कहाँ ला सकती है । तौरात में है:

" फिर उस ने कहा तू मेरे मुख का दर्शन नहीं कर सकता, क्यों कि मनुष्य मेरे मुख का दर्शन कर के जीवित नहीं रह सकता ।"(निर्गमन ३३:२०)

212. इस से स्पष्ट हुआ कि पहाड़ जैसी ठोस चीज़ भी ख़ुदा को देखने का सामर्थ्य नहीं रखता फिर गोश्त पोस्त का इन्सान उस को कहाँ देख सकता है।

इस वास्तविकता के रहते यह स्पष्ट होता है कि न सूफ़ियों के कठिन परिश्रम ख़ुदा का दर्शन करा सकती हैं और न योगियों के योगासन । सही बात यह है कि इन्सान इस दुनिया में ख़ुदा को देखने की कोशिश करने के बजाय उस की आयतों (निशानियों) को देखने पर संतोष करे और इन आयतों द्वारा ख़ुदा का जो ज्ञान और जो अध्यात्म उसे प्राप्त हो उस पर ईमान लाए।

213. मूसा अलैहिस्सलाम को जैसे ही आभास हुआ कि उन्होंने दर्शन की जो प्रार्थना ख़ुदा से की थी वह उचित नहीं थी, उस के समक्ष पश्चातापी हुए।

214. अर्थात् कोई ईमान लाए या न लाए मैं सब से पहले ईमान लाता हूँ। यह अपने ईमान की पुनरावृत्ति थी जो हज़रत मूसा ने उस अवसर पर की ।

215. मुराद तौरात है ।

145. और हम ने तख़्तियों [216] पर उस के लिए हर तरह की नसीहत और हर बात की तफ़्सील लिख दी [217](और फ़रमाया) इन को मज़बूती के साथ पकड़ो और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि उन के उत्तम आशय का अनुपालन करें।[218] बहुत जल्द मैं तुम्हें फ़ासिक़ों (अवज्ञाकारियों) का घर दिखाऊँगा।[219]

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيلًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا
بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفٰسِقِينَ ﴿١٤٥﴾

146. मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूँगा जो नाहक़ ज़मीन में अहंकार करते हैं वे हर तरह की निशानियाँ देख लें फिर भी ईमान न लाएं। अगर हिदायत का रास्ता देख लें तो उसे न अपनाऐं और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसे अपना लें। यह इस लिए कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उन से बेपरवाह हो गए।

سَأَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ۖ وَإِن يَرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ وَإِن يَرَوْا
سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ
يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوا
عَنْهَا غٰفِلِينَ ﴿١٤٦﴾

147. और जिन लोगों ने हमारी निशानियों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया,उन का सब किया धरा अकारथ गया। उन्हें इस के सिवा और क्या मिलेगा कि वे अपने करतूतों का फ़ल पाऐं।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

148. और मूसा के (तूर पर्वत पर) चले जाने के बाद उस की क़ौम ने अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा ढाल लिया जो मात्र एक धड़ था और जिस से गाय की सी आवाज़ निकलती थी।[220]उन्हों ने यह न देखा कि वह न उन से बात कर सकता है और न उन की रहनुमाई कर सकता है।[221]उन्हों ने उसे मअबूद (पूज्य) बना लिया और वे ज़ालिम थे।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسٰى مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا
لَّهٗ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۘ
اِتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظٰلِمِينَ ﴿١٤٨﴾

149. फिर जब उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हुआ और देखा कि वे गुमराह हो गए हैं तो कहने लगे अगर हमारे परवरदिगार ने हम पर दया न की और हमें माफ़ न किया तो हम तबाह हो जाऐंगे।

وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا ۙ قَالُوا
لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ
الْخٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

150. और जब मूसा गुस्से और दुख से भरे हुए अपनी क़ौम की तरफ़ लौटे तो कहा कैसी बुरी उत्तराधिकारी की तुम लोगों ने मेरे पीछे।[222] क्या तुम ने जल्द बाज़ी की और अपने रब के आदेश की प्रतिक्षा न की?[223] और तख़्तियाँ डाल दीं और अपने भाई के सर के बाल पकड़ कर उस को अपनी तरफ़ घसीटने लगे।[224] उस ने कहा ऐ मेरी माँ के बेटे, इन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर देते।[225] तो मुझ पर दुश्मनों को हंसने का मौक़ा न दीजिए और इस ज़ालिम गिरोह में मुझे शामिल न कीजिए।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسٰى إِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ أَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا
خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ
وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهٗ إِلَيْهِ ۚ
قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي
فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿١٥٠﴾

216. बाइबिल में है कि ये तख़्तियाँ दो थीं और पत्थर की थीं और इन के दोनो तरफ़ लेख अंकित थे। मगर क़ुर्आन ने ''अल्वाह'' का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है जो अरबी ग्रामर के अनुसार द्विवचन नहीं बल्कि बहुवचन के लिए इस्तेमाल होता है इस लिए तख़्तियाँ तीन रही होंगी।

217.मालूम हुआ कि इन तख़्तियों पर दस आदेश (Ten Comandments) ही अंकित न थे बल्कि उपदेश के अलावा दीन और शरीअत की तमाम बुनियादी बातें अंकित थीं।

218. अर्थात केवल शब्दों को ले कर बैठ न जाएं और ऐसा न करें कि जिन शब्दों के कई अर्थ होते हों उन के उन अर्थो को स्वीकार कर ले जो न संदर्भ के अनुकूल हों न अल्लाह के कलाम के अनुकूल हों। पहले से कि गई इस तंबीह के बावजूद बनी इस्राईल ने आगे चल कर वही किया जिस की आशंका थी। अर्थात् अल्लाह के कलाम का वह स्पष्टीकरण किया और उसे वो अर्थ पहनाए जो उस की मंशा के विरुद्ध थे। इस तरह वे एक हिकमत से भरे (तत्त्वपूर्ण) कलाम को तुक बन्दी की सतह पर ले आएं, परिणाम यह कि जहाँ से उन्हें हिदायत मिलनी चाहिए वहाँ से उन्होंने गुमराही ग्रहण की। इस के स्पष्ट उदाहरण तौरात के वर्तमान अनुवादों में देखा जा सकता है। क़ुर्आन के अनुयायियों के लिए भी इस में सतर्कता के निर्देश हैं क़ुर्आन के किसी शब्द का वह अर्थ और किसी आयत का वह भावार्थ लेना चाहिए जो सब से बेहतर और पूरे क़ुर्आन से मेल खाने वाला हो। इस उसूल का अगर पूरी तरह निर्वाह किया जाए तो बहुत से तफ़्सीरी मतभेद अपने आप समाप्त हो जाऐंगे।

219. फ़ासिकों (अवज्ञाकारियों) के घर से मुराद जैसा कि बाद की आयत से स्पष्ट होता है, फ़ासिक़ों का ठिकाना और उन का अन्जाम है।

220. बनी इस्राईल मिस्र के बहुदेववादी वातावरण में रहते हुए विचार, आस्था और नैतिकता की दृष्टि से काफी कमज़ोर हो चुके थे इस लिए वे किसी भी फ़ितने का आसानी से शिकार हो सकते थे। हज़रत मूसा चूँकि उन पर अपनी मज़बूत पकड़ (Hold) रखते थे इस लिए उन की उपस्थिति में कोई फ़ितना सर उठा न सका। लेकिन जैसे ही वह तूर पर्वत पर चले गए सामरी नामक जादूगर ने सोने के आभूषणों से बछड़े का ढाँचा बना कर उन के लिए फ़ितना खड़ा कर दिया। सामरी एक कपटी एवं पाखण्डी व्यक्ति था जिस का क़िस्सा सूरह ताहा में विस्तार से बयान हुआ है। उस ने बछड़े को ढालने में अपनी इस कलात्मक कौशल का सबूत दिया था कि हवा के गुज़रने से उस में गाय या बैल की सी आवाज़ पैदा हो जाती थी।

221. अर्थात् इतनी मोटी बात भी उन की समझ में नहीं आई कि बछड़े में ख़ुदा होने के कोई भी लक्षण विद्यमान नहीं हैं फिर ऐसी चीज़ को मअबूद (पूज्य) बनाने का क्या मतलब जिस में ख़ुदा होने के एक भी गुण विद्यमान न हों। सच्चाई यह है कि आदमी जब आस्था, श्रद्धा अथवा अक़ीदत के मामले में ग़लत फ़ैसला कर बैठता है तो वह अन्धा हो जाता है। फिर उसे ईंट पत्थर,गाय,बैल,आग,नाग,किसी चीज़ की भी पूजा करने में संकोच नहीं होता जब कि आदमी खुली आँखों से देखता है कि उन में ख़ुदा होने के कोई गुण तथा कोई लक्षण नहीं पाए जाते।

222. यह बात हज़रत मूसा ने क़ौम से संबोधन कर के कही । और ''बुरी उत्तराधिकारी की'' का मतलब यह है कि जिस हाल पर मैं ने तुम्हें छोड़ा था उस पर तुम क़ायम न रहे बल्कि मेरी अनुपस्थिति में बिगाड़ और गुमराही की राह पर चल पड़े।

223. हज़रत मूसा तीस दिन के लिए तूर पर्वत पर गए थे लेकिन जब इस अवधि में दस दिन की वृद्धि हुई तो सामरी नामक जादूगर को मौक़ा मिला कि वह लोगों के मन में हज़रत मूसा के प्रति बुरी भावना को उत्पन्न कर दें और लोग बजाय इस के कि अपने रब की आज्ञा की प्रतिक्षा करते कि हो सकता है उस ने अवधि में वृद्धि कर दी हो,सामरी के बहकावे में आ गए।

224. हज़रत मूसा का यह आदेश और यह क्रोध जिस की अभिव्यक्ति तख़्तियों को एक तरफ़ डाल देने और हज़रत हारून को अपनी ओर घसीटने के रुप में हुई, ईमानी ग़ैरत और सत्य के स्वाभिमान का तक़ाज़ा था। और यह बात सही नहीं कि हज़रत मूसा ने तख़्तियाँ फ़ेक दी थीं और वे टूट गई थीं, जैसा कि बाइबिल का बयान है बल्कि उन्हों ने क्रोध के आवेश में डाल दी थीं, और जैसा कि आगे चल कर आयत १५४ में बयान हुआ है, इन तख़्तियों को उन्होंने बाद में उठा लिया था।

225. हज़रत हारून के इस बयान से स्पष्ट हुआ कि उन्होंने बनी इस्राईल को बछड़े को माबूद बनाने से रोकने की पूरी कोशिश की लेकिन लोगों ने उन की बात नहीं मानी और उलटे उन को मार देने को तैयार हो गए। क़ौम के यह तेवर देख कर हज़रत हारून ने मुनासिब यह समझा कि हज़रत मूसा की वापसी का इन्तिज़ार किया जाए। वह बनी इस्राईल पर ज़ोर रखते हैं इस लिए जो कार्रवाई मुनासिब समझेंगे करेंगे। अत: बछड़े की पूजा करने वालों के विरुद्ध हज़रत मूसा ने ख़ुदा की आज्ञा से जो कार्रवाई की उस का ज़िक्र सूरह बक़र: आयत ५४ में हुआ है (व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट ७३)

बाइबिल में यह घृणित आरोप हज़रत हारून पर लगाया गया कि उन्होंने बछड़ा बनाया था। ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''यहूदी नबियों पर भी इल्ज़ाम लगाने से नहीं चूकते। लेकिन क़ुर्आन ने हज़रत हारून का बयान नक़ल किया है। इस से साबित होता है कि उन का दामन बेदाग़ है और यह आरोप बिलकुल झूठा है।

151. (मूसा ने) कहा: ऐ मेरे रब मुझे और मेरे भाई को माफ़ कर [226] और हमें अपनी रहमत में दाखिल कर तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾

152. (अल्लाह ने फ़रमाया) जिन लोगों ने बछड़े को मअबूद (पूज्य) बनाया उन पर अवश्य अल्लाह का प्रकोप टूट पड़ेगा और दुनिया की ज़िन्दगी में उन्हें ज़िल्लत नसीब होगी। झूठ गढ़ने वालों को हम ऐसी ही सज़ा देते हैं।[227]

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

153. और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर उस के बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए तो निश्चय ही इस के बाद तुम्हारा रब क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

154. जब मूसा का गुस्सा ख़त्म हुआ तो उस ने तख़्तियाँ उठा लीं ।और उन की लेख में हिदायत और करुणा थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं ।

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

155. और मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे निर्धारित किए हुए समय पर उपस्थित होने के लिए चुना।[228] जब उन को ज़लज़ले ने आ लिया तो (मूसा ने) निवेदन किया, ऐ मेरे रब ! अगर तू चाहता तो पहले ही इन को और मुझे विनष्ट कर सकता था।[229] क्या तू एक ऐसी हरकत के बदले में जो हम में से मुर्खों ने की है, हम सब को विनष्ट कर देगा।यह तो तेरी एक आज़माइश थी जिस के द्वारा तू जिसे चाहे गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे, तू ही हमारा काम बनाने वाला है। हमें क्षमा कर और हम पर दया कर।तू सब से बेहतर क्षमा करने वाला है।

وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾

156. और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी। हम तेरी ओर पलट आए।[230] फ़रमाया मैं अपने अज़ाब (प्रकोप) में तो उसी को मुब्तिला करता हूँ जिसे चाहता हूँ। लेकिन मेरी रहमत (दयालुता) तो हर चीज़ पर छाई हुई है।[231] तो मैं उसे उन लोगों के लिए लिखूँगा जो तक़्वा (परहेज़गारी) अपनाऐंगे, ज़कात देंगे और हमारी निशानियों पर ईमान लाऐंगे ।[232]

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

226. अर्थात् ग़ुस्से में अगर कोई क़ुसूर मुझ से हो गया हो या मेरे भाई हारून से प्रतिनिधित्व के दायित्व को पूरा करने में कोताही हो गई हो तो उन्हें क्षमा कर ।

227. गऊ पूजा हो या मूर्ति पूजा सब शिर्क है और शिर्क सरासर झूठ है जो अल्लाह पर बाँधा जाता है क्यों कि शिर्क करने वाला वास्तव में इस बात का दावेदार होता है कि ख़ुदा होने में दूसरी हस्तियाँ भी शामिल हैं या यह कि उन की पूजा ख़ुदा ने अवैध नहीं ठहराई है। इन में से जो सूरत भी हो ख़ुदा पर झूठ बांधने के सिवा कुछ नहीं। और शिर्क करने वालों के लिए अल्लाह का प्रकोप और दुनिया की ज़िन्दगी में अपमान एवं तिरस्कार निश्चित है।

बनी इस्राईल के जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया था उन को जो अपमानजनक दंड दिया गया उस का वर्णन सूरह बक़रः नोट 73 में गुज़र चुका।

228. हज़रत मूसा ने सत्तर आदमियों का चुनाव इस लिए किया था ताकि बछड़े की पूजा कर के क़ौम जिस अपराध को कर बैठी है उस के सम्बन्ध में ये चुने हुए लोग तूर पर्वत पर उपस्थित हो कर ख़ुदा से इस की क्षमा माँगें।

229. जब ये सत्तर लोग तूर पर्वत पर उपस्थित हुए तो अल्लाह तआला ने भूकंप की स्थिती पैदा कर दी ताकि उन पर भय व्याप्त हो जाए और वे अल्लाह से डरते हुए एवं विनम्र भाव के साथ अल्लाह से क्षमा याचना करें।

230. हज़रत मूसा की यह दुआ जिस का एक एक शब्द दर्द, कोमलता, पश्चाताप एवं ईश-भय की भावना से भरा था बादलों को चीरती हुई आसमान पर पहुँच गई।

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं, ''ताक़ते-परवाज़'' मगर रखती है।।।

231. अर्थात अज़ाब विशिष्ट है और दया सर्वव्यापी दया । जहाँ तक अज़ाब की बात है, अज़ाब की ज़द में वही लोग आते हैं जिन को ज़द में लेने का अल्लाह तआला फ़ैसला करता है और यह फ़ैसला उस के न्याय और तत्वदर्शिता के गुणों के बिल्कुल अनुकूल होता है किन्तु उस की दया से कोई भी वंचित नहीं, इन्सान हो, जानवर हो या पेड़ पौधे हों हर चीज़ उस की दया की छत्र छाया ही में पल रही है। कायनात पर नज़र डालिए तो हर तरफ़ उस की दया ही उमड़ती दिखाई देगी।

232. अर्थात् जहाँ तक अल्लाह की उस दया का सम्बन्ध है जो कर्मफ़ल के रुप में दी जाने वाली है तो वह उन ही लोगों के लिए होगी जिन की ये और ये विशेषताएं होंगी।

ईश-भय अपनाने का मतलब अल्लाह से डरते हुए जीवन व्यतीत करना है और उस की अवज्ञा से बचना है। इस में शिर्क से बचना अनिवार्य रुप से शामिल है।

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ ❐

157. (और आज [233] इस दयालुता के योग्य अधिकारी वे लोग हैं) जो इस रसूल की जो उम्मी नबी है [234] का अनुसरण करेंगे जिस का वर्णन वे अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं [235] वह इन्हें भलाई का हुक्म देता है और बुराई से रोकता है और उन के लिए पाक चीज़ें हलाल और नापाक चीज़ें हराम ठहराता है [236] उन पर से वह बोझ और वह बंधन हटाता है जो उन पर पड़े हुए थे।[237] तो जो लोग उस पर ईमान लाए और उस की हिमायत और मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उस के साथ उतारा गया है।[238] वही सफ़लता पाने वाले हैं।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي
يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ
يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ
لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ
آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ
الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٧﴾

158. कहो ऐ लोगो !मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूँ [239] जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। उस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं, वही जिलाता और मारता है। अतः ईमान लाओ अल्लाह पर उस के रसूल उम्मी नबी पर, जो अल्लाह और उस के फ़रमानों पर ईमान रखता है और पैरवी करो उस की ताकि तुम हिदायत पाओ।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي
وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

159. मूसा की क़ौम [240] में एक गिरोह ऐसा भी था जो हक़ के अनुसार मार्गदर्शन करता और हक़ ही के अनुसार इन्साफ़ करता था।[241]

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ
يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾

160. और हम ने इन को बारह ख़ानदानों में विभाजन कर के उन को अलग अलग गिरोह का रुप दिया था [242] और जब मूसा की क़ौम ने उस से पानी मांगा तो हम ने उस पर वह्य की कि अपनी लाठी चट्टान पर मारो, अतः उस से बारह स्त्रोत फूट निकले और हर गिरोह ने अपने पानी लेने की जगह मालूम कर ली । [243] और हम ने उन पर बादल की छाया की और उन पर मन्न और सलवा उतारा । [244] खाओ इन पाक चीज़ों को जो हम ने तुम्हें प्रदान की हैं। मगर उन्हों ने (नाशुक्री कर के) हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ
مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ
فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ
مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ
الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ وَ
مَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾

233. यह और इस के बाद वाली आयत व्यवहित वाक्य (जुमला-ए-मोतरज़ा) के तौर पर है अर्थात बनी इस्राईल का जो वृत्तांत बयान किया जा रहा है वह जब अल्लाह तआला की दयालुता के वर्णन तक पहुँच गया तो यह स्पष्ट करने का मौक़ा पैदा हो गया कि आज उस की दयालुता के योग्य अधिकारी कौन लोग हैं। इसी मुनासिबत से यहाँ उम्मी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाने और आप की आज्ञापालन करने का निमंत्रण दिया गया है।

234. उम्मी शब्द की व्याख्या सूरह आले-इमरान नोट 29 में गुज़र चुकी यहाँ इस को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रमुख गुण के रुप में प्रस्तुत किया गया है क्यों कि पढ़ा लिखा न होना यद्यपि कोई ख़ूबी की बात नहीं है लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ में यह बात इस लिए ख़ूबी की बन गई कि इस से आप की चमत्कारिक शान की उत्पत्ति हुई। पढ़े लिखे न होने के बावजूद आप ने जो शिक्षा दी उस को देख कर ज्ञान ध्यान के क्षेत्र के बड़े बड़े सूरमा दंग हैं और विद्वान, चिन्तक और बुद्धिजीवी सभी आप से प्रेरणा पा रहे हैं, गोया आप का उम्मी होना आप की नुबुव्वत की दलील बन गया और दलील भी ऐसी जिस का जवाब देने से दुनिया असमर्थ है।

आप का उम्मी (पढ़ा लिखा न) होना अहले-किताब के लिए इस पहलू से भी नुबुव्वत की दलील था कि अल्लाह तआला ने जहाँ इब्राहीमी नस्ल की एक शाख बनी इस्राईल को ग्रंथ प्रदान किया था और उन के अन्दर कई नबी नियुक्त फ़रमाए थे वहाँ उस की दूसरी शाख़ बनी इस्माईल को न किताब दी और न उन के अन्दर नबियों को नियुक्त किया बल्कि यह वादा फ़रमाया कि इस इब्राहीम की शाख़ में जो किताब से अनभिज्ञ है और जिस की हिदायत का द्वार सिर्फ़ वह तरीक़ा है जो इब्राहीम और इस्माईल ने उन के लिए छोड़ा है, एक ऐसे नबी को उन के अन्दर बरपा करूँगा जो उम्मी होने के बावजूद अल्लाह की किताब का भारवाहक (हामिल) होगा । अत: तौरात में है:

''सो मैं उन के लिए उन के भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करुँगा और अपना वचन उस के मुँह में डालूँगा और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उन को कह सुनाएगा । और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह मेरे नाम से कहेगा, ग्रहण न करेगा तो मैं उस का हिसाब उस से लूँगा।'' (व्यवस्था विवरण 18:18,19)

यह बात बनी इस्राईल के नबियों में से किसी पर फिट (Fit) नहीं बैठती क्यों कि यहाँ बनी इस्राईल के भाईयों में नबी नियुक्त करने की बात कही गई है न कि बनी इस्राईल में अत: अगर तौरात की इस भविष्य वाणी के अनुकूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं हैं तो और कौन है? दूसरी बात यह है कि मूसा अलैहिस्सलाम संविधान धारक (साहबे-शरीअत) थे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी संविधान धारक हैं।जब कि बनी इस्राईल के नबी, हज़रत मूसा की शरीअत के अधीन थे इस लिए तौरात की उक्त भविष्य वाणी में मूसा की तरह नबी बरपा करने की जो बात कही गई है उस के अनुरूप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही ठहरते हैं।

235. तौरात की भविष्यवाणी का हवाला ऊपर के नोट में गुज़र चुका । रही इंजील तो उस में अनेकों स्थान पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भविष्य वाणियाँ मौजूद हैं जैसे:

''यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रीयों ने निकम्मा ठहराया था वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया? यह प्रभु की ओर से हुआ हमारे देखने में अद्‌भुत है, इस लिए मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उस का फल लाए, दे दिया जाएगा। जो इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा और जिस पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा।'' (मत्ती 21:42,43,44)

इस भविष्य वाणी का एक एक शब्द हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर फिट आता है क्यों कि आप कोने के सिरे का पत्थर अर्थात् आख़िरी नबी हैं। ख़ुदा की बादशाही अर्थात इमामत बनी इस्राईल से छीन ली गई और मुस्लिम उम्मत के हवाले की गई। आख़िरी नबी से जो टकराया वह चकनाचूर हो गया और जिस पर आख़िरी नबी ने हमला किया उस को पीस कर रख दिया।

यूहन्ना की इंजील में है कि जब यहूदियों ने हज़रत यह्या (यूहन्ना) से पूछा क्या तू मसीह है तो उस ने कहा नहीं। उन्होंने पूछा क्या तू एलिय्याह है, उस ने कहा नहीं।

उन्हों ने पूछा:

''तो क्या तू वह भविष्य द्वक्ता है? उस ने उत्तर दिया कि नहीं। (यूहन्ना 1:21)

इस से साफ़ ज़ाहिर है कि ईमान लाने वालों के यहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यक्तित्व आप के आने से पहले '' वह भविष्यद्वक्ता '' (अर्थात वह नबी) की हैसियत से प्रसिद्ध थी। और जब हज़रत मसीह के बाद सिवाय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी भी नबी की आमद न हुई तो ''वह भविष्यद्वक्ता'' के अनुरुप आप नहीं तो और कौन?

एक और जगह ईसा अलैहिस्सलाम का यह इर्शाद नकल हुआ है:

'' मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा क्यों

कि इस संसार का सरदार आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं ।'' (यूहन्ना १४:३०)

दूसरे स्थान पर है:

'' परन्तु जब वह सहायक आएगा...... तो वह मेरी गवाही देगा। (यूहन्ना १५:२६)

और यह महान हस्ती हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही की है जिस ने हज़रत ईसा के बारे में ठीक ठीक गवाही दी अर्थात उन की रिसालत की पुष्टि की। उन के व्यक्तित्व को सही तौर से स्पष्ट किया और उन की असल दअवत को उजागर किया। एक और जगह है:

'' परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा क्यों कि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।'' (यूहन्ना १६:१३)

और एक जगह तो स्पष्ट रुप से यह भी कहा गया है कि वह अंत तक तुम्हारे साथ रहेंगा अर्थात उस की शरीअत (संविधान क़ियामत तक के लिए होगी)

'' और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।'' (यूहन्ना १४:१६)

236. अर्थात् यहूदियों पर उन की उद्दंडता के कारण जो चीज़ें अवैध ठहरा दी गई थीं उन की अवैधता इस नबी के भेजे जाने पर समाप्त कर दी गई। इस नबी के साथ चूँकि सर्वदा का संविधान अवतरित किया गया है इस लिए केवल वे ही पाबन्दियाँ लागू कर दी गई हैं जो स्वभाविक (Natural) हैं। अर्थात सिर्फ नापाक (ख़बीस) चीजें हराम हैं ।

237. बोझ (इस्र) से अभिप्राय बनी इस्राईल के विद्वानों एवं धर्म शास्त्रियों की धार्मिक छिद्रान्वेषण (अर्थात धर्म ज्ञान से सम्बन्धित छोटी छोटी बातों में उलझाव पैदा करना) हैं जिस ने शरीअत को मुश्किल और बोझल बना दिया था जिस का अन्दाज़ा वर्तमान तौरात के अध्यन से होता है। और तौक़ अर्थात बंधन (अग़लाल) से अभिप्राय बिद्अतें (अर्थात दीन में नई बातों को शामिल करना) और अंधविश्वास हैं जिस ने इन्हें जकड़ रखा था।

238. मुराद क़ुर्आन है।

239. अर्थात् बनी इस्राईल हों या बनी इस्माईल, अरब वासी हों या ग़ैर अरब वासी, नस्ल, रंग, वतन, क़ौम मज़हब की किसी क़ैद के बग़ैर तमाम इन्सानों की तरफ़ मुझे रसूल बना कर भेजा गया है। इस वास्तविकता के चलते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिन्दुस्तान के लोगों के लिए भी उसी तरह पैग़म्बर हैं जिस तरह अरब वासियों के लिए हैं।

240. कलाम का रुख़ फिर बनी इस्राईल की तरफ़ मुड़ रहा है।

241. मक़सद यह स्पष्ट करना है कि बनी इस्राईल के जिन अपराधों और जिन निर्लज्जताओं का ऊपर वर्णन हुआ वे नि:संदेह इन के राष्ट्रीय अपराध (क़ौमी जुर्म) हैं लेकिन इस का मतलब यह नहीं हैं कि उन के अन्दर सत्यप्रियों का कोई गिरोह मौजूद नहीं था। बल्कि उन के अन्दर सत्यप्रियों का एक गिरोह जो यद्यपि संख्या के लिहाज़ से कम था, अवश्य मौजूद रहा है। यह गिरोह हक़ और इन्साफ़ के तक़ाज़ों को पूरा करते हुए लोगों की रहनुमाई और उन के बीच शरीअत के फैसलों का दायित्व निभाता रहा।

242. हज़रत मूसा ने सीना के बियाबान में बनी इस्राईल को संगठित किया था और उन के बारह क़बीलों पर जैसा कि सूरह माइदा आयत 12 में बयान हुआ है बारह सरदार नियुक्त किए गये थे। व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट ६१ बाइबिल में भी इस की तफ़सील ''गिनती'' अध्याय एक में बयान हुई है।

243. इस की व्याख्या सूरह बक़र: नोट ८१ में गुज़र चुकी ।

244. इस की व्याख्या भी सूरह बक़र: नोट ७६ में गुज़र चुकी ।

फिर जब वे उस काम को जिस से उन्हें मना किया गया था, पूरी ढिठाई के साथ करने लगे तो हम ने कहा बन्दर हो जाओ, अपमानित (एवं तिरस्कृत)।

(अल-क़ुर्आन)

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾

161. और जब उन से कहा गया कि इस बस्ती में जा कर रहो [245] और जहाँ से चाहो खाओ और हित्ततुन (क्षमा याचना) कहते जाओ।[246] और दरवाज़े में सजदा करते हुए प्रवेश करो।[247] हम तुम्हारी ख़ताएं माफ़ कर देंगे और नेक रवैया अपनाने वालों को हम और भी अधिक देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ
لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا
كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

162. मगर जो लोग उन में ज़ालिम थे उन्हों ने उस बात को जो उन से कही गई थी बदल कर कुछ और बना दिया,[248] आख़िरकार हम ने उन के ज़ुल्म के बदले में उन पर आसमान से अज़ाब (प्रकोप) भेज दिया।

وَسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ
الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ
يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ
كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٣﴾

163. और इन से उस बस्ती का हाल पूछो जो समुद्र के किनारे आबाद थी।[249] जहाँ सब्त के मामले में [250] लोग (शरीअत की बांधी हुई) सीमा का उल्लंघन करते थे। जब उन के सब्त (शनिवार) का दिन होता तो मछलियाँ पानी पर तैरती हुई उन के सामने आ जातीं और जब सब्त का दिन न होता तो न आतीं। इस तरह हम उन की नाफ़रमानी के कारण उन्हें आज़माइश में डालते थे।[251]

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ
مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

164. और जब उन में से एक गिरोह ने (नसीहत करने वालों से) कहा : तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह या तो विनष्ट करने वाला है या सख़्त अज़ाब (कठोर यातना) देने वाला है? उन्हों ने जवाब दिया इस लिए कि तुम्हारे रब के समक्ष क्षमा याचना कर सकें और इस लिए कि ये लोग गुनाहों से बचें।[252]

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ
وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾

165. फिर जब वे इस नसीहत को बिलकुल ही भुला बैठे जो उन्हें की गई थी, तो हम ने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारी लोगों को उन की नाफ़रमानी के कारण सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया।[253]

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

166. फिर जब वे उस काम को जिस से उन्हें मना किया गया था, पूरी ढिठाई के साथ करने लगे तो हम ने कहा बन्दर हो जाओ, अपमानित (एवं तिरस्कृत)।[254]

245. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र:नोट 77

246. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र:नोट 79

247. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र:नोट 78

248. अर्थात् बजाय इस के कि नगर में विजेता की हैसियत से प्रवेश करते हुए अल्लाह से क्षमा याचना करते उन्होंने घमंड एवं अहंकार में लिप्त हो कर निन्दनीय बातें कहनी शुरू कीं और दूसरों का मज़ाक़ उड़ाया।

249. यह जिस बस्ती का ज़िक्र हो रहा है इस से मुराद मुफ़स्सिरीन अर्थात् क़ुर्आन के टीकाकारों के एक गिरोह के निकट ऐला नगर है जो अक़बा की ख़ाड़ी के किनारे स्थित है और जिस का नया नाम अक़बा है। यहाँ बनी इस्राईल का एक गिरोह आबाद था और जिस घटना का यहाँ वर्णन किया गया है वह हज़रत मूसा के बाद की है।

250. सब्त अर्थात् सनीचर का दिन बनी इस्राईल के लिए पवित्र ठहराया गया था और उस दिन उन्हें काम करने से मना किया गया था जिस में शिकार करना भी शामिल था गोया यह दिन इबादत के लिए निश्चित था। सब्त के आदर के सम्बन्ध में उन्हें बहुत कड़े आदेश दिए गए थे ।

तौरात में है:

''फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू इस्राईलियों से यह भी कहना कि निश्चय तुम मेरे विश्राम दिनों को मानना ...... इस कारण तुम विश्राम दिन को मानना क्यों कि वह तुम्हारे लिए पवित्र ठहरा है। जो उस को अपवित्र करे वह निश्चय मार डाला जाए, जो कोई उस दिन में कुछ काम काज करे वह प्राणी अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए।''(निर्गमन ३१:१२,१३,१४)

251. जब किसी गिरोह का झुकाव किसी गुनाह की तरफ़ होता है तो अल्लाह तआला उस के लिए गुनाह में लिप्त होने के अवसर प्रदान कर देता है ताकि उस के दिल का खोट ज़ाहिर हो जाए और उस की अपराधिक मानसिकता खुल कर सामने आ जाए । यह उस हिकमत का तक़ाज़ा है जिस के तहत इन्सान को इम्तिहान से गुज़ारा जा रहा है।

सब्त के निरादर का रुजहान जब बनी इस्राईल के उस गिरोह में बढ़ गया जो समुद्र के किनारे आबाद था तो अल्लाह तआला ने उन को कड़ी परीक्षा में डाला और इस की सूरत यह हुई कि सनीचर (अर्थात सब्त) ही के दिन पानी की सतह के ऊपर मछलियाँ आने लगीं और अन्य दिनों में नहीं आती थीं। जिन लोगों की सारी रुची धन से जुड़ी थीं वे सब्त के आदेशों की परवाह न करते हुए मछलियों का शिकार करने लगे। इस प्रकार सब्त का निरादर सामाजिक रुप से होने लगा।

252. अर्थात यद्यपि कि नगर वासी उद्दंडता पर उतर आए थे लेकिन उन में एक गिरोह ऐसा ज़रुर रहा जिस के अन्दर ख़ुदा का डर था और जो सब्त से सम्बन्धित शरीअत के आदेशों की अवहेलना से बाज़ रहा । अच्छे लोगों के इस गिरोह में ऐसे लोग भी थे जो सब्त के आदेशों का उल्लंघन करने वालों को नसीहत करना व्यर्थ समझते थे इस लिए कि उन की ढिटाई के कारण वे उन की तरफ़ से बिल्कुल निराश हो चुके थे। किन्तु उन अच्छे लोगों में कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें अपने फ़र्ज़ की अदायगी का भली भाँती पता था । ये लोग अन्तिम समय तक बुराई से बाज़ रहने को समझाते रहे।

253. यह आयत स्पष्ट करती है कि अज़ाब का शिकार वही लोग हुए जो नाफ़रमान एवं अवज्ञाकारी थे और जो लोग बुराई से रोक रहे थे वे अज़ाब की जद में नहीं आए। रहा यह सवाल कि अच्छे लोगों के गिरोह में से जो लोग अत्याचारियों और ग़लत काम करने वालों के सुधार की तरफ़ से निराश थे और उन्हें नसीहत करना व्यर्थ समझते थे वे बचा लिए गये या अज़ाब की लपेट में आ गये? तो इस सिलसिले में मुफ़स्सिरीन अर्थात् क़ुर्आन के टीकाकारों के बीच मतभेद है। किन्तु हम निम्न लिखित दलीलों के अधार पर यह समझते हैं कि वे अज़ाब से बच जाने वालों में शामिल थे।

(A) उन्होंने यह जो कहा था कि ऐसे लोगों को नसीहत करने से क्या लाभ जिन्हें अल्लाह या तो विनष्ट करने वाला है या कड़ी यातना देने वाला है। इस से साफ़ ज़ाहिर होता है कि ये ख़ुदा से डरने वाले लोग थे। फ़िर ख़ुदा से डरने वालों का अन्जाम उद्दंडों जैसा किस तरह हो सकता है।

(B) उन्होंने जो बात कही उस का यह मतलब कहाँ निकलता है कि उन्होंने बुराई के ख़िलाफ़ सिरे से आवाज़ उठाई ही नहीं थी या वे नहीं चाहते थे कि बुराई करने वालों को कोई रोके बल्कि उन की बात का असल निशाना वे लोग थे जो बुराई कर रहे थे। उन्होंने जिस निराशा को व्यक्त किया उस से साफ़ स्पष्ट होता है कि बुराई करने वालों को उस से रोकने की कोशिश एक हद तक की जा चुँकि थी। लेकिन जब वे उस से बाज़ नहीं आए तो फिर और नसीहत करने को उन्होंने लाभदायक नहीं समझा। लेकिन जिन्हें अपने दायित्व का भली भाँति पता था उन्हों ने अन्त तक नसीहत का काम जारी रखा। इस से दोनों के दायित्व निभाने के दर्जो का फ़र्क़ तो स्पष्ट होता है किन्तु यह बात कहाँ निकलती है कि जो लोग निराशा व्यक्त कर रहे थे वे अपने दायित्व की तरफ़ से बिल्कुल बेपरवाह थे और उन्हों ने बुराई के विरुद्ध नफ़रत जाहिर नहीं की थी?

(C) उन की ओर से निराशा व्यक्त हुई इस से स्वयं प्रतीत होता है कि उन्हें बुराई से घोर घृणा थी और जिन को बुराई से इतनी घृणा हो उन की गिनती उन लोगों में कैसे हो सकती है जो बुराई में लिप्त रहने वाले अथवा जो बुराई की ओर आकर्षित

होने वाले हों । उन्हों ने नसीहत करने वालों से जो कुछ कहा वह उन की तरफ़ से बुराई के ख़िलाफ़ घृणा की अभिव्यक्ति ही थी। इस लिए उन के बारे में यह सोचना सही नहीं कि वे बुराइयों के तमाशाई बने हुए थे।

(D) क़ुर्आन का बयान है कि अज़ाब में वही लोग गिरफ़्तार हुए जो ज़ालिम (अत्याचारी) और फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) थे । जब कि निराशा व्यक्त करने वाले न ज़ालिम थे और न फ़ासिक़ बल्कि नेक और अच्छे लोग थे जैसा कि उन की बात चीत से ज़ाहिर होता है कि जो उन की ज़ुबान से निकले एवं इस बात से भी कि अगर वे ज़ालिम और फ़ासिक़ होते तो नसीहत करने वाले सब से पहले उन को नसीहत करते। लेकिन नसीहत करने वालों ने उन को कोई नसीहत नहीं की बल्कि यह कहा कि हम इन ग़लत कार्यों में लिप्त लोगों को इस लिए नसीहत कर रहे हैं ताकि अपनी ज़िम्मेदारी से अल्लाह के यहाँ बरी हों और ताकि ये अत्याचारी लोग अपनी अपराधी हरकतों से बाज़ आ जाएं। अत: जब निराशा व्यक्त करने वाले न ज़ालिम थे और न फ़ासिक़ तो वे उस अज़ाब के किस तरह हक़दार हुए जो ज़ालिमों और फ़ासिक़ों के लिए निश्चित था।

(E) इब्ने ज़रीर तबरी ने ईकरमा से रिवायत नक़ल की है कि हज़रत इब्ने अब्बास इस आयत के सही स्पष्टीकरण करने में दुश्वारी महसूस कर रहे थे और सुधार की तरफ़ से निराश होने वालों के, अज़ाब की लपेट में आने का विचार उन्हें इतना विचलित किए डाल रहा था कि उन की आँखो से आँसू जारी हो गए। इस अवसर पर ईकरमा ने जो इन के शागिर्द थे यह दलील पेश की कि ये लोग बुराई से रोकने वाले गिरोह ही में शामिल थे, क्यों कि उन के इस कहने से कि ''तुम उन लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह विनष्ट करने वाला है या कड़ी यातना देने वाला है'' साफ़ ज़ाहिर है कि वे बुराई से नफ़रत करते थे और मना करने वालों ही में शामिल थे। यह दलील सुन कर हज़रत इब्ने अब्बास इतने ख़ुश हुए कि ईकरमा को उपहार स्वरुप एक जोड़ा लिबास प्रदान किया।

254. पहला अज़ाब संभव है महामारी की तरह का रहा हो और जब उन्हों ने उस से कोई सीख न ली तो उन के चेहरे बिगड़ गए हों और उन को बन्दर बना दिया गया हो।

रहा यह सवाल कि इन्सान बन्दर किस तरह बन सकता हो तो इस का जवाब यह है कि जो ख़ुदा मिट्टी से इन्सान बना सकता है वह इन्सान को बन्दर क्यों नहीं बना सकता? अगर सामान्य रूप से ऐसा नहीं होता तो इस का मतलब यह नहीं कि ऐसा वास्तव में कभी घटित ही नहीं हो सकता । असल चीज़ अल्लाह की मर्ज़ी और उस की क़ुदरत है। उस ने मानव इतिहास के पन्नों पर इबरतनाक सज़ा का एक चिन्ह यह भी अंकित कर दिया ताकि आने वाली नस्लें याद रखें।

स्पष्ट रहे कि घटना से आवागमन के विचार का अनुमोदन किसी पहलू से नहीं होता। क्यों कि आवागमन के अनुसार मनुष्य का शरीर ही नहीं आत्मा भी परिवर्तित हो जाती है जब कि उस घटना में जिन लोगों को बन्दर बनाया गया था उन की आत्मा परिवर्तित नहीं हुई थी। और इस पर क़ुरआन का यह बयान प्रमाण है कि उन्हें अपमानित एवं तिरस्कृत बनाया गया था।जाहिर है अपमान का आभास तभी उन को हो सकता था जब कि उन के अन्दर उन की आत्मा (नफ़्स) मौजूद रही हो। वरना अगर उन की आत्मा भी बन्दर की आत्मा बन गई होती तो उन को यह एहसास क्यों और कैसे हो सकता था कि हम पहले इन्सान थे और अब हमारे चेहरे बिगाड़ कर के हमें बन्दर बना दिया गया है। स्पष्ट है कि आनन्द एवं शोक, सम्मान एवं अपमान का एहसास मनुष्य की ही आत्मा को होता है न कि बन्दर की आत्मा को । दूसरी बात यह है कि क़ियामत के दिन यह भी उसी तरह क़ब्रों से उठाए जाएंगे जिस तरह दूसरे तमाम इन्सान । और उन को भी ख़ुदा के समक्ष उपस्थित होना होगा और अपने किए का बदला पाना होगा जब कि आवागमन की विचारधारा इन्सान के दोबारा उठाए जाने, ख़ुदा के समक्ष उपस्थित किए जाने और कर्मों का फ़ल जन्नत या जहन्नम की शक्ल में पाए जाने को नकारती है।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

ऐला जहाँ सनीचर वाले आबाद थे

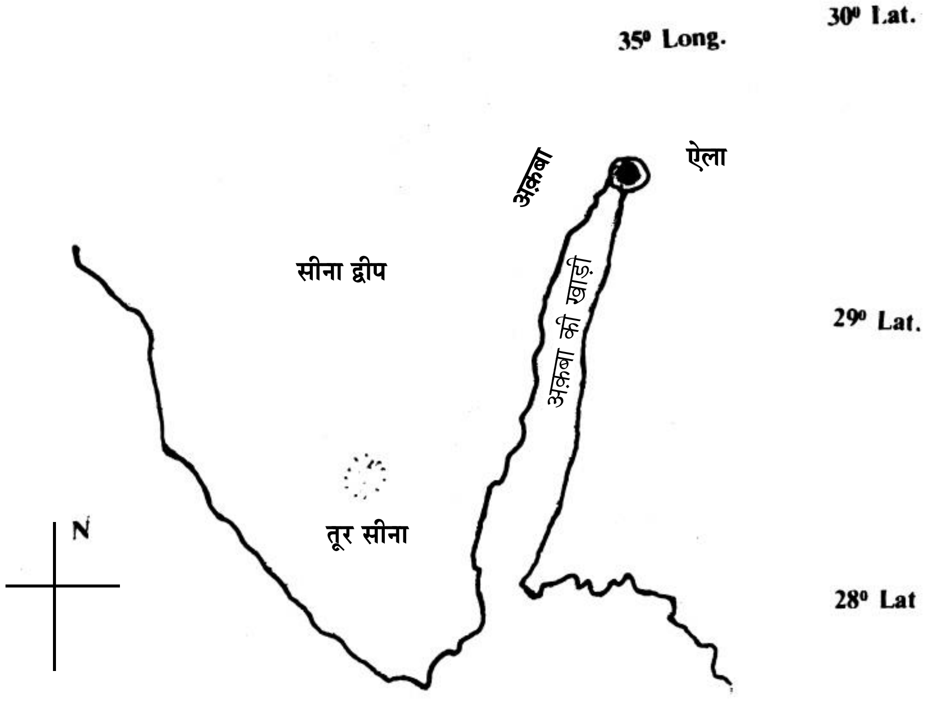

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَن
يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ
لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٧﴾

167. और याद करो जब तुम्हारे रब ने आगाह किया था कि वह क़ियामत के दिन तक ऐसे लोगों को इन पर मुसल्लत (नियुक्त) करता रहेगा जो इन्हें बदतरीन अज़ाब का मज़ा चखाते रहेंगे।[255] वास्तव में तुम्हारा रब सज़ा देने में बहुत तेज़ है और क्षमा करने वाला, दया करने वाला भी है।

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۖ مِّنْهُمُ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ
ذَٰلِكَ ۖ وَبَلَوْنَاهُم بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

168. और हम ने इन को गिरोहों में विभाजित कर के ज़मीन में तितर बितर कर दिया।[256] कुछ इन में नेक थे और कुछ इस से भिन्न। और हम इन्हें अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डाल कर आज़माते रहे ताकि ये पलट आऐं।

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ
هَٰذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِن يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهُ
يَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِم مِّيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لَّا يَقُولُوا عَلَى
اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ
وَالدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

169. फिर इन के बाद ऐसे अयोग्य लोग इन के उत्तराधिकारी और किताब के वारिस हुए जो इस कमीनी दुनिया के लाभ बटोरते हैं और कहते हैं हमें माफ़ कर दिया जाएगा। और अगर वैसी ही सांसारिक सामाग्री फिर उन के हाथ आ जाती है तो फिर उसे ले लेते हैं।[257] क्या इन से किताब में प्रण नहीं लिया जा चुका है कि वे अल्लाह की तरफ़ हक़ के सिवा कोई और बात मन्सूब न करें[258] और जो कुछ उस में है उसे इन्होंने अच्छी तरह पढ़ भी लिया है[259] आख़िरत का घर तो उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़वा (ईश-भय) अपनाते हैं।[260] क्या यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती।[261]

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نُضِيعُ
أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

170. और जो लोग अल्लाह की किताब को मज़बूती से पकड़े हुए हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं तो ऐसे इस्लाह (सुधार) करने वालों का अज्र (बदला) हम नष्ट नहीं करेंगे।[262]

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

171. और याद करो जब हम ने पहाड़ को उन के ऊपर इस तरह उठाया था कि जैसे वह छतरी है और वे समझ रहे थे कि उन पर गिरा ही चाहता है।[263] उस समय हम ने उन्हें हुक्म दिया था कि जो किताब हम तुम्हें दे रहे हैं उसे मज़बूती से पकड़ो और जो कुछ उस में है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार (ईश भय अपनाने वाले) बनो।

255. अर्थात अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को इस बात से आगाह कर दिया था कि जब उन का सामाजिक ढाँचा एक वादा ख़िलाफ़ और उद्दंड क़ौम का रुप धारेगा तो फिर उन का सारा वैभव एवं ऐश्वर्य धूल में मिल जाएगा और अल्लाह तआला उन के विरुद्ध ऐसे लोगों को उठाता रहेगा जो उन का खूब दमन करेंगे अत: पिछले दो हज़ार वर्ष का इतिहास गवाह है कि यहूदियों पर किसी न किसी के हाथों अपमान की मार पड़ती रही है। रही मौजूदा सल्तनत इस्राईल तो वह बहुत बड़े विनाश की भूमिका है। क़ुर्आन के अवतरण के समय भी मदीना के किनारे किनारे क़बायली राज्य स्थापित थे लेकिन उन का जो अन्जाम हुआ वह सब को मालूम है।

256. अर्थात् बनी इस्राईल की अखंडता खंडित हो गई,एकता पारा पारा हो गई उन्हें जो मज़बूती हज़रत सुलेमान के ज़माने तक फ़िलस्तीन में हासिल थी वह बाक़ी नहीं रही और येरुश्लेम के पतन ने उन को ऐसा छिन्न भिन्न कर दिया कि उन की कोई केनद्रीयता बाक़ी नहीं रही और वे ज़मीन के भिन्न भिन्न भू भागों में शरण लेने के लिए विवश हो गये। ख़ैबर, मदीना और यमन आदि में उन की आबादियाँ उन के क़ौमी बिखराव का ही परिणाम थीं।

257. इशारा है यहूदियों के नैतिक बिगाड़ की तरफ़ कि संसार के तुच्छ लाभों की ख़ातिर उन्हें नैतिक एवं संवैधानिक (अख़लाक़ी और शरअी) सीमाओं को तोड़ने में तनिक भी झिझिक न रही। हलाल और हराम की तमीज़ उठ गई। और सांसारिक सामाग्री के वे ऐसे रसिया बन गए कि माल बटोरने का कोई अवसर हाथ से जाने देना नहीं चाहते। अगर कभी उन्हें यह ख़्याल आ जाता है कि वे इस तरह गुनाह के अपराधी हो रहे हैं या जब इन बूरी हरकतों पर कोई उन्हें ध्यान दिलाता है तो वे यह कह कर अपने आप को संतुष्ट कर लेते हैं कि हमें तो निश्चय ही क्षमा दान मिलेगा और हम ज़रुर जन्नत में डाले जाएंगे क्योंकि हम चुनी हुई श्रेष्ठत्म उम्मत हैं, या यह कि ख़ुदा के फ़्लाँ और फ़्लाँ बन्दों के हम श्रद्धालु हैं इस लिए उन के तुफ़ैल में हमारी मुक्ति हो जाएगी। इस के बाद फिर उन्हें हराम में लिप्त होने का मौक़ा मिल जाता है तो फिर वे उस में मुँह डाल देते हैं। इस तरह उन का व्यापारिक एवं आर्थिक जीवन बल्कि वास्तव में पूरा जीवन दीन से कट कर रह गया है।

अफ़सोस कि आज मुसलमानों का हाल भी कुछ ऐसा ही हो कर रह गया है और फ़्लाँ के तुफ़ैल और फ़्लाँ के वास्ते से बख़्शे जाने की धारणा ने इन्हें गुनाहों पर ढीठ कर दिया है।

258. अर्थात् यह उन के भ्रम एवं मन गढ़न्त बातें हैं। अल्लाह की किताब से इन बातों का कोई संबन्ध नहीं। दीन में कोई धारना या कोई बात अपनी तरफ़ से शामिल करना अल्लाह पर झूठ मढ़ना है और यह उस प्रण अथवा प्रतिज्ञा का उल्लंघन है जो तौरात में इन से लिया गया था:

''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना। क्यों कि जो यहोवा का मान व्यर्थ ले वह उस को निर्दोष न ठहराएगा''। (निर्गमन २०:७)

''जिस बात का मैं तुम को आज्ञा देता हूँ उन को चौकस हो कर मना करना और न तो कुछ उन में बढ़ाना और न उन में से कुछ घटाना''। (व्यवस्थाविवरण १२:३२)

259. अर्थात जब उन्हों ने अल्लाह की किताब के आदेशों एवं हिदायतों को अच्छी तरह पढ़ लिया है तो फिर वे उस पर अमल क्यों नहीं करते। क्या अल्लाह की किताब मात्र ज़बानी याद (हिफ़्ज़) कर लेने और तिलावत (पढ़ लेने) के लिए है?यह यहूदियों का हाल था और आज मुसलमानों का हाल भी कुछ ऐसा ही है वे क़ुर्आन की तिलावत और हिफ़्ज़ ही को पुण्य का काम समझते हैं और अमल से कोसों दूर रहते हैं।

260. अर्थात् जो दुनिया के पीछे नहीं पड़ते बल्कि आख़िरत को अपना लक्ष्य बनाते हैं और दुनिया से फ़ायदा उठाने में शरीअत की सीमाओं का ख़याल रखते हैं और परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

261. मालूम हुआ कि अल्लाह की किताब समझने और अमल करने के लिए है न कि केवल रटने के लिए।

262. इशारा है अहले-किताब के उस गिरोह की तरफ़ जो सामान्य बिगाड़ से प्रभावित हुए बिना अल्लाह की किताब का अनुपालन सच्चे मन से कर रहा था और लोगों के सुधार के लिए प्रयत्नशील था। बाद में जब उन लोगों के सामने क़ुर्आन की दअवत आ गई तो उन्होंने उसे तुरन्त स्वीकार कर लिया।

263. इस की व्याख्या सूरह बक़र: नोट ८८ में गुज़र चुकी है। बाइबिल में यह घटना इस तरह बयान हुई है:

''तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट करने के लिए छावनी से निकाल ले गया और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए। और यहोवा जो आग में हो कर सीनै पर्वत पर उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धुएं से भर गया और उस का धुआं भट्टे का सा उठ रहा था और समस्त पर्वत बहुत काँप रहा था। (निर्गमन १९:१७,१८)

किन्तु क़ुर्आन का स्पष्ट बयान यह है कि पहाड़ को उन के ऊपर उठा दिया गया था। अगर भूकम्प के साथ पहाड़ की

चोटी उन के सरों पर लटका दी गई हो तो इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं, क्यों कि संपूर्ण जगत पर अल्लाह ही का शासन है और जब उस की तत्वदर्शिता (हिकमत) तक़ाज़ा करती है वह असाधारण घटना घटित कर देता है जिस से इस बात का विश्वास सुदृढ़ हो जाता है कि इस कायनात की व्यवस्था स्वयं नहीं चल रही है बल्कि इस पर एक महाशक्तिमान शासन कर रहा है और वह जब चाहे उस की व्यवस्था में परिवर्तन या रद्दोबदल कर सकता है। बनी इस्राईल चूँकि बुद्धि एवं विवेक की दृष्टि से एक अपरिपक्व (Unmature) क़ौम थी इस लिए उन के सामने महसूस की जा सकने वाली निशानियाँ बार बार प्रकट होती रहीं।

जिसे अल्लाह हिदायत दे वही सीधी राह पर है और जिसे गुमराह कर दे तो ऐसे ही लोग हैं जो नामुराद हुए।(अल-क़ुर्आन)

172. और जब तुम्हारे रब ने आदम की संतानों से उन की पुश्तों से उन की औलाद को निकाल कर प्रतिज्ञा ली थी [264] और उन को खुद उन के ऊपर गवाह ठहरा कर पूछा था क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? उन्हों ने कहा था कि हाँ ज़रूर तू हमारा रब है (और) हम इस पर गवाह हैं।[265] (यह प्रतिज्ञा हम ने इस लिए ली) ताकि तुम क़ियामत के दिन यह न कहो कि हम इस हक़ीक़त से अनभिज्ञ थे।

وَ اِذۡ اَخَذَ رَبُّکَ مِنۡۢ بَنِیۡۤ اٰدَمَ مِنۡ ظُهُوۡرِهِمۡ
ذُرِّیَّتَهُمۡ وَ اَشۡهَدَهُمۡ عَلٰۤی اَنۡفُسِهِمۡ ۚ اَلَسۡتُ
بِرَبِّکُمۡ ؕ قَالُوۡا بَلٰی ۚۛ شَهِدۡنَا ۚۛ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا یَوۡمَ
الۡقِیٰمَةِ اِنَّا کُنَّا عَنۡ هٰذَا غٰفِلِیۡنَ ﴿۱۷۲﴾

173. या यह न कहो कि शिर्क तो हम से पहले हमारे बाप दादा ने किया था और हम तो उन के बाद उन की नस्ल से हुए,तो क्या पथभ्रष्ट लोगों के अपराध के बदले में तू हमें हलाक करेगा । [266]

اَوۡ تَقُوۡلُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَشۡرَکَ اٰبَآؤُنَا مِنۡ قَبۡلُ وَ کُنَّا ذُرِّیَّةً مِّنۡۢ
بَعۡدِهِمۡ ۚ اَفَتُهۡلِکُنَا بِمَا فَعَلَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ﴿۱۷۳﴾

174. इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोल खोल कर बयान करते हैं [267] ताकि वे पलट आएं।

وَ کَذٰلِکَ نُفَصِّلُ الۡاٰیٰتِ وَ لَعَلَّهُمۡ یَرۡجِعُوۡنَ ﴿۱۷۴﴾

175. और इन को उस व्यक्ति का हाल सुनाओ जिस को हम ने अपनी आयतें प्रदान की थीं लेकिन उस ने उस ओढ़नी को उतार दिया, फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया।[268]

وَ اتۡلُ عَلَیۡهِمۡ نَبَاَ الَّذِیۡۤ اٰتَیۡنٰهُ اٰیٰتِنَا فَانۡسَلَخَ مِنۡهَا
فَاَتۡبَعَهُ الشَّیۡطٰنُ فَکَانَ مِنَ الۡغٰوِیۡنَ ﴿۱۷۵﴾

176. अगर हम चाहते तो उन (आयतों) की बदौलत उसे बुलन्दी प्रदान करते,[269] मगर वह ज़मीन ही की तरफ़ झुक गया [270] और अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा, इस लिए उस की मिसाल कुत्ते की सी हो गई कि तुम उसे झिड़को तब भी ज़बान लटकाए और छोड़ दो तब भी ज़बान लटकाए।[271] यह मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया।तो ये वृत्तांत लोगों को सुनाओ [272] ताकि वे सोच विचार करें ।[273]

وَ لَوۡ شِئۡنَا لَرَفَعۡنٰهُ بِهَا وَ لٰکِنَّهٗۤ اَخۡلَدَ اِلَی الۡاَرۡضِ وَ اتَّبَعَ
هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ کَمَثَلِ الۡکَلۡبِ ۚ اِنۡ تَحۡمِلۡ عَلَیۡهِ یَلۡهَثۡ
اَوۡ تَتۡرُکۡهُ یَلۡهَثۡ ؕ ذٰلِکَ مَثَلُ الۡقَوۡمِ الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا
بِاٰیٰتِنَا ۚ فَاقۡصُصِ الۡقَصَصَ لَعَلَّهُمۡ یَتَفَکَّرُوۡنَ ﴿۱۷۶﴾

177. बहुत बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और ख़ुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

سَآءَ مَثَلَا ۨالۡقَوۡمُ الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِنَا وَ اَنۡفُسَهُمۡ کَانُوۡا
یَظۡلِمُوۡنَ ﴿۱۷۷﴾

178. जिसे अल्लाह हिदायत दे वही सीधी राह पर है और जिसे गुमराह कर दे तो ऐसे ही लोग हैं जो नामुराद हुए।

مَنۡ یَّهۡدِ اللّٰهُ فَهُوَ الۡمُهۡتَدِیۡ ۚ وَ مَنۡ یُّضۡلِلۡ فَاُولٰٓئِکَ
هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۱۷۸﴾

264. यह घटना आदम की पैदाइश के बाद और दुनिया में नस्ल का क्रम जारी होने से पहले घटी। अल्लाह तआला ने क़ियामत तक पैदा होने वाले तमाम इन्सानों की जानों (आत्माओं) को एक साथ अपने समक्ष खड़ा कर के उन को बुद्धि और विवेक प्रदान किया और उन से वह प्रतिज्ञा ली थी जिस का वर्णन इन आयतों में हुआ है। यह इन्सानी जानों (आत्माओं) का सम्मेलन था जिस का सम्बन्ध परोक्ष जगत (आलमें-ग़ैब) से है इस लिए न हम उस की परिस्थिति एवं मनोदशा समझ सकते हैं और न उस की तफ़सीलात जानने का हमारे पास कोई साधन है। अत: भलमनसी की राह यह है कि क़ुर्आन के संक्षिप्त बयान पर संतोष किया जाए।

रहे इन्कार करने वालों के भ्रम एवं संदेह तो इस घटना में कोई बात ऐसी नहीं है जो असंभव हो या बुद्धि संगत न हो बल्कि आधुनिक वैज्ञानिक खोज एवं रिसर्च के अनुसार विश्वास होता है कि यह घटना अवश्य घटित हुई होगी। प्राणी विज्ञान (Biology) ने मनुष्य के जन्म के सम्बन्ध में इस महत्तवपूर्ण हक़ीक़त का रहस्योद्‌घाटन किया है कि मनुष्य के शरीर से एक क्षण में जो प्रजनन पदार्थ खारिज होता है उस में जीवन प्रदान करने वाले करोड़ो कीटाणु (Spermatozoa) होते हैं। अर्थात थोड़ी सी बूँदों के अन्दर इतनी बड़ी संख्या में इन्सान पैदा करने की क्षमता होती है। फिर हर कीटाणू कोशिका में 23 जोड़ी क्रोमाज़ॉम्स होते हैं । ये क्रोमाज़ॉम्स अपने अन्दर पुश्तैनी विशेषताएं लिए हुए होते हैं। अर्थात बाप की विशेषताएं बच्चे की तरफ़ उन ही के द्वारा स्थानांतरित हो जाती हैं। अब अगर यह संभव है कि एक बूँद गन्दे पानी में एक इन्सानी दुनिया छिपी हुई हो तो यह क्यों असंभव है कि पूरी मानव नस्ल को अस्तित्व में लाने वाले कीटाणू आदम के अन्दर समर्पित कर दिए गए हों और उन में विवेक के गुण भी बुनियादी तौर पर विद्यमान हों? और इस में बुद्धि में न समाने वाली बात क्या है कि इन कीटाणुओं (प्राणों) को उन के पैदा करने वाले ने आदम के अन्दर से निकाल कर उन के दबे हुए विवेक (शऊर) को उस समय उभारा हो और उन से प्रतिज्ञा लेने के बाद उन को फिर आदम के अन्दर लौटा दिया हो ताकि इस संचय (ज़खीरा) से मानव वंश का सिलसिला अपनी बुनियादी विशेषताओं के साथ जारी रहे।

स्पष्ट रहे कि Text (मूल) में आदम की संतान के शब्द इस्तेमाल नहीं हुए हैं बल्कि:

مِنۢ بَنِىٓ اٰدَمَ مِنۢ ظُهُوۡرِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ

" मिम बनी आदमा मिन ज़ुहूरेहिम ज़ुररीयताहुम"

(आदम की संतानों से उन की पूश्तों से उन की औलाद को निकाल कर) इस्तेमाल हुए हैं। यह इस लिए कि पुश्त दर पुश्त जो नस्लें पैदा होने वाली थीं उन की तस्वीर सामने आ जाए और चूँकि यहाँ शब्द "अख़ाज़ा" प्रतिज्ञा लेने के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है जो आदम की तमाम औलाद से लिया गया था इस लिए "मिन बनी आदमा"(आदम की संतान से) के शब्द उचित बैठे। आयत में कुछ शब्द लुप्त हैं अगर उन को खोल दिया जाए तो तरकीब यूँ होगी:

مِنۢ بَنِىٓ اٰدَمَ مِيثاقا واخرج ظهورهم ذريتهم

"मिन बनी आदमा मिसाक़ा व अख़रजा मिन ज़ुहूरेहिम ज़ुररियाताहुम"

आदम को उन की औलाद में से जिस प्रमुख हस्तियों के नाम बताए गए थे वे भी मानव जाति के इस सम्मेलन के अवसर ही की बात है जैसा कि सूरह बक़र: नोट ४४ में गुज़र चुका (वल्लाहआलम बिइसरारुल कलामह)।

265. यह अल्लाह के रब होने की प्रतिज्ञा थी जो मानवीय आत्माओं से उन को शारीरिक अस्तित्व प्रदान करने से पहले ही लिया गया था ताकि उन के विवेक (Consciousness) में यह बात अच्छी तरह बैठ जाए कि वे स्वयं पैदा नहीं हुए हैं और न अपने आप में स्वतंत्र एवं स्वाधीन हैं। बल्कि उन का एक पैदा करने वाला,परवरदिगार,मालिक और हाकिम है और वह है अल्लाह। इस वास्तविकता को स्वीकार कर लेने का अर्थ अनिवार्य रूप से यह था कि उन्हों ने अपनी यह हैसियत मान ली थी कि वे अल्लाह के बन्दे उसी के भक्त,उपासक और उसी के आदेशों का पालन करने वाले हैं।

अब इस प्रतिज्ञा का खंडन कोई यह कह कर नहीं कर सकता कि यह प्रतिज्ञा कब ली गई थी और कहाँ ली गई थी मुझे कुछ याद नहीं। सच्चाई यह है कि चूँकि वह अपनी दुनिया में इन्सानों की आज़माइश करना चाहता है इस लिए जहाँ तक इस प्रतिज्ञा के बाह्‌य पक्षों का सम्बन्ध है अर्थात् घटना स्थल, समय आदि तो उस की याददाश्त से लुप्त कर दी गई है। अगर वह बाक़ी रखी जाती तो परिक्षा लेने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता किन्तु इस के आंतरिक पक्षों को मनुष्य की प्रकृति में समो दिया गया। अत: हर व्यक्ति अपने पैदा करने वाले को स्वभावत: पहचानता है। उस की अन्तरात्मा अपने रचयिता के अकेले पूज्य परवरदिगार (इलाह) होने की गवाही देती है और उस का ज़मीर अपने प्रभु की नाफ़रमानी (बुराई) पर उसे टोकता और उस की निन्दा करता है। मतलब यह कि यह प्रतिज्ञा फ़ितरत (प्रकृति) है जो हृदय पट पर अंकित है इस लिए यह कहना सही नहीं है कि इन्सान उस प्रतिज्ञा से बिल्कुल बेख़बर है। क्या कोई व्यक्ति यह बता सकता है कि जब वह बिल्कुल बच्चा था तो उसे बोलना किस ने सिखाया? ज़ाहिर है यह बात किसी को भी याद नहीं मगर वह इस वास्तविकता से इन्कार नहीं कर सकता कि उस के माँ बाप, सगे सम्बन्धी या उस की परवरिश

करने वालों में कोई ज़रुर ऐसा रहा है जिस ने उस को प्रारंभ में वस्तुओं के नाम सिखाए। शब्दों को एक एक कर के अदा करना सिखाया और इस के बाद वह बोलने के क़ाबिल हो सका। उस की याद्दाश्त से ये सब बातें लुप्त हो चुकी हैं। मगर उस का बोलना अपने आप में स्वयं इस बात की दलील है कि बचपन में किसी न किसी ने उस को बोलना ज़रुर सिखाया है। फिर क्या अपने रचयिता एवं स्वामी के बारे में मानव प्रकृति एवं स्वभाव की आवाज़ चाहे वह कितनी ही दबी क्यों न हो इस बात की दलील नहीं है कि उस को उस के प्रभु की पहचान का पहला सबक़ उस के दुनिया में आने से पहले पढ़ाया जा चुका है।

इसी हक़ीक़त को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस में इस तरह बयान फ़रमाया है:-

ما من مولود الا يلد على الفطرة فأبواه يهودانه وينصرانه ويشركانه (مسلم کتاب القدر)

''हर बच्चा प्रकृति अर्थात् तौहीद पर पैदा होता है, फिर उस के माता पिता उस को यहूदी ईसाई या मुश्रिक बना देते हैं।''(मुस्लिम किताबुल क़द्र)

और इसी सबक़ की याद्देहानी सारे नबी कराते रहे। इस लिए उन की शिक्षाओं को तज़कीर अर्थात याद्देहानी कहा गया है।

266. यह आयत पुष्टि करती है कि मानव जाति का हर व्यक्ति तौहीद (एकेश्वरवाद) के मामले में ज़िम्मेदार है और क़ियामत के दिन उसे ख़ुदा के समक्ष अपने रवैया के बारे में जवाब देही करना होगी चाहे नबियों की तफ़सीली दअवत उस तक पहुँची हो या न पहुँची हो, प्रकृति की प्रतिज्ञा अपने आप में स्वयं तर्क है और तौहीद के बुनियादी अक़ीदे की हद तक किसी व्यक्ति को भी क़ियामत के दिन यह बहाना करने का मौक़ा बाक़ी नहीं रहा कि वह उस से बिलकुल अनभिज्ञ था इस लिए उस ने इन्कार अथवा अनीश्वरवाद की राह अपनाई थी या वह शिर्क (बहुदेववाद) में इस लिए लिप्त रहा कि उसे बाप दादा से बहुदेववादी धर्म अथवा बहुदेववादी सभ्यता उत्तराधिकार के रुप में मिला था वरना उस ने ख़ुद शिर्क क़ुबूल करने का कोई फैसला नहीं किया था।

267. इशारा है इस बात की तरफ़ कि वह प्रकृतिक प्रतिज्ञा तौहिद की निशानी है जो मनुष्य के अन्दर मौजूद है और क़ुर्आन ने दूसरी निशानियों की तरह इसे भी खोल कर बयान कर दिया है।

268. मुराद कोई निश्चित व्यक्ति नहीं है बल्कि हर वह व्यक्ति है जिस पर यह आयत फिट बैठे। विशेष रुप से इशारा बनी इस्राईल के आलिमों (धार्मिक विद्वानों) की तरफ़ है जिस का वृत्तांत ऊपर गुज़र चुका। आयतें प्रदान की थी अर्थात अल्लाह की किताब और उस का ज्ञान प्रदान किया था लेकिन ये आलिम भी शैतान के हत्थे चढ़ गए ।

269. अल्लाह की आयतें ईमान लाने वालों को बुलन्दी ही को ले जाती हैं बशर्ते कि वे उस का अनुपालन करें। क़ुर्आन के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है:-

انَّ اللّٰه يرفع بهذا الكتاب اقواماً ويضع به آخرين . (مسلم کتاب فضائل القرآن)

''अल्लाह इस किताब के द्वारा कितनी ही क़ौमों को बुलन्दी प्रदान करेगा और कितनों को पस्ती में गिराएगा।'' (मुस्लिम किताब फ़ज़ाइलुल क़ुर्आन)

270. अर्थात् वह अख़्लाक़ और अमल की पस्ती की तरफ़ बढ़ा । और अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि जो पस्ती की तरफ़ जाना चाहता हो उसे वह ज़बरदस्ती बुलन्दी की तरफ़ ले जाए।

271. कुत्ता सर्वाधिक लालची जानवर है। यह ज़मीन पर सूँघते हुए चलता है कि कोई हड्डी का टुकड़ा मिल जाए तो मुँह के स्वाद का काम दे। वह सदैव हांपता और ज़बान लटकाए रहता है चाहे कोई उसे झिड़के या उसे अपने हाल पर छोड़ दे। इसी तरह दुनिया के फ़ायदों की ख़ातिर अल्लाह की आयतों की पाबन्दी से निकल भागने वाले लोग दुनिया के कुत्ते हैं।

उन की लालच भरी चाह कभी ख़त्म नहीं होती वे हमेशा हाँपते और ज़बान लटकाए ही रहते हैं। उन के संसारिक मोह पर तुम उन को बुरा भला और तंबीह करो या न करो वे किसी नसीहत का कोई असर क़ुबूल करने वाले नहीं।

272. मुराद क़ौमों के वे वृत्तांत हैं जो इस सूरह में बयान हुए हैं। इन वृत्तांतों को दअवत और सुधार के लक्ष्य को सामने रख कर सुनाने की हिदायत की गई है। लेकिन आज मुसलमानों का हाल यह है कि इस सच्चे क़ुर्आनी क़िस्सो को सुनने सुनाने का आयोजन बहुत कम किया जाता है। अलबत्ता भाषण देने वाले आलिम ऊट पटांग रिवायतों का सहारा ले कर आश्चर्यजनक क़िस्से बयान करते रहते हैं और लोग सर धुनते रहते हैं। कोई इन आलिमों से पूछे कि उन के करने का काम क्या है और वे क्या कर रहे हैं।

273.अर्थात जो लोग वृत्तांत एवं कथाओं पर सोच विचार करते हैं वे उन से सबक़ भी हासिल करते हैं। ऐसे लोगों को क़ौमों के वृत्तांतों अथवा कथाओं से आगाह करना लाभदायक होगा ।

क़ुर्आन के क़िस्से मात्र क़िस्सा कहने के लिए, नहीं हैं बल्कि सोच विचार करने और सबक़ हासिल करने के लिए हैं। और यह लाभ तभी प्राप्त होगा जब कि क़ुर्आन को समझ कर पढ़ा जाए। बे समझे बूझे पढ़ने से यह फ़ायदा किस तरह हासिल होगा?

क्या इन लोगों ने आसमानों और ज़मीन की व्यवस्था और उन चीज़ों पर जो अल्लाह ने पैदा की हैं, ग़ौर नहीं किया और यह नहीं सोचा कि उन का नियत समय निकट आ गया हो। फिर इस के बाद वे और किस बात पर ईमान लाएंगे।(अल-क़ुर्आन)

179. और हम ने बहुत से जिन्नों और इन्सानों को जहन्नम ही के लिए पैदा किया है।[274] उन के पास दिल हैं मगर उन से समझ बूझ का काम नहीं लेते।[275] उन के पास आँखें हैं मगर उन से देखने का काम नहीं लेते। उन के पास कान हैं मगर उन से सुनने का काम नहीं लेते। वे जानवरों की तरह हैं बल्कि उन से भी अधिक भटके हुए।[276] यही लोग हैं जो ग़फ़लत (अचेतावस्था) में पड़े हुए हैं।[277]

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا
يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ
لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

180. और अल्लाह के लिए तो अच्छे ही नाम हैं[278] अतः उसे उन्हीं नामों से पुकारो।[279] और उन लोगों को छोड़ दो जो उस के नामों के बारे में टेढ़पन अपनाते हैं।[280] वे जो कुछ कर रहे हैं उस का बदला उन्हें ज़रुर मिलेगा।

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ
فِي أَسْمَائِهِ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾

181. और हमारे पैदा किये हुए में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक़ के अनुसार रहनुमाई करता है और उसी के अनुसार फ़ैसले करता है।[281]

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٨١﴾

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है उन्हें हम एक क्रम से इस तरह बुरे अन्जाम की तरफ़ ले जा रहे हैं कि उन्हें इस की कुछ ख़बर नहीं।[282]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

183. मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ कि मेरी तद्बीर बड़ी मज़बूत है।

وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿١٨٣﴾

184. क्या इन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि इन के साथी को कोई जुनून नहीं है।[283] वह तो खुले तौर पर ख़बरदार करने वाला है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ﴿١٨٤﴾

185. क्या इन लोगों ने आसमानों और ज़मीन की व्यवस्था और उन चीज़ों पर जो अल्लाह ने पैदा की हैं, ग़ौर नहीं किया और यह नहीं सोचा कि उन का नियत समय निकट आ गया हो।[284] फिर इस के बाद वे और किस बात पर ईमान लाएंगे।[285]

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن
شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ
بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

186. जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस को हिदायत देने वाला कोई नहीं। वह उन्हें छोड़ देता है कि अपनी उद्दंडता में भटकते रहें।

مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ
وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾

274. इस का यह मतलब नहीं है कि बहुत से जिन्नों और इन्सानों को अल्लाह ने सोचने समझने की क्षमता प्रदान ही नहीं की थी और उन्हें हिदायत और गुमराही की राहों में से अपनी पसन्द के अनुसार कोई राह अपनाने की आज़ादी हासिल नहीं थी और उन को ज़बरदस्ती गुमराही की राह चला कर जहन्नम में पहुँचा दिया, बल्कि मतलब यह है कि जब उन्हों ने सोचने समझने की योग्यता नष्ट कर दी और गुमराही को पसंद कर के उसी राह पर चल पड़े तो आख़िरकार हमेशा का अज़ाब भुगतने के लिए जहन्नम में पहुँच गए। इस तरह उन के पैदा होने का उद्देश्य जहन्नम तय पाया। यह ऐसी ही बात है जैसे कोई उस्ताद अपने शागिर्द से जो मेहनत से जी चुराने की वजह से नाकाम हुआ, कह दे कि मैं ने तुझे इसी लिए पढ़ाया कि तू नाकाम हो जाए। ज़ाहिर है कि उस्ताद के कहने का मंशा यह हरगिज़ नहीं कि उस ने शागिर्द को नाकाम बनाने के लिए पढ़ाया था बल्कि यह उस की तरफ़ से मात्र ग़ुस्से की अभिव्यक्ति है कि मैं ने तुझे पढ़ाया कि तू कामयाब हो जाए लेकिन तूने मेहनत नहीं की और नाकाम रहा इस लिए मेरे पढ़ाने का कोई लाभ तुझे नहीं पहुँच सका इस आयत में भी जो बात कही गई हैं वह परिणाम की दृष्टि से कही गई है न कि गुमराही की तरफ़ ज़बरदस्ती ढकेलने के अर्थ में ।

275. दिल (क़ल्ब) से मुराद बुद्धि है। अरबी में बुद्धि को क़ल्ब भी कहा जाता है अत: अरबी के सब से बड़े शब्द कोष में है:-

وقد يعبر بالقلب عن العقل ۱

(لسان العرب ج۱ ص ۶۸۷)

''कभी अक़्ल को क़ल्ब कहा जाता है।''

276. जहाँ तक शारिरिक आँख, कान और दिल का सम्बन्ध है वह इन्सान और जानवर दोनों में होते हैं लेकिन जो देखने की शक्ति सुनने और समझने की शक्ति मनुष्य को प्रदान हुई है वह जानवरों को नहीं दी गई है।

दोनों के बीच यह बहुत बड़ा अन्तर है और इसी आधार पर इन्सान जानवरों पर प्रधानता रखता है। लेकिन जो लोग अपनी इन शक्तियों का इस्तेमाल नहीं करते वे अपने आप को जानवरों की सतह पर ले आते हैं बल्कि उस से भी नीची सतह पर। क्यों कि जानवरों में तो यह उच्च कोटि की शक्तियाँ समर्पित ही नहीं की गई हैं। लेकिन मनुष्य ने इन शक्तियों को पा कर भी इन का सही उपयोग नहीं किया और अपने को पस्ती की तरफ़ ढकेल दिया, जब कि जानवर जहाँ था वहीं रहा।

277. अर्थात् उन्हें कुछ ख़बर नहीं कि उन्हें दुनिया में किस ने भेजा है, क्यों भेजा है और उसे जाना कहाँ है, बड़े बड़े बुद्धिजीवियों की अपने अस्तित्व और जीवनोद्देश्य के बारे में यह अपराध की सीमा लांघती बेख़बरी कितनी आश्चर्यजनक है।

278. अर्थात् अल्लाह के लिए ऐसे नाम हैं जो अपने अर्थ और भाव की दृष्टि से उत्तम और श्रेष्ठ हैं जो उस के पवित्र और दोषरहित होने एवं उस की महानता और उस के कमालों पर तर्क प्रस्तुत करते हैं। क़ुर्आन में लफ़्ज़ अल्लाह संज्ञा के रुप में प्रयोग हुआ है और

الرحمٰن، الرحيم ،الخالق،

الملک، الرزاق ، العزيز،العليم۔

अर्रहमान, अर्रहीम, अलख़ालिक़, अलमलिक, अर्रज़्ज़ाक़, अलअज़ीज़, अल अलीम, आदि संज्ञा विशेषण के रुप में बयान हुए हैं। इन तमाम नामों में अर्थ की सुन्दरता व्यापकता संपूर्ण रुप से विद्यमान है।

279. दूसरे शब्दों में उसे ऐसे नामों से न पुकारो जिस से उस की हस्ती, या उस के गुणों में ऐब या त्रुटि का कोई पहलू निकलता हो या जो अदब के ख़िलाफ़ हो । अरबी में तो अल्लाह को पुकारने के लिए क़ुर्आनी नाम काफ़ी हैं रहा दूसरी भाषाओं का मामला तो अल्लाह के लिए नामों के चुनाव में इस उसूली निर्देश को अच्छी तरह ध्यान में रखना होगा जो इस आयत में दी गई हैं। इस मामले में सतर्क रहना अतिआवश्यक है वर्ना शिर्क की राहों के खुल जाने का भय है।

280. अल्लाह के नामों में टेढ़ पन अपनाने की कई सूरतें हो सकती हैं एक सूरत यह है कि अल्लाह के लिए ऐसे नाम या गुण अथवा विशेषता नियत करना जिन में त्रुटि तथा ऐब का पहलू हो। जो नाम ख़ुदा को उस की पैदा की हुई चीज़ों (मख़लूक़) पर अनुमान कर के रखे जाते हैं उन का शुमार उसी में है। जैसे ख़ुदा को बाप (Father) कह कर पुकारना।

दूसरी सूरत यह है कि ख़ुदा के गुणों अथवा विशेषताओं को अलग अलग हस्ती मान कर हर विशेषता को एक देवी या देवता मानना और इसी आधार पर उन के नाम का निर्धारण करना । भारत के बहुदेववादियों ने यहीं ठोकर खाई है। अत: उन्हों ने ख़ुदा के हर गुण को एक देवी या देवता मान लिया है। जैसे ख़ुदा की विशेषता 'ज्ञान' को उन्होंने ज्ञान की देवी ठहरा कर उस का नाम सरस्वती (Sarasvati the goddes of knowledge) रखा है। (" and the one in whom such knowledge is sustained is Sarasavti.")

(Regveda Samhita Vol.I.P.170)

इस तरह उन्होंने अल्लाह की विशेषता ''रुबूबिय्यत'' (स्वामित्व) के लिए, एक देव गढ़ कर उस का नाम विष्णु रखा है। और अल्लाह की विशेषता ''सज़ा देने वाला (ज़ुन्तिक़ाम) के लिए एक देवता गढ़ कर के उस का नाम शिव रखा है। एवं

अल्लाह के ''रिज़्क़ देने वाला (रज़्ज़ाक़) होने की विशेषता को कई देवताओं में विभाजित कर के धन की देवी गढ़ ली है और उस का नाम लक्ष्मी रखा है।

तीसरी सूरत यह है कि ख़ुदा के अकेले होने (वहदानियत) को स्वीकार करते हुए उस का ऐसा पेचीदा स्पष्टीकरण करना कि कई ख़ुदाओं के लिए गुन्जाइश निकल आए जैसे एक में तीन की धारणा अर्थात त्रीश्वरवाद या बहुदेववादी दार्शनिकों का यह कहना कि यद्यपि हिन्दू कई देवताओं की पूजा करते हैं किन्तु वास्तव में वे एक ही ख़ुदा की पूजा करते हैं:-

"The Hindu, it is true, bows his head before many, a form of the Deity on that account, however, he is not to be dubbed polytheist, what the Hindu adores is the one God in the many gods". (Out lines of Hinduism - T.M.P. Mahadevan p.24).

अल्लाह के नामों या विशेषताओं के बारे में इस प्रकार की फ़लसफ़ियाना बहसों मे उलझना बेकार है। ख़ुदा का सान्निध्य प्राप्त करने का सही तरीक़ा वही है जो क़ुर्आन ने बतलाया है। अर्थात कटहुज्जती से बचते हुए सीधे सादे तरीक़े पर अल्लाह के गुणों एवं विशेषताओं को मानना। ये गुण एवं विशेषताएं क़ुर्आन ने स्पष्ट रुप से बयान की हैं। और साथ ही यह हिदायत की है कि अल्लाह के नामों के बारे में उन लोगों के साथ न उलझें जिन्होंने विमुखता की राह अपना ली है। दूसरे शब्दों में जिन लोगों ने फ़लसफ़ियाना बहसें ख़ड़ी कर दी हैं उन से उलझने की ज़रुरत नहीं है क्यों कि ख़ुदा के गुणों एवं विशेषताओं के बारे में फ़लसफ़ियाना बहसें गुमराही का दरवाज़ा खोल देती हैं।

281. अर्थात् ख़ुदा के पैदा किये हुओं में सभी लोग गुमराही फैलाने वाले नहीं बल्कि ऐसे लोग भी पाए जाते हैं जो लोगों की सही रहनुमाई करते हैं और न्याय एवं समानता के तकाज़ों को पूरा करते हैं।

282. अर्थात् वे यह समझ कर कि हमारे लिए सब कुशल है, चैन की बांसुरी बजा रहे हैं लेकिन अल्लाह तआला उन्हें अज़ाब की तरफ़ ढकेल रहा है।

283. व्याख्या के लिए देखिए सूरह तक़्वीर नोट २५

284. अर्थात् मौत का समय।

285. अर्थात् इन स्पष्ट प्रमाणों एवं तर्कों और इन की पूरी तंबीहो के बाद अगर वे क़ुर्आन पर ईमान नहीं लाते तो इस से अधिक प्रमाणित तथा प्रताणित करने वाली शिक्षा और कौन सी हो सकती है जिस पर ये ईमान लाएंगे?

फिर जब अल्लाह उन को भली चंगी सन्तान प्रदान कर देता है तो उस की इस बख़्शिश में वे दूसरों को उस का साझीदार ठहराने लगते हैं। अल्लाह उन की इन बहुदेववादी बातों से बहुत उच्च है।(अल-क़ुर्आन)

187. वे तुम से उस घड़ी (क़ियामत) के बारे में पूछते हैं कि वह कब आएगी? कहो उस का ज्ञान तो मेरे रब ही को है। वही उस को उस के समय पर प्रकट करेगा। आसमान और ज़मीन में वह बोझ बन गई है।[286] वह तुम पर अचानक आएगी।[287] तुम से वे इस तरह पूछते हैं जैसे कि उस का वक़्त तुम्हें मालूम ही है।[288] कहो उस का ज्ञान तो केवल अल्लाह ही को है लेकिन अधिकतर लोग नहीं जानते।[289]

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ
رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ڑ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ
اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۱۸۷

188. कहो मैं अपने आप के लिए किसी लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता।[290] होता वही है जो अल्लाह चाहता है। अगर मुझे ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान होता तो बहुत से फ़ायदे हासिल कर लेता और मुझे कोई हानि न पहुँचती।[291] मैं तो बस ख़बरदार करने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ
كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ڔ وَمَا مَسَّنِيَ
السُّوْۗءُ ڔ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝۱۸۸

189. वही है जिस ने तुम्हें एक नफ़्स (जान) से पैदा किया और उस से उस का जोड़ा बनाया।[292] ताकि वह उस से सुकून हासिल करे। फिर जब वह उसे ढाँक लेता है [293] तो उसे हल्का सा गर्भ रह जाता है जिसे लिये हुए वह चलती है। फिर जब बोझल हो जाती है तो दोनों अल्लाह से--कि उन का रब है--दुआ करते हैं कि अगर तूने हमें भली चंगी सन्तान प्रदान की तो हम तेरे कृतज्ञ होंगे।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا
لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ
فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا
لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۸۹

190. फिर जब अल्लाह उन को भली चंगी सन्तान प्रदान कर देता है तो उस की इस बख़्शिश में वे दूसरों को उस का साझीदार ठहराने लगते हैं।[294] अल्लाह उन की इन बहुदेववादी बातों से बहुत उच्च है।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَاۗءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۱۹۰

191. क्या ये उन को ख़ुदा का साझीदार ठहराते हैं जो किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते बल्कि ख़ुद पैदा किये गए हैं।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَـيْـــًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝۱۹۱

192. और न उन की मदद करने की शक्ति रखते हैं और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝۱۹۲

286. जिस तरह गर्भवती गर्भ से बोझल हो जाती है और नहीं कहा जा सकता कि कब शिशु प्रसव होगा। इसी तरह आसमान और ज़मीन क़ियामत के बोझ से बोझल हो रहे हैं और नहीं मालूम कि कब उन के गर्भ से क़ियामत प्रकट हो।

इस से स्पष्ट हुआ कि क़ियामत बाह्य रुप से आने वाली चीज़ नहीं बल्कि कायनात (ब्रहमाण्ड) के अन्दर ही से उभरने वाली चीज़ है। इस का लावा अन्दर ही अन्दर पक रहा है और बहुत जल्द वह फट कर भयानक घटना के रुप में उभरने वाली है। धरती मज़लूमों के ख़ून से रंगीन हो गई है और आसमान उन की आहों से भर गया है। सत्य और असत्य की कशमकश जो हज़ारों साल से चली आ रही है वह इन्साफ़ को आवाज़ दे रही है। यह आवाज़ हर वह व्यक्ति सुन रहा है जो हक़ सुनने वाले कान रखता है। उसे ज़मीन से बुलन्द होने वाली यह आवाज़ भी सुनाई देती है कि कायनात का शासक अपनी अदालत का तख़्त ज़मीन पर बिछाने को है और आसमान से प्रसारित होने वाला यह संदेश भी सुनाई देता है कि इन्साफ़ का तराज़ू क़ायम होने को है।

287. क़ियामत के आसार तो दिन पर दिन ज़ाहिर होते ही जा रहे हैं। लेकिन इस का ठीक समय अल्लाह के सिवा किसी को भी नहीं मालूम। वह तो अचानक आ धमकेगी जब कि इन्सान उस से बिलकुल बेपरवाह होगा। हदीस में इस का नक़्शा इस तरह ख़ींचा गया है।

ولتقومن الساعة وقد نشر الرَّجلان ثوبهما بينهما فلا يتبا يعانه ولا يطويانه ولتقومن الساعة وقد انصرف الرجل بلبن لقحته فلا يطعمه ولتقومن الساعة وهو يليط حوضه فلا يسقى فيه ، ولتقومن الساعة وقد رفع احدكم اكلته الى فيه فلا يطعمها ۔ (بخاری کتاب الرقاق)

" क़ियामत इस हाल में क़ायम होगी कि दो आदमियों के बीच क्रय विक्रय का मामला हो रहा होगा जिस के लिए वे कपड़ा खोले हुए होंगे और यह मामला अभी पूरा भी नहीं हो सका होगा और न वे कपड़े को लपेट पाएंगे कि क़ियामत खड़ी हो जाएगी। एक व्यक्ति अपनी ऊँटनी का दूध ले कर लौट रहा होगा वह अभी पीने भी न पाएगा कि क़ियामत स्थापित हो जाएगी। एक व्यक्ति अपने हौज़ की मरम्मत कर रहा होगा और अभी पानी भर भी न सका होगा कि क़ियामत क़ायम हो जाएगी। और किसी व्यक्ति का हाल तो यह होगा कि वह अपना निवाला मुँह में डाल रहा होगा लेकिन खाने भी न पाएगा कि क़ियामत खड़ी हो जाएगी।" (बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़)

288. यह आयत स्पष्ट करती है कि क़ियामत का ठीक समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी मालूम नहीं था। हदीस में आप ने क़ियामत के सिलसिले में जो कुछ बयान फ़रमाया है वह उस के आसार हैं न कि निश्चित समय।

289. अर्थात् इस बात को नहीं जानते कि क़ियामत का समय उन विषयों में से है जिस का ज्ञान अल्लाह ही को है। और उस की हिकमत का यह तक़ाज़ा हुआ कि इस का नियत समय किसी पर भी ज़ाहिर न किया जाए। इस बात को न समझने की वजह से लोग इस सवाल को दोहराते रहते हैं कि क़ियामत कब आएगी ।

290. जब नबी स्वयं अपने लिए लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता तो वह दूसरों को क्या लाभ और हानि पहुँचा सकता है। और जब यह बात नबी के अधिकार में नहीं है तो वलियों के अधिकार में किस तरह हो सकती है। अत: आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी नबी या वली को पुकारने से आवश्यकताएं पूरी होने से तो रहीं अलबत्ता पुकारने वाला शिर्क (बहुदेववाद) का अपराधी ज़रूर होगा।

291. यह सत्य है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को व्यक्तिगत रुप से नुक़्सान पहुँचते रहे हैं। अगर आप को ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान होता तो आप पहले ही जान लेते कि फ़लाँ चीज़ से हानी पहुँचने वाली है और इस कारण आप उस से बचने के उपाय करते। मगर ऐसा न होना इस बात का प्रमाण है कि आप को ग़ैब का ज्ञान नहीं था। अलबत्ता जहाँ तक रिसालत के दायित्व की अदायगी का सम्बन्ध है अल्लाह तआला ने आप पर ग़ैब की वे बातें ज़रुर खोली थीं जो सामान्य लोगों पर नहीं खोली जातीं। क़ियामत का समय बताना रिसालत के दायित्व में शामिल नहीं है। इस लिए अल्लाह तआला ने इस का ज्ञान आप को प्रदान नहीं किया।

292. इस की व्याख्या सूरह निसा नोट ३ में गुज़र चुकी।

आदम से हव्वा की पैदाइश किसी स्पष्टीकरण की मुहताज नहीं है। प्राणी विज्ञान (Biology) की खोज़ों एवं रहस्योद्घाटनों के अनुसार कुछ जानवर ऐसे भी पाए जाते हैं जो एक कोशिका के (Single Celled) होते हैं और अपने आप दो भागों में विभक्त हो जाते हैं जैसे अमीबा (Amoeba) इस लिए यदि आरम्भकाल में आदम से हव्वा को पैदा कर दिया गया हो तो इस में आश्चर्य की क्या बात है?

293. इन्सान का जो पहला जोड़ा पैदा किया गया उस का वर्णन करने के बाद अब इन्सानों के समान्य जोड़ों अर्थात स्त्रियों एवं पुरषों का वर्णन किया जा रहा है।

294. अर्थात् जब अल्लाह उन को भली चंगी औलाद दे देता है तो बजाय इस के कि वे उस के कृतज्ञ बन जाएं उस को किसी देवी या किसी वली या किसी बुज़ुर्ग की दया बता कर उन को नज़रें एवं भेंट प्रदान करने लगते हैं और चढ़ावे के लिए

कोई मन्दिर का रुख करता है तो कोई दरगाह का। फिर बच्चे का नाम भी बहुदेववादी ढंग में रखा जाता है। मक्का के बहुदेववीदी अगर अब्दुल उज़्ज़ा (उज़्ज़ा देवी का बन्दा) अब्दुश्शम्स (सुर्य देवता का बन्दा) रखते थे तो भारत के बहुदेववादी राम दास (राम का बन्दा) गोकुल दास (गोकुल देव का बन्दा) और बिदअती मुसलमान अब्दुर्रसूल (रसूल का बन्दा) हुसैन बख़्श (हुसैन का बख्शा हुआ) ग़ुलाम ग़ौस (ग़ौस अब्दुल क़ादिर जीलानी का गुलाम) आदि रखते हैं।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी बात सुन भी नहीं सकते। तुम्हें ऐसा दिख पड़ता है कि वे तुम्हारी ओर तक रहे हैं हालाँकि वे देखते कुछ भी नहीं।(अल-क़ुर्आन)

193. अगर तुम इन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी बात न मानें।[295] तुम्हारे लिए समान है चाहे उन्हें पुकारो या ख़ामोश रहो।

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ
أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ﴿١٩٣﴾

194. तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते हो वे तुम्हारी ही तरह बन्दे हैं[296] उन को पुकारो, देखो वे तुम्हारी पुकार का जवाब दें[297] अगर तुम (अपने इस दावे में) सच्चे हो (कि वे ख़ुदा हैं)।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ
فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٩٤﴾

195. क्या इन के पाँव हैं कि उन से चलें ? इन के हाथ हैं कि उन से पकड़ें ? इन की आँखें हैं कि उन से देखें ? इन के कान हैं कि उन से सुनें ?[298] कहो बुलाओ अपने ठहराए हुए साझीदारों को, फिर मेरे ख़िलाफ़ कार्रवाई कर देखो और मुझे मोहलत न दो।[299]

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ
أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَآ ۖ أَمْ لَهُمْ أٰذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ
ادْعُوا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظِرُونِ ﴿١٩٥﴾

196. मेरा मददगार तो अल्लाह है जिस ने यह किताब उतारी है और वह नेक कर्मियों की मदद करता है।

إِنَّ وَلِـِّۧيَ اللّٰهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِينَ ﴿١٩٦﴾

197. मगर जिन को तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهٖ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَآ
أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

198. अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी बात सुन भी नहीं सकते।[300] तुम्हें ऐसा दिख पड़ता है कि वे तुम्हारी ओर तक रहे हैं हालाँकि वे देखते कुछ भी नहीं।[301]

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ
وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

199. (ऐ पैग़म्बर !) दरगुज़र से काम लो, भली बात का हुक्म दो और जाहिलों से बचो।[302]

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

200. और अगर तुम शैतान की तरफ़ से उकसाहट महसूस करो तो अल्लाह की पनाह माँगो[303] निःसंदेह वह सुनने और जानने वाला है।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۚ إِنَّهٗ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

201. जो लोग तक़वा अपनाते हैं उन्हें अगर शैतान की तरफ़ से कोई ख़याल छू भी जाता है तो वे चौंक उठते है और उन की आँखें अचानक खुल जाती हैं।[304]

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوا
فَإِذَا هُمْ مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

295. अर्थात् ये बुत तुम्हारी रहनुमाई (मार्गदर्शन) कर सकते हैं? अगर तुम इन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो तुम्हें कोई जवाब नहीं मिलेगा । उन्हें इस मक़सद के लिए पुकारना या न पुकारना समान है। फिर जब वे तुम्हारी रहनुमाई नहीं कर सकते और तुम्हें यह नहीं बता सकते कि कामयाबी की राह कौन सी है और नाकामी की कौन सी तो वे ख़ुदा क्यों और कैसे हुए। क्या ख़ुदा ऐसा भी होता है जिस में रहनुमाई करने की क्षमता ही न हो और जो मिट्टी का माधव हो?

296. बुत परस्त अपने बुतों के बारे में यह विश्वास एवं आस्था रखते थे कि उन के मनगढ़ंत ख़ुदाओं जैसे जिन्न, फ़रिश्तों, पूर्वजों आदि के चिन्ह एवं चित्र हैं। इस लिए बुतों की पूजा वास्तव में उन ख़ुदाओं की पूजा है। क़ुर्आन ने इन दोनों बातों पर पकड़ की है। इस आयत में यह जो फ़रमाया कि वे तुम्हारी ही तरह बन्दे हैं तो इस से इशारा उन के असली पूज्यों (अर्थात जिन्नों और पूर्वजों) की तरफ़ है। मतलब यह है कि जिन्न हों या फ़रिशते,व्यक्ति हों या आत्माएं सब ख़ुदा के बन्दे हैं। ख़ुदा होने के गुण किसी में भी नहीं । रहे इन का प्रतिनिधित्व करने वाले बुत तो इन की पकड़ बाद वाली आयत में की गई है।

297. अर्थात अगर वे ख़ुदा के बन्दे नहीं बल्कि अपने आप में (स्व:रचित) ख़ुदा हैं तो फिर तुम्हारी पुकार का जवाब क्यों नहीं देते। तुम्हारा जीवन लक्ष्य तुम पर क्यों नहीं स्पष्ट करते और जीवन के मामलों एवं कार्यक्रमों में तुम्हारा मार्गदर्शन क्यों नहीं करते।

298. ये शिर्क (बहुदेववाद) के चिन्ह अर्थात् बुत हैं जिन को बहुदेववादियों ने ख़ुदा बना रखा है। इस के अनौचित्य को स्पष्ट करने के लिए यहाँ कुछ प्रश्न किये गए हैं। मतलब यह है कि यह बुत मानव रुपी तो बनाए गए हैं लेकिन हाथ पाँव, आँखें, कान, सब दिखावे के हैं। इन में न चलने फिरने की ताक़त है और न पकड़ने की, न सुनने की शक्ति है और न देखने की, फिर ये ख़ुदा कैसे हुए? मगर जो लोग अक़्ल के अन्धे होते हैं उन को न इस बात में कोई संकोच होता है कि अपने ख़ुदाओं को अपने हाथ से बनाएं और न इस बात में कि जिन के अन्दर ख़ुदा होने के गुण तो दरकिनार, मनुष्यों के गुण भी न पाए जाते हों उन को मुश्किलें आसान करने वाला और ज़रुरतों को पूरा करने वाला समझ कर उन की उपासना करें और न ही उन्हें इस बेकार की हरकत पर तनिक भी शर्म महसूस होती है कि अपने ख़ुदाओं को अपने हाथों समुद्र में डुबो दें।

रहा बुत परस्तों का यह कहना कि बुत असल में ईशभक्ति का माध्यम हैं तो यह बात सरासर सत्य के विपरीत है। क्यों कि बुत परस्त पहली बात तो यह कि एक ख़ुदा पर नहीं बल्कि बहुत से ख़ुदाओं पर आस्था रखते हैं दूसरी बात यह कि व्यवहारिक रुप से वे बुतों ही को सब कुछ समझते हैं और उन्हें ख़ुदा का दर्जा देते हैं।

आयत में बुत परस्ती की मूर्खता को जिस तरह स्पष्ट किया गया है उस से मिलती जुलती बात ज़बूर (भजन संहिता) में भी मौजूद है।

"उन लोगों की मूरतें सोने चाँदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। उन के मुँह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकतीं उन के आँखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकतीं, उन के कान तो रहते हैं परन्तु वे सुन नहीं सकतीं, उन के नाक तो रहती हैं परन्तु वे सूँघ नहीं सकतीं। उन के हाथ तो रहते हैं परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं, उन के पाँव तो रहते हैं परन्तु वे चल नहीं सकतीं और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं। जैसी वे हैं वैसे ही उन के बनाने वाले हैं और उन पर सब भरोसा रखने वाले भी वैसे ही हो जाएंगे। हे इस्राईल, यहोवा पर भरोसा रख! तेरी सहायक और ढाल वही है। (भजन संहिता ११५:४,५,६,७,८,९)

299. यह बहुदेव वादियों को चैलेन्ज है उन की उन धमकियों के जवाब में जो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देते थे कि तुम हमारे बुतों का जो विरोध करते हो तो उस के फलस्वरुप तुम पर उन का प्रकोप अवश्य टूट पड़ेगा। उन को चैलेन्ज किया गया कि अगर तुम्हारे इन उपास्यों में कोई बलबूता है तो उन को बुलाओ, वे मेरे विरुद्ध तुम्हारी सहायता करें, और फिर तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध जो कार्रवाई करना चाहो कर गुज़रो । इस चैलेन्ज के बाद जब वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बाल भी बाँका न कर सके। बल्कि मक्का में आप के विजेता के रुप में प्रवेश के बाद आप के हाथों बुतों की जो दुर्गत बनी उस ने यह साबित कर दिया कि इन बुतों के ख़ुदा होने का दावा झूठा था। और अल्लाह ही वास्तविक ख़ुदा है।

300. अर्थात ये बुत जब न सुनते हैं और न देखते हैं तो रहनुमाई क्या करेंगे, और जब रहनुमाई करने के योग्य नहीं हैं तो ख़ुदा क्यों और कैसे हुए?

301. इस में यह ललित व्यंग्य निहित है कि जो हाल बुतों का है वही उन के भक्तों का भी है। बुत प्रतित होता है कि तक रहे हैं लेकिन वास्तव में वे कुछ भी नहीं देखते। इस तरह बुत परस्त आँखें रखते हैं और सत्य की ओर बुलाने वालों को देखते हैं लेकिन वास्तव में वे न सत्य को देख पाते हैं और न उस की ओर बुलाने वालों को देख पाते हैं क्यों कि वे अपनी आंखों की रौशनी खो चुके हैं।

302. सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और हिदायत आप के माध्यम से सारे ईमान वालों को। दरगुज़र

से काम लो, अर्थात ख़ुदा से अनभिज्ञ अथवा ख़ुदा को न मानने वाले लोगों की कष्टदायक बातों को ख़ातिर में न लाओ और विशाल हृदय एवं विशाल नैतिकता का प्रदर्शन करते हुए अधिक से अधिक दरगुज़र से काम लो। भली बातों की तलक़ीन (उपदेश) ज़रुर करते रहो लेकिन अगर ऐसे लोगों से वास्ता पड़े जो भावनाओं में बह चुके हों और कुछ सुनने समझने के लिए तैयार न हों तो उन से उलझने की ज़रूरत नहीं है। उन्हें उन के हाल पर छोड़ दो क्यों कि जो सुनना नहीं चाहते उन को सुनाने का कोई दायित्व तुम पर लागू नहीं होता।

303. अर्थात् अगर विरोधियों की बातें तुम्हारे अन्दर उत्तेजना पैदा करने का कारण बन रही हों तो अल्लाह की पनाह माँगो। वह तुम्हें शर (बुराई एवं फितनों) से सुरक्षित रखेगा।

इन हिदायातों पर अमल कर के विरोधियों के दिलों को जीता जा सकता है और इस्लाम की दअवत के लिए मार्ग प्रशस्त हो सकता है। मगर आज मुसलमानों का हाल यह है कि वे ग़ैर मुस्लिमों की उत्तेजित करने वाली गतिविधियों का असर क़ुबूल करने और उन्हें तुर्की ब तुर्की जवाब देने के लिए तैयार हो जाते हैं। क्षमा एवं दरगुज़र और धैर्य एवं संयम से काम लेने के लिए वे आमादा नहीं होते। नतीजा यह कि उन से उलझ कर रह जाते हैं और कोई संगृहित लाभ नहीं होता।

304. अर्थात् तक़वा (ईश-भय) का रवैया अपनाने वालों का ज़मीर हमेशा जागृत रहता है। अगर इत्तिफ़ाक़ से कोई शैतानी विचार या भ्रम दिल में उत्पन्न होता है तो वे उसे फ़ौरन महसूस कर लेते हैं और उन्हें साफ दिखाई देने लगता है कि तक़वा की राह कौन सी है और गुनाह की राह कौन सी।

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ ❐

और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम इन लोगों के सामने कोई आयत पेश नहीं करते तो वे कहते हैं, तुम ने कोई आयत क्यों नहीं छांट ली। कहो मैं तो केवल उस वह्य की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मुझ पर की जाती है।ये तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत (सूझ बूझ) की बातें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए, जो ईमान लाएं।(अल-क़ुर्आन)

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

202. मगर जो उन के (अर्थात् शैतानों के) भाई बन्धु हैं उन को वे गुमराही में खींचे लिए जाते हैं फिर कोई कसर उठा नहीं रखते ।[305]

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ
مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى
وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾

203. और (ऐ पैग़म्बर !) जब तुम इन लोगों के सामने कोई आयत पेश नहीं करते तो वे कहते हैं, तुम ने कोई आयत क्यों नहीं छांट ली। कहो मैं तो केवल उस वह्य की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की तरफ़ से मुझ पर की जाती है।[306] ये तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरत (सूझ बूझ) की बातें हैं [307] और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए, जो ईमान लाऐं।[308]

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾

204. और जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो ध्यान से सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए [309]।

وَاذْكُر رَّبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ
الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن
مِّنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٥﴾

205. और अपने रब को सुबह और शाम याद करो, दिल ही दिल में, विनम्रता और भय के साथ और ज़बान से भी हल्के स्वर के साथ [310] और ग़ाफ़िलों में से न हो जाओ।[311]

إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

206. निश्चय ही जो तुम्हारे रब के क़रीब हैं वे उस की इबादत से घमंड नहीं करते।उस की तस्बीह (गुणगान) करते हैं और उसी के आगे झुके होते हैं। [312]

305. इस के विपरीत शैतानों के भाई बन्धुओं (परहेज़गार लोगों के विरोधियों) का हाल यह होता है कि शैतान उन की गुमराही में वृद्धि ही किये चले जाते हैं। उन को जब शैतानी विचार या भ्रम छू लेता है तो उस से चौकन्ना होने के बजाए अपने को इस अनुचित कृत्यों पर संतुष्ट कर देते हैं और इस के बाद सक्रिय रुप से उस में लिप्त हो जाते हैं। इस तरह शैतान का जादू उन पर ऐसा चल जाता है कि उन की बागडोर शैतान ही के हाथ में रहती है।

नैतिकता एवं व्यवहार में सुधार और मन के शुद्धिकरण के सम्बन्ध में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है जो इन आयतों में बयान हुई है।

306. जब वह्‌य के उतरने में कुछ अन्तराल (Gap) होता तो बहुदेववादी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कटाक्ष करते कि आप ने कोई आयत छाँट नहीं ली। मतलब यह कि आप आयतें तो गढ़ते ही रहते हैं फिर आज कोई आयत गढ़ कर क्यों नहीं लाए। यह अति उत्तेजित करने वाली बात थी मगर इस का जवाब बहुत ही संजीदगी के साथ देने की हिदायत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को की गई और वह यह कि इन से कहो मैं केवल उस वह्‌य की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ की जाती है अर्थात् मेरा काम आयतें गढ़ना नहीं है बल्कि अपने रब की तरफ़ से नाज़िल होने वाली आयतों को प्रस्तुत करना।

307. क़ुर्आनी आयतों का बसीरत अफ़रोज़ (ज्ञान देने वाला) होना इस बात का प्रमाण है कि वो अल्लाह की नाज़िल की हुई आयतें हैं न कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपनी रचना । क़ुर्आन एक ख़ुली किताब है और जो व्यक्ति भी इस का अध्ययन खुले मन से करेगा वह इस नतीजे पर पहुँचे बिना नहीं रहेगा कि इस में जो बातें बयान हुई हैं वो मनुष्य के ज़मीर को जागृत करने वाली, मन की आँखों को खोलने वाली और बुद्धि को रौशनी प्रदान करने वाली हैं। फिर जो कलाम सरासर ज्ञानद हो और वह भी असीमित ज्ञानद वह इन्सान का कलाम कैसे हो सकता है।

ख़ुदा और मज़हब से सम्बन्धित बता कर जिन लोगों ने अपना कलाम पेश किया है उस में सिवाय प्रतिकूल एवं परस्पर विरोधी बातों, अनुमानों और फ़लसफ़ियाना उलझावों के और क्या है? उन की बातें न बोध एवं चिन्तन को ज्ञान का प्रकाश (दीप्ति) प्रदान करने वाली हैं और न दिल, दिमाग के सुकून एवं संतोष की पूँजी । फिर क़ुर्आन को भी उसी पंक्ति अथवा उसी सतह पर रखना कहाँ का इन्साफ़ है?

308. क़ुर्आन अहले ईमान के हक़ में हिदायत भी है और रहमत भी। तथा उन की सही रहनुमाई कर के उन को रहमते इलाही से हमआगोश करता है।

309. ऊपर बयान हुआ कि किस शान का कलाम है। अब ध्यान दिलाया जा रहा है कि जब क़ुर्आन को पढ़ा जा रहा हो तो ध्यानपूर्वक सुनें । संभव है कि सुनने वाला भी उस रहमत में भागीदार बन जाए। जो लोग क़ुर्आन पर एतिराज़ करते हैं उन के एतिराज़ का कारण साधारणतया यह होता है कि वे न तो क़ुर्आन को ग़ौर से पढ़ते हैं और न ध्यान से सुनते हैं। अगर वे ग़ौर से पढ़े या ध्यान से सुनें तो उन के सारे संदेह और शंकाऐं दूर हों और उन को भी ईमान की नेमत नसीब हो।

आयत में जो बात इर्शाद हुई है उस का असल मंशा वही है जो ऊपर बयान हुआ अर्थात् क़ुर्आन को ध्यान पूर्वक सुनने की सभी को दअवत देना लेकिन इस से नमाज़ के बारे में यह हुक्म भी निकलता है कि जब इमाम क़ुर्आन सुना रहा हो अर्थात बुलन्द आवाज़ से क़िर्अत कर (पढ़) रहा हो तो इमाम के पीछे खड़े मुक्तदियों को ध्यानपूर्वक क़ुर्आन सुनना चाहिए और ख़ामोश रहना चाहिए। रहा यह सवाल कि जब इमाम सिर्री (ख़ामोश) क़िर्अत कर रहा हो तो मुक्तदियों को सूरह फ़ातिहा पढ़ना चाहिए या नहीं तो इस के लिए सही हदीसों को देखना चाहिए। क़ुर्आन को अपने अपने मसलक (मत) की ताईद में खींचना बड़ी ग़लत बात है। सही तरीक़ा यह है कि क़ुर्आन से फ़िक़ही मसलों (धार्मिक मसलों) में जो स्पष्ट आदेश या निर्देश मिलते हों उस को नि:संकोच स्वीकार किया जाए क्यों कि वह वास्तविक स्त्रोत है और तफ़सीलात के लिए साबित शुदा सुन्नत की तरफ़ झुका जाए क्यों कि सुन्नत क़ुर्आन की टीका है। मगर जब अंधानुकरण की मानसिकता पैदा हो जाती है तो लोग अपने अपने इमामों और अपने अपने मसलकों (मतों) को सही साबित करने के लिए किसी न किसी हदीस का सहारा ले लेते हैं और क़ुर्आन को हदीस का अधीन बना देते हैं। या फिर क़ुर्आन और हदीस दोनों का ऐसा अर्थ प्रस्तुत करते हैं कि ''राय'' और ''कियास''(अनुमान) को क़ुर्आन और सुन्नत पर वरीयता प्राप्त हो जाती है। क़ुर्आन का अनुपालन करने वालों को इस गुमराही से बचना चाहिए।

आयत में इशारा है कि क़ुर्आन जब पढ़ा जाता है तो अल्लाह की दयालुता अपना साया किए रहती है। हदीस में इस इशारे को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह खोल दिया है:

وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِى بَيْتٍ مِنْ بُيُوْتِ اللّٰهِ يَتْلُوْنَ كِتَابَ اللّٰهِ وَيَتَدَارَسُوْنَ بَيْنَهُمْ اِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللّٰهُ فِيْمَنْ عِنْدَهٗ ۔ (مسلم کتاب الذکر)

"जो लोग अल्लाह के घर (मस्जिद) में इकट्ठे हो कर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और परस्पर पढ़ते पढ़ाते हैं उन पर सकीनत (हृदय की शान्ति) नाज़िल होती है और उन पर रहमत छा जाती है और फ़रिश्ते उन के गिर्द जमा हो जाते हैं और अल्लाह उन का ज़िक्र अपने निकटस्थों में करता है।" (मुस्लिम, किताबबुज़्ज़िक्र)

310. यहाँ अल्लाह के ज़िक्र की दो सूरतें बयान की गई हैं। एक यह कि आदमी दिल ही दिल में अपने रब को याद करे और दूसरी यह की ज़बान से भी उस का ज़िक्र करे और साथ ही हिदायत की गई है कि विनम्रता और भय के साथ ख़ुदा को याद करो और जब ज़बान से उस का ज़िक्र (चर्चा) करो तो हल्के स्वर में ताकि आदमी बन्दगी के आदाब का भी लिहाज़ रखे और दिखावे (रियाकारी) के फ़ित्नों से भी बचे।

ध्यान रहे की ज़िक्र न तो ज़बान की वर्जिश का नाम है कि हू हक़ की सदाऐं विशेष अन्दाज़ में लगाई जाएं और न प्रचलित परिभाषा में जप (विर्द एवं वज़ीफ़ा) है कि ज़बान निश्चित कलिमों को दोहराती रहे किन्तु दिल अल्लाह की ओर आकर्षित न हो और न विनम्रता एवं भय की मनोदशा उस पर छाई हो ।

रहे तस्बीह के दाने जो घुमाए जाते हैं तो ध्यान रहे कि इस्लाम में माला जपने का चलन नहीं है। यह तरीक़ा दूसरी क़ौमों से लिया गया है। और जिस गुप्त रुप से अल्लाह का ज़िक्र (चर्चा) करने की हिदायत इस आयत में दी गई है उस से इस को कोई मुनासिबत नहीं है। तस्बीह घुमाने से अल्लाह का ज़िक्र तो कम होता है अलबत्ता अल्लाह के ज़िक्र की नुमाइश अधिक होती है।

सुबह और शाम का समय हालतों के परिवर्तन के हैं। गोया आदमी इन समयों में एक हालत से दूसरी हालत में दाखिल होता है इस लिए ख़ास तौर से इन समयों में अल्लाह का ज़िक्र करने की हिदायत की गई है।

311. मालूम हुआ कि आदमी अगर अल्लाह के ज़िक्र की आदत न डाले तो उस के दिल पर ग़फ़लत के परदे पड़ जाते हैं। नमाज़ सरासर अल्लाह का ज़िक्र है लेकिन नमाज़ के अलावा भी उठते बैठते चलते फिरते और कारोबार में व्यस्त रहते हुए अल्लाह से कभी ग़ाफ़िल न हो।

312. मुराद निकटस्थ फ़रिश्ते हैं जिन को जाहिल लोग ख़ुदा बना बैठे हैं हालांकि वे खुद अपने को अल्लाह का बन्दा समझते हैं और उस की इबादत में सक्रिय रहते हैं। वे उस की पाकी बयान करते और उसी के आगे झुकते हैं। अगर तुम अल्लाह का समीप्य एवं सान्निध्य चाहते हो तो तुम को भी फ़रिश्तों के इन गुणों को अपने में पैदा करना चाहिए। इस आयत पर सज्दा करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है और उस की हिकमत यह है कि आदमी इस बात का असर क़ुबूल करे जो यहाँ बयान हुई है और अविलम्ब यह सिद्ध कर दे कि वह घमंड में लिप्त नहीं है बल्कि अल्लाह के आगे अपना सर झुका रहा है ।

८. सूरह अल-अन्फ़ाल

नाम : सूरह की शुरुआत अन्फ़ाल अर्थात् माले-ग़नीमत (परिहार) के मसले से हुआ है। इस मुनासिबत से इस का नाम ''अल-अन्फ़ाल'' है।

नाज़िल होने का समयः यह सूरह मदनी अर्थात् हिज़रत के बाद नाज़िल होने वाली सूरह है और बद्र की जंग के बाद अर्थात रमज़ान सन् २ हिज्री में नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय : जिहाद है और जो मामले और मसले बद्र की जंग के परिणाम स्वरुप पैदा हुए थे उन के सिलसिले में मुसलमानों का सही मार्गदर्शन करना है और इन्कार करने वालों (मुन्किरीन) पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का चिन्ह स्पष्ट करना है जो हक़ और बातिल (सत्य और असत्य) की इस जंग ने इतिहास के पन्नों पर अंकित कर दिया। सूरह ''आराफ़'' में वे ऐतिहासिक घटनाएं प्रस्तुत की गई थीं जिन से उन रसूलों की सत्यता स्पष्ट झलकती है जो विभिन्न क़ौमों की तरफ़ भेजे गए थे। इस सूरह में बद्र की जंग में ईमान वालों की कामयाबी को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का चिन्ह ठहराया गया है। क्यों कि यह जंग साधारण अथवा सामान्य लड़ाइयों से बिलकुल भिन्न हक़ और बातिल में अन्तर करने वाली जंग थी।

कलाम की तरतीबः आयत 1 से 4 में माले-ग़नीमत (परिहार सामाग्री) के बंटवारे के सिलसिले में एक सवाल का जवाब देते हुए ईमान वालों की वो विशेषताएं बयान की गई हैं जो उन के ईमान की सच्चाई और दृढ़ता का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं और जिन के पैदा होने की सूरत में आदमी हर मामले में अल्लाह और उस के रसूल के अनुपालन का रवैया अपनाता है।

आयत 5 से 8 में मुसलमानों की उस कमज़ोरी पर पकड़ की गई है जो जंग से पहले उन से हुई।

आयत 9 से 19 में अल्लाह की मदद का ज़िक्र है जो जंग के अवसर पर प्रकट हुई। और इसी सम्बन्ध से मुसलमानों को हिदायत की कि वे मुक़ाबले के समय पीठ न फेरें।

आयत 20 से 29 में मुसलमानों को हिदायत की गई है कि वे नाज़ुक क्षणों में अल्लाह और उस के रसूल से वफ़ादारी का सबूत दें।

आयत 30 से 40 में यह बात बताई गई कि रसूल के ख़िलाफ़ जो चालें चली थीं वे नाकाम हुईं और अल्लाह की तदबीर कामयाब रही किन्तु यदि अब भी उन को अपने दृष्टिकोण और अपनी सोच के ग़लत होने का एहसास नहीं हुआ है और अपने इन्कार (कुफ़्र) के रवैया से बाज़ नहीं आ रहे हैं तो मुसलमानों को चाहिए कि वे जंग का क्रम जारी रखें यहाँ तक कि इस पावन धरती पर सत्य धर्म का वर्चस्व हो जाए।

आयत 41 से 49 परिहार सामाग्री (माले-ग़नीमत) को बाँटने का उसूल और इस्लामी जंग को ग़ैर इस्लामी जंग से अलग करने वाली बातें और मुसलमानों को हिदायत कि इन का लिहाज़ सख़्ती के साथ रखो।

आयत 50 से 54 में अल्लाह के उस अज़ाब (प्रकोप) का वर्णन जिसने बद्र के अवसर पर काफ़िरों को अपनी लपेट में ले लिया।

आयत 55 से 66 में युद्ध और सुलह सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्देश दिए गए हैं।

आयत 67 से 71 में युद्ध बन्धकों और उन से लिए गए फ़िदयों (मुक्ति-प्रतिदान) पर तब्सरा है।

आयत 72 से 75 उपसंहार है जिस में मुसलमानों को आपसी बन्दधुत्व अथवा भाई चारे के सम्बन्ध को पक्का करने का निर्देश दिया गया है ताकि वे एकता बद्ध और संगठित हो कर काफ़िरों (इन्कार करने वालों) को जो उन से रणक्षेत्र में युद्धरत हैं मुक़ाबला कर सकें।

सूरह की शुरुआत में मुसलमानों को पारस्परिक सम्बन्धों को मधुर रखने का निर्देश दिया गया था और आख़िरी आयतों में आपसी सहयोग और समर्थन का निर्देश दिया गया है जिस से स्पष्ट होता है कि जिहाद के सिलसिले में इस मसले का क्या महत्व है।

बद्र की जंग और उस के कारण। यह युद्ध बद्र के स्थान पर लड़ा गया जो मदीना से 148 किलोमिटर और मक्का से 303 किलोमिटर के फ़ासले पर है। एक तरफ़ मदीना के मुसलमान थे जिन का नेतृत्व स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे और दूसरी तरफ़ मक्का के काफ़िर थे जिन का नेता अबूजहल था। मुसलमान तीन सौ से कुछ ही अधिक थे और हथियार आदि भी ठीक से नहीं थे। जब कि काफ़िरों का लश्कर एक हज़ार लोगों पर आधारित और सैन्य हथियारों से लैस था। यह पहला संग्राम था जो इस्लाम और कुफ़्र के बीच

हुआ । इस लिए इस को अत्यधिक इतिहासिक महत्व प्राप्त है। इस युद्ध के कारण संक्षिप्त रुप से निम्न हैं।

A) मक्का के बहुदेववादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध उन की हत्या की साजिश रची थी किन्तु आप उन के चंगुल में फ़ँस न सके बल्कि हिजरत कर के मदीना चले गए जहाँ आप को बेहतरीन साथी मिल गए और उन्हों ने आप के सहयोग और समर्थन का बीड़ा उठाया इस से मक्का के बहुदेववादियों के दिल में ईर्ष्या की ज्वाला भड़क उठी।

B) मक्का में जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान ला कर एकेश्वरवाद (तौहिद) का झंडा उठाने वाले बन गए थे उन पर बहुदेववादी कड़ा अत्याचार तोड़ रहे थे यहाँ तक कि उन्हें अपना घर बार छोड़ कर हिजरत कर जाने पर मजबूर कर दिया।

C) मक्का के बहुदेववादियों ने विचार, आस्था और अन्तरात्मा की आज़ादी पर जो मनुष्य का स्वाभाविक अधिकार है, रोक लगा दी थी । अत: वे मक्का में किसी ऐसे व्यक्ति को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे जो बुत परस्ती को त्याग कर एकेश्वरवादी (तौहीदी) व्यवस्था को स्वीकार करना चाहता हो। वो ऐसे लोगों पर दबाव डालते और उन्हें परेशान करते ताकि वे अपना पैतृक धर्म--- चाहे उस की दृष्टि में कितना ही ग़लत क्यों न हो, छोड़ें नहीं।

D) मक्का के बहुदेववादियों ने मुसलमानों के लिए हज्ज और उमरह की राह रोक दी थी। अत: जब सअद् बिन मुआज़ उमरे के लिए मक्का गए तो अबू जहल ने कड़ा विरोध करते हुए उन से हरम में कहा "तुम मक्का में इत्मीनान के साथ तवाफ़ करते हो जब कि तुम ने हमारे धर्म से फिर जाने वालों को पनाह दे रखी है और उन का सहयोग और समर्थन करते हो। अगर तुम अबूसफ़वान के साथ न होते तो यहाँ से सकुशल नहीं जा सकते थे। सअद् ने इस के जवाब में कहा, ख़ुदा की क़सम अगर तुम ने मुझे इस से रोका तो मैं तुम्हें ऐसी चीज़ से रोकूँगा जो तुम्हारे लिए इस से अधिक कड़ी होगी और वह है तुम्हारा मदीना से गुज़रने का रास्ता (बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

E) अल्लाह तआला ने ख़ान-ए-काबा को एकेश्वरवाद का केन्द्र बनाया था और इस का निर्माण करने वाले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज्ज का जो तरीक़ा प्रचलित किया था उस का मक़सद लोगों को एकेश्वरवादी व्यवस्था (दीने-तौहीद) पर क़ायम रखना था लेकिन क़ुरैश ने खान-एकाबा को अपने प्रबंध में पा कर उस में बुत बिठा दिये थे और वहाँ बहुदेववादी कार्यक्रम करने लगे थे। क़ुरैश को कोई हक़ नहीं था कि वो इस इतिहासिक और महान मस्जिद को मूर्ति स्थल में परिवर्तित कर दें और उस पर बलपूर्वक अधिपत्य जमाएं। इस लिए उन को ख़ान-ए-काबा के प्रबंध अधिकार से हटाना और मूर्ति एवं मूर्ति पूजा से उसे पाक करना और उसे एकेश्वरवाद का केन्द्र होने की हैसियत से बहाल करना अति आवश्यक था।

यह वे बुनियादी कारण थे जिस ने मदीना के मुसलमानों और मक्का के बहुदेववादियों के बीच कश्मकश तेज़ कर दी थी और फिर मक्का के बहुदेववादियों ने मदीना के मुसलमानों के विरुद्ध जो उपद्रवी षडयंत्र शुरू कर दिए उस के फ़लस्वरूप दोनों के बीच युद्ध का वातावरण बन गया और क़ुर्आन ने मुसलमानों को जो अब तक अपना हाथ रोके हुए थे युद्ध करने की खुली अनुमति दे दी:

इन हालात में जब अबू सुफ़ियान एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ सीरिया से मक्का लौट रहा था तो मुसलमानों ने चाहा कि उस पर हमला करें ताकि बहुदेववादियों का जोर टूटे और उन्हें सबक़ हासिल हो लेकिन अबू सुफ़ियान को इस की सुचना मिली तो उस ने मक्का को आदमी भेज कर कुमुक मगाई। फिर क्या था मक्का के बहुदेववादी एक हज़ार की संख्या में जिन में उन के बड़े बड़े लीडर भी थे पूरी सैनिक तैयारियों के साथ निकल गए। उधर मदीना से भी मुसलमान जंगी तैयारियों के साथ निकल गए। वे तादाद में तीन सौ से कुछ ही अधिक थे और उन के साथ जंगी सामानों की बड़ी कमी थी। फिर भी वे मुक़ाबले का साहस लिए मदीना से निकले और उन्हों ने सीधे बद्र की दिशा पकड़ी।

उन के बद्र पहुँचने तक तिजारती क़ाफ़िला रास्ता बदल कर बद्र से आगे मक्का की तरफ़ निकल गया। क़ाफ़िले के कुशलतापूर्वक गुज़र जाने के बाद कुफ़्फ़ार के कुछ सरदारों ने चाहा कि लश्कर मक्का वापस चला जाए लेकिन अबू जहल ने हठ् किया कि बद्र चला जाए। अन्तत: लश्कर बद्र पहुँच गया। उधर से मुसलमानों का लश्कर भी बद्र पहुँच गया था। इस तरह जुमा (शुक्रवार) 17 रमज़ान सन 2 हिजरी तदनुसार मार्च 624 ई. को बद्र के मैदान में दोनों फौज़ें आमने सामने हुईं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से सहायता के लिए अत्यंत विनम्रता के साथ हुआ की। जब मुक़ाबला हुआ तो मुसलमान बड़ी जाँबाज़ी के साथ लड़े और अल्लाह की मदद ने भी उन का साथ दिया । इस लिए मुट्ठी भर लोग काफ़िरों के भारी लश्कर पर विजय पा गए ।

मुसलमानों के केवल 14 आदमी शहीद हुए और काफ़िरों के सत्तर आदमी मारे गए। जिन में क़ुरैश के बड़े बड़े सरदार थे। जैसे अबूजहल, उत्बा, शैबा, उमैय्या बिन ख़लफ़ आदि। इन सरदारों के मारे जाने पर काफ़िरों के लश्कर में भगदड़ मच गई। मुसलमानों ने उन के सत्तर आदमी क़ैद किए जिन में उन के कुछ लीडरों में से उक़बा बिन अबी मुईत और नज़्र बिन हारिस को

बद्र से वापसी में क़त्ल कर दिया गया और शेष युद्ध बंधकों को एवं जो परिहार सामग्री (माले-ग़नीमत) हाथ लगी थी उस को ले कर मुसलमान मदीना लौटे। मदीना वालों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उत्साह पूर्वक स्वागत किया। आप की सकुशल वापसी और इस्लामी लश्कर की इस महान विजय एवं सफ़लता पर मुसलमानों में ख़ुशी और आनन्द की लहर दौड़ गई। क़ैदियों को आप ने फिदय: (प्राण मूल्य) ले कर रिहा करने का हुक्म दिया और जो क़ैदि फ़िदय: नहीं दे सकते थे उन को बग़ैर फिदय: के रिहा कर दिया।

उधर काफ़िरों का लश्कर बद्र में पराजय का मज़ा चखने के बाद बुरी तरह भाग खड़ा हुआ और जब मक्का पहुँचा तो उसे अपमान के कारण अपने ही लोगों को मुँह दिखाना मुश्किल हो गया ।

यह था बद्र का संग्राम जिस ने मक्का के काफ़िरों को उन के लीडरों से वंचित कर के यतीम बना दिया और मुसलमानों की क़िसमत को इस तरह जगाया कि आगे जा कर वो पूरी इन्किलाबी शान के साथ दुनिया पर छा गए और जिस ताक़त ने भी उन से टक्कर ली चूर चूर हो कर रह गई।

८-सूरह अल-अन्फ़ाल

सُورَةُ الْأَنْفَالِ

आयतें : ७५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

1. वे तुम से माले-ग़नीमत (परिहार) के बारे में पूछते हैं। कहो माले-ग़नीमत तो अल्लाह और रसूल के लिए है। अतः अल्लाह से डरो, अपने आपसी सम्बन्ध ठीक रखो और अल्लाह और उस के रसूल का अनुपालन करो अगर तुम मोमिन हो।[1]

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ①

2. मोमिन तो वो हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन के दिल दहल जाते हैं [2] और जब उस की आयतें उन्हें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो इस से उन का ईमान बढ़ जाता है [3] और वो अपने रब पर भरोसा रखते हैं [4]।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ
وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُونَ ②

3. जो नमाज़ कायम करते हैं [5] और जो कुछ हम ने उन को दिया है उस में से ख़र्च करते हैं।[6]

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ③

4. ऐसे ही लोग सच्चे मोमिन हैं।उन के लिए उन के रब के पास दर्जे हैं, क्षमा दान है और उत्तम रोज़ी है।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ④

5. (और बद्र की घटना ठीक उसी तरह सामने आई) जिस तरह तुम्हारे रब ने तुम्हें हक़ (सत्य) के साथ तुम्हारे घर (मदीना) से (बद्र की तरफ़) निकाला और हाल यह था कि ईमान वालों के एक गिरोह को यह अप्रिय था।[7]

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَارِهُونَ ⑤

6. वे तुम से हक़ के मामले में झगड़ रहे थे। हालांकि मामला साफ़ हो चुका था। गोया वे मौत की तरफ़ हाँके जा रहे हैं और वे उस को (अपने सामने) देख रहे हैं।[8]

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ
وَهُمْ يَنْظُرُونَ ⑥

7. और जब अल्लाह ने तुम से वादा किया था कि दो गिरोहों में से कोई एक ज़रुर तुम्हारे हाथ लगेगा।[9] और तुम चाहते थे कि जिस में कांटा (मुक़ाबले की शक्ति) नहीं है वो गिरोह तुम्हारे हाथ लगे [10] और अल्लाह चाहता था कि अपने कलिमात [11](शब्दों) से सत्य का सत्य होना साबित कर दे और काफ़िरों की जड़ काट दे।[12]

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ
وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ
وَيُرِيدُ اللّٰهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ
الْكَافِرِينَ ⑦

1. बद्र की जंग में जो माले-गनिमत (परिहार अथवा लड़ाई में मिलने वाला सामान) मुसलमानों के हाथ आया था उस के वितरण के बारे में मतभेद हुआ था । चूँकि यह इस्लाम के झंडे तले लड़ी जाने वाली पहली जंग थी इस लिए जो समस्याएं सामने आईं उन के बारे में मतभेद भी हुआ और कुछ कमज़ोरियाँ भी ज़ाहिर हुईं। इस सिलसिले में सर्वधिक महत्त्वपूर्ण मामला यह सामने आया कि माले-ग़नीमत के हक़दार कौन लोग हैं? वे जिन्हों ने अपने हाथों उस पर क़ब्ज़ा किया या उस में फ़ौज के दूसरे सिपाही भी शामिल हैं तथा यह कि इस के वितरण का नियम क्या है। यहाँ इस सवाल का उसूली जवाब देते हुए उन की उन कमज़ोरियों को दूर करने की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है जो उस अवसर पर सामने आई थीं। क्यों कि जिहाद के द्वारा जिन उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ती इस्लाम के समक्ष है वे तभी प्राप्त हो सकते हैं जब कि उस के सिपाही, सच्चे, चरित्रवान, आपस में जुड़े हुए और कड़ा अनुशासन रखने वाले हों।

"माले-ग़नीमत अल्लाह और रसूल के लिए है" यह उसूली (सिद्धान्तिक) बात है जो सवाल के जवाब में कही गई हैं। और उस का मतलब यह है कि माले-गनीमत में हाथ डालने अथवा दख़ल देने का अधिकार अल्लाह और उस के रसूल को है। लिहाज़ा अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों को स्वीकार करो। अल्लाह ने ग़नीमत के वितरण का नियम आयत ४१ में बयान फ़रमाया और इस की तफ़सीलात रसूल पर छोड़ दीं।

2. अर्थात् ईमान वाले ऐसे ज़िन्दा दिल और जागरुक दिमाग़ के होते हैं कि जहाँ अल्लाह का ज़िक्र हुआ उस की महिमा एवं महानता की कल्पना मात्र से काँप उठे। इस मनोभाव का दूसरा नाम तक़्वा (अर्थात् ईश-भय और परहेज़गारी) है।

3. ईमान का वास्तविक सम्बन्ध दिल से है और दिल में जो ईमानी मनोभाव उत्पन्न होता है उस की परवरिश का अगर सामान किया जाए तो वह बराबर बढ़ती रहती है। क़ुर्आन करीम की आयतों का पढ़ना जब कि वह अर्थ और भावार्थ के साथ हो, ईमान में विकास एवं वृद्धि का कारण है।

4. अर्थात उन का असल भरोसा संसाधनों पर नहीं बल्कि अल्लाह पर होता है। जंग के लिए वे अपने भरसक प्रयास भी करते हैं, संसाधन भी जुटाते हैं और बेहतर तदबीरें भी अपनाते हैं। इन सब के बावजूद वे ये नहीं समझते कि वे मात्र इन संसाधनों के कारण या अपने बलबूते पर निश्चित रुप से सफल हो जाएंगे बल्कि समझते हैं कि सफ़लता अल्लाह की सहायता पर आश्रित है। इसी तरह जब अल्लाह का हुक्म हो कि जंग करो तो मात्र संसाधनों की कमी के कारण वे जंग करने से नहीं रुकते बल्कि साज़-व-सामान न होने की दशा में या कम होने की दशा में भी लड़ते हैं और समझते है कि नतीजा अल्लाह के हाथ में है ।

5. जिहाद के अन्तर्गत नमाज़ के महत्व का यह पहलू इस बात को स्पष्ट करता है कि मुसलमानों की वह फ़ौज जो नमाज़ क़ायम न करती हो इस्लामी इन्क़िलाब के लिए बिल्कुल बेकार है ।

6. इशारा इस बात की तरफ़ है कि अल्लाह की राह में लड़ने वाले किराए के सिपाही नहीं होते और न भौतिक लाभ उन के समक्ष होते हैं बल्कि वे इस राह में खुद खर्च करने वाले और अपना माल लुटाने वाले होते हैं।

7. यह आयत पुष्टि करती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना से अल्लाह के हुक्म से निकले थे। और आप का निकलना हक़ (सत्य) के लिए था। अर्थात किसी सांसारिक उद्देश्य की प्राप्ती के लिए लूट मार करना या ख़ून ख़राबा करना अभिप्रेत न था बल्कि तौहिद की दअवत को सही और रिसालत को सच्चा साबित कर दिखाना था। और यह मक़सद क़ाफ़िले पर हमला करने से नहीं बल्कि काफ़िरों के लश्कर से टक्कर लेने से ही हासिल हो सकता था। इस लिए आप मदीना से बद्र ही के इरादे से निकले थे। लेकिन मुसलमानों के एक गिरोह को लश्कर के मुक़ाबले के लिए निकलना पसन्द न था । वे चाहते थे कि सीरिया से जो तिजारती क़ाफ़िला आ रहा है उस पर हमला किया जाए क्यों कि लश्कर की अपेक्षा क़ाफ़िले को पराजित करना आसान था।

8. यह घटना मदीना से निकलने से पहले की है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को सूचना दी कि अबू सुफ़ियान तिजारती क़ाफ़िले के साथ सीरिया से मक्का के लिए रवाना हो चुका है। और मक्का से काफ़िरों का लश्कर बद्र की दिशा में कुच कर चुका है। और इन दो गिरोहों में से किसी एक गिरोह से तुम्हारी मुठभेड़ होगी तो मुसलमानों के एक गिरोह का ख़्याल यह हुआ कि क़ाफ़िले पर हमला कर दिया जाए। बाद में जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट रुप से बता दिया कि काफ़िरों के लश्कर से मुक़ाबला करना है ताकि सत्य और असत्य (हक़ और बातिल) का दो टूक फ़ैसला हो जाए तो मुसलमानों में जो लोग कमज़ोरी का शिकार थे वे यह महसूस करने लगे कि इस उचित जंगी उपकरणों के बग़ैर असहाय की स्थित में और इतने कम लोगों का क़ाफ़िरों के विराट लश्कर से मुक़ाबला करना गोया अपने को मौत के मुँह में देना है। इस लिए वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस मामले में हुज्जत करते रहे। उन का निरन्तर यह कहना था कि लश्कर के बजाय काफ़िले का रुख़ किया जाए। उन के इस रवैये पर यहाँ पकड़ की गई है।

9. अर्थात् या तो क़ाफ़िला तुम्हारे हाथ आएगा या लश्कर।

यह अल्लाह तआला का वादा था और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस से ईमान वालों को पहले ही सूचित कर दिया था । जंगी नीतियों को ध्यान में रखते हुए बात स्पष्ट रखी गई थी किन्तु बाद में जब कि मदीना से रवानगी होने लगी तो आप ने स्पष्ट फ़रमा दिया कि लश्कर ही का मुक़ाबला सामने है। ताकि ईमान वाले जंगी तैयारियों के साथ निकलें । स्पष्ट रहे कि घटना के क्रम में उल्लेख कर्ताओं और सीरत निगारों (जीवनी लिखने वालों) से कुछ ग़लतियाँ हुई हैं। इस लिए घटनाक्रम की सही तस्वीर सामने नहीं आती जैसे सीरत निगार इब्ने इस्हाक़ का यह बयान कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाफ़िले को निशाना बना कर मदीना से निकले थे और बाद में रास्ते में लोगों को बताया कि लश्कर से मुक़ाबला होना है। घटना की इस ग़लत तरतीब ने इस्लाम विरोधियों को कहने का मौक़ा दिया लेकिन क़ुर्आन का बयान जो ऊपर से चला आ रहा है इन उल्लेखों का खंडन करता है। क्यों कि इस में स्पष्ट रुप से बताया गया है कि मदीना से निकलने के पहले ही यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि मुक़ाबला लश्कर से है। इसी लिए मुसलमानों के एक गिरोह को मुक़ाबले के लिए निकलना अप्रिय लगा ।और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस मामले में हुज्जत करता रहा। इस लिए इन उल्लेखों को क़ुर्आन की रौशनी में देखना चाहिए न कि क़ुर्आन को उल्लेखों की रौशनी में।

यह भी स्पष्ट रहे कि अगर क़ाफ़िले पर हमला किया जाता तो यह कोई ग़लत बात न होती क्यों कि क़ुरैश मुसलमानों से युद्धरत थे। और युद्ध के चलते दुश्मनों का ज़ोर तोड़ने के लिए उन के क़ाफ़िले पर हमला करना और उन की अर्थव्यवस्था पर चोट लगाना कोई आपत्तिजनक बात नहीं है। और अगर यह कोई अनुचित बात होती तो क़ुर्आन यह न कहता कि ''दो गिरोहों में से कोई एक ज़रूर तुम्हारे हाथ लगेगा'' बल्कि यह कहता कि लश्कर तुम्हारे हाथ लगेगा । लेकिन चूँकि काफ़िले के हाथ आ जाने से सत्य और असत्य का अन्तर उजागर नहीं हो सकता था और यह ग़लतफ़हमी पैदा की जा सकती थी कि मुसलमानों का मक़सद मात्र क़ाफ़िले को लूटना था इस लिए अल्लाह तआला ने काफ़िले को मुसलमानों की ज़द में आने नहीं दिया। और लश्कर से मुक़ाबले के लिए उन्हें ला खड़ा कर दिया। और जब वे अल्लाह की मदद से विजयी हो गए तो साबित हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जंग का जो प्रोग्राम बनाया था वह बिल्कुल सही था और यह सब कुछ ख़ुदा की रहनुमाई और उस की सहायता और समर्थन से हुआ।

10. ''जिस में काँटा नहीं है वह गिरोह'' अर्थात् कमज़ोर गिरोह, अभिप्रेत तिजारती क़ाफ़िला है। चूँ कि यह क़ाफ़िला केवल चालिस व्यक्तियों पर आधारित था इस लिए बिना किसी कष्ट के इस पर प्रभुत्व पाई जा सकती थी।

11. अर्थात अपने आदेशों से।

12. ज़ाहिर है यह लक्ष्य युद्ध द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था ।

बद्र का मार्ग, मदीना, मक्का और सीरिया (शाम) से

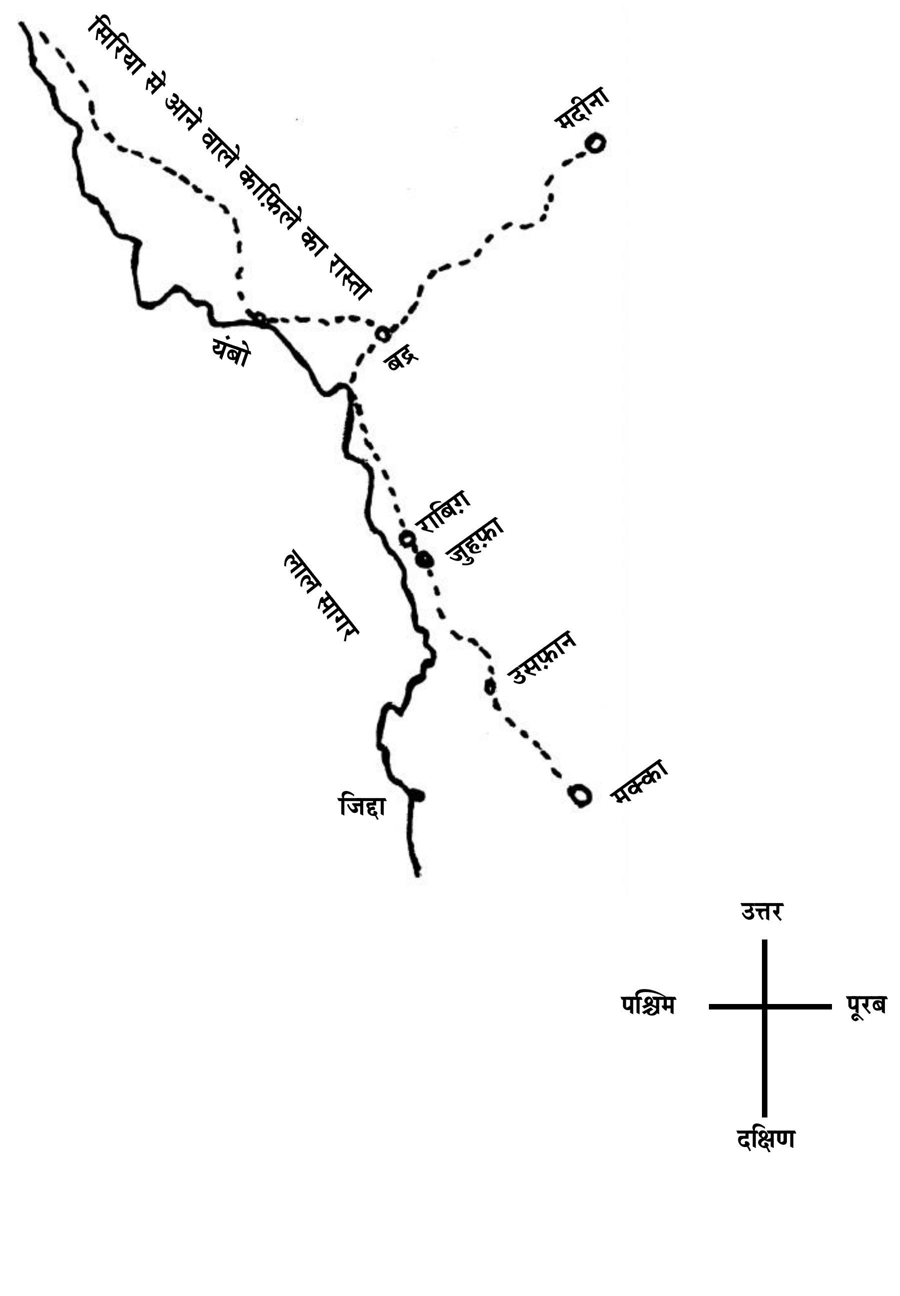

8. ताकि वह सत्य को सत्य कर के दिखाए और असत्य (बातिल) को असत्य कर के। यद्यपि कि मुजरिमों को यह अप्रिय हो।[13]

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾

9. जब तुम अपने रब से फ़रयाद कर रहे थे [14] तो उस ने तुम्हारी फ़रयाद सुन कर फ़रमाया था मैं एक हज़ार फ़रिश्तों से जो निरन्तर आएंगे, तुम्हारी मदद करूँगा।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ
مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾

10. और अल्लाह ने इस बात को (तुम्हारे लिए) सरासर बशारत (शुभ सूचना) बना दिया [15] और (यह शुभ सूचना तुम्हें इस लिए दी) ताकि तुम्हारे दिल सन्तुष्ट हो जाऐं वरना मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से होती है [16] निःसंदेह अल्लाह ग़ालिब (प्रभावशाली)और हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا
مِنْ عِندِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

11. (और याद करो वह समय) जब कि वह तुम पर ऊँघ हावी कर रहा था, कि वह उस की तरफ़ से सन्तुष्टि का सामान था [17] और आसमान से पानी बरसा रहा था कि तुम्हें पाक साफ़ करे और तुम से शैतान की अपवित्रता दूर कर दे और ताकि तुम्हारे दिलों की ढारस बंधाए और इस के द्वारा तुम्हारे पैर जमा दे।[18]

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم
مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ
الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ
بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾

12. उस समय तुम्हारा रब फ़रिश्तों पर वह्‌य कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम ईमान वालों को साबित कदम (जमाए) रखना।[19] मैं क़ाफ़िरों के दिलों में रोब डाले देता हूँ, तो तुम उन की गर्दनों पर चोट लगाओ और उन की एक एक उंगली पर चोट लगाओ।[20]

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ
سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ
الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

13. यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। और जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करे तो अल्लाह उस को कड़ी सज़ा देने वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

14. यह है सज़ा तुम्हारी, तो चखो इस का मज़ा। और काफ़िरों के लिए आग की यातना है।[21]

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

13. अर्थात काफ़िरों को।

14. मुसलमानों ने अल्लाह तआला से मदद के लिए दुआ की थी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात भर दुआ में लीन रहे और सुबह रणक्षेत्र में भी आप की ज़बान पर ये शब्द थे।

"ख़ुदाया जो वादा तूने मुझ से किया है उसे पूरे कर और वह चीज़ हमें प्रदान कर जिस का तूने वादा किया है। ख़ुदाया अगर इस्लाम स्वीकार करने वालों की यह मुट्ठी भर जमाअत आज विनष्ट हो गई तो फिर तेरी इबादत (उपासना) न होगी"। (मुस्लिम किताबुलजिहाद)

15. अर्थात् फ़रिश्तों के उतरने की जो ख़बर तुम्हें दी गई थी उस का यह मतलब नहीं था कि फ़रिश्ते आ कर जंग लड़ेंगे और तुम को न काफ़िरो का मुक़ाबला करना है और न अपनी जानों को ख़तरे में डालना है। बल्कि इस का मतलब तुम को यह ख़ुशख़बरी और यह सुभ सूचना देनी थी कि अगर तुम काफ़िरों के मुक़ाबले में डट गए और लड़ने और जान लुटाने के लिए तैयार हो गए तो इस नाज़ुक मौके पर तुम्हें साबित क़दम अर्थात तुम्हें जमाए रखने, तुम्हारा हौसला बढ़ाने और तुम्हारे वार और तुम्हारी दी जाने वाली चोटों को कारी बनाने में वे तुम्हारी सहायता करेंगे। जैसा कि आयत १२ में स्पष्ट किया गया है। और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से बहुत बड़ी मदद थी । क्यों कि जिस फ़ौज के हौसले बुलन्द हों और वह जान की बाज़ी लगाने पर तुल गई हो उस को कोई मात नहीं दे सकता । यही कारण है कि बद्र की जंग में मुसलमान जब कि उन के और काफ़िरों के बीच एक और तीन का औसत था, विजय पा गए। लेकिन अगर फ़रिश्तों के अवतरण का उद्देश्य स्वयं काफ़िरों से लड़ना होता तो उस के लिए एक फ़रिश्ता ही काफ़ी हो जाता। मगर अल्लाह तआल का यह नियम नहीं है। सत्य और असत्य, हक़ और बातिल की कश्मकश दोनों ग्रुपों के लिए कड़ी परीक्षा लिए हुए होती है। असत्य प्रेमियों को अपनी ग़लत एवं बुरी भावनाओं की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है और सत्य स्वीकार करने वालों को अपने जौहर दिखाने का । मगर चूँकि सत्य स्वीकार करने वाले तादाद में कम और कमज़ोर संसाधान की दशा में होते हैं। इस लिए अल्लाह तआला फ़रिश्तों द्वारा उन की सहायता करता है। और जहाँ तक अल्लाह की सहायता का मामला है वह हक़ (सत्य) को मान लेने और फिर उस पर जमे रहने वालों ही के साथ होती है। चाहे उन की संख्या कम हो या अधिक।

16. मतलब यह कि अगर यह ख़ुशख़बरी न दी जाती तो भी तुम्हें संतोष रखना चाहिए था कि अल्लाह की मदद ज़रुर आएगी और मदद जब भी आती है अल्लाह ही की तरफ़ से आती है। फ़रिश्ते ख़ुद किसी की मदद नहीं करते बल्कि जब अल्लाह का हुक्म होता है तो फ़रिश्ते मदद के लिए पहुँच जाते हैं।

17. यह उस रात की घटना है जिस की सुबह को जंग हुई। यह रात बड़ी बेचैनी भय और आन्तक की रात थी। ज़ाहिर है ऐसे मौक़ो पर नींद उड़ जाया करती है इस लिए बद्र की रात को गहरी नींद का तो सवाल ही नहीं था अलबत्ता थोड़ा बहुत ऊँग लेना ज़रूरी था ताकि सुबह ताज़ा दम हो कर लड़ सकें। अल्लाह तआला ने इस अवसर पर ईमान वालों पर ऊँग तारी (हावी) कर दी जिस से उन का भय और आन्तक भी जाता रहा और सुबह ताज़ा दम हो कर वे लड़ने योग्य हो गये।

18. बद्र की रात मुसलमान पानी के लिए परेशान थे। अल्लाह तआला ने बरिश बरसाई जिस से कई तरह के लाभ हासिल हुए। सफ़र के कारण शरीर गर्द से अटा था जिसे साफ़ करने के लिए नहाने की आवश्यकता थी और इस से अधिक आवश्यकता वुज़ू और तहारत (पाकी) के लिए थी। मुसलमान एक खुले मैदान में पड़े थे। इस लिए बारिश ने उन्हें नहला कर साफ़ सुथरा कर दिया। और उन्होंने हौज़ बना कर पानी जमा भी कर लिया। बारिश का दूसरा लाभ यह हुआ कि शैतानी ख़याल और भ्रम दूर हो गए क्यों कि पानी न मिलने से शैतान दिलों में तरह तरह के ख़यालात पैदा कर रहा था। ख़ास तौर से यह ख़याल कि परिस्थिति मुसलमानों के अनुकूल नहीं है । तीसरा लाभ यह हुआ कि बारिश ने ताज़गी पैदा कर दी और मुसलमानों ने इसे अल्लाह की मदद का चिन्ह समझा जिस से उन के दिल मजबूत हो गए। चौथे यह कि मुसलमान जिस जगह ठहरे थे वहाँ रेत बारिश के कारण जम गई इस लिए पैर जमने लगे। इस तरह बारिश मुसलमानों के पक्ष में इतनी लाभदायक सिद्ध हुई कि उस ने जंग का नक़्शा ही बदल दिया। दूसरी तरफ़ यही बारिश काफ़िरों के लिए हानिकारक सिद्ध हुई इस लिए कि वे जिस जगह ठहरे थे वहाँ कीचड़ ही कीचड़ हो गया और लश्कर के लिए चलना और पैर जमाना मुश्किल हो गया।

19. यह वह काम है जो फ़रिश्तों के सुपूर्द किया गया था। अर्थात् ईमान वालों का हौसला (Morale) बुलन्द रखना ताकि वे काफ़िरों का डट कर मुक़ाबला कर सकें। रही यह बात कि फ़रिश्ते ईमान वालों का हौसला बुलन्द रखने में किस तरह सहायक होते हैं तो यह ग़ैब (परोक्ष) से सम्बन्ध रखने वाली बात है जिस के जानने का हमारे पास कोई साधन नहीं है अत: इतनी बात समझ लेना हमारे लिए काफ़ी है कि जिस तरह शैतान द्वारा भ्रमित करने के फ़लस्वरुप आदमी के क़दम डगमगाने लगते हैं उसी तरह फ़रिश्तों के संकेतों एवं प्रेरणा के फलस्वरुप पैर जमने लगते हैं।

20. इस का मतलब यह नहीं कि फ़रिश्तों को काफ़िरों की गर्दन पर तलवार चलाने का आदेश दिया गया था। अगर ऐसा होता तो उन की उंगलियों पर चोट करने का हुक्म नहीं दिया जाता बल्कि फ़रिश्तों को गर्दन और उंगलियों पर चोट करने का हुक्म दिया गया था। क़ुर्आन के शब्द فَاضْرِبُوا فَوقَ الاَعْنَاقِ ''फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल् आनाक़'' का अर्थ गर्दन मारने के नहीं बल्कि गर्दनों के उपर चोट करने के हैं । यह वार अथवा यह चोट ऐसा ही ग़ैबी हक़ीक़त (अदृश्य वास्तविकता) है जिस तरह कि फ़रिश्तों का ईमान वालों को साबित क़दम (दृढ़) रखना । अर्थात इस का सम्बन्ध अन्दरुनी मनोभाव से है न कि बाहरी क्रिया से फ़रिश्तों के गर्दनों पर चोट करने का यह नतीजा निकला कि उन की गर्दनें मुसलमानों की जद में आसानी से आ गई और उंग्लियों पर चोट करने का नतीजा यह निकला कि उन की पकड़ ढीली पड़ गई और वे मुसलमानों पर मजबूत हाथों से तलवार न चला सके।

21. अर्थात दुनिया में यह सज़ा तुम्हें मिली कि फ़रिश्तों की मार तुम पर पड़ी और अपमानित हो कर रह गए। लेकिन मामला यहीं समाप्त नहीं हुआ बल्कि आख़िरत की सज़ा अभी बाक़ी है क्यों कि हर काफ़िर को दोज़ख़ (नर्क) में जा कर आग की सज़ा भुगतनी है।

बद्र की जंग का नक़्शा

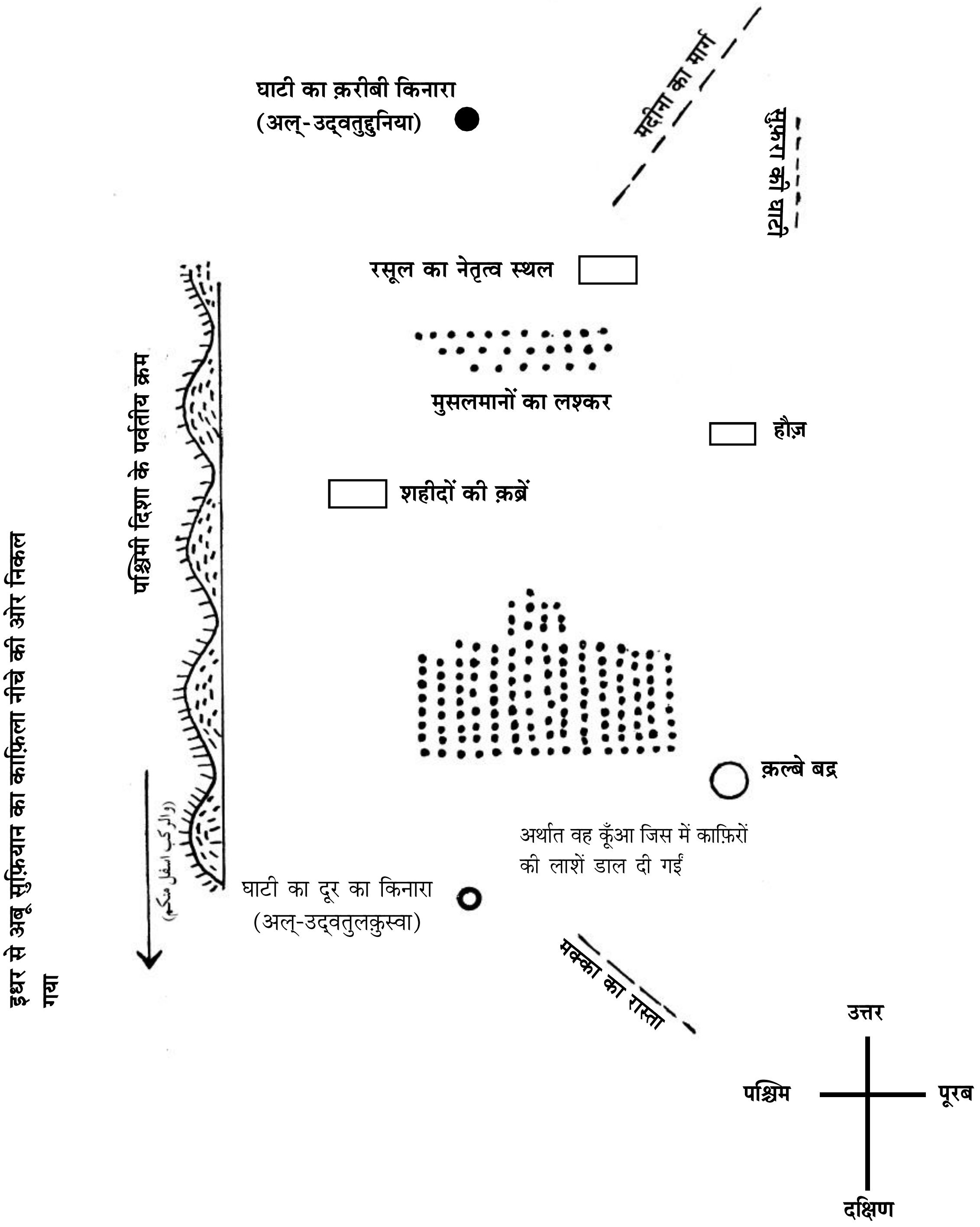
घाटी का क़रीबी किनारा
(अल्-उद्वतुद्दुनिया)
मदीना का मार्ग
सुफ़ैरा की घाटी
रसूल का नेतृत्व स्थल
मुसलमानों का लश्कर
हौज़
शहीदों की क़ब्रें
पश्चिमी दिशा के पर्वतीय क्रम
इधर से अबू सुफ़ियान का क़ाफ़िला नीचे की ओर निकल गया
(والركب اسفل منكم)
क़ल्बे बद्र
अर्थात वह कूँआ जिस में काफ़िरों
की लाशें डाल दी गईं
घाटी का दूर का किनारा
(अल्-उद्वतुलक़ुस्वा)
मक्का का रास्ता
उत्तर
पश्चिम
पूरब
दक्षिण

15. ऐ ईमान वालो ! जब एक लश्कर की सूरत में तुम्हारा काफ़िरों से मुक़ाबला हो तो उन्हें पीठ न दिखाओ ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا
فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

16. और जो कोई मुक़ाबले के दिन पीठ दिखाएगा सिवाय इस के कि वह जंगी चाल के तौर पर ऐसा करे, या (अपने ही) किसी (फ़ौजी) गिरोह से मिलना चाहता हो तो वह अल्लाह के प्रकोप में घिर जाएगा। और उस का ठिकाना जहन्नम है। और वह बहुत बुरी जगह है पहुँचने की।[22]

وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ
أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ
وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

17. वास्तव में तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया और (ऐ पैग़म्बर) जब तुम ने ख़ाक (धुलि) फ़ेंकी तो तुम ने नहीं फ़ेंकी बल्कि अल्लाह ने फ़ेंकी [23]। और यह इस लिए हुआ कि अल्लाह ईमान वालों को एक बेहतरीन परीक्षा से गुज़ार दे। निश्चय ही अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ
وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ
مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

18. यह तो हो चुका और अल्लाह काफ़िरों की चालों को कमज़ोर करने वाला है।[24]

ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾

19. अगर तुम फ़ैसला चाहते थे तो लो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ गया।[25] अब बाज़ आ जाओ तो तुम्हारे पक्ष में अच्छा है और अगर तुम ने फिर वही किया तो हम भी वही करेंगे [26] और तुम्हारा जत्था चाहे कितना ही अधिक हो तुम्हारे कुछ काम न आएगा और अल्लाह ईमान वालों के साथ है।[27]

إِن تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِن تَنتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۖ وَإِن تَعُودُوا نَعُدْ وَلَن تُغْنِيَ عَنكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ
كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

20. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करो और उस से मुँह न मोड़ो जब कि तुम सुन रहे हो।[28]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا
عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾

21. और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्हों ने कहा, हम ने सुना, हालांकि वे सुनते कुछ नहीं हैं।[29]

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

22. अल्लाह के नज़दीक बदतरीन जानवर वे बहरे और गूँगे लोग हैं जो अक़्ल (बुद्धि) से काम नहीं लेते।[30]

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

22. इस्लाम अपने साहसी और जाँबाज़ सिपाही तैयार करना चाहता है जो अल्लाह को लक्ष्य बना कर उस की राह में केवल आगे बढ़ना जानते हैं। इस लिए उस के शब्दकोष में पराजय और फ़रार जैसे शब्द हैं ही नहीं। क़ुर्आन उन लोगों को कड़ी धमकी सुनाता है जो काफ़िरों से ठीक मुक़ाबले के समय पीठ फेरें। और हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस को सात विनाशकारी गुनाहों में से एक बताया है।

وَالتَّوَلّٰى يَوْمَ الزَّحْفِ

(مسلم کتاب الایمان)

''और मुक़ाबले के दिन पीठ फेरना सात विनाशकारी गुनाहों में से है।'' (मुस्लिम किताबुल ईमान)

अलबत्ता जैसा कि आयत में बयान हुआ दो सूरतें ऐसी हैं जो फ़रार की परिभाषा में नहीं आती एक यह कि जंगी चाल के तौर पर आदमी पीछे हट जाए और फिर भरपूर हमला करे। और दूसरी यह कि युद्ध स्थल के निकट कोई दूसरी फ़ौजी टुकड़ी मौजूद हो जिस में शामिल हो कर मुक़ाबला करना जंगी मसलहत का तक़ाज़ा हो।

23. बद्र में जब युद्ध शुरु होने को हुआ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुट्ठी भर ख़ाक (रेत) शाहतुलवजुह (मुँह काला हो) कह कर काफ़िरों के लश्कर की तरफ़ फेंकी और साथ ही मुसलमान काफ़िरों पर टूट पड़े। नतीजा यह कि काफ़िरों के बड़े बड़े लीडर मारे गए और वे बुरी तरह पराजित हुए। यह घटना सीरत इब्ने हिशाम (Vol.II Page 268) पर अंकित है। क़ुर्आन का इशारा इसी घटना की तरफ़ है। मतलब यह कि मुसलमानों की चोटों को कारी बनाना और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फेंकी हुई ख़ाक़ (धूल) काफ़िरों की आँखों में झोंक देना अल्लाह ही का काम था। इस लिए इस जंग में मुसलमानों को जो कामयाबी हुई वह अल्लाह ही की मदद से हुई।

24. अर्थात् बद्र की जंग में तो काफ़िरों को मात हो गई इस के बाद भी अगर उन्हों ने चाल चली तो अल्लाह उन की हर चाल को कमज़ोर बना देगा। और यह सत्य है कि इस के बाद काफ़िरों ने बड़ी बड़ी चालें चलीं और तरह तरह की साज़िशें कीं लेकिन अल्लाह तआला ने उन की तमाम चालों और साज़िशो को नाकाम बना दिया। और इस्लाम के उभरते इन्किलाब को वे हरगिज़ रोक न सके।

25. इस युद्ध के माध्यम से बहुदेववादी हक़ और बातिल (सत्य और असत्य) का फ़ैसला चाहते थे और उन के सरदार अबू जहल ने दुआ की थी कि ख़ुदाया हम में से जो समूह रिश्तों को काटने के अपराध का सर्वाधिक बड़ा अपराधी हुआ है उसे तू नष्ट कर दे। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस जंग में सफ़ल और बहुदेववादियों को असफ़ल करने का फ़ैसला फ़रमा दिया कि मुसलमान हक़ पर हैं और बहुदेववादी बातिल (असत्य) पर ।

26. यह बहुदेववादियों को नसीहत भी है और तंबीह भी। नसीहत यह कि ख़ुदा के इस फ़ैसले को जो बद्र की जंग में सामने आया है देख लेने के बाद अगर तुम इस्लाम दुश्मनी से बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे ही पक्ष में बेहतर होगा कि अपमान और विनाश से बच जाओगे और तंबीह यह कि अगर तुम ने फिर वही इस्लाम दुश्मनी की राह अपनायी तो हम फिर तुम पर अपना कोड़ा बरसाएंगे।

27. क़ुर्आन की यह भविष्यवाणी शब्द शब्द पूरी हुई। बहुदेवादियों ने इस के बाद भी इस्लाम और उस के पैग़म्बर के विरुद्ध जंगें की । लेकिन उन के बड़े बड़े जत्थे उन के कुछ काम न आए। और उन को मुँह की खानी पड़ी। कुफ़्र और ईमान के बीच लड़ी जाने वाली इन जंगों में से हर जंग में यह ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह की मदद ईमान वालों के साथ है।

28. अर्थात जब अल्लाह और अल्लाह के रसूल की आवाज़ तुम्हारे कानों में पहुँच रही है तो सब कुछ सुनते हुए अवज्ञा करना कितनी ग़लत और कितने बड़े गुनाह की बात है।

29. इशारा यहूदियों की तरफ़ है जो अल्लाह के आदेशों को सुनने के बावजूद अवज्ञा करते रहे वे सुनते थे मगर उन का सुनना स्वीकार करने के अर्थ में नहीं था।

30. अर्थात् जो लोग अपनी बुद्धि से काम नहीं लेते वे सत्य सुनने के लिए बहरे और सत्य कहने के लिए गूँगे बन जाते हैं। ऐसे लोग मनुष्य नहीं बल्कि पशु हैं बल्कि पशुओं से भी बदतर।

पता चला कि दीन का सच्चे मन से अनुपालन करने के लिए आवश्यक है कि आदमी यह समझने का प्रयास करे कि जिस दीन को उस ने स्वीकार किया है उस के तक़ाज़े क्या हैं और ईमान लाने के बाद उस पर कैसा दायित्व आन पड़ा है।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

23. अगर अल्लाह देखता कि इन में कुछ भी भलाई है तो वह निश्चय ही इन्हें सुनने की तौफ़ीक़ (दैवयोग)देता। लेकिन अगर (इस के बग़ैर) इन्हें सुनवाता तो वे इस (भलाई)से बेरुख़ी के साथ मुँह फेर लेते।[31]

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ
وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

24. ऐ ईमान वालो !अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो (अर्थात स्वीकार करो) जब रसूल तुम्हें ऐसी चीज़ की तरफ़ बुलाए जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है [32] और जान लो कि अल्लाह आदमी और उस के दिल के बीच आड़े रहता है [33] और यह भी जान लो कि तुम उसी के समक्ष इकट्ठे किये जाओगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا
دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ
الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

25. और बचो उस फ़ितने से जिस की ज़द में सिर्फ़ वही लोग नहीं आऐंगे जिन्होंने तुम में से ज़ुल्म किया होगा।[34] और यह भी जान रखो कि अल्लाह सज़ा देने में भी बहुत सख़्त है।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ
خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

26. और याद करो वह समय जब तुम थोड़े थे और ज़मीन में कमज़ोर समझे जाते थे। तुम डरते थे कि लोग कहीं तुम्हें उचक न ले जाऐं।[35] फिर अल्लाह ने तुम्हें पनाह दी [36] और अपनी मदद से तुम्हें बल प्रदान किया और अच्छा रिज़्क़ (रोजी) दिया ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ
أَن يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُم
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾

27. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और रसूल के साथ ख़ियानत [37] (विश्वासघात) न करो और न अपनी अमानतों में जानते बूझते ख़ियानत करने लगो।[38]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا
أَمَانَاتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

28. और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश (परीक्षा-सामग्री) हैं।[39] और यह कि अल्लाह ही के पास बहुत बड़ा अज्र (बदला) है।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ
عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

29. ऐ ईमान वालो ! अगर तुम अल्लाह से डरते रहे तो यह तुम्हें फ़ुर्क़ान (सत्य और असत्य को परखने की शक्ति) प्रदान करेगा।[40] और तुम्हारी बुराइयों को तुम से दूर करेगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा।[41] अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला (अनुग्राहक) है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا
وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

31. अर्थात जो लोग बुद्धि से काम नहीं लेते वे सत्य स्वीकार करने से वंचित रहते हैं और उन्हें सुनने और समझने की तौफ़िक़ (दैवयोग) अल्लाह तआला इस लिए नहीं देता कि वे भलाई चाहने वाले नहीं होते। जाहिर है अच्छी पैदावार के लिए केवल बीज का अच्छा होना काफ़ी नहीं है बल्कि ज़मीन का अच्छा होना भी ज़रुरी है। अल्लाह तआला ने उन के स्वाभाव में भलाई को प्रिय रखने की क्षमता रखी थी मगर उन्हों ने अपनी वह क्षमता नष्ट कर दी इस लिए अगर उन को कुछ सुनवाया भी जाए तो वे उस का कोई असर लेने वाले नहीं हैं।

32. अर्थात् रसूल तुम्हें जिस काम के लिए भी बुलाए और जिस चिज़ का भी तुम्हें आदेश दें उस का पालन तुम्हारे लिए सरासर जीवन है। क्योंकि रसूल का हर आदेश हृदय को जगाने और आत्मा को गरमाने वाला होता है। उस के अनुपालन से भलाई की भावना एवं भलमनसाहत प्रस्फुटित होने लगती हैं और मनुष्य के अन्दर में जीवन की लहरें मौजें मारने लगती हैं। जीवन की ताज़गी की यह वह मनोदशा है जो रसूल का अनुपालन करने वाला इस दुनिया में ही महसूस करने लगता है। रही बात आख़िरत (परलोक) की तो वहाँ रसूल का अनुपालन करने वालों ही को अनंत जीवन प्राप्त होगा ।

33. अर्थात् तुम्हें इस बात से डरना चाहिए कि अगर तुम ने अल्लाह और उस के रसूल के किसी आदेश का उल्लंघन किया तो तुम्हारे दिल आज्ञापालन की तरफ़ से विमुख न हो जाएं।

اللّٰه مُقَلِّبُ الْقُلُوْب

(दिलो की हालत बदलने वाला अल्लाह है) वह देखता है कि जब कोई व्यक्ति अवज्ञा पर अवज्ञा किए ही चला जा रहा है तो फिर उस के दिल को अवज्ञा के अनुकूल बना देता है। उस के बाद आज्ञापालन की ओर उस का मन आकृष्ट नहीं होता ।

जानता हूँ सवाब ताअत व ज़ुहद
पर तबीअत इधर नहीं आती !

34. मुराद सामूहिक एवं सामाजिक फ़ितने हैं जिन की आग भड़क उठती है तो फ़िर उस की लपेट में अच्छे और बुरे सब ही आ जाते हैं। इस से बचने के लिए ज़रुरी है कि सोसाइटी की सामूहिक सोच जागृत हो और वे जब किसी फ़ितने को उठता हुआ देखें तो उसी समय उस को दबाने की चेष्टा करें और आग लगाने वालों का हाथ फ़ौरन पकड़ लें। विशेष रुप से जंगी हालत में अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है कि सोसाइटी के अन्दर किसी कोने और अतरे से भी कोई फ़ितना सर न उठा सके वरना ऐसे नाज़ुक मौक़ों पर मुसलमानों की एकता छिन्न भिन्न हो सकती है।

इस हिदायत पर जब तक मुसलमान अमल करते रहे उन के अन्दर कोई फ़ितना सर न उठा सका किन्तु बाद के दौर में जब मुस्लिम समाज में हर तरह के लोग शामिल हो गए और इस उसूली हिदायत का लिहाज़ उस का आदर न कर सके तो तरह तरह के फ़ितने उठ ख़ड़े हुए और पूरे मुस्लिम समाज को इन से दो चार होना पड़ा।

35. जब तक मुसलमान मक्का में रहे उन का यही हाल रहा ।

36. अर्थात् मदीने में जहाँ मुसलमान हिजरत (Migrate)कर के चले गए थे।

37. ख़ियानत से मुराद बेवफ़ाई और विश्वासघात है। मतलब यह कि अल्लाह और उस के रसूल के साथ वफ़ादारी का जो प्रण तुम ने किया है उस पर क़ायम रहो और कोई ऐसा काम न करो जिस से तुम्हारी वफ़ादारी संदिग्ध हो। अल्लाह और उस के रसूल से वफ़ादारी का इम्तिहान विशेष रुप से उस समय होता है जब कि कुफ्र और इस्लाम के बीच युद्ध की स्थिती बन जाती है।

38. यहाँ अमानतों से अभिप्रेत ज़िम्मेदारियाँ हैं और उन में ख़ियानत करने का मतलब यह है कि आदमी उन ज़िम्मेदारियों की अदायगी से बेपरवाह हो जाए या ग़ैर ज़िम्मेदारी का परिचय दे। अमानतों का क्षेत्र व्यापक है जिस की व्याख्या सूरह निसा नोट 123 में गुज़र चुकी। यहाँ ख़ास तौर से उन ज़िम्मेदारियों को सच्चे मन और वफ़ादारी के साथ अदा करने की हिदायत की गई है जो मुसलमानों के सामाजिक मामलों से सम्बन्धित हों।

39. इन्सान के ख़ियानत (विश्वासघात) में लिप्त होने का बड़ा कारण माल और औलाद की बढ़ी हुई मुहब्बत है इस लिए इन की यह वास्तविकता उजागर कर दी गई हैं कि यह चीज़ें सांसारिक जीवन में परीक्षा सामाग्री हैं। इन के द्वारा यह जाँच कर देखना है कि कौन माल और औलाद के प्रेम में जकड़ कर अल्लाह और उस के रसूल के साथ बेवफ़ाई और विश्वासघात करता है। और कौन अल्लाह और रसूल के साथ सच्ची वफ़ादारी का परिचय देता है।

40. अर्थात् खरे और खोटे के अन्तर को समझने और परखने की क्षमता पैदा करेगा फिर तुम्हें जीवन के हर मोड़ पर नज़र आयेगा कि साफ़ और सीधा रास्ता कौन सा है और हर नाज़ुक मौक़े पर तुम्हारी अंतर्दृष्टि (बसीरत) हक़ (सत्य) की तरफ़ तुम्हारी रहनुमाई करेगी।

ज़िन्दगी के मामलों में ईमान वालों को क़दम क़दम पर नई

नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है और वे तरह तरह के फ़ितनों से दोचार होते रहते हैं। ऐसे मौक़ों पर क़ुर्आन और सुन्नत की सिद्धान्तिक मार्ग दर्शन की रौशनी में Step लेने की और उपाय करने की ज़रुरत होती है। अन्तर्दृष्टि की सही परख ही कार्य पद्धति का निर्धारण करती है और यह अन्तर्दृष्टि एवं यह परख तक़वा (परहेज़गारी) के फलस्वरूप पैदा होती है। इसी अन्तर्दृष्टि और इसी परख शक्ति को फ़ुरक़ान कहा गया है।

41. आदमी का जीवन अगर ईश-भय एवं परहेज़गारी का हो तो अल्लाह तआला उस की बुराइयाँ उस से दूर फ़रमाता है। अर्थात गुनाहों के दाग़ मिटा देता है और उस को सुधार लेने की तौफ़िक़ (दैवयोग) देता है। इस तरह उस के जीवन में बदलाव झलकने लगता है। और जो छोटे छोटे गुनाह उस से हो गए हैं उन को अल्लाह अपनी उदार अनुग्रह से क्षमा कर देता है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

और (ऐ पैग़म्बर वो समय याद करो) जब काफ़िर तुम्हारे विरुद्ध षडयंत्र रच रहे थे कि तुम्हें क़ैद करें, या वध कर डालें या देश निकाला दे दें। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह उन का तोड़ कर रहा था। और अल्लाह बेहतर तदबीर करने वाला है।(अल-क़ुर्आन)

30. और (ऐ पैग़म्बर वो समय याद करो) जब काफ़िर तुम्हारे विरुद्ध षडयंत्र रच रहे थे कि तुम्हें क़ैद करें, या वध कर डालें या देश निकाला दे दें।[42] वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह उन का तोड़ कर रहा था। और अल्लाह बेहतर तदबीर करने वाला है।[43]

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ
أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ
خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾

31. और जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती थीं तो कहते थे हम ने सुन लिया। अगर हम चाहें तो ऐसा कलाम (ऐसी वाणी) हम भी बना सकते हैं। ये तो बस ग़ुज़रे हुए लोगों की कहानियाँ हैं।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ
لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

32. और जब उन्होंने कहा था कि ऐ अल्लाह। अगर यह वास्तव में हक़ (सत्य) है तेरी ओर से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या हम पर कोई और दुखदायी अज़ाब (यातना) उतार ।[44]

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ
فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

33. और अल्लाह उन पर अज़ाब नाज़िल करने वाला न था जब कि तुम (ऐ पैग़म्बर) इन के बीच उपस्थित थे।[45] और न अल्लाह इस स्थिति में उन्हें अज़ाब (यातना) देने वाला है जब कि वे इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) कर रहे हों।[46]

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ
مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

34. लेकिन अब क्यों न अल्लाह उन्हें अज़ाब दे जब कि वे मस्जिदे-हराम (आदरणीय मस्जिद) से रोक रहे हैं हालाँकि वे इस के मुतवल्ली (व्यवस्थापक) नहीं हैं। इस के व्यवस्थापक तो मुत्तक़ी (परहेज़गार लोग) ही हो सकते हैं।[47] मगर इन में से बहुतेरे लोग नहीं जानते।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

35. अल्लाह के घर के पास उन की नमाज़ सीटियाँ बज़ाने और तालियाँ पीटने के सिवा कुछ नहीं [48] तो अब चखो अज़ाब का मज़ा उस कुफ़्र (इन्कार) के बदले में जो तुम करते रहे हो।[49]

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

36. काफ़िर अपना माल अल्लाह की राह से रोकने के लिए ख़र्च कर रहे हैं। ये लोग ख़र्च करेंगे फिर इन के लिए ये हसरत (पछतावे) का सामान बनेगा। फ़िर ये पराजित होंगे।[50] और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे जहन्नम की तरफ़ हाँके जाएेंगे।[51]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ
يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

42. इशारा है क़ुरैश के उन षडयंत्रों की ओर जो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध मक्का में कर रहे थे। दारुन्नदव: में उन के सरदारों का जो सम्मेलन हुआ था। उन में बहुत से सुझाव विचार करने के लिए आए थे। कोई कह रहा था आप को बन्दी बना लिया जाए और कोई कह रहा था आप को देश से निष्कासित कर दिया जाए। अन्तत: आप का वध करने पर सब की सहमति हुई। और यह वध कैसे किया जाए इस की नीति इस तरह तय हुई कि हर क़बीले में से एक एक नौजवान चुना जाए और वे सब मिल कर एक साथ आप पर हमला करें और वध कर दें। इस तरह आप के ख़ून में सब ही शामिल हो जाऐंगे और बनी हाशिम सब से बदला नहीं ले सकेंगे। इस लिए उन्हें ख़ूँ बहा (प्राण मूल्य) लेने पर राज़ी होना पड़ेगा। यह सुझाव अबू जहल का था। और इस के अनुसार एक रात सब ने मिल कर आप के घर का घेराव कर लिया । अल्लाह तआला ने आप को इस से सूचित किया । इस लिए आप घेराव से पहले ही निकल चुके थे अत: उन का षडयंत्र नाकाम हो कर रह गया।

आप घर से ख़ामोशी के साथ निकले थे। सौर की ग़ुफ़ा (ग़ारे-सौर) में पहुँच कर आप ने वहाँ तीन दिन पनाह ली। इस के बाद मदीना हिजरत कर गए। यहीं से हिजरी सन शुरु होता है। (यह घटना सीरत इब्ने हिशाम में विस्तार से दर्ज है। (Vol II page 92)

43. क़ुरैश ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वध करने की साज़िश की थी लेकिन अल्लाह तआला ने ऐसी तदबीर की कि क़ुरैश आप का बाल भी बाँका न कर सके। और आप सलामती के साथ मदीना पहुँच गए यह हिजरत मुसलमानों के लिए लाभदायक सिद्ध हुई और उन के लिए प्रभुत्व और सफ़लता की राहें खुलती गईं।

44. बुख़ारी में है कि यह बात क़ुरैश के सरदार अबू जहल ने कही थी और दूसरी रिवायतों (उल्लेखों) में नज़्र बिन हारिस का नाम भी आता है। यह वास्तव में दुआ नहीं थी बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुश्मनी में वे भावनाओं के वशीभूत ऐसे शब्द ज़बान से निकालते थे।

45. अर्थात् जब तक अल्लाह का रसूल मक्के में मौजूद था, अज़ाब नहीं आ सकता था। क्यों कि अल्लाह तआला किसी बस्ती पर अज़ाब तभी भेजता है जब कि वह बस्ती रसूल के अस्तित्व को सहन करने के लिए तैयार न हो और रसूल उस बस्ती से हिजरत कर चुका हो।

46. अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिजरत कर जाने के बाद उन के अज़ाब से बचने की एक ही सूरत रह गई है और वह यह कि वे अल्लाह से माफ़ी चाहें दूसरे शब्दों में वे इस्लाम स्वीकार कर लें।

47. अर्थात् ख़ाना-ए-काबा के मुतवल्ली (व्यवस्थापक) होने का हक़ केवल उन्हीं लोगों को पहुँचता है जो ख़ुदा से डरने वाले हों। और उस से डरने वाले वही लोग हो सकते हैं जो उस के ऐकेश्वर होने को मानने वाले और उस की हिदायत पर ईमान लाने वाले हों। बहुदेववादी और काफ़िर उस के मुतवल्ली किस तरह हो सकते हैं। जब कि उस घर के निर्माण का उद्देश्य ही एक ख़ुदा की बन्दगी और एकेश्वरवाद की दअवत को सर्व साधारण में फ़ैलाना था। और इस का निर्माणकर्ता (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) भी शुद्ध रुप से एकेश्वरवाद का नेतृत्व करने वाला था।

मतलब यह है कि आदरणीय मस्जिद (मस्जिदे-हराम) पर बहुदेववादियों ने जो अवैध क़ब्ज़ा कर रखा है और मुसलमानों को उस की ज़ियारत और उस में इबादत से रोक रहे हैं तो वे अपने इस ज़ुल्म और ज़्यादती के कारण अज़ाब (प्रकोप) के उचित रुप से भागीदार हो गए हैं इस लिए अगर अल्लाह मुसलमानों के हाथों उन को विनष्ट कर के आदरणीय मस्जिद पर से उन के अधिपत्य को समाप्त कर दे तो यह इन्साफ़ के बिल्कुल अनुकूल होगा।

48. व्याख्या के लिए देखिए सूरह माऊन नोट ५।

49. बद्र में काफ़िरों को चपत लगी वह अल्लाह के अज़ाब ही की एक क़िस्त थी। ज़रूरी नहीं कि अल्लाह का अज़ाब तूफ़ान और ज़लज़ले के रुप में ही आए। वह जंग की तबाहियों के रुप में भी आ सकता है। और यह सत्य है कि बद्र से ले कर हुनैन तक जो जंगे लड़ी गईं उन में तबाही काफ़िरों ही के हिस्से में आई।

50. अर्थात् कुफ़्र और इस्लाम की जंग में काफ़िरों के लिए पराजय निश्चित है। वे इस्लाम की राह रोकने के लिए आज एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं और अपना माल अन्धा धुन्ध ख़र्च कर रहे हैं लेकिन इस का परिणाम उन के पक्ष में सिवाय पछतावे के और कुछ न निकलेगा।

51. अर्थात् जो लोग अन्तिम समय तक कुफ़्र पर दृढ़ रहेंगे उन को नरक की ओर ढकेल दिया जाएगा।

❖❖❖❖❖❖❖❖

37. ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग कर दे और नापाक को एक दूसरे से मिला कर इकट्ठा करे और फिर सब को जहन्नम में डाल दे।[52] यही लोग तबाह होने वाले हैं।

لِيَمِيزَ اللّٰهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهٗ
عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

38. इन काफ़िरों से कहो, अगर बाज़ आ जाऐं तो जो कुछ पहले हो चुका उस के लिए उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा।[53] लेकिन अगर उन्हों ने पुनः वही नीति अपनाई तो पिछली क़ौमों की घटनाऐं गुज़र चुकी हैं।[54]

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ
وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۸﴾

39. और उन से लड़ो [55] यहाँ तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन सारा का सारा अल्लाह के लिए हो जाए।[56] फिर अगर वे बाज़ आ जाऐं तो अल्लाह उन के कर्मों को देखने वाला है।[57]

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾

40. और अगर वे मुँह मोड़े तो जान रखो अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है। सब से अच्छा संरक्षक और सब से अच्छा सहायक !

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى
وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۴۰﴾

41. और जान लो कि जो कुछ माले-गनीमत तुम ने प्राप्त किया हो [58]उस का पाँचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए और (रसूल के) नातेदारों, यतीमों, मिस्कीनों (मुहताजों) और मुसाफ़िरों के लिए है।[59] अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हम ने फ़ैसले के दिन [60] जिस दिन दोनों गिरोह एक दूसरे के सामने हुए थे, अपने बन्दे पर नाज़िल की।[61] और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्य प्राप्त) है।[62]

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَ
لِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ
الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۱﴾

42. उस समय तुम घाटी के निकटतम किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर और काफ़िला तुम से नीचे की तरफ़ था।अगर तुम परस्पर मुक़ाबले की बात तय कर के निकलते तो तुम मीआद (नियति) तक पहुँच न पाते ।[63]लेकिन जो बात होने वाली थी उस को अल्लाह पूरा करना चाहता था।[64] ताकि जिसे विनष्ट होना है वो हुज्जत (प्रत्यक्ष प्रमाण) देख कर विनष्ट हो और जिसे ज़िन्दा रहना है वह हुज्जत (प्रत्यक्ष प्रमाण) देख कर ज़िन्दा रहे।[65] निश्चय ही अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَ
الرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي
الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ لِّيَهْلِكَ
مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۴۲﴾

52. नापाक अर्थात् वे जो बहुदेववाद या अनीश्वरवाद की गन्दगियों में लिप्त रहे और पाक वे जिन को ईमान की पाकीज़गी नसीब हुई।

क़ियामत के दिन अल्लाह तआला काफ़िरों को मोमिनों से अलग कर देगा और फिर हर तरह के काफ़िरों को इकट्ठा कर के गन्दगियों के इस पूरे ढेर को जहन्नम में झोंक देगा।

53. बाज़ आने से मुराद कुफ्र और शिर्क से बाज़ आना है। मतलब यह है कि अगर वे इस्लाम क़ुबूल करते हैं तो इस से पहले उस के विरोध में वे जो कुछ करते रहे हैं उस पर पकड़ नहीं होगी अल्लाह तआला उन को माफ़ कर देगा।

54. अर्थात अगर वे पुन: इन्कार और कुफ्र के रास्ते पर चलते रहे तो अल्लाह की दंड संहिता उन पर भी उसी तरह लागू होगी जिस तरह कि पिछली काफ़िर क़ौमों जैसे आद, समूद और फ़िरऔन आदि पर लागू हो चुकी है।

55. व्याख्या के लिए देखिए सूरह बकर: नोट २६६

56. यहाँ काफ़िरों के साथ जंग जारी रखने का जो आदेश दिया गया है उस के दो महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बयान किए गए हैं। एक यह कि फ़ितने की समाप्ति हो जाए और दूसरा यह कि दीन पूरा का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। इन दोनों बातों का सही भावार्थ निश्चित करने के लिए आवश्यक है कि संदर्भ को निगाह में रखा जाए। ऊपर मक्का के काफ़िरों की मुसलमानों के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाइयों का वर्णन हुआ है । एक यह कि उन्हों ने मुसलमानों के लिए मस्जिद-हराम की राह रोक दी है। वे न उमर: कर सकते हैं और न हज्ज। दूसरे यह कि वे इस्लाम की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपासना स्थल (ख़ाना-ए-काबा) के अवैध व्यवस्थापक (मुतवल्ली) बन बैठे हैं। और उस का इस्तेमाल बहुदेववादी कृत्यों, रस्मों, एवं पूजा पाठ के लिए कर रहे हैं। और तीसरे यह कि अल्लाह की राह इस्लाम से लोगों को रोकने के लिए अपनी दौलत ख़र्च कर रहे हैं अर्थात जंग के उद्देश्य के लिए अपने सामान आदि ख़र्च कर रहे हैं। और सूरह बकर: आयत १९१ में जहाँ फ़ितना के बारे में फ़रमाया गया है कि वह क़त्ल से भी ज़्यादा संगीन है,वहाँ काफ़िरों के उस अन्याय और अत्याचार का वर्णन हुआ है कि उन्होंने मुसलमानों को मक्का से हिजरत कर जाने पर मजबूर किया। दूसरे शब्दों में वह मुसलमानों के अस्तित्व को मक्का की पावन धरती पर सहन करने को तैयार नहीं हैं। इस तरह की बात सूरह बक़र: आयत 217 में भी बयान हुई है। गोया उन का असल जुर्म शिर्क था जिस के वह अपराधी हो रहे थे और इस जुर्म में उन की आतंकित करने वाली अतिवादी कार्रवाइयों ने और भी वृद्धि कर दी थी इस लिए उन के शिर्क (बहुदेववादी आस्था) को फ़ितना कहा गया है।

रहा दूसरा उद्देश्य आर्थात् ''दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए'' तो यह सकारात्मक (Positive) बात है और इस में दीन से तात्पर्य एकेश्वरवादी व्यवस्था अर्थात इस्लाम है। जिस को क़ुबूल करने की दअवत ऊपर आयत ३८ में काफ़िरों को दी गई है और दीन पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए का मतलब ऐकेश्वरवादी व्यवस्था (दीने-तौहीद) स्थापित हो और दूसरा कोई दीन भी यहाँ बाक़ी रहने न पाए। क्यों कि इस ज़मीन को अल्लाह के घर की ज़मीन होने का गौरव प्राप्त है और इस की हैसियत पहले हि से एकेश्वरवाद के केन्द्र (मर्कज़े-तौहीद) की है। अत: इस पवित्र ज़मीन को और इस के इर्द गिर्द के क्षेत्र को बहुदेववादी धर्मो से पाक कर के वहाँ एकेश्वरवादी व्यवस्था (दीने-तौहीद) को पूर्ण रुप से ग़ालिब करना आवश्यक है। मतलब यह है कि इस क्षेत्र में उन ही लोगों को आबाद होने दिया जाए जो इस दीन के मानने वाले हों और उन पर शासन केवल इस्लाम का हो।

आयत का यह भावार्थ जो हम ने बयान किया क़ुर्आन के अनुकूल होने के अलावा इस का अनुमोदन हदीस, रिवायत और टीकाकारों (मुफ़स्सिरीन) के कथनों से भी होता है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اُمِرْتُ اَنْ اُقَاتِلَ النَّاسَ حَتّٰى يَقُولُوا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَاِذَا

قَالُوا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَصِمُوا مِنِّى دِمَائَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ اِلَّا

بِحَقِّهَا وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللّٰهِ۔ (مسلم کتاب الایمان)

'' मुझे लोगों से (अर्थात अरब के बहुदेववादियों से) लड़ने का हुक्म दिया गया है जब तक कि वे लाइलाहा इल्लल्लाह न कहें। जब वे लाइलाहा इल्लल्लाह कहेंगे तो उन के ख़ून और माल सुरक्षित होंगे, सिवाय इस के कि हक़ (सत्य) के लिए किसी के ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई करना पड़े।' रहा उन का हिसाब तो वह अल्लाह के जिम्मे है।'' (मुस्लिम किताबुल ईमान)

और जहाँ तक रिवायतों (उल्लेखों) की बात है, उर्वा बिन जुबैर ने फ़ितना की व्याख्या मक्का के अत्याचार और हिंसा एवं दमन से की है जिस के कारण मुसलमानों को हिजरत करना पड़ी और इब्ने अब्बास, मुजाहिद, हसन कतादा और दूसरे महापुरुषों ने फ़ितना से शिर्क मुराद लिया है।(तफ़सीर तबरी जिल्द २ पृष्ट ११३ और जिल्द ८ पृष्ट १६२) रहे क़ुर्आन के टीकाकार तो उन्हों ने भी या तो पहले कथन को

वरीयता दी है या दूसरे कथन को। उदाहरणार्थ प्रसिद्ध टीकाकार इब्ने ज़रीर तबरी (मृत्यु सन 310 हिजरी) लिखते है:

فـقاتِلُوهُمْ حَتَّى لا يكون شِرک وَلَا يُعْبَدُ اِلَّا اللّٰهُ ، وحده لا شريک لَهٗ فيـرنفِعَ البلاءُ عن عباد اللّٰه من الارض وهو الفتنةُ ويكونَ الّذِينُ كُلَّه للّٰه يقول وحتى تكون الطاعةُ وَالعبادةُ كُلُّهَا للّٰه خالصةً دون غيرهِ۔

(تفسیر طبری ج۹ ص ۱۶۲)

> ‘इन से जंग करो यहाँ तक कि शिर्क बाक़ी न रहे और अल्लाह जो अकेला अल्लाह है और उस का कोई साझीदार नहीं, की इबादत की जाने लगे। इस तरह अल्लाह के बन्दों को ज़मीन में जिस अज़माईश से दो चार होना पड़ रहा है वह अर्थात फ़ितना उठ जाए और दीन पूर्ण रुप से अल्लाह का हो जाए का मतलब यह है कि जंग तब तक जारी रखना चाहिए जब तक कि आज्ञा पालन और उपासना पूरी तरह अल्लाह के लिए ख़ास न हो जाए (तफ़्सीर तबरी जिल्द ९ पृष्ट १६२)

अलबत्ता कुछ समकालीनों ने दीन को जीवन व्यवस्था या दासता अथवा आज्ञा पालन की व्यवस्था के अर्थों में लिया है और इस हुक्म को कि दीन पूरा का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए हरम की सरज़मीन के लिए ख़ास न समझते हुए इस्लाम के राजनीतिक वर्चस्व और अल्लाह के क़ानून को लागू करने और प्रचलित करने के अर्थ में माना है। और यह व्याख्या की है कि बहुदेववादी अपने अक़ीदे पर क़ायम रह सकते हैं मगर उन्हें ख़ुदा की ज़मीन पर बातिल क़ानूनों को जारी करने का हक़ नहीं होगा । इस आयत का यह भावार्थ कुछ दूसरे कारणों के अलावा इस लिए भी सही नहीं है कि आयत में यह कहने पर बस नहीं किया गया है कि दीन अल्लाह के लिए हो जाए बल्कि यह हुक्म ‘‘कुल्लिही’’ ‘‘अर्थात पूरा का पूरा दीन’’ के पुष्टिकरण के साथ दिया गया है। अगर इसे केवल इस्लामी क़ानून के शासन के अर्थ में लिया जाए तो उस पर पूरे दीन का इतलाक़ (Implement) किस तरह होगा ।

रहा यह सवाल कि फिर इस्लाम ने जो ज़िम्मियों (इस्लामी शासन में रह कर जिज़िया अदा करने वाले ग़ैर मुस्लिमों) को जो सुरक्षा प्रदान की है उस की बुनियाद क्या है तो उस की बुनियाद यह आयत नहीं बल्कि सूरह तौबा की आयत 29 है।

57. बाज़ आने से अभिप्रेत शिर्क (बहुदेववाद) और उस के फ़ितना पैदा करने वाले भावों से बाज़ आना है अगर वे बाज़ आते हैं तो अल्लाह उन के पिछले अपराधों को क्षमा कर देगा और आगे जैसा कुछ वे करेंगे उस को वे देखेंगे।

58. अर्थात् वह धन दौलत और सामग्री जो जिहाद में काफ़िरों से मुसलमानों के हाथ आ जाए।

स्पष्ट रहे कि यहाँ जो हुक्म बयान किया जा रहा है वह चल संपत्ति (Movable Property) का है। रही अचल संपत्ति (Immovable Property)तो उन का हुक्म सूरह हश्र आयत ७ में बयान हुआ है।

59. अर्थात माले-ग़निमत में से सब से पहले उस का पाँचवा हिस्सा (20 प्रतिशत) निकाला जाएगा और उस को उन लोगों में विभाजित किया जाएगा जो इस आयत में बयान हुए हैं।

अल्लाह के लिए है अर्थात अल्लाह के दीन के प्रकाशन, प्रचार और उस की राह में जिहाद के लिए है। रसूल के लिए है का मतलब यह है कि रसूल उस में से अपनी आवश्यकताओं पर ख़र्च कर सकता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हिस्से को मुसलमानों के लाभ और कल्याणकारी कर्मों पर ख़र्च करते रहे और आप के बाद इस के उपयोग के लिए इसी प्रकार के काम हैं।

नातेदारों से अभिप्रेत रसूल के नातेदार हैं। चूँकि आप ने अपने रिश्तेदारों पर ज़कात हराम कर दी थी इस लिए अल्लाह तआला ने नबी के खानदान के ज़रुरतमन्दों की ज़रुरतों को पूरा करने का सामान माले-ग़नीमत से कर दिया।

यतीमों मिसकीनों मुहताजों और मुसाफ़िरों की माले-ग़नीमत से सहायता भी की जा सकती है और उन के लाभ एवं कल्याणकारी कार्यों पर भी ख़र्च किया जा सकता है। इस्लामी शासन जो निति उचित समझे अपना सकती है। मुसाफ़िरों से मुराद वे मुसाफ़िर हैं जो सफ़र की दशा में सहायता के हक़दार हो गए हों यद्यापि कि वे अपने देश में संपन्न हों।

यह तो हुआ ‘‘ख़ुम्स’’ अर्थात् पाचवें हिस्से का उपयोग रहे चार हिस्से (अस्सी प्रतिशत) तो वो मुजाहिदीन में वितरित किये जा सकते हैं। क़ुर्आन ने स्पष्ट रुप से यह हुक्म नहीं दिया है कि यह 4/5 मुजाहिदीन में वितरित किया जाना अनिवार्य है बल्कि केवल 1/5 का हुक्म बयान करने पर बस किया है। इस लिए इस से यह बात निकलती है कि अगर इस्लामी हुकूमत 4/5 को रक्षा सम्बन्धी (Defence) ज़रुरतों और राज्य को सुदृढ़ करने के कामों पर ख़र्च करना चाहती है तो ऐसा कर सकती है। और मौजूदा ज़माने में जब कि जंग के

तौर तरीक़े बिलकुल बदल गए हैं इस की आवश्यकता स्वयं स्पष्ट है। क़ुर्आन के नाज़िल होने के समय में न बाक़ायदा फ़ौज रखी जाती थी और न उन को तनख्वाह दी जाती थी। बल्कि क़बीलाई व्यवस्था होने के कारण उस समय हर व्यक्ति सिपाही हुआ करता था और मोमिन होने की हैसियत से मुजाहिद हथियार भी स्वयं एकत्र करता अथवा रखता था।और जिहाद के लिए अपना माल भी ख़र्च करता था। इस लिए उस समय ग़नीमत (परिहार सामग्री) मुजाहिदों में वितरित करना ही बेहतर था। लेकिन आजकल जब कि हुकूमत को बाक़ायदा फ़ौज रखनी पड़ती है और उस के वेतन का दायित्व उठाने के अलावा रक्षा (Defence) के लिए बड़े पैमाने पर हथियारों आदि का प्रबन्ध करना पड़ता है। माले-ग़नीमत को इस (Account) में ख़र्च किए बग़ैर चारा नहीं। फिर दुश्मन से जो सामान प्राप्त होता है जैसे टैंक, बस, हवाई जहाज़ आदि तो ये ऐसी चीज़ें नहीं हैं कि सिपाहियों में बाँट दी जाऐं बल्कि ये सब हुकूमत ही की संपत्ति हो सकती हैं। और उन को रक्षा सम्बन्धी ज़रुरतों के काम में लाया जा सकता है।

हमारी इस राय का अनुमोदन कि हुकूमत को यह अधिकार प्राप्त है, अल्लामा इब्ने तीमिया के कथन से भी होता है। अत: आप एक जगह लिखते हैं:

وَهٰـذَا دليل علىٰ اَنَّ الغنيمةَللامام اَنْ يُقسمها باجتهاده كما يقسم الفئ باجتهادهٖ اذا كَانَ امام عدل قسمها بعلم وعدل ليس قسمتها بيـن الـغـانمين كقسمة الميراثِ بين الورثةِ وقسمة الصدقات فى الاصنافِ الثمانية۔ (مجموع فتاویٰ ابن تیمیہ ج۱۷ ص۴۹۵)

''यह (अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नव मुस्लिमों की तालीफ़े-क़ल्ब (हृदयग्राहिता) के लिए माले-ग़नीमत में से बड़े बड़े उपहार देना) इस बात की दलील है कि इमाम (हुकूमत) को अपने इज्तिहाद (अन्वेषण) से इस को वितरित करने का उसी तरह अधिकार है जिस तरह कि उसे अपने इज्तिहाद से फ़ै का माल (अचल संपत्ति) वितरित करने का अधिकार है। जब कोई न्याय प्रिय शासक (इमाम) हो तो वह ज्ञान और न्याय के साथ माले-ग़नीमत बांटेगा । मुजाहिदों में इस के वितरण का मामला, उत्तरधिकारियों में संपत्ति के बंटवारे जैसा नहीं है और न सदक़ा के वितरण जैसा है जो आठ खातों में वितरित किए जाते हैं।'' (फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द १७ पृष्ठ ४९५)

दूसरी जगह उक्त महोदय ने यह भी पुष्टि की है कि चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय के अवसर पर काफ़िरों के माल पर क़ब्ज़ा नहीं किया था क्यों कि उन की तरफ़ से इस्लाम क़ुबूल किए जाने की आशा थी। इस लिए इमाम (शासक) ग़नीमत के मामले में कोई ऐसा तरीक़ा अपना सकता है जो नितिपूर्ण हो।

وَكَـانَ فى هٰـذا ما دَلَّ عَلىٰ اَنَّ الامامَ يَفْعَلُ بالاموال والرجالِ وَالعقارِ وَالمنقولِ ما هو اَصْلَح ۔

(مجموع فتاویٰ ابن تیمیہ ج۱۷ ص۴۹۲)

''इस में इस बात की दलील है कि मालों, व्यक्तियों, संपत्तियों, और चल संपत्तियों के मामले में इमाम वह तरीक़ा (नीति) अपना सकता है जो अधिक नीतिपूर्ण हो।''

(फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द १७ पृष्ठ ४९२)

60. बद्र की जंग के दिन को फ़ुर्क़ान दिवस (फ़ैसले के दिन) कि संज्ञा दी गई है। इस लिए कि इस जंग में अल्लाह का फ़ैसला खुले तौर पर ज़ाहिर हो गया था और सत्य एवं असत्य (हक़ और बातिल) का अन्तर बिलकुल स्पष्ट हो गया था।

61. अर्थात अल्लाह ने अपने रसूल पर फ़रिश्तों की जो फ़ौज उतारी और परोक्ष (ग़ैब) से अनुमोदन समर्थन और सहायता का जो सामान किया ।

62. अत: अल्लाह अपने रसूल के लिए ग़ैब से मदद का सामान कर सकता है।

63. अर्थात् लड़ाई का नक़्शा इस तरह था कि बद्र की घाटी का जो भाग मदीना की ओर था वहाँ मुसलमानों का लश्कर पहुँच गया और घाटी का जो भाग मक्का की ओर था वहाँ काफ़िरों का लश्कर था और तिजारती क़ाफ़िला काफ़िरों के लश्कर के पीछे और नीचे की ओर था अर्थात् तट समुद्र से गुज़र रहा था। यह लड़ाई मुसलमानों के लिए बड़ी प्रतिकूल एवं अशुभ प्रतीत हो रही थी किन्तु अल्लाह की मदद ने इसे मुसलमानों के लिए बिल्कुल अनुकूल एवं शुभ बना दिया। वह इस तरह कि तिजारती क़ाफ़िला काफ़िरों के पीछे और उन से निकट होने के बावजूद उन की मदद को न पहुँच सका। बल्कि अनजान होने की स्थिति में दूसरे रास्ते से मक्का की तरफ़ निकल गया। फ़िर उसी समय जो बारिश हुई उस ने घाटी के उस भू भाग को जहाँ काफ़िरों का लश्कर था लचीली और कीचड़ वाली बना दिया। इस के विपरीत मुसलमानों के लश्कर की ज़मीन को क़दम जमाने के योग्य बना दिया। और

यह भी एक सच्चाई है कि उस समय जिस ढंग से जंगें लड़ी जाती थी उन की सफ़लता और असफ़लता में युद्ध स्थल का बड़ा महत्त्व होता था। अल्लाह तआला ने परिस्थिति कुछ ऐसी बना दी कि युद्ध का स्थल और समय दोनों मुसलमानों के लिए अनुकूल हो गया। यह शुभ संयोग अल्लाह तआला ही का करिश्मा था । वरना अगर मुसलमानों और क़ाफ़िरों के लश्कर एक दूसरे को चैलेन्ज कर के निश्चित प्रोग्राम के अनुसार निकलते तो ठीक ऐसे समय जब कि बारिश हुई और ठीक उस स्थान पर जहाँ पोज़ीशन लेना मुसलमानों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ था, नहीं पहुँच सकते थे और ऐसी परिस्थिति में लड़ाई का नक़्शा ही कुछ और होता।

64. अर्थात् अल्लाह ने जो बात तय कि थी वह घटित हो जाए और बद्र का मैदान हक़ और बातिल का रणक्षेत्र बन जाए।

65. बद्र की जंग दो क़ौमों की जंग नहीं थी जो भौतिक उद्देश्यों के लिए लड़ी जाती हैं बल्कि यह शुद्ध रुप से सत्य और असत्य की जंग थी। इस में जहाँ सत्य स्पष्ट रुप से उभर कर सामने आ गया था उसी तरह असत्य भी बेनिक़ाब हो गया था। इस चीज़ ने लोगों पर अल्लाह की हुज्जत पूरी तरह क़ायम कर दी थी और लोगों को तर्क हीन कर दिया था। आयत में विनष्ट होने का अर्थ कुफ्र का विनष्ट होना है और ज़िन्दा रहने से मुराद ईमान की ज़िन्दगी है। मतलब यह है कि जो व्यक्ति कुफ्र की मौत मरना चाहता है उस पर अल्लाह की हुज्जत (तर्क) अन्तिम रुप से स्थापित हो ताकि वह यह तर्क प्रस्तुत न कर सके कि हक़ (सत्य) मुझ पर पूरी तरह स्पष्ट नहीं हुआ था। और जो ईमान का मार्ग अपना कर अमर बनना चाहता है वह अल्लाह की इस हुज्जत से सीख प्राप्त करे।

ऐ ईमान वालों !जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो जाए तो जमे रहो और अल्लाह को अधिक से अधिक याद करो ताकि तुम कामयाब हो।(अल-क़ुर्आन)

43. उस समय (ऐ पैग़म्बर !) अल्लाह तुम्हें सपने में उन को कम दिखा रहा था।[66] अगर उन्हें ज़्यादा दिखाता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और जंग के मामले में परस्पर लड़ने लगते। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें इस से बचा लिया। निःसंदेह वह उन बातों को जानता है जो सीनों में निहित होती हैं।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ
كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ
اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

44. और जब तुम एक दूसरे के आमने सामने हुए तो उस ने तुम्हारी नज़रो में उन को थोड़ा दिखाया और उन की नज़रों में तुम को कम कर के दिखाया [67] ताकि जो बात होने वाली थी उसे वह कर दिखाए। और सारे मामले अल्लाह ही के समक्ष प्रस्तुत होते हैं।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا
وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ
وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

45. ऐ ईमान वालों ! जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुक़ाबला हो जाए [68] तो जमे रहो और अल्लाह को अधिक से अधिक याद करो ताकि तुम कामयाब हो।[69]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا
اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

46. और अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञापालन करो और परस्पर विरोध न करो [70] वरना तुम्हारे अन्दर कमज़ोरी पैदा हो जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। सब्र करो[71] कि अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ
رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾

47. और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों के लिए दिखावा करते हुए निकले और जिन का हाल यह है कि (ख़ुदा के बन्दों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं [72] वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उस की पकड़ किए हुए है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ
النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا
يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

48. और (वह घड़ी कड़ी परीक्षा की थी) जब कि शैतान ने उन के काम उन की निगाहों में ख़ुबा दिए थे और उन से कहा था कि आज लोगों में कोई नहीं जो तुम पर प्रभुत्व पा सके और मैं तुम्हारा तरफ़दार हूँ। मगर जब दोनों गिरोह एक दूसरे के आमने सामने हुए तो वह उलटे पाँव फिर गया और कहने लगा मेरा तुम से कोई वास्ता नहीं। मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह कठोर दंड देने वाला है।[73]

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ
الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۖ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ
نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ
إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

66. यह रणक्षेत्र में पहुँचने से पहले की घटना है। अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सपने में काफ़िरों के लश्कर को तादाद में कम दिखाया । और इस सपने को उन्हों ने जब मुसलमानों के सामने बयान किया तो उन की हिम्मत बन्ध गई। यह संख्या में कम दिखाना अर्थ की दृष्टि से था। अर्थात् काफ़िरों की बड़ी तादाद नैतिकता और साहस की दृष्टि से कोई वज़न नहीं रखती थी। इस लिए उन की बड़ी तादाद थोड़ी तादाद के बराबर थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सपना वास्तविक दृष्टिकोण से बिलकुल सच्चा था लेकिन चूँकि सपना अवास्तविकता अथवा उपलक्ष्य के परदे में होता है इस लिए मुसलमानों ने इस का मतलब यह समझा कि काफ़िरों का लश्कर तादाद में कम है और उन का यह समझना लाभदायक ही सिद्ध हुआ । क्यों कि इस के कारण उन के लिए काफ़िरों का मुक़ाबला करना आसान हो गया।

67. जब दोनों फ़ौजों ने अपनी अपनी पोज़ीशन संभाल ली तो अल्लाह तआला ने ऐसी तदबीर की कि मुसलमानों की नज़रों में काफ़िरों की तादाद कम दिखाई दी इस लिए उन का साहस बना रहा और दूसरी तरफ़ काफ़िरों को मुसलमान बहुत कम तादाद में दिखाई देने लगे इस लिए उन्हों ने यह सोच कर कि मुट्ठी भर इन्सानों को ख़त्म करना आसान है जंग के लिए पहल की । इस तरह वह संग्राम छिड़ गया जो सत्य को सत्य और असत्य को असत्य साबित करने के लिए आवश्यक था। बाद में अल्लाह तआला ने इन मुट्ठी भर मुसलमानों का रोब काफ़िरों के दिलों में कुछ ऐसा डाल दिया कि उनका साहस छूट गया बल्कि टूट गया और वे भाग खड़े हुए।

68. अर्थात् जब कभी काफ़िरों से तुम्हारा मुक़ाबला हो ।

69. कामयाबी (फ़लाह) से मुराद वास्तविक कामयाबी है अर्थात् दुनिया में अल्लाह की मदद और आख़िरत में उस की तरफ़ से बहुत बड़ा बदला (ईनाम)।

इस कामयाबी को हासिल करने के लिए दो बातें ज़रुरी हैं। मुक़ाबले के समय जमे रहना और अल्लाह को ख़ूब ख़ूब याद करना। अल्लाह की मदद तभी नाज़िल होती है जब ईमान वाले अपनी इस ज़िम्मेदारी को पूरा करते हैं। इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि मुसलमानों की वे जंगे जो ख़ुदा को भूल कर मात्र भौतिक उद्देश्यों के लिए लड़ी जाती हैं अल्लाह की मदद और उस के समर्थन से वंचित रहती है और रहेंगी।

70. युद्ध के अवसर पर अनुशासन का बड़ा महत्व होता है और विरोध एवं विवाद से अनुशासनहीनता और पूरे समूह में बिखराव की स्थिति पैदा हो जाती है। इस लिए ज़ोर दे कर कहा गया है कि विवाद और विरोध मत करना।

71. सब्र (धैर्य) करने में यह बात भी शामिल है कि आदमी अपने सुझाव के विरुद्ध भी अनुशासित रहे ताकि सत्य और असत्य की जंग में मुसलमानों के अन्दर टकराव और बिखराव की स्थिति न उत्पन्न हो।

72. संकेत है काफ़िरों के लश्कर की ओर जो अपने अधिक होने पर गर्व करते हुए और अपनी प्रतिष्ठा एवं वैभव का प्रदर्शन करते हुए मक्के से निकला था और जिस का उद्देश्य सत्य धर्म के मार्ग से लोगों को रोकना था। मुसलमानों को सख़्ती से कहा गया है कि उन लोगों के रंग ढंग न अपनाना । यह एक स्थायी आदेश है जो मुसलमानों को दिया गया है ताकि उन की फ़ौज काफ़िरों की फ़ौज से हर जंग के अवसर पर भिन्न एवं श्रेष्ठ रहे। वे अल्लाह के सिपाही हैं और उन की जंग का उद्देश्य ख़ुदा के बन्दों के लिए सत्य धर्म (दीन-हक़) का मार्ग खोलना है। इस लिए जंग में भी उन की शान इबादत की होनी चाहिए।

73. शैतान अपने हथकन्डे इस तरह इस्तेमाल करता है कि इन्सान को यह महसूस नहीं होता कि शैतान मेरे सामने खड़ा है और वह मुझे कुकृत्यों पर उकसा रहा है। वह अत्यंत गुप्त रुप से इन्सान के नफ़्स (आत्मा) से सीधे बात चीत करता है और उस की यह बात चीत इशारों एवं संकेतों की भाषा में होती है जो भ्रमों, संदेहों एवं अंधविश्वास का रुप धार लेती है। आदमी का नफ़्स (आत्मा) अगर जागृत हो और यह जागृति ईमान के फ़लस्वरुप ही पैदा होती है तो वह महसूस करता है कि यह एक बुरा ख़ियाल है जो उस के दिल में पैदा हुआ है। फिर वह उस से प्रभावित नहीं होता।

बद्र की जंग के अवसर पर शैतान ने अपने चेलों (क़ाफ़िरों) से जो बात कही थी वह इसी ढंग की थी। और इस पर दलील क़ुर्आन की वह आयत है जिस में फ़रमाया गया है:-

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ
فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّیْٓ
اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعَالَمِیْنَ ۔(الحشر۔١٦)

"शैतान की तरह जो इन्सान से कुफ़्र करने के लिए कहता है और जब वह कुफ़्र कर बैठता है तो कहता है मैं तुझ से बरी हूँ । मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ । " (अल हश्र -१६)

ज़ाहिर है शैतान ये बातें रुबरु आ कर नहीं कहता बल्कि वस्वसों के द्वारा कुफ़्र पर आमादा करता है और जब आदमी कुफ़्र कर बैठता है तो उस के परिणाम की ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं करता बल्कि वह उसे छोड़ देता है कि विनाश के गढ़े में जा

गिरे । ऐसी ही बात शैतान ने बद्र के अवसर पर भी काफ़िरों के दिल में डाली थी ।

इस पर दूसरी दलील इस आयत का पहला वाक्य है जिस में कहा गया है कि ''शैतान ने उन की निगाहों में उन के काम ख़ूबाँ दिए थे।'' ज़ाहिर है कामों का निगाहों में ख़ुबाने का काम शैतान ने अपने खास अन्दाज़ में किया था न कि इन्सानी रुप में प्रकट हो कर। इस लिए शैतान के कथन को भी इसी ढंग की चीज़ समझना चाहिए (और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है अपने कलाम के मतलब को)।

और शैतान ने यह जो बात कही थी कि '' मैं वह कुछ देख रहा हुँ जो तुम नहीं देखते'' तो इस से मुराद उस का फ़रिश्तों को देखना है जो बद्र की जंग के अवसर पर मुसलमानों की मदद के लिए उतरे थे और वह फ़रिश्तों के मुक़ाबले में टिक नहीं सकता था। इस लिए उस ने कहा कि मैं अल्लाह से डरता हूँ और उस ने जब यह सांकेतिक भाषा में काफ़िरों से कही होगी तो असंभव नहीं कि उन के दिल में थोड़ी देर के लिए यह ख़ियाल पैदा हुआ हो कि ये जो पराजय का मुँह हमें देखना पड़ रहा है तो यह कहीं ख़ुदा की मार तो नहीं है जो हम पर पड़ रही है।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

यह तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है वरना अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है।(अल-क़ुर्आन)

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ غَرَّ
هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۗ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

49. जब मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) और वे लोग जिन के दिलों में रोग है, कह रहे थे [74] कि इन लोगों को इन के दीन ने धोखे में डाल रखा है [75] और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी (ग़ालिब और हिकमत वाला) है।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ
وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾

50. और अगर तुम उस हालत को देख सकते जब कि फ़रिश्ते काफ़िरों की रुहों को खींच निकालते हैं। वे उन के चेहरों और उन की पीठों पर चोटें लगाते हैं और कहते हैं चखो जलने के अज़ाब का मज़ा।[76]

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾

51. यह तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है वरना अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

52. इन का हाल वही हुआ जो फ़िरऔन वालों और उन से पहले के लोगों का हुआ था [77] उन्हों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया तो अल्लाह ने उन के गुनाहों के कारण उन को पकड़ लिया, अल्लाह अत्यन्त शक्तिशाली और कड़ा दंड देने वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ
يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾

53. यह इस लिए हुआ [78] कि अल्लाह उस नेमत को जो उस ने किसी क़ौम को प्रदान की हो तब तक नहीं बदलता जब तक कि वह स्वयं अपनी हालत न बदल दे [79] और इस लिए भी कि अल्लाह सुनने और जानने वाला है।[80]

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ
كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٥٤﴾

54. इन का मामला भी फ़िरऔन की सन्तानों और उन से पहले के लोगों ही की तरह है [81] उन्हों ने अपने रब की आयतों को झुठलाया, तो हम ने उन के गुनाहों के कारण उन को विनष्ट किया और फ़िरऔन की सन्तानों को डूबो दिया। ये सब ज़ालिम लोग थे।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾

55. निश्चय ही अल्लाह के निकट बदतरीन जानवर वे लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और वे ईमान नहीं लाते।[82]

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ
مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾

56. जिन लोगों से तुम ने संप्रतिज्ञा (मुआहदः) की फिर वे अपने (अह्द) वचन हर बार तोड़ते रहे, और वे (अल्लाह से) डरते नहीं।[83]

74. यह उस समय की बात है जब मुसलमान काफ़िरों का मुक़ाबला करने के लिए मदीना से रवाना हो रहे थे।"जिन लोगों के दिलों में रोग है" से मुराद यहूदी हैं जो अल्लाह पर ईमान लाने का दावा करते थे लेकिन उन के दिलों में कुफ्र का रोग था।

75. अर्थात् मुसलमान अपने दीन के आगे कुछ देखते ही नहीं, वे दीनी जुनून में ऐसा लीन हो गए हैं कि उन्हें अपनी जानों की भी परवाह नहीं रही । वे अपने असहाय होने के बावजूद क़ुरैश की शक्तिशाली फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए निकल खड़े हुए हैं।

76. यह उस समय का वर्णन है जब कि जान निकल रही होती है और इस का सम्बन्ध रुह से है। और वास्तविक इन्सान वही है जो मानव शरीर के अन्दर है। मात्र शरीर को मनुष्य मसझना सही नहीं और मौत की हक़ीक़त इस के सिवा कुछ नहीं कि आत्मा (रुह) शरीर से विरक्त (जुदा) हो जाती है। और यह आत्मा अगर एक काफ़िर की है तो उस पर फ़रिशतों की मार पड़ती है और वे उस से कहते हैं कि आग की सज़ा भुगतने के लिए तैयार हो जा ।

77. अर्थात् बद्र में इन काफ़िरों को जो सज़ा मिली वह उसी तरह की सज़ा है जो फ़िरऔन वालों और दूसरी उद्दंड क़ौमों को मिलती रही क्यों कि उन्हों ने भी वही नीति अपनाई जो उन क़ौमों ने अपनाई थी।

78. अर्थात् उन्हें यह सज़ा इस लिए मिली कि।

79. यह क़ौमों के उत्थान और पतन का विधान एवं नियम है जो इस आयत में बयान हुआ है। जब किसी क़ौम को अल्लाह नेमत प्रदान करता है तो उसी स्थिति में उस को छीन लेता है जब कि वह उस की अवहेलना एवं नाक़दरी करती है और स्वयं को उस के अयोग्य सिद्ध कर देती है। सुख, शान्ति, ख़ुशहाली, सम्मान और सत्ता सब अल्लाह तआला की नेअमतें हैं। और जब अल्लाह तआला किसी क़ौम से उस की उद्दंडता के कारण उन नेमतों को छीन लेना चाहता है तो उस पर भय और आतंक हावी कर देता है। कभी तो वह आपस ही में लड़ने मरने लगती हैं और कभी उस पर जंग के बादल मंडराने लगते हैं। इस तरह ख़ुशहाली और संपन्नता अर्थिक संकट में परिवर्तित हो जाती है या दुर्घटनाओं एवं वबाओं और आफ़तों का सिलसिला चलता है। रहा सम्मान और सत्ता का मामला तो वह भी ख़तरे में पड़ जाता है। और अपमान, पराजय, ग़ुलामी और दूसरी क़ौमों के अधीन हो कर रहने जैसी स्थिति पैदा हो जाती है।

क़ुरैश को मक्का में सुख शान्ति प्राप्त थी वह उन की उद्दंडता के कारण युद्ध में परिवर्तित हो गई और बद्र ने उन के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को मिट्टी कर दिया यहाँ तक कि उन के प्रतिष्ठित एवं अधिकार रखने वाले लोग या तो मारे गए या उन्हें क़ैदी हो कर नबी के समक्ष उपस्थित होना पड़ा। आयत का इशारा उन की इसी दशा की ओर है।

80. अर्थात् जब अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है तो उस को क़ौमों की कारगुज़ारियों की ख़बर कैसे न होगी। और जब ख़बर रखता है तो उन के साथ वह व्यवहार क्यों नहीं करेगा जिस के वे हक़दार हैं?

81. यह क़ुरैश को आगे के लिए चेतावनी है कि जो कुछ बद्र में तुम्हें पेश आया वह अज़ाब की एक किस्त थी लेकिन तुम अगर उद्दंड क़ौमों ही की डगर पर चलते रहे तो फिर पूरी क़ौम अज़ाब की लपेट में उसी तरह आएगी जिस तरह कि पिछली क़ौमें आती रही हैं।

82. अर्थात् इन का कुफ्र इतना तीव्रतम तथा कठोरतम है कि वे किसी तरह ईमान लाने के लिए आमादा नहीं हैं। जो व्यक्ति कुफ्र की राह अपनाता है वह बुद्धि और विवेक से काम नहीं लेता बल्कि अन्धा बन जाता है और अपने को इन्सानियत के दर्जे से गिरा कर जानवर से भी निचली सतह पर ले आता है।

83. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना को हिजरत करने के बाद यहूदियों से मैत्रीपूर्ण प्रतिज्ञा की थी जिस की एक धारा यह थी कि वे क़ुरैश का समर्थन एवं सहयोग नहीं करेंगे । लेकिन यहूदी हर मौक़े पर इस का उल्लंघन करते रहे। वे क़ुरैश को मदीना के मुसलमानों के खिलाफ़ उकसाते भी रहे और उन का पीछे से समर्थन और सहयोग भी करते रहे। आयत का इशारा ख़ास तौर से उन्हीं की तरफ़ है।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

57. ऐसे लोगों को अगर तुम लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो की जो लोग उन के पीछे हैं उन के क़दम उखड़ जाऐं और वे सबक़ लें।[84]

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ
يَذَّكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

58. और अगर तुम्हें किसी क़ौम से प्रतिज्ञा भंग करने (बदअहदी) की आशंका हो तो उन की प्रतिज्ञा सीधे तरीक़े पर उन के आगे फेंक दो [85] अल्लाह प्रतिज्ञाभंग करने वालों को पसन्द नहीं करता।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

59. काफ़िर यह ख़्याल न करें कि वे बाज़ी ले जाऐंगे।[86] वे हमारे क़ाबू से हरगिज़ बाहर नहीं जा सकते।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

60. और उन के मुक़ाबले के लिए [87] जहाँ तक तुम से हो सके ताक़त मुहैय्या (इकट्ठी) किये रहो [88] और बंधे हुए घोड़े तैयार रखो [89] ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के और अपने दुश्मनों को एवं इन के अलावा दूसरे लोगों को भी जिन को तुम नहीं जानते मगर अल्लाह जानता है,[90] भयभीत कर सको। और अल्लाह की राह में जो कुछ तुम ख़र्च करोगे [91] वह तुम्हें पूरा पूरा लौटा दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कदापि अन्याय न होगा।[92]

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ
تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ
لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

61. और अगर वे सुलह की ओर झुकें तो तुम भी इस के लिए झुक जाओ [93] और अल्लाह पर भरोसा करो। नि:संदेह वह सुनने और जानने वाला है।

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

62. और (ऐ पैग़म्बर) अगर वे तुम्हें धोखा देने का इरादा रखते हों तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है।[94] वही है जिस ने अपनी मदद से और ईमान वालों के द्वारा तुम्हारी ताईद (अनुमोदन) की।

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي
أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

63. और उसी ने उन के दिलों को परस्पर जोड़ दिया। अगर तुम ज़मीन के सारे साधन लगा देते तो उन के दिलों को जोड़ नहीं सकते थे। लेकिन वह अल्लाह है जिस ने उन के दिलों में परस्पर लगाव पैदा कर दिया ।[95] नि:संदेह वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।[96]

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ
بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٣﴾

84. अर्थात वचन अथवा समझौते का उल्लंघन करने वालों में से कोई व्यक्ति या कोई समूह दुश्मनों के साथ मिल कर तुम्हारे विरुद्ध जंग लड़ने के लिए आ जाए तो उस का निस्संकोच वध करो इन्हें ऐसी सज़ा दो कि ये इबरत हासिल करें।

85. अर्थात् जिस क़ौम से तुम्हारा समझौता हो वह अगर समझौते का आदर नहीं करती और उस के रवैये से यह प्रतीत हो कि वह मौक़ा पाते ही तुम्हारे विरुद्ध कार्रवाई करेगी तो तुम उस के समझौते को सीधे उस के मुँह पर दे मारो क्यों कि प्रतिज्ञा भंग करने वाले इसी योग्य हैं। इस तरह जब तुम्हारी तरफ़ से समझौते के निरस्त होने का एलान हो जाए तो तुम उस के विरुद्ध कार्रवाई कर सकते हो। लेकिन समझौते को बाक़ी रखते हुए गुप्त रुप से उस क़ौम के विरुद्ध कार्रवाई करना वैध नहीं।

यह हुक्म उस सूरत के लिए है जब कि समझौता करने वाली क़ौम से समझौते के उल्लंघन अथवा प्रतिज्ञ भंग करने की आशंका हो। लेकिन अगर समझौता करने वाली क़ौम अगर खुल्लम खुल्ला समझौते का उल्लंघन कर बैठती है जिस तरह हुदैबिया: वचन के बाद मक्का की काफ़िर क़ौम कर बैठी थी तो समझौता अथवा वचन अपने आप निरस्त हो जाएगी और किसी नियमानुसार एलान की आवश्यकता न होगी।

स्पष्ट रहे कि यहाँ समझौते से मुराद जंग न करने और सुलह का समझौता है । रहे आज कल के आर्थिक और व्यपारिक समझौते तो जब तक इन को ख़त्म नहीं किया जाता उन का आदर अपने क्षेत्र एवं सीमा में ज़रुरी है। लेकिन वह किसी क़ौम के विरुद्ध जंगी कार्रवाई करने में बाधक नहीं । जंग की स्थिति में ऐसे समझौते अपने आप निरस्त हो जाते हैं।

86. अर्थात् काफ़िर इस ग़लतफ़हमी में न रहें कि वे अल्लाह के फ़ैसले से बच कर निकल जाऐंगे बल्कि ख़ुदा ने उन के पराजित होने का जो निर्णय किया है वह निश्चित रुप से उन पर लागू हो कर रहेगा।

87. अर्थात् काफ़िरों के मुक़ाबले के लिए ।

88. ताक़त (क़ुव्वत) मुहैय्या रखने में जन शक्ति (Man power) भी शामिल है और हर प्रकार के युद्ध उपकरण एवं सामाग्री भी ।

बद्र की जंग में मुसलमान उचित जंगी उपकरणों एवं सामग्रियों के बग़ैर बड़ी असहाय की स्थिति में निकले थे क्यों कि वे इस अवस्था में नहीं थे कि जंग के लिए भरपूर तैयारी कर सकें। लेकिन आगे के लिए उन्हें निर्देश दिए गए कि जिस हद तक संभव हो प्रशिक्षित सेना (Trained Military) भी तैयार रखो और जंगी सामान भी ताकि जब ज़रुरत आन पड़े जंग के मैदान में उतर सको ।

89. जंग में घोड़ों का महत्व स्वीकृत है। उस ज़माने में इस से अधिक तेज़ रफ़्तार और जंगी कार्रवाई के लिए इस से अधिक उचित सवारी नहीं थी। इस लिए विशेष रुप से जंगी घोड़ों को तैयार रखने का आदेश दिया गया ।

आज के ज़माने में टैंक, जलपोत, हवाई जहाज, मीज़ाइल, रॉकेट आदि प्रभावकारी जंगी महत्व रखने वाली चीज़ें हैं। इस लिए आयत का मंशा पूरा करने के लिए इन चीज़ों को मुहैय्या रखना होगा।

90. इशारा है उन इस्लाम दुश्मन शक्तियों की ओर जो अभी सामने उजागर नहीं हुई थीं किन्तु आगे उन से मामला पेश आने वाला था। अत: आगे चल कर मुसलमानों को न केवल यहूदी और अरब क़बीलों से बल्कि उस समय की महाशक्तियों फ़ारस और रोम से भी टकराना पड़ा।

91. अल्लाह की राह में ख़र्च करने से अभिप्रेत जिहाद के लिए ख़र्च करना है। ऊपर युद्ध की सामग्रियों की तैयारी का जो हुक्म दिया गया है उस के पालन के लिए धन रुपी साधन की अति आवश्यकता होगी। इस लिए इस उद्देश्य की ख़ातिर अल्लाह की राह में ख़र्च के लिए प्रेरित किया गया है।

92. अर्थात् आख़िरत में इस का पूरा पूरा बदला (इनाम) मिलेगा और किसी के हक़ को मारा न जाएगा।

93. आयत 39 में बहुदेववादियों के साथ युद्ध जारी रखने का आदेश दिया गया था यहाँ तक कि हरम की पवित्र धरती शिर्क (बहुदेववाद) से पाक हो जाए। और यहाँ फ़रमाया गया कि अगर वे सुलह के लिए झुक जाऐं तो तुम भी झुक जाओ। यह दूसरी बात पहली बात के विपरीत अथवा उलटी नहीं है बल्कि इस बात को उजागर कर रही है कि अन्तिम लक्ष्य (Goal) तो हरम की पवित्र धरती से शिर्क (बहुदेववाद) की समाप्ति तक बहुदेववादियों से जंग जारी रखना है किन्तु बीच के मरहले ऐसे हो सकते हैं कि उन की सुलह के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया जाए। क्यों कि यह सुलह शिर्क (बहुदेववाद) की समाप्ति के लिए वातावरण को अनुकूल बना सकती है और जंग का जोश ठंडा पड़ जाने की स्थिति में कितने ही लोग इस्लाम पर विचार करने के लिए आमादा हो सकते हैं और कितनों ही के दिल के दरवाज़े हिदायत अर्थात सच्ची राह पर चलन के दैवयोग के लिए खुल सकते हैं। फिर जो काम समझा बुझा कर किया जा सकता है उस के लिए ख़ून ख़राबे की क्या ज़रुरत?

94. अर्थात अनुचित आशंका के आधार पर सुलह के आमंत्रण को ठुकराना उचित नहीं । बल्कि अल्लाह पर भरोसा कर के उसे स्वीकार किया जाए। अगर तुम्हारी नीयत ठीक ठाक है और अल्लाह पर तुम ने भरोसा किया है तो दुश्मन तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा । दुश्मन की चालों का तोड़ करने के लिए अल्लाह काफ़ी है ।

95. अर्थात् अरब क़बीलों के बीच जो कभी न ख़त्म होने वाली दुश्मनी चली आ रही थी उस को ख़त्म कर के सही अर्थों में उन के अन्दर भावनात्मक लगाव और एकता पैदा करना किसी के बस की बात नहीं थी। और दुनिया भर के साधनों का प्रयोग कर के भी यह लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता था। किन्तु अल्लाह ने यह चमत्कार दिखाया कि जो लोग एक दूसरे के खून के प्यासे थे वे ईमान ला कर एक समूह और आपस में भाई भाई बन गए।

96. अर्थात् वह प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है इस लिए उस की योजना लागू हो कर रहती है। और वह तत्वदर्शी (हकीम) है इस लिए उस के फ़ैसले बहुत ही हिकमत से भरे (तत्वपूर्ण) होते हैं।

किसी नबी के लिए उचित नहीं कि उस के पास बन्दी हों जब तक कि वह ज़मीन में ग़लबा (प्रभुत्व) न हासिल कर ले। तुम लोग दुनिया के फ़ायदे चाहते हो और अल्लाह (तुम्हारे लिए) आख़िरत चाहता है। अल्लाह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी ।(अल-क़ुर्आन)

64. ऐ नबी तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है और उन ईमान लाने वालों के लिए भी जिन्होंने तुम्हारी पैरवी (अनुपालन) अपनाई है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾

65. ऐ नबी !ईमान वालों को जंग पर उभारो। अगर तुम्हारे बीस आदमी जमें रहने वाले होंगे तो दो सौ पर विजयी होंगे और अगर तुम्हारे सौ आदमी ऐसे होंगे तो हज़ार काफ़िरों पर विजयी होंगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं हैं।[97]

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ
عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم
مِّائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया और उस ने जान लिया कि तुम में कुछ कमज़ोरी है। अतः अगर तुम्हारे सौ आदमी जमे रहने वाले हुए तो वे दो सौ पर विजयी होंगे और अगर हज़ार हुए तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर विजयी रहेंगे।[98] और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

الْآنَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِن يَكُن
مِّنكُم مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ
يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾

67. किसी नबी के लिए उचित नहीं कि उस के पास बन्दी हों जब तक कि वह ज़मीन में ग़लबा (प्रभुत्व) न हासिल कर ले।[99] तुम लोग दुनिया के फ़ायदे चाहते हो और अल्लाह (तुम्हारे लिए) आख़िरत चाहता है।[100] अल्लाह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी ।[101]

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ
تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾

68. अगर अल्लाह का फ़रमान पहले से मौजूद न होता तो तुम्हारे बन्दी बना लेने के नतीजे में तुम को कड़ी सज़ा भुगतनी पड़ती ।[102]

لَّوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾

69. अतः जो माले-ग़नीमत (परिहार सामाग्री) तुम ने प्राप्त किया है उसे खाओ कि वह हलाल और पाक है।[103] और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾

70. ऐ नबी ! तुम लोगों के क़ब्ज़े में जो बन्दी हैं उन से कह दो, अगर अल्लाह ने जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो जो कुछ तुम से लिया गया है उस से बेहतर तुम को प्रदान करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा।[104] अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّمَن فِي أَيْدِيكُم مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي
قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾

97. अर्थात् वे हक़ (सत्य) को समझने से वंचित हैं इस लिए उन की लड़ाई सारी की सारी ग़लत (बातिल) उद्देश्यों के लिए है और जो गिरोह ग़लत (बातिल) उद्देश्यों के लिए लड़ रहा हो वह आन्तरिक शक्ति की दृष्टि से कमज़ोर ही रहेगा। इस के मुक़ाबले में ईमान वाले हक़ (सत्य) को समझ चुके होते हैं और उन की जंग विशुद्ध रुप से सत्य की आवाज़ को बुलन्द करने के लिए होती है। इस लिए उन में प्रबल आत्मिक और वास्तविक शक्ति पैदा हो जाती है। वे समझते हैं कि अल्लाह की राह में जान देना,जान को खोना नहीं बल्कि उस को पाना और अमर हो जाना है। इस लिए वे निर्भीकता के साथ लड़ते हैं। ईमान वालों को उन की इसी आन्तरिक एवं वास्तविक शक्ति का आभास कराते हुए जिहाद पर उभारा गया है और उन्हें हिदायत की गई है कि वे काफ़िरों की अधिकता एवं बाहुल्यता को देख कर घबराएं नहीं और जंगी कार्रवाई करने से न रुकें। चाहे काफ़िरों की संख्या ईमान वालों के मुक़ाबले में दस गुना क्यों न हो। क्यों कि बातिल बातिल के (असत्य असत्य के) मुक़ाबले में तो ज़ोर दिखा सकता है लेकिन हक़ (सत्य) के मुक़ाबले में नहीं टिक सकता ।

बीस और सौ की तादाद यहाँ उदाहरण के तौर पर बयान हुई है और संभवत: इसी मुनासिबत से कि उस समय जंग में फ़ौज को बीस बीस और सौ सौ की टुकड़ियों में संगठित किया जाता होगा।

98. मतलब यह है कि जब दुशमन के विरुद्ध कार्रवाई करने का मामला हो तो अगर दुश्मन की ताक़त तुम से दस गुना भी हो तो तुम्हें उस के विरुद्ध कार्रवाई करने में संकोच नहीं करना चाहिए क्यों कि ईमान वालों के लिए मुक़ाबलों का वास्तविक आदर्श यही है जैसा कि ऊपर की आयत में बयान हुआ। लेकिन फिलहाल जब कि तुम्हारे अन्दर ऐसे लोग पाये जाते हैं जो परिपक्व नहीं हैं और सब्र और दृढ़ता की दृष्टि से वांछित आदर्श पर नहीं हैं अत: बद्र की जंग के अवसर पर इन से कई तरह की कमज़ोरियों का इज़्हार हुआ जिस पर इस सूरह में पकड़ भी हुई है। इस लिए तुम्हारी ज़िम्मेदारियों को हल्का किया जाता है। अब अगर दुश्मन की ताक़त दुगुनी हो तो तुम्हें उस के विरुद्ध कार्रवाई करने में कदापि संकोच नहीं होना चाहिए।

यह रिआयत उस अवसर के लिए है जब कि दुश्मन के विरुद्ध कार्रवाई कर के युद्ध लड़ना हो जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना के ईर्द गिर्द विभिन्न शत्रु क़बीलों के दमन के लिए छोटी बड़ी टुकड़ियाँ रवाना किया करते थे। रहा रक्षात्मक युद्ध तो वह हर हाल में लड़ना है और उस में औसत का कोई सवाल पैदा ही नहीं होता। अत: बद्र की जंग के अवसर पर मुसलमान अपनी कमज़ोर हालत के बावजूद अपने से तीन गुना बड़ी ताक़त से लड़े। इसी तरह उहद की जंग में भी उन्हें तीन गुना से अधिक बड़ी शक्ति का मुक़ाबला करना पड़ा और ख़न्दक़ की जंग में तो दुश्मन की तादाद दस हज़ार से भी अधिक थी जब कि मुसलमानों की तादाद तीन हज़ार और एक उल्लेख के अनुसार तो एक हज़ार से भी कम थी अर्थात् एक और दस का मुक़ाबला था।

आम तौर से टीकाकारों (मुफ़स्सिरीन) ने इस आयत का यह मतलब बयान किया है कि पहले यह हुक्म था कि मुसलमान अपने से दस गुना तादाद का मुक़ाबला करें और जंग के मैदान से भागें नहीं लेकिन यह हुक्म जब मुसलमानों पर भारी गुज़रा तो दूसरी आयत नाज़िल हुई जिस में यह रिआयत कर दी गई कि अपने से दुगुनी संख्या से मुक़ाबले में डट जाऐं और अगर दुगनी से अधिक संख्या हो तो भागने की गुन्जाइश हो सकती है।

लेकिन आयत का यह मतलब न क़ुर्आन के बयान से कोई मेल खाता हे और न घटनाओं से ही इस का अनुमोदन होता है। जहाँ तक भाग निकलने का सवाल है इस सूरह की आयत १६ में इस की कड़े शब्दों में मनाही कर दी गई है अर्थात् जब चाहे न चाहे काफ़िरों की फ़ौज से मुठभेड़ हो ही जाए तो फिर मुसलमानों को अपने ख़ून की आख़िरी बूँद बहाने तक लड़ना ही है चाहे दुश्मन की संख्या कुछ भी हो।

मुक़ाबले से भागने का कोई सवाल पैदा ही नहीं होता। क्यों कि इस्लाम के शब्द कोष में यह शब्द सिरे से है ही नहीं। इस से अलग यदि कोई अपवादिक स्थिति है तो वह केवल जंगी नीति (चाल) के तौर पर पीछे हट जाना ताकि दोबारा भर पूर वार किया जा सके। रही घटनाओं की गवाही, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में जितने युद्ध लड़े गए हैं उन में से कोई एक उदाहरण भी इस बात के पक्ष में नहीं प्रस्तुत किया जा सकता कि मुसलमानों के लिए किसी अवसर पर भी भाग निकलना वैध रहा हो । हालांकि हर अवसर पर दुश्मन फ़ौज की संख्या मुसलमानों की फ़ौज के मुक़ाबले में कई गुना अधिक रही है। अगर उहुद में कुछ मुसलामानों से यह ग़लती हुई थी कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल किये जाने की अफ़्वाह ने उन्हें घबराहट में मुब्तिला कर दिया था और इस घबराहट में वह युद्ध स्थल छोड़ कर जा रहे थे तो इस पर क़ुर्आन ने कड़ी पकड़ की। हालांकि उस समय मुसलमानों की संख्या मात्र सात सौ थी जब कि काफ़िरों की संख्या तीन हज़ार थी।

असल में इस आयत का सम्बन्ध फ़रार की रिआयत देने से नहीं बल्कि जिहाद की स्पिरिट पैदा करने से है। अत: ऊपर की आयत की शुरुआत ही ''ऐ नबी ईमान वालों को जंग पर उभारो'' के हुक्म से हुई है। इस लिए आयत का मंशा यह है

कि जंग के सिलसिले में कुछ कर गुज़रने का फैसला करने से पहले दुश्मन की शक्ति का अन्दाज़ा लगाया जाए। अगर दुश्मन की फ़ौज तुम से दुगुनी है तो ऐसी सूरत में पहल करने में तुम्हें कोई संकोच नहीं होना चाहिए। इसी स्पिरिट के साथ आगे बढ़ते हुए यह संभव है कि तुम अपने से दस गुनी संख्या पर भारी पड़ जाओ। बद्र की जंग के बाद जब विभिन्न अरब क़बीलों ने मदीना पर हमले की तैयारियाँ शुरु कीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के दमन के लिए जो फ़ौजी टुकड़ियाँ भेजीं वे ठीक इस निर्देश के अनुकूल थीं।

99. अर्थात जंग के मैदान में।

100. बद्र की जंग में मुसलमानों ने काफ़िरों के सत्तर लोगों को क़ैद कर लिया था जिन में उन के लीडर उक़्बा बिन मुईत और नज़र बिन हारिस भी शामिल थे। जंग से छुट्टी पाने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से इन दोनों लीडरों को बद्र से क़रीब एक जगह पर वध कर दिया गया। और शेष बन्धकों को मुसलमान अपने साथ मदीना ले गए वहाँ उन में से उन क़ैदियों को जो फ़िदय: दे सकते थे फ़िदय: ले कर रिहा कर दिया गया और जो लिखना पढ़ना सिखा सकते थे उन से यह सेवा ले कर रिहा कर दिया गया। शेष बन्धकों की रिहाई बिना किसी प्रतिदान एवं मुआवज़े के हो गई। इस घटना का जो पहलू अनुचित था वह यह कि दुश्मन का अच्छी तरह सफ़ाया करने के बजाए उन्हें बन्धक बनाना शुरु किया जिस में यह मनोवृत्ति काम कर रही थी कि इन से फ़िदय: में अच्छी खासी रक़म वसूल हो जाएगी। अल्लाह तआला ने मुसलमानों की इसी मानसिकता पर और उन के इसी कार्य शैली पर पकड़ की है। आयत का मतलब यह है कि एक नबी के नेतृत्व में लड़ी जाने वाली जंग में निगाहें उस उच्चतम उद्देश्य पर केन्द्रित रहनी चाहिए जिस के लिए एक नबी जंग के मैदान में उतरता है न कि उन आर्थिक और भौतिक लाभों पर जो जंग के उपलाभ के तौर पर प्राप्त होते हैं। उद्देश्य का तक़ाज़ा यह था कि बद्र में जब दुश्मन पराजय का मज़ा चख रहा था तो उस को बिल्कुल से तोड़ दिया जाता। ख़ास तौर से दुश्मन के किसी लीडर को तो हरगिज़ ज़िन्दा रहने न दिया जाता कि फिर उसे सर उठाने का अवसर मिले। मगर तुम ने जल्द बाज़ी में समय से पहले गिरफ़तारी का सिलसिला शुरु किया मात्र इस कारण से कि तुम को फ़िदय: लेने का मौक़ा मिलेगा। ख़ूब सुन लो कि नबी इस लिए जंग करता है कि ज़मीन पर हक़ (सत्य) का ग़लबा (प्रभुत्व) हो न इस लिए कि दुश्मनों को बन्धक बना कर फिदय: हासिल करे। अलबत्ता अगर दुश्मन का ज़ोर टूट चुका हो तो सामान्य फ़ौजियों को बन्धक बनाने और बाद में फ़िदय: ले कर उन को रिहा करने में कोई आपत्ति नहीं है।

101. अल्लाह प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है इस लिए वह अपने नबी का मक़ाम बुलन्द रखना चाहता है और वह हकीम (तत्वदर्शी) है इस लिए उस के सारे फ़ैसले हिकमत से भरे (तत्वपूर्ण) होते हैं।

102. बद्र कि जंग से पहले सूरह मुहम्मद नाज़िल हुई थी जिस में जंग के सिलसिले में यह हुक्म दिया गया था कि:

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰى
اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَاِمَّا مَنًّا ۢ بَعْدُ وَاِمَّا
فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا۔ (سورہ محمد۔ ۴)

"जब तुम्हारा मुक़ाबला काफ़िरों से हो तो इन की गर्दनें उड़ा दो यहाँ तक कि जब तुम इन पर ग़ालिब आ (विजय पा) जाओ तो इन को मज़बूत बाँध लो। इस के बाद या तो एहसान करो या फ़िदय: लो, यहाँ तक कि लड़ाई,अपने हथियार डाल दें'। (सूरह मुहम्मद आयत ४)

इस हुक्म में लड़ने वालों को क़ैद करने की हिदायत दी गई थी जब कि उन को अच्छी तरह परास्त किया जा चुका हो। अर्थात् लड़ाई में जब तक दुश्मन का अच्छी तरह दमन न कर लिया जाए और उस का ज़ोर टूट न जाए उस समय तक मारने का क्रम जारी रहना चाहिए। बद्र की जंग में मुसलमानों से यह ग़लती हो गई थी कि उन्होंने दुश्मन का अच्छी तरह सर कुचलने से पहले गिरफ़्तारियों का सिलसिला शुरु किया और मन में यह बात थी कि क़ैदी बनाने की सूरत में इन से फिदय: वसूल किया जा सकेगा। यद्यपि यह ग़लती सारे मुजाहिदीन से नहीं बल्कि उन के एक गिरोह से हुई थी लेकिन थी यह समूहिक ग़लती जिस का नतीजा यह भी निकल सकता था कि यह क़ैदी रिहा होने के बाद मौक़ा पा कर फिर मुसलमानों के मुक़ाबले में आ जाते और कुछ तो उहुद की जंग में मुसलमानों के विरुद्ध आए भी। एवं इस से कमज़ोर मुसलमानों में फ़िदय: वसूल करने का रुज्हान जोर पकड़ सकता था। जब कि जिहाद शुद्ध रुप से अल्लाह के कलिमे को बुलंद करने के लिए किया जाना चाहिए ना कि अर्थिक लाभों को प्राप्त करने के लिए। इस कारण इस ग़लती पर मुसलमानों को सावधान किया गया ताकि वे आगे ऐसी ग़लती करने से बचें।

आयत में "किताबुम्मिनल्लाह" (अल्लाह के फ़रमान) से मुराद सुरह मुहम्मद की उक्त वर्णित आयत है। और यह चेतावनी जो दी कि "तुम को कड़ी सज़ा भुगतनी पड़ती" तो यह उन लोगों के बारे में है जिन्होंने पूरी तरह विजय पाने से पहले दुश्मनों को गिरफ़्तार कर लिया था और समय से पूर्व इस गिरफ़्तारी में उन के सामने आर्थिक लाभ (फिदय:) की प्राप्ति थी। इस लिए

इस क्रोध एवं प्रकोप को सारे सहाबा के बारे में समझना सही नहीं। इस का उदाहरण सूरह नूर की यह आयत है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ .(سورۃالنور۔١٤)

"अगर तुम लोगों पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उस के कारण तुम को सख़्त अज़ाब पहुँचता।"

(सूरह नूर आयत :१४)

इस आयत में भी अज़ाब की बात यूँ तो सामान्य मुसलमानों के बारे में कही गई है लेकिन अभिप्रेत जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है वे मुसलमान हैं जो इफ़्क की घटना में लिप्त थे।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि अगर मुसलमानों ने समय से पूर्व काफ़िरों को बन्दी बना लिया था तो बाद में उन को वध करने का हुक्म दिया जा सकता था। फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ। इस का जवाब यह है कि बन्धक बना लेने के बाद किसी विशेष कारणवश ही किसी बन्दी का वध किया जा सकता था। साधारण बन्धकों के साथ क़त्ल का मामला नहीं किया जा सकता था। क्यों कि सूरह मुहम्मद की उक्त वर्णित आयत में पहले ही यह हुक्म दिया जा चुका था कि जब उन को क़ैदी बना लो तो फिर या एहसान का रवैया अपना कर के उन को छोड़ देना है या फिदय: ले कर रिहा कर देना है।

बहर हाल जिन मुसलमानों से यह ग़लती हुई थी वह ऐसी ग़लती नहीं थी जिस के बारे में उन्हें ठीक से कुछ मालूम न हो बल्कि एक हुक्म पर सही तौर से अमल न करने की ग़लती थी जिस को मोह माया की लालसा ने संगीन बना दिया था इस लिए अल्लाह तआला की ओर से यह आपत्ति वयक्त हुई।

स्पष्ट रहे कि आयत के अल्फ़ाज़ "फ़ीमा अख़ज़्तुम" का अनुवाद आम तौर से "तुम ने जो कुछ लिया उस की वजह से" किया जाता है जिस का अर्थ यह होता है कि फिदय: लेने पर आपत्ति एवं क्रोध को ज़ाहिर किया गया। आयत का यह मतलब मानने की सूरत में बड़े बड़े सहाबा भी प्रकोप की ज़द में आ जाते हैं। इस के अलावा इस में मुश्किल यह है कि फिदय: लेने पर अगर यह प्रकोप एवं क्रोध था तो फ़िदय: वापस किया जा सकता था । एवं इस में दूसरी अड़चनें भी हैं। इस लिए हम ने इस का अनुवाद "तुम्हारे क़ैद करने के नतीजे में" किया है क्यों कि अरबी में जहाँ अख़्ज़ का अर्थ "लेने" का है वहीं "गिरफ़्तार कर लेने" के भी हैं अत: अरबी में "आख़ीज़" क़ैदी को कहते हैं । (देखिए लिसानुल अरब जिल्द ३ पृष्ट ४७३) इस मतलब से क्रोध एवं प्रकोप का क्षेत्र उन ही लोगों तक सीमित रहता है जिन से समय से पूर्व बन्दी बनाने की ग़ल्ती हुई थी एवं दूसरी अड़चनें भी रफ़ा हो जाती हैं।

103. अर्थात जो ग़लती तुम से हो गई वह अपनी जगह लेकिन जहाँ तक माले-ग़नीमत (परिहार सामाग्री) का सवाल है जिस में क़ैदियों से लिया हुआ फ़िदय: भी शामिल है उस के बरतने में कोई हरज नहीं है कि यह हलाल और पाक है।

इसी के अन्तर्गत इस से एक महत्त्वपूर्ण उसूली बात भी साफ़ हुई और वह यह कि ग़नीमत का ये माल जो काफ़िरों की संपत्ति थी उन्होंने जायज़ और नाजायज़ दोनो तरह से कमाया होगा। लेकिन जब वह जायज़ रास्ते से मुसलमानों के हाथ लग गया तो इन बातों को कुरेदे बग़ैर उस को वैध और पवित्र ठहराया गया। इस लिए इस से यह बात निकलती है कि सामूहिक रुप से जो माल मुसलमानों की तरफ़ आए या इस्लामी हुकूमत के ख़ज़ाने में जमा हो उन का उधर से इधर होना अगर जायज़ ढंग का है तो माल से सम्बन्धित इस विवाद में पड़ने की ज़रुरत नहीं है कि वह अवैध की मिलावट से पाक था या नहीं।

104. अर्थात् जो फ़िदय: तुम से लिया गया है उस के बदले तुम्हें इस्लाम को स्वीकार करने का सौभाग्य प्रदान करेगा और इस तरह तुम उस की क्षमा के हक़दार हो जाओगे बशर्ते कि इस अवसर पर तुम्हारी जो जान बख़्शी हुई है उस की तुम क़द्र करो ।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

71. और अगर वे तुम से बेवफ़ाई करना चाहते हैं तो इस से पहले वह अल्लाह के साथ बेवफ़ाई कर चुके हैं और इसी का नतीजा है कि उस ने उन को तुम्हारे क़ाबू में दे दिया।[105] और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला (तत्वदर्शी) है।

وَإِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ
مِنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

72. जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने हिज़रत (अल्लाह की राह में देश त्याग) की [106] और अल्लाह की राह में अपने माल और जान से जिहाद किया,[107] और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को) शरण दी और उन की सहायता की [108] वही आपस में एक दूसरे के मित्र (रफ़ीक़) हैं।[109] और जो लोग ईमान तो लाए लेकिन हिजरत नहीं की उन से तुम्हारी मित्रता का कोई सम्बन्ध नहीं जब तक कि वे हिजरत न करें [110] हाँ अगर दीन के मामले में वे तुम से सहायता चाहें तो तुम पर सहायता करना अनिवार्य हैं, यह और बात है कि वे किसी ऐसी क़ौम के विरुद्ध सहायता माँगें जिस से तुम्हारा समझौता हो।[111] और तुम जो कुछ करते हो वह अल्लाह की निगाह में है।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا أُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ
مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَإِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ
النَّصْرُ إِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾

73. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे आपस में एक दूसरे के मित्र हैं। अगर तुम ऐसा न करोगे तो ज़मीन में फ़ितना और प्रचंड उपद्रव होगा।[112]

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۗ إِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي
الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾

74. जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को)शरण दी और सहायता की वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन के लिए क्षमादान और सम्मानजनक रिज़्क़ (रोज़ी) है।[113]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۚ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾

75. और जो लोग बाद में ईमान लाऐं और हिजरत करें और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद करें वे भी तुम ही में से हैं।[114] और ख़ून के सम्बन्धी, अल्लाह के क़ानून में एक दूसरे के अधिक हक़दार हैं।[115] अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَأُولٰٓئِكَ
مِنْكُمْ ۗ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

105. अर्थात् अगर वे नबी के एहसान की नाक़द्री करके फिर उस के मुक़ाबले में आना चाहते हैं तो याद रखें वे फिर मुसलमानों के हाथों परास्त होंगे ।

106. हिजरत का मतलब भागने के नहीं अल्लाह की राह में देश त्याग करने के हैं। ईमान वाले देश की भक्ति एवं उस की पूजा करने वाले नहीं होते बल्कि ख़ुदा की भक्ति एवं उस की पूजा करने वाले होते हैं। इस लिए जब ख़ुदा का दीन इस बात का तक़ाज़ा करता है कि वे इस ज़मीन को त्याग दें जो सत्य के लिए तंग हो रही है तो वे इस क़ुर्बानी के लिए तैयार हो जाते हैं। उस ज़माने में जब कि सूरह अन्फ़ाल नाज़िल हुई इस्लाम की शक्ति मदीना में एकत्र की जा रही थी । ताकि नबी के नेतृत्व में कुफ्र का मुक़ाबला किया जा सके। इस लिए इस उद्देश्य की ख़ातिर जो लोग मक्का छोड़ कर मदीना आ गए थे वे आदर सम्मान के योग्य अधिकारी हुए। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट 177

107. जिहाद का अर्थ मात्र प्रयास एवं संघर्ष के नहीं है बल्कि ऐसे अंथक प्रयास एवं संघर्ष के हैं जिस में ईमान वाले सत्यविरोधी शक्तियों से टक्कर लें । सत्य और असत्य में जब जंग बरपा हो तो वे सत्य के पक्ष (Defence) में अपने माल भी ख़र्च करें और जान की बाज़ी भी लगा दें। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह माइदा नोट 123

108. मुराद मदीना के अंसार (सहायक) हैं जिन्होंने हिजरत करने वाले मुसलमानों की हर तरह सहायता की। यह सहायता क्षणिक राहत नहीं थी बल्कि अपने आधे माल की स्वेच्छा पूर्वक दी गई भेंट थी साथ ही उन्होंने उन को रहने के लिए घरों में जगह दी।

109. (Text) में शब्द औलिया इस्तेमाल हुआ है जो वली का बहुवचन है। अरबी में यह शब्द कई अर्थों में बोला जाता है। लेकिन जब इस का इस्तेमाल दुश्मन के मुक़ाबले में होता है तो उस का अर्थ, मित्र, सहयोगी, सहचर, सहायक, और समर्थक के होता है। यहाँ हिजरत करने वालों और सहायता करने वालों (अंसार) को एक दूसरे का वली जो कहा गया है तो इस का मतलब यह है कि काफ़िरों के मुक़ाबले में वह एक दूसरे के रफ़ीक़ (मित्र) हैं। इस लिए उन पर एक दूसरे की सुरक्षा, समर्थन और सहायता की ज़िम्मेदारी आयद होती है।

उन के अन्दर ऐसी एकता ऐसी सामाजिकता एवं ऐसा संगठन होना चाहिए कि वे भली भाँति अपनी सुरक्षा भी कर सकें और सत्य (हक़) के लिए जिहाद भी कर सकें। मित्रता का यह सम्बन्ध जो इस्लामी राज्य के मुसलमान नागरिकों के बीच स्थापित कर दिया गया था उन पर भारी राजनितिक दायित्व डालता था।

110. अर्थात् जिन लोगों ने इस्लाम तो क़ुबूल किया है लेकिन वे हिजरत कर के मदीना नहीं आए हैं उन से राजनीतिक मामलों एवं मसलों में तुम्हारी मित्रता का सम्बन्ध नहीं है। वे मुसलमान होने के आधार पर इस्लामी समाज के अंग अवश्य हैं किन्तु मदीना में मुसलमानों के राजनीतिक ढाँचे का जो विस्तार हुआ है उस के सदस्य नहीं हैं इस लिए उन की सुरक्षा का दायित्व तुम पर नहीं आता और न उन पर उस समझौते की पाबन्दी अनिवार्य ठहरती है जो तुम ने किसी क़ौम से किया हो।

इस से स्पष्ट हुआ कि इस्लाम का अंतर्राष्ट्रीय अथवा विश्वव्यापी क़ानून यह है कि एक इस्लामी राज्य अपनी सीमाओं से बाहर रहने वाले मुसलमानों की सुरक्षा की ज़िम्मेदार नहीं।

111. अर्थात् चूँकि वे इस्लामी राज्य की सीमाओं से बाहर रहते हैं इस लिए यद्यपि तुम पर उन की सुरक्षा की क़ानूनी ज़िम्मेदारी आयद नहीं होती लेकिन चूँकि वे दीनी भाई और मिल्लते-इस्लामिया (इस्लामी समूह) के अंग हैं इस लिए दीन के मामले में अगर वे किसी प्रकार की सहायता चाहते हों और मांग करते हों तो तुम्हें चाहिए कि उन की मदद करो। यह और बात है कि वे जिस राज्य में रहते हों उस के साथ तुम्हारा सुलह का समझौता हो और वे उस के विरुद्ध तुम से मदद चाहें। ऐसी परिस्थिति में तुम को समझौते का आदर करना चाहिए और अपने मुसलमान भाईयों की मदद के लिए अनुचित रवैया नहीं अपनाना चाहिए।

इस से अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून से सम्बन्धित निम्न लिखित उसूली बातें स्पष्ट होती हैं।

(A) ग़ैर इस्लामी राज्यों के मुस्लिम अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की कोई क़ानूनी ज़िम्मेदारी इस्लामी राज्य पर लागू नहीं होती लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि वे उन से इस तरह बे परवाह रहें कि वक्त ज़रुरत दीन के मामले में उन की कोई मदद न करें। बल्कि जिस तरह की मदद के वे हक़दार हैं उन की ज़रुर मदद की जाए। क्यों कि सब एक ही समूह मिल्लते-इस्लामिया के लोग हैं। उदाहरणार्थ अगर मुसलमान मस्जिदों के निर्माण या दीनी स्कूलों की स्थापना या दीन के प्रकाशन, प्रचार एवं प्रसार के लिए किसी इस्लामी राज्य से मदद चाहें तो इन कामों के लिए उन की सहायता करने में कोई चीज़ आड़े नहीं है बल्कि परिस्थितियाँ जिस हद तक इजाज़त दें ऐसे कामों में उन की सहायता ज़रुर करना चाहिए।

(B) अगर इस्लामी राज्य ने किसी ग़ैर इस्लामी राज्य के साथ जंग न करने का समझौता कर लिया हो और वहाँ के मुस्लिम अल्पसंख्यक इस्लामी राज्य से किसी ऐसी सहायता की मांग करते हैं जिस को वे अपने राज्य के विरुद्ध इस्तेमाल करना चाहते हैं तो इस की कदापि अनुमति नहीं है क्यों कि यह समझौते

का ख़ुला उल्लंघन है।

(C) ज़ुल्म चाहे मुसलमानों पर किया जा रहा हो या ग़ैर मुस्लिमों पर। अल्पसंख्यकों को इस का निशाना बनाया जा रहा हो या बहुसंख्यकों को, इस्लामी राज्य के लिए उस के विरुद्ध आवाज़ उठाने में कोई चीज़ रुकावट नहीं है क्यों कि मज़लूम का साथ देना इस्लामी नैतिकता का महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन जिस राज्य में यह ज़ुल्म हो रहा हो उस के विरुद्ध कोई कार्रवाई उस स्थिति में नहीं की जा सकती जब कि उस के साथ इस्लामी राज्य ने सुलह का समझौता कर रखा हो।

112. अर्थात सारे काफ़िर मिल कर एक समूह हैं। उन के विचार और सिद्धान्त परस्पर विपरीत भाव के क्यों न हों जहाँ तक कुफ्र अर्थात सत्य के इन्कार का सम्बन्ध है वे सब इस पर सहमत हैं और इस्लाम के ख़िलाफ़ अपनी एकत्रित एवं संगठित शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते हैं। इन हालात में अगर मुसलमानों ने उन निर्देशों पर अमल नहीं किया जो उन्हें आपसी सहयोग, आपस की एकता और इस्लामी राज्य के बाहर के मज़लूम मुसलमानों की मदद के लिए दिए जा रहे हैं तो भयंकर फ़ितने तथा उपद्रव की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

आज पूरे संसार का वातावरण फ़ितनों और उपद्रवों से दूषित हो गया है यहाँ तक कि हक़ और सच्चाई की राह चलने वालों के लिए सांस लेना मुश्किल हो गया है और फ़साद का सैलाब धरती पर इस तरह उमड़ आया है कि दुनिया की छोटी बड़ी सब क़ौमें इस में बही जा रही हैं। मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सब इस की लपेट में आ रहे हैं। यह परिणाम है इस बात का कि मुसलमानों को एक अच्छी और सुलझी हुई शक्ति बन कर उभरना चाहिए था मगर वे न उभर सके। उन को विभिन्न देशों में सत्ता प्राप्त है मगर वे अपने दायित्व की ओर से आँखें मूँदे हुए हैं और दुनिया से फ़ितना और फ़साद को मिटाने के लिए जिन साधनों को उपयोग में लाने की आवश्यकता हैं उस की तरफ़ से वे बिल्कुल बे परवाह हैं। ऐसी परिस्थिति में उन पर और दुनिया वालों पर अल्लाह का प्रकोप अवतरित हो रहा हो तो इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं।

113. ऊपर हिजरत करने वालों (मुहाजिरिन) और सहायता करने वालों (अन्सार) को उन के दायित्व का एहसास दिलाया गया था यहाँ उन को सच्चा और पक्का मोमिन ठहराते हुए आख़िरत की कामयाबी की शुभ सुचना दी गई है।

114. यह हिदायत हिजरत करने वालों और सहायता करने वालों अर्थात मुहाजिरीन और अन्सार को दी गई है कि आगे जो लोग ईमान लाएं और हिजरत कर के तुम्हारे पास आ जाएं तथा तुम्हारे साथ जिहाद में शरीक हों उन को अपने गिरोह में शामिल समझो और उन के साथ इस आधार पर कोई भेद भाव का व्यवहार न करो कि वे इस से पहले तुम्हारे विरोधी रहे हैं।

115. अर्थात् जहाँ तक विरासत (संपत्ति) का मामला है, मुसलमानों के बीच इस का वितरण ख़ून के सम्बन्धों के आधार पर अमल में आएगा न कि उस भाईचारगी के सम्बन्धों के आधार पर जो अन्सार और मुहाजिरीन के बीच क़ायम कर दिया गया था। यह सम्बन्ध अपनी जगह पर और ख़ून के सम्बन्ध अपनी जगह पर। अल्लाह के उत्तराधिकार के क़ानून की बुनियाद ख़ून के सम्बन्धों पर है क्यों कि सामाजिक मामलों में उन के अधिकार प्राथमिकता रखते हैं। यहाँ यह उसूली हिदायत देने पर बस किया गया था। बाद में जब सूरह निसा नाज़िल हुई तो उस में उत्तराधिकार सम्बन्धी नियमों को विस्तार से बयान किया गया है।

९. सूरह अत्-तौबा

नाम : आयत 117, और 118 में तौबा क़ुबूल होने की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तौबा है । इस का दूसरा नाम ''बराअत'' भी है इस लिहाज़ से कि पहली ही आयत में प्रतिज्ञा भंग करने वाले बहुदेववादियों के समझौतों से बरी होने का एलान किया गया है।

नाज़िल होने का समय: यह सूरह सन् 8 हिजरी और सन् 9 हिजरी के दौरान विभिन्न मौक़ों पर अलग अलग हिस्सों की शक्ल में नाज़िल हुई है। विषयों पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि सन 8 हिजरी में जब बहुदेववादियों ने हुदैबिय: के समझौते को तोड़ दिया तो 13 से 24 आयतें नाज़िल हुईं। तबूक की जंग (रजब सन 9 हिजरी) से कुछ पहले आयतें 29 से 35 और फिर उस की तैयारी के सिलसिले में आयतें 38 से 41 नाज़िल हुईं। तबूक से वापसी पर आयतें 42 से 127 नाज़िल हुईं। इन में से कई आयतें तो वापसी के सफ़र ही में नाज़िल हुई थीं और अधिकतर आयतें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना पहुँचने के बाद थोड़े थोड़े अन्तराल पर अवतरित हुई हैं। ज़ीक़ादा सन 9 हिजरी जब आप ने हज़रत अबू बक्र (रजि.) को अमीर बना कर हज्ज के लिए रवाना कर दिया तो आयतें 1 से 12 और 25 से 28 एवं 36,37 नाज़िल हुईं। आप ने हज़रत अली (रजि.) को उन के पीछे भेजा ताकि वे हज्ज के अवसर पर सूरह ''बराअत''का शुरू का हिस्सा जो आयत 1 से 27 पर आधारित है और जिस में महत्वपूर्ण सूचनाएं हैं लोगों को सुनाएं।

आख़िरी दो आयतें 128 और 129 आख़िर में नाज़िल हुई हैं। संभवत: सन् 10 हिजरी के अन्त में।

केन्द्रीय विषय : सूरह अन्फ़ाल की तरह इस का भी केन्द्रय विषय जिहाद है। जिहाद की शुरुआत बद्र की जंग से हुई थी जो सूरह अन्फ़ाल का विषय है और इस का चरम बिन्दू मक्का विजय और तबूक युद्ध था। जो सूरह तौबा का विषय है। गोया यह सूरह उस समय नाज़िल हुई जब कि इस्लाम अपने इन्क़िलाबी प्रयासों एवं संघर्ष के अन्तिम चरणों में प्रवेश कर गया था। इस मरहले में जिस रहनुमाई की आवश्यकता थी उस का सामान इस में किया गया।

कलाम की तरतीब: आयत 1 से 28 में अरब के बहुदेववादियों को जिन पर इस्लाम की हुज्जत पूरी तरह क़ायम हो गई थी अर्थात उन्हें हर तरह से समझा बुझा कर उस अवस्था को पहुँचा दिया गया था कि वे बचने के लिए कोई तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकते थे और अनेक क़बीलों के साथ समझौते भी हुए थे। किन्तु इस्लाम दुश्मनी में वे इन समझौतों का खुला उल्लंघन कर रहे थे, अन्तिम रुप से चैलेन्ज किया गया है कि अब इस्लाम के सिवा कोई चीज़ इन से क़ुबूल नहीं की जाएगी अलबत्ता जिन क़बीलों के साथ निर्धारित समय के साथ समझौता कर रखा था और उन्होंने समझौतों का उल्लंघन नहीं किया था उन के बारे में इर्शाद हुआ कि उन की संधि मुद्दत पूरी होने तक बाक़ी रहेगी। लेकिन इस के बाद इस का नवीनीकरण नहीं किया जाएगा। जो क़ौम हुज्जत क़ायम होने के बाद रसूल के ख़िलाफ़ तलवार उठाए उस के लिए अल्लाह की सुन्नत (नियम) यह है कि वह उस के अस्तित्व को मिटा देता है। यह मिटाना प्राकृतिक घटनाओं के रुप में भी हो सकता है और रसूल के साथियों की तलवार के द्वारा भी। अरब के बहुदेववादियों के मामले में अल्लाह का फ़ैसला यह हुआ कि तलवार के द्वारा इन का ख़ात्मा कर दिया जाए इस लिए मुसलमानों को हिदायत की गई कि वे जिहाद के उस अन्तिम चरणो के दायित्व को अदा करने के लिए तैयार हो जाएं और पूरे जोर के साथ तलवार संभाल लें।

आयत 29 से 35 में अहले किताब अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों से सम्बन्धित इस्लामी राज्य की पॉलीसी स्पष्ट की गई है एवं उन की इस्लाम दुश्मनी के कारणों को बेनिक़ाब करते हुए उन को उनके आख़िरी अन्जाम से आगाह किया गया है।

आयत 36 और 37 में माह और साल के सिलसिले में प्राकृतिक जन्तरी का अनुपालन करने और आदरणीय महीनों के आदर का लिहाज रखने एवं बहुदेववादियों की मन गढ़त जंतरी को रद्द करने कि हिदायत की गई है। गोया इन दो आयतों की हैसियत उन आदेशों पर जो बहुदेववादियों के बारे में ऊपर बयान हुए एक परिशिष्ट की है।

आयत 38 से 41 तबूक की जंग के अवसर पर नाज़िल हुई हैं और इन में मुसलमानों को जिहाद के लिए निकलने पर उभारा गया है।

आयत 42 ता 70 ग़ज़वा तबूक के बाद नाज़िल हुई हैं और उन में पाखण्डियों (मुनाफ़िक़ों) पर जो जिहाद से जी चुरा रहे थे कड़ी पकड़ की गई है। और मौक़े की मुनासिबत से आयत 60 में सदकों का व्यय मार्ग (Accounts) बयान किये गए हैं।

आयत 71 और 72 में सच्चे अहले ईमान को कामयाबी की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है।

आयत 73 से 87 में पाखण्डियों (मुनाफ़िक़ों) के साथ कड़ाई बरतने और जिहाद करने का हुक्म दिया गया है साथ ही

उन को झिंझोड़ा गया है कि यदि वास्तव में उन को ख़ुदा और रसूल से लगाव है तो वे अपने रवैया को सुधार लें वरना उन के रवैया से साबित हो गया है कि वे अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।

आयत 88 और 89 में रसूल के सच्चे साथियों की क़ुर्बानियों का आदर करते हुए उन्हें कामयाबी की ख़ुशख़बरी दी गई है।

आयत 90 में अरब देहातियों (बद्दू) को पाखण्ड का (मुनाफ़िक़ाना) रवैया अपनाने पर कठोर दंड की धमकी सुनाई गई है।

आयत 91 और 92 में वास्तविक कारणवश जिहाद में शरीक न होने वालों को तसल्ली दी गई है कि उन से कोई पूछ ताछ नहीं होगी बशर्ते कि वे अल्लाह और उस के रसूल के सच्चे वफ़ादार बन कर रहें।

आयत 93 से 96 में जिहाद से जी चुराने वालों के झूठे बहानों की क़लई खोल दी गई है।

आयत 97 से 101 में बताया गया है कि बद्दू अरबों में कपटी और पाखंडी (मुनाफ़िक़) भी हैं और सच्चे ईमान वाले भी। पाखंड का रवैया अपनाने वालों को उन के बुरे अन्जाम की ख़बर दी गई है और सच्चे मोमिनों को अल्लाह की रहमत में दाखिल होने की ख़ुशख़बरी। फिर जब रहमत का ज़िक्र हुआ तो जिन लोगों ने इस्लाम की राह में सब से पहले क़दम बढ़ाया था उन के बलिदानों का पूरा पूरा आदर सम्मान करते हुए एवं उन के पदचिन्हों पर चलने वालों की प्रशंसा करते हुए उन्हें बहुत बड़ी कामयाबी की सुखसूचना सुनाई गई है।

आयत 102 से 106 में उन लोगों का ज़िक्र है जो ईमान वालों में से थे लेकिन उन से क़ुसूर हो गए थे।

आयत 107 से 110 में मुनाफ़िक़ों के एक ख़ास षडयंत्र को बेनिक़ाब किया गया है जो उन्हों ने एक नई मस्जिद खड़ी करने की आड़ में की थी।

आयत 111 और 112 में सच्चे ईमान वालों के गुण बयान किये गए हैं और उन्हें कामयाबी की ख़ुशख़बरी दे दी गई है।

आयत 113 से 116 में बहुदेववादियों के लिए क्षमा की प्रार्थना करने से मनाही की गई है और इस सिलसिले में एक ग़लतफ़हमी का निवारण किया गया।

आयत 117 और 118 में उन लोगों के क़ुसूरों की माफ़ी और तौबा क़ुबूल किये जाने का एलान जिन्होंने नाज़ुक वक्त में नबी के साथ वफ़ादारी का सबूत दिया और यह हिदायत कि वे सत्यप्रिय लोगों की मित्रता एवं उन का साथ अपनाएं।

आयत 119 से 122 में मदीना वासियों और ईर्द गिर्द के बद्दू अरबों को रसूल के साथ पूरी वफ़ादारी और जान न्योछावर करने का रवैया अपनाने एवं दीन की समझ एवं उस की सीख प्राप्त करने का निर्देश ।

आयत 123 में ईमान वालों को अपने अड़ोस पड़ोस के काफ़िरों से जंग करने की हिदायत की गई है। आयत 124 से 127 मुनाफ़िक़ों के बारे में आख़िरी बात कही गई है।

आयत 128 और 129 उपसंहार है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी नियुक्त होने से सम्बन्धित आख़िरी बात इर्शाद हुई है। अर्थात यह बात कि रसूल तुम्हारा सच्चा हमदर्द और भला चाहने वाला है। उस की क़द्र जानों कि इसी में तुम्हारी अपनी भलाई है।

बग़ैर बिस्मिल्लाह के सूरह का आरंभ: क़ुर्आन की हर सूरह की शुरूआत बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से हुई है । लेकिन इस सूरह की यह विशेषता है कि इस की शुरुआत बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से नहीं हुई है इस लिए इस को ग्रंथ में नहीं लिखा गया और यह इस बात का खुला प्रमाण है कि क़ुर्आन जिस तरह अवतरित हुआ था उसी तरह महफ़ूज़ है। सहाबा किराम ने इस की किताबत में अत्यंत सावधानी बरती है और वह एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल को ज्यों का त्यों स्थानांतरित (Transfer) होता रहा है।

रही इस की हिकमत तो जिस तरह हर सूरह अपने गुणों एवं विशेषताओं में प्रमुख एवं अकेली है उसी तरह इस सूरह की प्रमुख विशेषता यह है कि वह एक म्यान से निकली तलवार है जो उन लोगों पर गिरा चाहती है जिन्हों ने क़ुर्आन की सारी बातें सुन लेने के बाद इस के प्रभाव को अपने उपर पड़ने नहीं दिया बल्कि इस का विरोध करने के लिए कमर कस ली और क़ुर्आन मानने वालों से जंग छेड़ दी।

स्पष्ट रहे कि सूरह तौबा नाज़िल होने के लिहाज से सिवाय सूरह नस्र के क़ुर्आन की आख़िरी सूरह है।

सूरह बराअत और क़ुर्आन की तरतीब: यहाँ यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि ग्रंथ (क़ुर्आन) में सूरतों की तरतीब वही है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह्य के द्वारा निश्चित कर दी थी। और तरतीब का यह काम अल्लाह ही के ठीक उस आदेश के अनुकूल हुआ जिस में फ़रमाया गया है:

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَ قُرْآنَهُ.(سورة القيامة)

''इस को जमा करना और पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है।'' (अल्क़ियाम: १७)

इस लिए जिन रिवायतों एवं उल्लेखों में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बतलाया नहीं था कि सूरह

''बराअत'' को कहाँ रखना है और हज़रत उस्मान ने सूरह अन्फ़ाल से इस की मुनासिबत देख कर उस सूरह के बाद इस को रखा तो ये रिवायतें अथवा ये उल्लेख स्वीकार नहीं हैं क्यों कि इस से कुछ दूसरे सवाल भी पैदा होते हैं। इमाम राज़ी ने इस का खंडन करते हुए लिखा है:

'' सही बात यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्य के द्वारा यह हुक्म दिया था कि इस सूरह को सूरह अन्फ़ाल के बाद रखा जाए और आप ने वह्य ही के आधार पर इस सूरह के शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को नहीं लिखा था।''

(अत्-तफ़्सीरुलकबीर जिल्द 15 पृष्ट 216)

और जब सूरतों की मौजूदा तरतीब वही है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बना दी थी तो हमें उस में परिवर्तन का कोई अधिकार नहीं है। मौजूदा दौर में कुछ लोग अपनी नासमझी के कारण क़ुर्आन की मौजूदा तरतीब से संतुष्ट नहीं हैं। वे इस क़ुर्आन को अवतरण के क्रमानुसार संकलित करना चाहते हैं मगर उन का यह ख़याल एक नये फ़ितने को न्योता देने से अधिक कोई हक़ीक़त नहीं रखता।

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

मदीना से तबूक

दूरी लगभग ७०० किलोमिटर

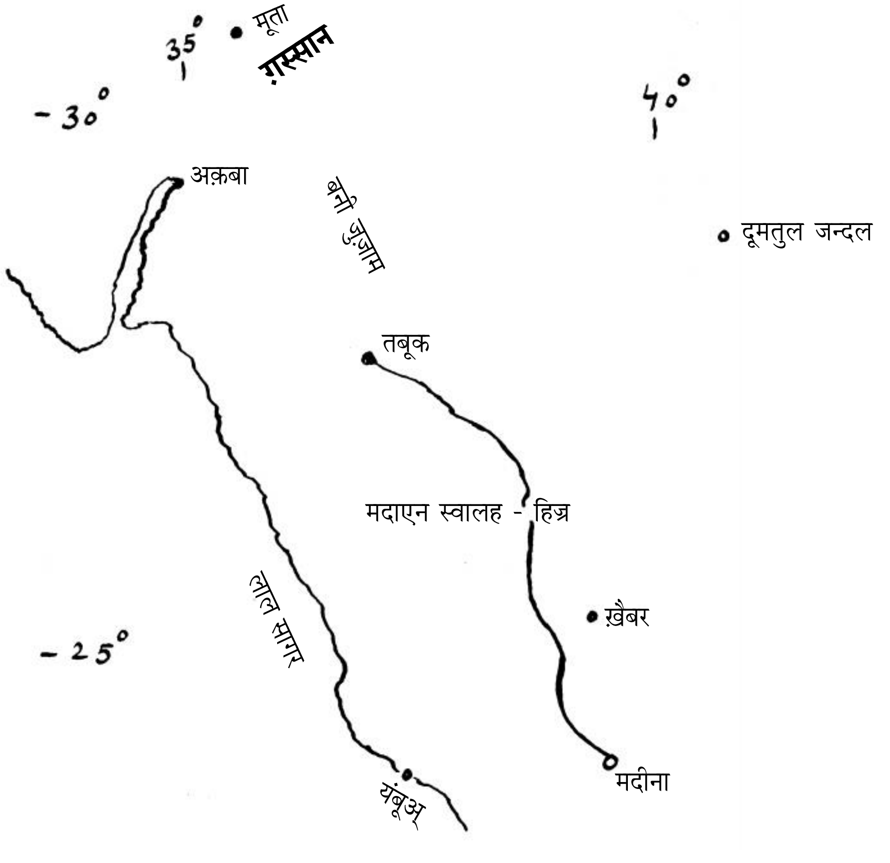

९-सूरह अत्-तौबा

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ

आयतें : १२९

1. ज़िम्मे से बरी होने का एलान है अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ से उन बहुदेववादियों से जिन से तुम ने समझौते किए थे।[1]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾

2. अब तुम ज़मीन में चार महीने चल फिर लो [2] और जान रखो कि तुम अल्लाह को परास्त नहीं कर सकते और अल्लाह काफ़िरों को अपमानित करने वाला है।[3]

فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ
وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾

3. और लोगों के लिए आम एलान है अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ से हज्जे अकबर के दिन [4] कि अल्लाह बहुदेववादियों के ज़िम्मे से बरी है और उस का रसूल भी [5] अगर अब भी तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर नहीं मानते तो जान रखो तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते। और (ऐ पैग़म्बर !) काफ़िरो को दुखदायिनी यातना की शुभ सुचना सुना दो।

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ
اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿٣﴾

4. अलबत्ता वे बहुदेववादी इस से अलग हैं जिन से तुम ने समझौता कर रखा है और इस के बाद उन्होंने इस को निभाने में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की। ऐसे लोगों के समझौते को उन की मुद्दत समाप्त होने तक पूरा करो [6] कि अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) को पसंद करता है।[7]

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ
عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٤﴾

5. फिर जब आदर वाले महीने गुज़र जाएं [8] तो इन बहुदेववादियों को जहाँ पाओ क़त्ल करो [9] और उन्हें पकड़ो और घेरो और हर घात में उन की ताक में बैठे रहो। [10] फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो।[11] निस्संदेह अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ
وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا
لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾

1. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कई क़बीलों से सुलह के समझौते किये थे। लेकिन उन में से बहुत से क़बीले समझौतों का उल्लंघन कर रहे थे। इस लिए ऐसे तमाम समझौतों के समाप्त होने की घोषणा की गई ।

2. उन को चार माह की मुहलत दी गई ताकि इस मुद्दत में वे अपने बारे में कोई अन्तिम निर्णय कर लें। या तो शिर्क और मूर्तिपूजा को छोड़ दें या फिर जंग के लिए तैयार हो जाएं।

3. अर्थात अल्लाह ने बहुदेववादियों को अपमानित करने का फ़ैसला कर लिया है। इस लिए जो लोग अन्तिम समय तक शिर्क पर जमे रहेंगे अल्लाह का यह फ़ैसला उन पर लागू हो कर रहेगा। वे कितना ही ज़ोर लगाएं अल्लाह के फ़ैसले को अपने ऊपर लागू होने से रोक नहीं सकते। और इतिहास गवाह है कि अल्लाह का यह फ़ैसला अरब के बहुदेववादियों पर लागू हो कर रहा।

4. शब्द अकबर (बड़ा) हज्ज की विशेषता है जो उसे उमर: से जिस को हज्जे असग़र (छोटा हज्ज) कहा जाता था अलग करती है एवं यह विशेषता हज्ज के महासम्मेलन की ओर संकेत करती है।

यह महासम्मेलन अरफ़ात में भी होता है और मिना में भी। लेकिन हज्ज अकबर के दिन से मुराद यौमुन्नहर अर्थात 10 ज़िलहिज्जः है। इस रोज मिना में हज्ज के लिए लोग जमा होते हैं। और चूँकि क़ुरैश अरफ़ात नहीं जाया करते थे इस लिए इस घोषणा के लिए जो हज्ज के अवसर पर करना था मिना ही का दिन उचित हो सकता था जिस में हर प्रकार के मुश्रिक (बहुदेववादी) शामिल हुआ करते थे।

आज कल मुसलमान अरफ़ात का दिन अगर जुमा को पड़ता है तो उसे हज्जे अकबर कहते हैं। हालांकि इस आयत के हिसाब से हर हज्ज, हज्जे-अकबर ही है क्यों कि यह हज्ज की स्थायी विशेषता है।

5. ज़िम्मे से बरी होने का यह एलान उन बहुदेववादियों के बारे में है जिन से मुसलमानों का कोई समझौता नहीं हुआ था और अल्लाह और उस के रसूल का ज़िम्मे से बरी होने का मतलब यह है कि अब उन के लिए न अल्लाह के क़ानून में कोई सुरक्षा एवं पनाह है और न उस के रसूल की ओर से उन की जानों की कोई ज़मानत। सुलह और समझौते का दौर गुज़र चुका। अब या तो उन्हें बहुदेववादी रवैये से बाज़ आना होगा या फिर उन के विरुद्ध बल प्रयोग करना होगा।

यह एलान सन 9 हिजरी में हज्ज के मौक़े पर अर्थात 10 ज़िलहिज्जा को मिना में किया गया। उस समय बहुदेववादीयों ने अपने तरीक़े पर हज्ज किया था। और मुसलमानों ने अपने तरीक़ा पर हज्ज किया था। यह हज्ज हज़रत अबू बक्र (रजि.) के नेतृत्व में हुआ था और हज़रत अली ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से चार बातों की घोषणा की थी।

(A) जन्नत में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जा पाएगा जो ईमान न लाया हो।

(B) इस साल के बाद कोई बहुदेववादी हज्ज नहीं कर सकेगा ।

(C) और न कोई नग्नावस्था में काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) कर सकता है।

(D) जिन लोगों के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का समझौता है उसे निर्धारित मुद्दत तक पूरा किया जाएगा।

हज़रत अबू हुरैरः (रजि.) कहते हैं कि जब हज़रत अली की आवाज़ घोषणा करते करते बैठ गई तो मैं एलान करने लगा।

(तफ़सीर तबरी जिल्द 10 पृष्ट 45)

6. जिन बहुदेववादियों के साथ मुसलमानों के सुलह के समझौते एक निर्धारित मुद्दत के लिए हुए थे और उन्हों ने उन समझौतों का उल्लंघन नहीं किया था उन के साथ समझौते की मुद्दत समाप्त होने तक समझौते का पालन करने का हुक्म इस आयत में दिया गया है। ये क़बीले ख़ज़अ बनु ज़मर: और बनु किनाना थे ।

7. क़ुर्आन अपने अनुयायियों को हर हाल में तक़वा (ईश भय) का रास्ता अपनाने का निर्देश देता है। चाहे मामला हिदायत की पाबन्दी का हो या सुलह और जंग का या राजनीति एवं सामाजिकता का ठीक उसी तरह जिस तरह कि व्यक्तिगत मामलों में तक़वा (ईश भय) पर दृढ़ रहना आवश्यक है।

8. आदर वाले महीनों के बारे में तफ़सील सूरह बक़र: नोट 269 में गुज़र चुकी।

यहाँ आदर वाले महीनों के गुज़रने का मतलब यह है कि जब इस सिलसिले का आख़िरी महीना अर्थात मुहर्रम गुज़र जाए तो उन बहुदेववीदियों की जिन से तुम्हारा कोई समझौता नहीं हुआ था तलवार से ख़बर लो ।

स्पष्ट रहे कि आयत 2 में चार माह की जो मुहलत दी गई थी वह उन बहुदेववादियों के लिए थी जिन के साथ मुसलमानों के समझौते हुए थे और वे उन समझौतों का उल्लंघन कर रहे थे।

9. यह अल्टीमेटम (चैलेन्ज) विशेष रुप से अरब के बहुदेववादियों को दिया गया था क्यों कि उन का मामला दूसरी क़ौमों से भिन्न था। अल्लाह तआला ने अरबों ही में से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बना कर उठाया था और उन की अपनी भाषा अरबी में किताब उतारी थी। इस लिए उन पर अधिकार अच्छी तरह स्पष्ट हो गया था। और अल्लाह की यह सुन्नत है कि जब उस के रसूल के माध्यम

से किसी क़ौम पर हुज्जत (दलील) पूरी तरह क़ायम हो जाती है और इस के बाद भी वह ईमान नहीं लाती तो अल्लाह उस का विनाश कर देता है। क्यों कि अल्लाह से बग़ावत पर उन का यह हठ् उन को अल्लाह की धरती पर जीने के अधिकार से वन्चित कर देता है। ऐसे लोग मुर्दा होते हैं और मुर्दो के लिए जगह ज़मीन के ऊपर नहीं बल्कि ज़मीन के नीचे है। इस लिए दो परिस्थितियों में से किसी एक परिस्थिति से वे अनिवार्य रुप से दोचार होते हैं। या तो उन पर क़ुदरती अज़ाब (प्रकोप) आता है जो उन के अस्तित्व को मिटा देता है जैसा कि आद, और समूद आदि क़ौमों पर आया। या फिर रसूल के साथियों के हाथों उन का सफ़ाया कर दिया जाता है। अरब के बहुदेववादियों के बारे में अल्लाह का फ़ैसला यह हुआ कि उन की बड़ी संख्या को ईमान की तौफ़िक़ (दैवयोग) नसीब होगी और जो छोटी संख्या बहुदेववाद पर जमी रहेगी उस की समाप्ति असहाबे-रसूल की तलवार द्वारा होगी।

जो लोग इन आयतों की पृष्ठ भूमि और प्रसंग एवं संदर्भ को सामने नहीं रखते वे हुक्म को देख कर कि ''बहुदेववादियों को जहाँ पाओ वध करो'' यह नतीजा निकालने लगते हैं कि क़ुर्आन मुसलमानों को यह हुक्म देता है कि वे दुनिया के जिस मुल्क में रहते हैं वहाँ के बहुदेववादियों को जहाँ पाएं वध करें चाहे उन पर अल्लाह की हुज्जत (दलील) क़ायम हुई हो या न हुई हो और चाहे शान्ति की हालत हो या जंग की। यह बहुत बड़ी ग़लत फ़हमी है जो विशेष रुप से भारत के ग़ैर मुस्लिमों में पाई जाती है। इस का निवारण इसी सूरत में हो सकता है जब कि आयत के प्रसंग और संदर्भ को सामने रख कर उस के भाव को समझने का प्रयास किया जाए।

10. अर्थात उन के विरुद्ध कार्रवाई करो और जंगी कार्रवाई करने में कोई कसर उठा न रखो ।

11. अर्थात् ये बहुदेववादी यदि बहुदेववाद और मुर्ति पूजा से तौबा कर के इस्लाम क़ुबूल करते हैं और अपने मुसलमान होने के प्रमाणस्वरुप नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने लगते हैं तो फिर उन्हें छेड़ने का कोई औचित्य नहीं । न तो उन से पिछली बातों पर पूछ ताछ की जाए और न उन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाई जाए।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के बाद जब अरब के कुछ क़बीलों ने जो मुसलमान हो गए थे ज़कात देने से इन्कार किया तो पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसी आयत को ध्यान में रखते हुए उन के विरुद्ध तलवार उठाई थी और फ़रमाया था जो नमाज़ और ज़कात के बीच विच्छेद करेंगे मैं उन से ज़रुर लडूँगा (मिश्कात, किताबुज़्ज़कात)

इस से नमाज़ और ज़कात की अहमियत का एक और पहलू उजागर होता है और वह यह कि इस्लाम में इन दो इबादतों को क़ानून का दर्जा भी प्राप्त है। और एक इस्लामी हुकूमत के दायित्व में यह बात भी शामिल है कि वह इस क़ानून को बलपूर्वक लागू करे।

आज मुसलमानों में नमाज़ और ज़कात के मामले में जो आम तौर से दूरी और ग़फ़लत पाई जाती है उस का एक कारण यह भी है कि उन को ग़फ़लत से चौका देने के लिए कोई डरावा और कोई तंबीह नहीं है।

उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तुच्छ क़ीमत स्वीकार कर ली और अल्लाह की राह से रोकने लगे। बहुत बुरी हरकत है जो ये करते रहे हैं।(अल-क़ुर्आन)

6. और अगर बहुदेववादियों में से कोई व्यक्ति तुम से शरण की माँग करे तो उसे शरण दे दो यहाँ तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले।[12] फिर उसे उस के अमन की जगह पहुँचा दो। यह इस लिए कि ये लोग जानते नहीं हैं।

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ
كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَعْلَمُونَ ٦

7. इन बहुदेववादियों की कोई प्रतिज्ञा अल्लाह और उस के रसूल के नज़दीक किस तरह क़ायम रह सकती है। सिवाय उन लोगों के [13] जिन से तुम ने मस्जिदे-हराम (आदरणी मस्जिद) के पास समझौता किया था।[14] तो जब तक वे तुम्हारे साथ सीधे रहें तुम भी उन के साथ सीधे रहो कि अल्लाह तक़वा (परहेज़गारी) अपनाने वालों को पसन्द करता है।

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ
إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ فَمَا اسْتَقَامُوا
لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ٧

8. (उन के सिवा दूसरे बहुदेववादियों की प्रतिज्ञा) किस तरह बाक़ी रह सकती है जब कि उन का हाल यह है कि अगर वे तुम पर क़ाबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न नाते का लिहाज़ रखें और न प्रतिज्ञा का।[15] वे अपनी ज़बान में तुम को ख़ुश करने की बातें करते हैं मगर उन के दिल इस से नकारते हैं और उन में अधिकतर लोग फ़ासिक़ (उल्लंघनकारी) हैं।[16]

كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ
يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ
فَاسِقُونَ ٨

9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तुच्छ क़ीमत स्वीकार कर ली [17] और अल्लाह की राह से रोकने लगे।[18] बहुत बुरी हरकत है जो ये करते रहे हैं।

اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ ۚ
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٩

10. किसी मोमिन के मामले में न नाते का लिहाज़ करते हैं और न प्रण प्रतिज्ञा का। यही लोग हैं जो ज्यादती करने वाले हैं।[19]

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُعْتَدُونَ ١٠

11. लेकिन अगर यह तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं [20] और हम अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानने वाले हैं।[21]

فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي
الدِّينِ ۗ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ١١

12. अगर कोई बहुदेववादी जंग के दौरान भी क़ुर्आन सुनने और समझने के उद्देश्य से शरण माँगता है तो उसे शरण देना और बाद में उस को सुरक्षात्मक रुप से उस के अमन की जगह तक पहुँचाना मुसलमानों पर फ़र्ज़ है और वह इस बात की दलील है कि बहुदेववादियों से इस्लाम की जंग एक अति पवित्र उद्देश्य के लिए है । क़ौम दुश्मनी और देश जीतने के लिए नहीं है।

इस आयत के अन्तर्गत यह बात भी स्पष्ट होती है कि दअवत और तबलीग़ तथा समझाने और सिखाने के उद्देश्य से ग़ैर मुस्लिमों को क़ुर्आन से परिचित कराना, उस को समझने के लिए प्रोत्साहित करना और उस की आयतों के मतलब को उन की भाषा में प्रस्तुत करना अत्यन्त महत्वपूर्ण और ज़रुरी काम है ताकि वे अपने रब के कलाम को समझ सकें ।

13. यह व्यवहित वाक्य (जुम्ला-ए-मोतरिज़ा) है अर्थात बातों के एक क्रम को रोक कर के दूसरी बात कही गई है। क्रम के अनुसार उन बहुदेववादियों के बारे में हुक्म बयान किया जा रहा था जिन के साथ समझोता बाक़ी नहीं रहा लेकिन व्यवहित वाक्य द्वारा इस हुक्म से उन लोगों को अलग कर दिया गया जिन्हों ने समझौते का उल्लंघन नहीं किया था।

14. मस्जिदे हराम के पास से मुराद हुदैबिय: है जो हरम की सीमा के अन्तर्गत है। ज़ीक़ादा सन 6 हिजरी में मदीना के मुसलमानों और मक्का के क़ुरैश के बीच हुदैबिय: में सुलह का समझौता हुआ था इस समझौते का एक बिन्दु अथवा एक धारा यह थी कि अरब क़बीलों में से जो क़बीला जिस गिरोह (Group) का साथी अथवा पक्षधर बनना चाहे बन सकता है। इस अवसर पर क़बीला ख़ज़ाअ: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आ गया। यद्यपि सन 8 हिजरी के आरम्भ में क़ुरैश ने हुदैबिय: का समझौता तोड़ दिया था और इस के बाद रमज़ान सन 8 हिजरी में मक्का विजय की घटना घटी लेकिन ख़ज़ाअ: के साथ जो समझौता किया गया था वह बाक़ी रहा। और उन्होंने चूँकि उस का उल्लंघन नहीं किया था इस लिए यहाँ हिदायत की गई कि जब तक वे इस पर जमे रहें तुम भी जमे रहो।

15. अरब में क़बीलाई व्यवस्था प्रचलित थी इस लिए सामाजिक मामलों में नातेदारी के सम्बन्धों का बड़ा हाथ होता था। और दूसरी चीज़ जो क़बीलों के बीच सम्बन्धों को ठीक ठाक रखने में सहायक होती थी वो परस्पर शान्ति और सुलह के समझौते थे। लेकिन बहुदेववादियों ने इस्लाम दुश्मनी में ऐसा रवैया अपना रखा था कि न सामाजिक सम्बन्धों का लिहाज़ करते और न समझौते के दायित्व को महसूस करते । बल्कि जब भी मौक़ा मिलता मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई न कोई हरकत कर गुज़रते । ऐसी सूरत में मुसलमानों का उन से किए हुए समझौते को बाक़ी रखना कठिन था। क्योंकि कोई भी समझौता तब तक क़ायम नहीं रह सकता जब तक कि दोनों गिरोह (Group) उस को निभाने का प्रयास न करें।

16. यहाँ फ़ासिक से मुराद प्रतिज्ञा भंग करने वाले अथवा समझौतों का उल्लंघन करने वाले लोग हैं।

17. अर्थात् अल्लाह ही की आयतों में संपूर्ण जगत की दौलत छिपी थी लेकिन इन नाक़द्रों (अवहेलना करने वालों) ने दुनिया के मामूली फ़ायदों को वरीयता दी और स्वयं को बहुत बड़ी भलाई से वंचित कर लिया।

18. और जब संसारिक लाभ ही वास्तविक लक्ष्य ठहरा तो दीन की दअवत को वे क्यों और कैसे सहन कर सकते थे जो आख़िरत की सफलता को लक्ष्य बनाने के लिए दी जा रही थी। इस लिए वे इस राह में रोड़ा बन कर खड़े हो गए।

19. आयत 8 में ईमान वालों के गिरोह के साथ बहुदेववादियों के रवैये का वर्णन हुआ था । इस आयत में फ़रमाया गया है कि किसी भी मोमिन के मामले में इन्हें न नातों का लिहाज़ है और न अपनी प्रण प्रतिज्ञा का ख़याल । बल्कि इन्हों ने खुले तौर आंतक फ़ैला रखा है।

20. अर्थात् इन तमाम शत्रुतापूर्ण हरकतों के बावजूद अगर वे तौबा कर के इस्लाम क़ुबूल कर लेते हैं और नमाज़ की स्थापना और ज़कात की अदायगी करने लगते हैं तो यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण होगा कि उन्हों ने बहुदेववादी धर्म को छोड़ कर के एकेश्वरवादी धर्म को अपना लिया है। इस लिए अब तुम्हारा उन का सम्बन्ध दीनी भाईयों का होगा।

स्पष्ट हुआ कि इस्लामी बिरादरी में मुस्लिम और नव मुस्लिम के बीच कोई भेद भाव नहीं है। सामाजिक दृष्टि से सब समान दर्जे के हैं।

21. अर्थात बहुदेववादियों के बारे में अत्यंत स्पष्टीकरण के साथ आदेश बयान कर दिये गए हैं किन्तु इस से लाभ वही लोग उठा सकेंगे जो जानते हैं कि हिदायत का स्त्रोत अल्लाह की आयतें हैं न कि कोई और चीज़ । ज्ञान की रौशनी में चलने वाले क़दम क़दम पर अल्लाह की आयतों से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं किन्तु अज्ञानता के अन्धकार में भटकने वाले इस से वन्चित रहते हैं।

अरब
कौन सा क़बीला कहाँ आबाद था

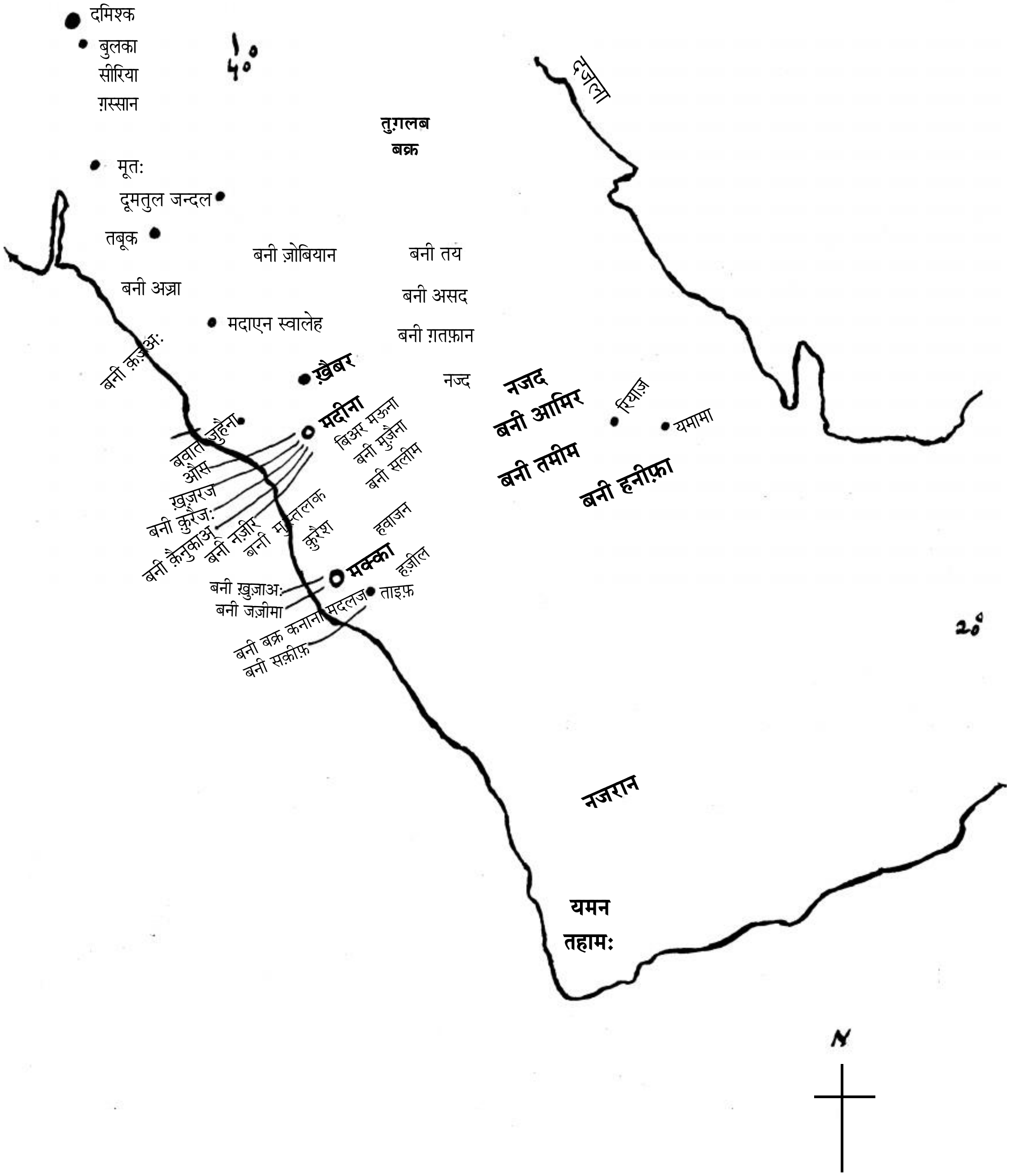

और अगर यह प्रतिज्ञा करने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें और तुम्हारे दीन का तिरस्कार करने लगें तो कुफ्र के पेशवाओं (लीडरों) से लड़ो कि उन की क़समों का कोई भरोसा नहीं (उन से लड़ो) यहाँ तक कि वे बाज़ आ जाऐं। (अल-क़ुर्आन)

12. और अगर यह प्रतिज्ञा करने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें [22] और तुम्हारे दीन का तिरस्कार करने लगें [23] तो कुफ़्र के पेशवाओं (लीडरों) से लड़ो [24] कि उन की क़समों का कोई भरोसा नहीं (उन से लड़ो) यहाँ तक कि वे बाज़ आ जाएं।

وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ
وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾

13. क्या तुम ऐसे लोगों से न लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला।[25] और रसूल को (उस के वतन से) निकालने का संकल्प किया [26] और तुम्हारे विरुद्ध जंग करने में पहल की?[27] क्या तुम इन से डरते हो? अगर तुम ईमान वाले हो तो (तुम्हें समझ लेना चाहिए कि) अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि तुम उस से डरो।

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا
بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ
أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

14. उन से जंग करो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन को अज़ाब (यातनाऐं) देगा [28] और इन्हें अपमानित करेगा और इन पर तुम को विजयी (ग़ालिब) करेगा [29] और ईमान रखने वालों के दिल ठंडे करेगा ।[30]

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ
وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

15. और उन के दिलों की जलन दूर करेगा [31] और अल्लाह जिस को चाहेगा तौबा की तौफ़ीक़ (दैवयोग) प्रदान करेगा [32] अल्लाह इल्म वाला (जानने वाला) और हिकमत वाला है।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

16. क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा है कि यूँ ही छोड़ दिए जाओगे। हालाँकि अल्लाह ने अभी तो यह देखा ही नहीं कि तुम में से किन लोगों ने जिहाद किया [33] और अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवा किसी को अपना विश्वासपात्र नहीं बनाया [34]। तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह बराबर अवगत है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ
وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

17. बहुदेववादी इस योग्य नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें जब कि वे खुद अपने ऊपर कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं।[35] उन के सारे अमल नष्ट हो गए।[36] और दोज़ख़ (नरक) में वे हमेशा रहेंगे।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ
أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ
خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

22. ऊपर से जो बयान का क्रम चलता आ रहा है उस में बहुदेववादियों के विभिन्न गिरोहों का हाल बयान हुआ है और उसी से सम्बन्धित आदेश दिये गए हैं। इस आयत में उन के एक गिरोह का हाल बयान कर के उन से जंग करने पर मुसलमानों को उभारा गया है जो न केवल समझौतों का उल्लंघन कर बैठा था बल्कि जिस ने आगे बढ़ कर इस्लाम की खिल्ली उड़ाना शुरु कर दिया था।

अरब वासियों में समझौता करते समय शपथ लेने की प्रथा प्रचलित थी ताकि प्रतिज्ञा दृढ़ हो। इसी सम्बन्ध से यहाँ क़समों के तोड़ने का वर्णन हुआ है।

23. स्पष्ट हुआ कि इस्लाम पर व्यंग्य करना, उस का तिरस्कार करना, उस की खिल्ली उड़ाना और अल्लाह और उस के रसूल की तौहीन करना सरासर कुफ्र और संगीन अपराध है।

24. अर्थात् जंग में काफ़िरों के लीडरों और पेशवाओं को निशाने पर रखो कि ये सब से बड़े फ़सादी एवं उपद्रवी हैं। और तुम्हारा काम यह होना चाहिए कि कुफ्र की जड़ पर कुल्हाड़ा चलाओ ताकि मानवता को इन से मुक्ति मिले।

25. मुराद सुलह हुदैबिय: (ज़ीक़ादा सन ६ हिजरी) का समझौता है जो क़ुरैश ने तोड़ डाला था। हुआ यूँ कि बनू बक्र ने जो क़ुरैश के पक्षधर थे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पक्षधर ख़ज़ाअ: पर हमला कर दिया जिस में क़ुरैश ने बनू बक्र की मदद की। और जब ख़ज़ाअ: के लोगों ने हरम में पनाह ली तो बिल्कुल हरम में उन को वध किया । ख़ज़ाअ: ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस की शिकायत की। क़ुरैश और बनूबक्र की यह हरकत समझौते का खुला उल्लंघन थी। इस लिए हुदैबिय: की संधि टूट गई। इस आयत में उन की इसी प्रतिज्ञा भंग करने अथवा संधि तोड़ने का वर्णन हुआ है और मुसलमानों को उन से जंग करने पर उभारा है अत: रमज़ान सन् ८ हिजरी में मक्का विजय का संग्राम सामने आया।

26. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना हिजरत कर जाने से पहले क़ुरैश आप के विरुद्ध तरह तरह के षडयंत्र कर रहे थे जिन में एक षडयंत्र यह भी था कि आप को देश निकाला दे दिया जाए।मगर वे अपने नापाक इरादे में कामयाब न हो सके। बल्कि अल्लाह के मन्सूबे के अनुसार आप ने मदीना को इस प्रकार हिजरत फ़रमाई कि वे आप का बाल भी बाँका न कर सके। उन के इन ही नापाक इरादों की ओर इस आयत में इशारा किया गया है।

27. अर्थात् जंग के लिए पहल क़ुरैश मक्का के बहुदेववादियों ही ने की और वही आतंकवाद बन कर बद्र के मैदान में आए।

28. मक्का और अरब के बहुदेववादियों के बारे में यह थी अल्लाह तआला की योजना जिसे यहाँ खोल कर बयान किया गया है। अर्थात उन का विनाश प्राकृतिक अज़ाब द्वारा नहीं बल्कि मुसलमानों की तलवार द्वारा होगा। और क़ुर्आन की यह बात शब्द शब्द पूरी हुई।

29. इन आयतों के अवतरण के बाद मक्का विजय हो गया और फिर विजयों का ऐसा क्रम चला कि दो साल के अन्दर पूरा अरब मुसलमानों के सत्ताधीन हो गया !

30. मक्का के बहुदेववादियों ने मुसलमानों को अन्याय और अत्याचार का निशाना बनाया था और उन्हें भयंकर तकलीफ़ पहुँचाई थी। इस लिए उन के बुरे अन्जाम को देख कर मुसलमानों के दिलों का ठंडा हो जाना एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव वाली बात थी।

31. मुसलमानों के दिलों में बहुदेववादियों के विरुद्ध क्रोध उन के कुफ्र और शिर्क के कारण था इस लिए उन का ख़ात्मा शिर्क और कुफ्र का ख़ात्मा तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) की विजय थी। और यह बात मुसलमानों के क्रोध को समाप्त करने वाली थी।

32. जिहाद का यह सकारात्मक परिणाम था जो बड़े पैमाने पर सामने आया। जिन लोगों के दिलों पर ग़फ़लत एवं अचेतन के मोटे परदे पड़े हुए थे और नसीहत उन पर प्रभाव नहीं छोड़ सकी थी रणक्षेत्र को गर्म होता देख कर उन की आँखे खुल गई। और अपने ग़लती पर होने की भावना उन के अन्दर करवटें लेने लगीं। अत: एवं बहुत बड़ी संख्या में लोगों को तौबा का दैवयोग (तौफ़ीक़) प्राप्त हुआ। और वे इस्लाम द्वारा सम्मान युक्त हुए। इस प्रकार उन के नर्क की आग से बचने का सामान हुआ। इस से बढ़ कर सहानुभूति, एवं हमदर्दी उन की क्या हो सकती थी।

इस आयत के अवतरण के बाद बहुदेववादियों को तौबा की तौफ़िक़ नसीब हुई उन में अबूसुफ़ियान जैसे लीडर और इक्रिमा बिन अबू जहल जैसे लोग शामिल थे।

33. संबोधन का वास्तविक रुख़ उन मुसलमानों की ओर है जो अभी अभी इस्लाम में दाख़िल हुए थे और जिन्हें जिहाद से जुझना नहीं पड़ा था।

34. कुफ़्फ़ार से मित्रता की मुमानिअत (रोक) जिन मानी में कि गई है उस की तशरीह सूरह माइदह नोट १६४ में गुज़र चुकि है।

35. अर्थात् मस्जिदें अल्लाह की इबादत के लिए विशिष्ट हैं। फिर जो लोग बहुदेववाद और मुर्ति पूजा में लिप्त हैं और एक ईश्वर की पूजा अर्चना एवं उपासना से जिन्हें इन्कार है वे मस्जिदों को आबाद करने के योग्य कहाँ हैं। और उन को क्या

हक़ पहुँचता है कि वे मस्जिदों के सेवक और व्यवस्थापक बनें। क्या वे ख़ुदा और मूर्तियों दोनों को ख़ुश रखना चाहते हैं। कैसी विपरीत भाव की बातें हैं जिन को लोग अपने अन्दर जमा करते हैं।

यद्यपि कि बात सामान्य रुप से की गई है ताकि मस्जिदों के बारे में एक उसूली बात सामने आए लेकिन यहाँ विशेष रुप से मस्जिदे-हराम (आदरणीय मस्जिद) की ओर संकेत है जिस पर क़ुरैश अपनी अधिपत्य जमाए बैठे थे और अपने बहुदेववाद के साथ उस की सेवा और व्यवस्था पर गर्व करते थे। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्फ़ाल नोट 47.

36. अर्थात् किसी मस्जिद की सेवा अल्लाह के नज़दीक कोई वज़न नहीं रखती अगर सेवा करने वालों का मन शिर्क से पाक नहीं है। ऐसे लोगों की नेकियाँ अकारथ जाने वाली हैं और उन की इन सेवाओं का उन्हें कोई सिला नहीं मिलेगा।

ऐ ईमान वालों ! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ्र को प्रिय रखें तो उन को अपना दोस्त न बनाओ। और तुम में से जो लोग उन को दोस्त बनाऐंगे तो (याद रखो) ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।(अल-क़ुर्आन)

18. और अल्लाह की मस्जिदों को आबाद तो वही लोग कर सकते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते।[37] ऐसे लोगों के बारे में यह आशा सही है कि वे राह को पा जाएंगे।

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ
يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

19. क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाने के काम और मस्जिदे-हराम की सेवा को उन लोगों के कर्मों की श्रेणी में रखा है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह की राह में जिहाद किया। अल्लाह के नज़दीक दोनों समान (श्रेणी के) नहीं हैं।[38] और अल्लाह ज़ालिमों पर राह नहीं खोलता।[39]

اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ
لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

20. जो लोग ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपनी जान और माल से जिहाद किया। उन का दर्जा अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा है[40] और वही सफ़ल होने वाले हैं।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

21. उन का रब (ख़ुदा) उन्हें ख़ुशख़बरी देता है अपनी दया और प्रसन्नता की और ऐसे बागों की जहाँ उन के लिए अनन्त नेअमत होंगी।[41]

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا
نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۙ ﴿٢١﴾

22. वहाँ वे सदैव रहेंगे।[42] निश्चय ही अल्लाह के पास (देने के लिए) बहुत बड़ा अज्र (बदला) है ।[43]

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

23. ऐ ईमान वालों ! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को प्रिय रखें तो उन को अपना दोस्त न बनाओ।[44] और तुम में से जो लोग उन को दोस्त बनाऐंगे तो (याद रखो) ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ
اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ
مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

24. कहो अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हरी पतनियाँ तुम्हारा परिवार और वह माल जो तुम ने हासिल किया है और वह व्यापार जिस के मन्दा पड़ जाने की तुम को आशंका है और वे घर जो तुम को पसन्द हैं तुम्हें अल्लाह से, उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला सादिर फ़रमाए।[45] और अल्लाह नाफ़रमानों पर राह नहीं खोलता।[46]

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ
وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ
كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾

37. अर्थात् अल्लाह की इबादतगाहों एवं उपासना स्थलों का सही अर्थों में आबाद करने वाले और उस का प्रबन्ध एवं व्यवस्था करने के वास्तविक अर्थों में हक़दार वही लोग हो सकते हैं जिन के अन्दर ये गुण ये विशेषताएं पाई जाती हैं न कि बहुदेववादी ।

इस से कुछ उसूली बातें स्पष्ट हुईं:

एक यह कि मस्जिदों पर काफ़िरों का नहीं मुसलमानों का अधिपत्य होना चाहिए।

दूसरी यह कि मस्जिदों का निर्माण, उन की सेवा, उन के प्रबन्ध और व्यवस्था के कामों के लिए काफ़िर कदापि उचित नहीं हैं।

तीसरी यह कि इन कामों के लिए उचित्तम वही लोग हो सकते हैं जो तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद पर विश्वास रखने वाले और दीन के बुनियादी तक़ाज़ों को पूरा करने वाले हों।

और चौथी यह कि किसी भी मस्जिद का व्यवस्थापक किसी ऐसे मुसलमान को नहीं बनाना चाहिए जिस ने शिर्क से मित्रता कर ली हो या जो नमाज़ और ज़कात से बेपरवाह हो या फ़ासिक और फ़ाजिर (अवज्ञाकारी एवं दुराचारी) हो।

38. क़ुरैश इस दंभ एवं भ्रम में मुब्तिला थे कि वे अल्लाह के घर (बैतुल्लाह) के सेवक और उस के व्यवस्थापक हैं। मस्जिदे हराम की सुरक्षा, हज्ज के प्रबंध और हाजियों को पानी पिलाने के लिए स्थाई रुप से एक विभाग की स्थापना जैसी सेवाओं पर उन्हें गर्व था । और वे यह समझने से असमर्थ थे कि इन सेवाओं के बाद वे खुदा की नज़र में अप्रिय एवं तिरस्कृत कैसे हो सकते हैं। उन के इसी भ्रम को दूर करते हुए स्पष्ट किया गया है कि ये काम उसी सूरत में अल्लाह के यहाँ वज़न रखते हैं जब कि आदमी अल्लाह से वफ़ादारी का सम्बन्ध बनाए हुए हो। शिर्क (बहुदेववाद) ख़ुदा से बेवफ़ाई और बग़ावत है इस लिए जो व्यक्ति शिर्क करता है वह सब से बड़ा अपराधी है। और उस के विरुद्ध क़ियामत के दिन अल्लाह की अदालत में बग़ावत का मुक़दमा चलाया जाएगा । ऐसे व्यक्ति को उस की धार्मिक सेवाओं पर इनाम देने का सवाल पैदा ही कहाँ होता है।

39. यहाँ ज़ालिम से मुराद बहुदेववादी हैं। मतलब यह है कि बहुदेववादी चाहे कैसी ही "धार्मिक सेवाएं" अन्जाम दे डालें उन पर सफलता का मार्ग कभी खुलने वाला नहीं। वे नाकाम और नामुराद रहने वाले लोग हैं।

40. अर्थात् अल्लाह के नज़दीक बहुदेववादियों का तो कोई दर्जा और स्थान नहीं है। अलबत्ता उस के वफ़ादार बन्दों का जिन्हों ने ईमान ला कर उस की ख़ातिर बड़ी बड़ी क़ुर्बानियाँ दीं, न केवल दर्जा और स्थान है बल्कि अत्यंत ऊँचा स्थान है।

41. अर्थात् जन्नत के बाग़ सदाबहार होंगे और वहाँ की नेअमतें कभी न मिटने वाली होंगी।

42. अर्थात् ईमान वालों को जन्नत में अनन्त जीवन नसीब होगा । वास स्थल और उस के वासी दोनों अनंत ।

43. अल्लाह जब अपने सच्चे वफ़ादार बन्दों को उन की सेवाओं का सिला (बदला) देना चाहेगा तो उस के पास किस चीज़ की कमी हो सकती है। जो वह तंगी बरते। वह ज़मीन और आसमान के ख़ज़ानों का मालिक है इस लिए उस की बख़्शिश की कोई इन्तिहा नहीं हो सकती।

44. "अपना दोस्त न बनाओ" का मतलब यह है कि अगर तुम्हारा बाप या तुम्हारा भाई अल्लाह का बाग़ी है और इस कुफ्र के रवैये को छोड़ने के लिए आमादा नहीं है तो वह ख़ुदा का दुश्मन है और जो ख़ुदा का दुश्मन हो उस को एक ईमान वाला अपना दोस्त किस तरह बना सकता है? विशेष रुप से जब जिहाद का अवसर हो तो वह रिश्तों और नातों को किस तरह महत्व दे सकता है? उस समय तो हर उस व्यक्ति के साथ जो दुश्मन की पंक्ति में जा खड़ा हुआ हो अपना दुश्मन समझ कर ही मामला करना होगा।

उस समय कितने ही मुसलमानों के सम्बन्धी और नातेदार कुफ्र के क्षेत्र में थे और उन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था। इस्लाम और कुफ्र की जंग में उन की सारी सहानुभूतियाँ काफ़िरों के साथ होती बल्कि उन के साथ मिल कर मदीना के मुसलमानों के विरुद्ध जिन में उन के बेटे भी होते और भाई भी जंग करने के लिए निकलते। यही वे परिस्थितियाँ और हालात थे जिन में मुसलमानों को स्पष्ट रुप से यह हिदायत दी गई कि वे हक़ और बातिल (सत्य और असत्य) की जंग में न बाप को ख़ातिर में लाएं और न भाई को।

45. एक मुसलमान कहता तो यही है कि वह अल्लाह उस के रसूल और उस के दीन को सर्वाधिक प्रिय रखता है लेकिन जब परीक्षा की घड़ियाँ सामने आती हैं तो उस का खरा या खोटा होना स्पष्ट हो जाता है। कुफ्र और इस्लाम की कशमकश में जिन जिन चीज़ों को मनुष्य प्रिय रखता है उन के बारे में कड़ी परीक्षाएं होती हैं। एक तरफ़ चीज़ों का लगाव उसे अपनी ओर खींचता है और दूसरी ओर दीन का तक़ाज़ा होता है कि बेलाग रुप से सत्य (हक़) के समर्थन और हसयोग की घोषणा कर दो चाहे उस की ज़द में अपना व्यापार आ रहा हो या जैसे यह तक़ाज़ा उभरता है कि हक़ के कलिमे को बुलन्द करने के लिए जान जोखिम में डाल दो। इसी तरह कुफ्र और इस्लाम की जंग में इस्लाम अपने अनुयायियों से माँग करता है कि वे अपने दायित्व को निभाने के लिए आगे बढ़े और बाल बच्चों, घर बार आदि की चाहत को रुकावट न बनने दें। ऐसे अवसर पर जो व्यक्ति कर्म की कसौटी पर पूरा उतरता है वह यह सिद्ध कर दिखाता है कि

अल्लाह उस के रसूल और उस के दीन से अधिक कोई चीज़ भी उस को प्रिय न थी । किन्तु जो लोग अपने व्यापार आदि के मोह में ऐसे गिरफ़्तार हो जाते हैं कि बहुत ही नाज़ुक मौक़ो पर भी सत्य (हक़) के समर्थन और सहयोग के तकाज़ों को पीछे डाल देतें हैं। ताकि उन की ''दुनिया'' आबाद रहे तो ऐसे लोगों को कड़ी चेतावनी दी गई है कि फिर उन्हें ख़ुदा के फ़ैसले का ही इन्तिज़ार करना चाहिए। अर्थात् अपने बुरे अन्जाम के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

46. अर्थात् जो लोग अल्लाह की नाफ़रमानी करना चाहते हैं उन पर भलाई और सौभाग्य का मार्ग नहीं खुलता इस लिए उन के हिस्से में दुर्भाग्य एवं निराशा ही आती है।

फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी सकीनत नाज़िल फ़रमाई और ऐसी फ़ौज़ें उतारीं जो तुम को नज़र नहीं आईं। और काफ़िरों को सज़ा दी और यही बदला है काफ़िरों का। (अल-क़ुर्आन)

25. अल्लाह बहुत से अवसर पर तुम्हारी मदद कर चुका है।[47] और हुनैन [48] के दिन भी जब कि तुम्हें अपनी बाहुल्यता का दंभ था मगर वह तुम्हारे कुछ काम न आई। और ज़मीन अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गई और तुम पीठ फेर कर भाग खड़े हुए।[49]

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ
وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَيْــًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۚ ﴿٢٥﴾

26. फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी सकीनत नाज़िल फ़रमाई और ऐसी फ़ौज़ें उतारीं जो तुम को नज़र नहीं आईं।[50] और काफ़िरों को सज़ा दी और यही बदला है काफ़िरों का।[51]

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ
وَذٰلِكَ جَزَاۤءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

27. फिर इस के बाद अल्लाह जिस को चाहता है तौबा की तौफ़ीक़ (प्रायश्चित का दैवयोग) देता है।[52] और अल्लाह क्षमा करने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾

28. ऐ ईमान वालों ! बहुदेववादी बिल्कुल नजिस (आपवित्र) हैं।[53] अत: इस साल के बाद ।[54] ये मस्जिदे हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद) के पास आने न पाऐं।[55] और अगर तुम्हें आर्थिक संकट की आशंका है तो अल्लाह चाहेगा तो अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़्ल) से तुम्हें सम्पन्न कर देगा।[56] अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا
الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً
فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَاۤءَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

29. अहले-किताब (यहूदियों और ईसाइयों) में से जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और जो कुछ अल्लाह और उस के रसूल ने हराम (अवैध) ठहराया है उसे हराम नहीं ठहराते और सत्य धर्म को अपना धर्म (दीन) नहीं बनाते उन से जंग करो यहाँ तक कि वे पराजित हो कर जिज़्या दें और छोटे बन कर रहें।[57]

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا
يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ
دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى
يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۚ ﴿٢٩﴾

30. यहूद कहते हैं उज़ैर अल्लाह का बेटा है [58] और ईसाई कहते हैं मसीह अल्लाह का बेटा है [59]। यह मात्र बातें हैं जो वे अपने मुँह से निकाल रहे हैं, उन लोगों की बातों की नकल उतारते हुए जो इन से पहले काफ़िर हुए [60] अल्लाह इन को ग़ारत (नाश) करे। ये किस तरह बातिल (असत्य) का शिकार हो रहे हैं !

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۨابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى
الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ
يُضَاهِــُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَبْلُ ۗ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

47. अर्थात् बद्र की जंग, खंदक की जंग, ख़ैबर की जंग और मक्का विजय जैसे कितने ही नाज़ुक मौक़ों पर अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है और जब उस की सहायता पहले तुम्हारे साथ रही है तो अब क्यों न होगी । अत: बहुदेववादियों से जंग करने का जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उस में किसी प्रकार का संकोच एवं ना नुकुर न करो।

48. हुनैन, मक्का और ताइफ़ के बीच एक घाटी है जो मक्का से 25 किलो मिटर के फ़ासले पर है। यहाँ शव्वाल सन 8 हिजरी (फ़रवरी 630 ई.) में बहुदेववादियों के साथ जंग हुई।

49. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का विजय का अभियान अभी सर कर ही लिया था कि ताइफ़ की ओर क़बीला हवाज़न और क़बीला सक़ीफ़ ने जो बहुदेववादी (मुश्रिक) थे मक्का विजय से उत्तेजित हो कर मुसलमानों के विरुद्ध जंग की तैयारियाँ शुरु कर दीं। आप को जब उन के निन्दनीय इरादों की ख़बर हुई तो आप बारह हज़ार के लश्कर के साथ उन के मुक़ाबले के लिए रवाना हो गए। इस बार मुसलमानों के लश्कर की तादाद चूँकि बहुत ज़्यादा थी और अभी मक्का भी विजय हो चुका था इस लिए मुसलमानों में आत्मविश्वास ज़रुरत से ज़्यादा पैदा हो गया था जिस ने उन्हें दुश्मन की ओर से थोड़ा ग़ाफ़िल कर दिया और वे बेजिगरी के साथ लड़ न सके। जंग में मोर्चा लेने वाली जगह का बड़ा महत्व होता है। हुनैन का क्षेत्र पर्वतीय है। जहाँ दुश्मन पहले से मोर्चा लगाए बैठे थे। और ये क़बीले तीरंदाज़ी में बड़े माहीर थे। इस लिए मुसलमानों का लश्कर जब घाटी से गुज़रने लगा तो दुश्मन ने अचानक हमला कर दिया और तीरों की ऐसी बौछार की कि मुसलमानों का लश्कर तितर बितर हो गया। लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के कुछ जाँनिसार (प्राणोत्सर्ग) साथी अपनी जगह डटे रहे। फिर जब आप के इशारे से हज़रत अब्बास ने मुसलमानों को ललकारा तो वे आप के निकट जमा हो गए और फिर बेजिगरी से लड़े यहाँ तक कि विजय ने उन के पाँव चूम लिए। आयत में इसी घटना की ओर इशारा किया गया है।

50. मुराद फ़रिश्तों का लश्कर है जो इस नाज़ुक अवसर पर मुसलमानों की सहायता के लिए अवतारित हुआ। फ़रिशतों की इस कुमुक ने मुसलमानों की ढारस बंधाई क्योंकि वे आसमान से सकीनत अर्थात दिल का चैन, सूकून और संतोष ले कर उतरे थे। इसी चीज़ ने उन के अन्दर ऐसी रुह फूँक दी कि वे घायल शेर की तरह दुश्मन पर टूट पड़े। और इस हमले की ताब न ला कर दुश्मन ने हथियार डाल दिए। हज़ारों लोग बन्धक बनाए गए और ढेरों माले-ग़निमत (परिहार) मुसलमानों के हाथ लगा । अल्लाह तआला की यह वह अदृश्य (ग़ैबी) सहायता थी जिस का वर्णन इस आयत में हुआ है। कुफ़्र और इस्लाम की जंग में ईमान वालों की सहायता के लिए फ़रिश्तों की जो कुमुक़ भेजी जाती है उस की व्याख्या सूरह अनफ़ाल नोट 15 और 19 में गुज़र चुकी।

51. हुनैन में क़ाफ़िरों को बुरी तरह पराजय का सामना करना पड़ा । यह सज़ा उन्हें अल्लाह तआला ने मुसलमानों के हाथों दिलवा दी और यह उन के कुफ़्र का प्रतिफ़ल था जो उन्हें दुनियाँ ही में मिला और हक़ (सत्य) का बोल बाला हुआ।

52. अर्थात् जंग में जहाँ खून ख़राबा, पराजय एवं विघटन का सामान होता है वहाँ कितने ही ख़ुदा के बन्दों पर हिदायत के दरवाज़े खुलते हैं। वे अल्लाह से तौफ़ीक़ पा कर कुफ़्र से तौबा कर लेते हैं और अल्लाह की दया एवं कृपा की छत्र छाया में शरण लेते हैं। जिहाद का यह साकारात्मक पक्ष है। और मानवता के पक्ष में यह इतनी महान उपलब्धि है कि इस का हुनैन की जंग में बहुदेववादियों के परास्त होने के बाद उन की बहुत बड़ी तादाद ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। क्यों कि उन को यह दृढ़ विश्वास हो गया कि रसूल के साथ ग़ैबी (अदृश्य अथवा परोक्ष की) मदद है। इसी लिए हर जगह और हर मैदान में इन का पलड़ा भारी रहता है। फिर जो हस्ती अपने रसूल की मदद के लिए ये करिश्मे दिखा रही है उस पर वे ईमान क्यों न लाएं और उस के दीन को क्यों न मानें।

53. निजासत (अपवित्रता) से मुराद शिर्क की निजासत है जिस से तौहीद (एकेश्वरवाद) के केन्द्र को पाक रखना आवश्यक है। बहुदेववादियों और काफ़िरों के मामले में इस्लाम ने छूत छात का कोई सिद्धान्त नहीं दिया है बल्कि उन के बहुदेववाद और उन के इन्कार (कुफ़्र) के प्रभाव से स्वयं को बचाने का निर्देश दिया।

स्पष्ट रहे कि इस्लाम के निकट हृदय एवं मस्तिष्क और विचार एवं आस्था की अपवित्रता तमाम गन्दगियों से बढ़ कर है।

54. इस साल से अभिप्रेत सन् 9 हिजरी (631 ई.) है जब कि यह आयत नाज़िल हुई। इस साल हज़रत अबू बक्र (रजि.) के नेतृत्व में हज्ज हुआ था और इस अवसर पर इस आदेश के अनुपालन में यह घोषणा कर दी गई थी कि अब कोई बहुदेववादी हज्ज नहीं कर सकेगा ।

55. अर्थात् बहुदेववादी हरम की सिमाओं में प्रवेश न करने पाएं । इस आदेशानुसार न केवल मस्जिदे-हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद काबा) में बल्कि पूरे हरम में बहुदेववादियों का प्रवेश क़ियामत तक के लिए वर्जित तय पाया । दूसरे शब्दों में हरम

की पवित्र धरती ग़ैर मुस्लिमों के लिए वर्जित क्षेत्र (Prohibited Area) है।

56. बहूदेववादियों का प्रवेश हरम में वर्जित कर देने के फलस्वरुप कारोबार और व्यापार के प्रभावित होने की आशंका थी क्यों कि उस समय मक्का की मंडी में बाहर से आहार सामग्री लाने वाले अधिकतर बहुदेववादी ही थे। लेकिन इस आशंका को अल्लाह तआला ने महत्व न देने की हिदायत फ़रमाई और यह उम्मीद दिलाई की अल्लाह तुम्हें अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़्ल) से सम्पन्न कर देगा। अत: व्यवहारिक रुप से मुसलमानों को यही सूरत पेश आई। अर्थात् बहुदेववादियों का हरम की सीमा में प्रवेश वर्जित कर देने से मुसलमानों की आर्थिक स्थिति पर कोई बुरा असर नहीं पड़ा बल्कि वे रोज़ बरोज़ इस में उन्नति करते चले गए। मालूम हुआ कि असल चीज़ अल्लाह के आदेश का उस पर विश्वास और भरोसा करते हुए पालन करना है। फिर समस्याएं भी हल होने लगती हैं। और अल्लाह की ओर से बरकतें भी ज़ाहिर होने लगती हैं।

57. जिहाद से सम्बन्धित यह अति महत्त्वपूर्ण आयत है जो सन 9 हिजरी में तबूक की जंग से पहले अवतरित हुई। इस से पहले अहले किताब (यहूदियों और ईसाईयों) में से केवल यहूदियों से जंग की नौबत आई थी जिन की बस्तियाँ मदीना के ईर्द गिर्द या उस से करीबी क्षेत्रों में थीं। और इस जंग का कारण इन की वे साज़िशी कार्रवाइयां थीं जो मुसलमानों के विरुद्ध और बहुदेववादियों के समर्थन में वे कर रहे थे। अब इस आयत में साधारण अहले-किताब (यहूदी एवं ईसाई) के साथ मामला करने के सम्बन्ध में उसूली हिदायत दी गई है जिस की हैसियत इस्लामी राज्य की स्थायी नीति की है।

''अहले-किताब में से'' का मतलब यह है कि जो अहले किताब इस्लाम स्वीकार कर लें उन से छेड़ छाड़ नहीं की जाएगी बल्कि केवल उन लोगों से जंग या जिज़्या की माँग की जाएगी जो इस्लाम स्वीकार न करें। अहले किताब के अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान न रखने का मतलब यह है कि वे यद्यपि इस का दावा करते हैं मगर उन का यह दावा ईमान की हक़ीक़त की दृष्टि से बिल्कुल निरर्थ है क्यों कि वे अल्लाह को उस तरह नहीं मानते जिस तरह मानना चाहिए। वे अल्लाह का इक़रार करते हैं मगर उस के बेटा होने को भी स्वीकार करते हैं। उस को एक मात्र अकेला पूज्य मान कर सिर्फ़ उस की उपासना एवं बन्दगी करने के लिए आमादा नहीं हैं। उस को दोष रहित एवं त्रुटि रहित नहीं मानते और उस के एकेश्वर होने में बहुदेववाद की मिलावट कर रखी है। इसी तरह वे आख़िरत को मानते अवश्य हैं किन्तु साथ ही वे इस बात पर भी विश्वास रखते हैं कि फ़्लाँ और फ़्लाँ की सिफ़ारिश या फ़्लाँ नबी पर क्षमा करा लेने की आस्था रखने से उन की मुक्ति हो जाएगी। ज़ाहिर है कि उन के इस सिद्धान्त एवं विचारधारा ने आख़िरत की पूछ ताछ की बात मस्तिष्क से बिल्कुल गायब कर दी है। इस लिए वास्तविकता यही है कि अहले-किताब अर्थात यहूदी और ईसाई आख़िरत पर ईमान नहीं रखते।

अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को अपनी किताब में हराम (अवैध) ठहराया है जैसे सूद, चाहे वह अपनों से लिया जाये या दूसरों से, शराब, सुअर आदि, इसी तरह अल्लाह का आख़िरी रसूल उस के निर्देशानुसार जो व्यापक एवं विस्तृत आदेश दे रहा है उन को मानने के लिए वे तैयार नहीं हैं। दूसरे शब्दों में उन्हें अल्लाह की आख़िरी शरीअत (अन्तिम संविधान) को स्वीकार करने से इन्कार है।

''और न सत्य धर्म को अपना धर्म (दीन) बनाते हैं'' का मतलब यह है कि इस्लाम को जो सत्य धर्म है मान कर अपनाने को वे तैयार नहीं हैं। बल्कि यहूदियत और ईसाईयत के साथ जो अल्लाह का दीन नहीं है, चिमट कर रहना चाहते हैं। मतलब यह कि अहले किताब ने धर्म का रुप ज़रुर धार लिया है लेकिन उन को न वास्तविक ईश भक्ति से वास्ता है और न उस के अनुपालन से और न ही सच्ची दीनदारी से। ऐसी स्थिति में वे दुनिया में नेकी और भलाई का काम करने से तो रहे। अलबत्ता कुफ़्र के प्रचार एवं प्रसार तथा फितना एवं उपद्रव फैलाने में अवश्य सक्रिय रहेंगे। अत: इस उच्च उद्देश्य की ख़ातिर जो इस्लाम के समक्ष है कि इन्कार (कुफ़्र) और फितने एवं उपद्रव की शक्तियाँ दब जाएं और ख़ुदा परस्ती (ईश-भक्ति) एवं भलाई की पक्षधर शक्तियाँ उभरें। उन से जंग करना अतिआवश्यक बल्कि अनिवार्य है। यह और बात है कि वे जिज़्या दे कर इस्लामी राज्य के आधीन रहना स्वीकार कर लें क्यों कि इस सूरत में उन का फितना और उन की बुराई दब सकती है और बदले हुए वातावरण में उन्हें इस्लाम की सत्यता पर विचार करने का अवसर भी मिल सकता है।

''जिज़्या'' वह टैक्स है जो ग़ैर मुस्लिम इस्लामी राज्य को उस की वफ़ादारी के चिन्ह स्वरुप और उस की ओर से मिलने वाली सुरक्षा के बदले में अदा करते हैं। इस की कोई मात्रा सुनिश्चित नहीं है। बल्कि इस्लामी राज्य को अधिकार है कि हालात और इन्साफ़ के तक़ाज़ों को सामने रख कर उस की मात्रा निश्चित करे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस की मात्रा प्रतिसदस्य वार्षिक एक दीनार (10 दिरहम, अर्थात

लगभग 30 ग्राम चाँदी) निर्धारित की थी बाद में हज़रत उमर (रजि.) ने अपने ख़िलाफ़त काल में जब कि देश की आर्थिक स्थिति बेहतर हो गई थी जिज़्या की मात्रा बढ़ा कर चार दीनार (40 दिरहम, लगभग 120 ग्राम चाँदी) कर दी (किताबुल अम्वाल, अबूउबैद, पृष्ट 39-41)

आयत में अहले किताब अर्थात यहूदियों एवं ईसाईयों से जिज़्या ले कर उन्हें सुरक्षा देने की हिदायत की गई है। लेकिन यह सहूलत बहुदेववादियों को देने का आदेश स्पष्ट रुप से नहीं दिया गया। इस का कारण यह है कि यह रिआयत अरब के बहुदेववादियों के लिए नहीं थी जिन से वास्तव में क़ुर्आन अवतरण के दौर के मुसलमानों को वास्ता था।

मक्का के बहुदेववादियों से जिन की ओर प्रत्यक्षत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति हुई थी, इस्लाम ही स्वीकार किया जा सकता था। किन्तु बाद में जब ग़ैर अरब (अजम के) बहुदेववादियों से वास्ता पेश आया तो जिज़्या के आदेश को ग़ैर अरब (अजम के) बहुदेववादियों पर भी लागू किया गया। इसी लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजर (बहरीन) के मजूसियों से जिज़्या लिया था (अबू दाऊद किताबुल खिराज) और फ़रमाया था।

سُنُّوابِهِمْ سُنَّةَ اَهْلِ الْكِتَابِ

अर्थात ''अहले-किताब के लिए (जिज़्या का) जो नियम निर्धारित किया गया है वही नियम इन पर भी लागू करो। (किताबुल अम्वाल, अबू उबैद, पृष्ट 32)

अबू उबैद (मृत्यु सन 224 हिजरी) किताबुलअम्वाल में जो इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था पर अत्यन्त प्रसिद्ध एवं प्रमाणित पुस्तक है लिखते हैं :

> ''रहे अजमी (ग़ैर अरब) तो उन से जिज़्या लिया जा सकता है यद्यपि वे अहले-किताब न हों उस नियम के आधार पर जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मजूसियों के बारे में अपनाया था हालाँकि वे अहले किताब में नहीं हैं।'' (पृष्ट:30)

आयत में अहले-किताब से जो जंग करने के कारण बयान किए गये हैं उन से साफ़ प्रतीत होता है कि यहाँ रक्षात्मक (Defensive) जंग का हुक्म नहीं दिया गया है। यह हुक्म तो इस से बहुत पहले दिया जा चुका था, बल्कि एक उद्देश्यपूर्ण, सुधारवादी और इन्किलाबी जंग का हुक्म दिया गया है और इस की हैसियत इस्लामी राज्य की उसूली नीति की है और इस सिलसिले में वह कोई भी क़दम हालात और साधनों को सामने रख कर ही उठाएगा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोमन इम्पायर से जब ख़तरा महसूस किया तो तीस हज़ार लश्कर के साथ तबूक पहुँच गए जो उस की सरहद पर स्थित था। लेकिन जब रोमी मुक़ाबले के लिए नहीं आए बल्कि उन्होंने अपनी फ़ौज़ें सरहद से हटा लीं तो आप ने उस समय उन को उनके हाल पर छोड़ देना ही उचित समझा । बाद में ख़िलाफ़त-राशिदा के ज़माने में जब हालात सुधरे तो मुसलमानों ने इन देशों को जीत लिया।

सत्य यह है कि जिहाद को रक्षात्मक युद्ध (Defensive War) तक सीमित समझना सही नहीं और न इस को वर्तमान परिभाषा में आततायी युद्ध (Agressive War) कहना ही सही है क्यों कि वह देशों को जीतने, क़ौमी पक्षपात, जातीय भेदभाव, भौतिक स्वार्थों अथवा बुरे एवं ग़लत सिद्धान्तों के लिए लड़ी जाने वाली जंग नहीं है। बल्कि वह ख़ुदा के बन्दों को झूठे ख़ुदाओं की दासता से मुक्त कराने, अन्याय और अत्याचार को मिटाने और उन्हें पाकीज़ा माहौल प्रदान करने के लिए लड़ी जाने वली जंग है। यह जंग हक़ीक़त में मानवता को उस रोग से पीड़ित अंग का आप्रेशन कर के स्वास्थ्यवर्धक जीवन प्रदान करने के समानार्थ है इस लिए इस को उन पैमानों से नहीं नापा जा सकता जो रक्षा और आतंक के नाम से लोगों ने बना रखे हैं। और जो दीन (जीवन प्रणाली) सार्वभौमिक सत्यता (Universal Truth) का दावेदार हो वह इन खानों में बन्द हो कर कैसे रह सकता है।

आज कल के ज़माने में गुलाम मानसिकता के मुसलमान जिहाद के आदेशों के सिलसिले में बहुत ही अपराध बोध से ग्रस्त हैं मगर अल्लाह का कलाम इस से बहुत बुलन्द है कि उस का औचित्य डर डर कर अपराध बोध के साथ बताया जाए। और जहाँ तक यहूदियों और ईसाईयों का सम्बन्ध है वह इस्लाम के इक़दामी जिहाद पर अगर आपत्ति व्यक्त करते हैं तो वे तौरात को उठा कर देखें। उस में भी जिहाद में पहल करने के आदेश मौजूद हैं। अत: एवं बनी इस्राईल को फ़िलस्तीन विजय कर लेने का जो आदेश दिया गया था तो उस का कारण यही था कि अल्लाह तआला ने इस देश को उन के लिए लिख दिया था । और इस लिए लिख दिया था ताकि वह इस्लामी दअवत का केन्द्र बने। फिर क्या इस को भी रक्षात्मक युद्ध कहा जा सकेगा? तौरात में फ़िलस्तीन के बुत परस्तों के सिलसिले में तो अत्यंत कड़े आदेश दिये गए थे। अर्थात् यह कि इस को विजय कर लेने के बाद किसी बहुदेववादी को वहाँ रहने न दिया जाए।

> ''जब तुम यरदुन पार हो कर कनआन देश में पहुँचो तब उस देश के निवासियों को उन के देश से निकाल देना और उन के सब नक़्क़ाशे पत्थरों को और ढली हुई मुर्तियों को नाश करना और उन के

सब पूजा के स्थान को ढा देना । और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उस में निवास करना क्यों कि मैं ने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उस के अधिकारी हो।''(गिनती 33:51,52,53) और अगर बनी इस्राईल फ़िलस्तीन के अलावा किसी और देश से युद्ध करने के लिए निकलते हैं लेकिन जंग की नौबत नहीं आती और संधि हो जाती है तो ऐसी अवस्था में उस के बाशिन्दों से Tax (ख़िराज) वसूल करने का आदेश तौरात में दिया गया है।

''जब तू किसी नगर से युद्ध करने को उस के निकट जाए तब पहिले उसे संधि करने का समाचार दे। और यदि यह संधि करना स्वीकार करे और तेरे लिए फाटक खोल दे तब जितने उस में हों वे सब तेरे अधीन हो कर तेरे लिए बेगार करने वाले ठहरें। परन्तु यदि वे तुझ से संधि न करें, परन्तु तुझ से लड़ना चाहें तो तू उस नगर को घेर लेना। और तब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में सौंप दे तब उस में के सब पुरुषों को तलवार से मार डालना''। (व्यवस्थाविवरण 20:10,11,12,13)

58. उज़ैर का नाम बाइबिल में एज्रा (Ezra) आया है जिन का युग पाँचवी सदी ईसवी पूर्व का है। बख़्त नसर के हाथों बनी इसराईल पर जो तबाही आई और जिस धार्मिक (दीनी) नैतिक एवं व्यवहारिक पतन का वे शिकार हुए, उस से उन को मुक्ति दिलाने, तौरात से उन के सम्बन्ध निश्चित कर के उन का सुधार करने और उन के अन्दर दीन की जान डालने का कार्य जिस व्यक्ति ने अन्जाम दिया वह हज़रत उज़ैर हैं। बनी इसराईल के नैतिक बिगाड़ का एक बड़ा कारण यह था कि उन्होंने अपने उस अवनति काल में मुश्रिक क़ौमों में मिश्रित ब्याह रचा लिए थे जिन के कुप्रभाव उन के नैतिक बिगाड़ तक सीमित नहीं रहे बल्कि शिर्क ने भी उन के अन्दर जड़ें पकड़ लीं। बाइबिल में है:

''जब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और पाप का स्वीकृति कर रहा था तो तब इसराएल में से पुरुषों, स्त्रीयों और लड़के वालों की एक बहुत बड़ी मण्डली उस के पास इकट्ठी हुई और लोग बिलक बिलक कर रो रहे थे।..... तब एज्रा याजक खड़ा हो कर उन से कहने लगा, तुम लोगों ने विश्वाषघात कर के अन्यजाति-स्त्रियाँ ब्याह लीं और इस से इस्राएल का दोष बढ़ गया है। सो अब अपने पितरो के परमेश्वर यहोवा के सामने अपना पाप मान लो और उस की इच्छा पूरी करो। और इस देश के लोगों से और अन्यजाति-स्त्रियों से न्यारे हो जाओ। तब पूरी मण्डली के लोगों ने ऊँचे शब्द से कहा, जैसा तुने कहा है वैसा ही हमें करना उचित है।

(एज्रा 10:1,10,11,12)

उन के इन सुधारात्मक प्रयासों के फलस्वरुप बनी इस्राईल को नया जीवन मिला बैतुल मुक़द्दस का पुनर्निर्माण हुआ और तौरात का संविधान सक्रिय व्यवहार में आया। इस तरह बनी इस्राईल के पुनर्उत्थान का काम हज़रत उज़ैर (एज्रा) के कर कमलों द्वारा पूर्ण हुआ। अत: स्टैन्डर्ड जेविश इन्साइक्लोपीडिया का संपादक लिखता है:

"Ezra (5th cent. B.C.E.) Refounder of Palestinian Jewry and reformer of Jewish life."

(Standard Jewish Encyclopaedia, p. 660).

अर्थात एज्रा फ़िलस्तीनी यहूदी क़ौम के नये संस्थापक एवं सुधारक हैं । और इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका का लेखक लिखता है:

"So important was he in the eyes of his people that later tradition regarded him as no less than a second Moses.

(Encyclopaedia Britannica Vol. 7, page 127).

अर्थात वे उन की क़ौम की दृष्टि में इतने महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गए कि बाद वालों ने उन्हें दूसरे मूसा का स्थान दिया।

उन की यही महानता है जिस में अतिशयोक्ति से काम लेते हुए यहूदियों के एक गिरोह ने ईसाईयों की देखा देखी उन को अल्लाह का बेटा ठहराया ।

स्पष्ट रहे कि उज़ैर के ख़ुदा का बेटा होने की धारणा यहूदियों की सामान्य धारणा नहीं है बल्कि उन के उस वर्ग की धारणा है जो क़ुर्आन के नाज़िल होने के समय मौजूद था।

59. ईसा मसीह के ख़ुदा का बेटा होने की धारणा एवं आस्था वह सब से बड़ी बिदअत् (नई कुप्रथा) है जो ईसाईयों ने अल्लाह के दीन में मिला दी और इस को उन में प्रसिद्धि दिलाने एवं प्रचलित करने में पाल (Paul) का बड़ा हाथ है। अत: उस के पत्र जो बाइबिल के संग्रह में शामिल हैं, उस के दुस्साहस पर गवाह हैं । मिसाल के तौर पर रोमियों के नाम पाल ने जो पत्र लिखा था उस में वह कहता है:-

''अपने पुत्र हमारे प्रभू यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।

(रोमियों के नाम पौलूस प्रेरित की पत्री 1:3,4)

ख़ुदा का बेटा होने की ग़लत धारणा की व्याख्या के लिए देखिए सूरह इख़लास नोट 5)।

60. ख़ुदा की सन्तान होने की कल्पना वास्तव में बहुदेववादी क़ौमों में रही है। ईसाईयों में यह ग़लत धारणा पाल ने प्रचलित की। उस ने रोम और यूनान के बहुदेववादी दर्शन एवं विचारों से प्रभावित हो कर और ईसाई मत को उन क़ौमों में प्रसिद्धि दिलाने के उद्देश्य से ईसाई मत को उस में ढाल दिया वरना वर्तमान इन्जीलों में न त्रीश्वरवाद की धारणा पाई जाती है और न उन अर्थों में हज़रत ईसा मसीह के पुत्र होने की धारणा एवं आस्था पाई जाती है जिन अर्थों में कि ईसाईयों ने अपना रखा है। अर्थात् वर्तमान इन्जीलों में जो कटी छंटी हैं, अगर मसीह को ख़ुदा का बेटा कहा गया है तो मात्र कल्पित अर्थों में न कि वास्तविक अर्थों में। किन्तु इन्जील के संकलन कर्ताओं की इस ग़लती को पाल ने गुमराही का रुप दे दिया।

31. इन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने धर्म ज्ञाताओं और सन्तों (उलमा और मशाइख़) को रब (ख़ुदा) बना लिया है [61]और मसीह इब्ने मरयम को भी।[62] हालांकि उन्हें केवल एक माबूद (उपास्य) की इबादत (उपासना) का हुक्म दिया गया था।[63] वह जिस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं। पाक है वह उस शिर्क से जो ये करते हैं।

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا
اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

32. ये लोग अल्लाह की रौशनी (नूर) को अपनी फूँकों से बुझा देना चाहते हैं हालाँकि अल्लाह अपनी रौशनी पूरी किये बग़ैर रहने वाला नहीं है। यद्यपि काफ़िरों को अप्रिय हो।[64]

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى
اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

33. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ (सत्य धर्म) के साथ भेजा ताकि इस को तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे यद्यपि बहुदेववादियों को अप्रिय हो।[65]

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

34. ऐ ईमान वालो। अहले-किताब के पंडितों (धर्म ज्ञानियों) एवं संन्तों में बहुत से लोग ऐसे हैं जो लोगों का माल ग़लत तरीक़े से खाते हैं [66]और अल्लाह की राह से रोकते हैं [67]और जो लोग सोना और चाँदी को ख़ज़ाना बना कर रखते हैं और उस को अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन को दुखदायिनी यातना की ख़ुशख़बरी दे दो।[68]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ
لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا
يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾

35. जिस दिन जहन्नम की आग में उसे तपाया जायेगा और उस से उन के माथों, पहलुओं और पीठों को दाग़ा जाएगा [69] (कहा जायेगा) यह है वह ख़ज़ाना जो तुम ने अपने लिए जमा किया था तो चखो अब अपने ख़ज़ाना जमा करने का मज़ा।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ
وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۗ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

36. महीनों की सही तादाद अल्लाह के नज़दीक बारह हैं जो अल्लाह के नविश्ते (लेख पत्र) में जिस रोज़ कि उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया लिखी हुई है [70] जिन में चार महीने हुर्मत वाले (प्रतिष्ठित) हैं [71] यही सीधा दीन है।[72] अतः इन में अपने नफ़्स (जान) पर ज़ुल्म न करो ।[73] और बहुदेववादियों से सब मिल कर लड़ो जिस तरह वे सब मिल कर तुम से लड़ते हैं। और जान रखो कि अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़वा (ईश-भय) अपनाते हैं।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ
كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ
اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۗ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا
فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ ۗ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۤفَّةً كَمَا
يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۤفَّةً ۗ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٦﴾

61. अर्थात् अहले किताब में जो गुमराहियाँ पैदा हुईं उस का मौलिक कारण उन का अपने धर्म शास्त्रियों एवं सन्तों के अंधानुकरण में लिप्त होना था। उन के कथनों अथवा लेखों ने ईश्वरीय ग्रंथ का स्थान ले लिया और स्वीकार करने अथवा रद्द करने की कसौटी उन के कथन तथा फ़तवे निश्चित हुए। उन्होंने जो बहुदेववादी धारणाएं एवं प्रथाएं धर्म में मिला दीं उन पर लोग जम गए और यह देखने की आवश्यकता महसूस नहीं की कि सही धारणाएं क्या हैं और ग़लत क्या? एकेश्वारवाद (तौहीद) क्या है और बहुदेववाद (शिर्क) क्या? अल्लाह की ओर से नियत की गई उपासना (इबादत) क्या है और अपनी ओर से चलाई गई प्रथाऐं (बिद्अत) क्या?और हलाल क्या हैं और हराम क्या? यह हाल यहूदियों का भी हुआ और ईसाईयों का भी। लेकिन ईसाईयों ने एक क़दम आगे बढ़ कर हज़रत मसीह के बारे में ऐसी धारणाऐं और मिथ्यालोजी (Methology) गढ़ ली कि पुरा धर्म ग़लत विचार धाराओं की धुरी पर घूमने लगा। यहाँ उन के इसी तरीक़े को रब बना लेने की उपमा दी गई है। अत: हदीस में इस आयत की तफ़्सीर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस तरह उद्धृत है।

‘‘ अदी बिन हातिम कहते हैं मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ इस हाल में कि मेरी गर्दन में सोने की सलीब लटक रही थी । आप ने फ़रमाया अदी इस बुत को फेंक दो, अदी कहते हैं, मैं ने आप (सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम) को सूरह बराअत की यह आयत तिलावत करते (पढ़ते) सुना ‘‘उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने धर्म ज्ञाताओं और सन्तों को रब बना लिया।’’ आप ने फ़रमाया वे उन की पूजा नहीं करते थे बल्कि करते यह थे कि जिस चीज़ को उन के धर्म ज्ञाता एवं संत उन के लिए वैध ठहराते उस को वे वैध और जिस चीज़ को अवैध ठहराते उस को वे अवैध मानते थे।’’ (अत्तिर्मिज़ी अबवाब तफ़्सीरुल क़ुर्आन)

यह हदीस यद्यपि प्रमाणिकता की दृष्टि से प्रबल नहीं हैं क्यों कि तिर्मिज़ी ने इस को रिवायत कर के ख़ुद ही लिखा है:

وهذا حديثٌ غريبٌ لا نعرفه الا من حديث عبدالسلام بن حرب - و غُطيفٌ بن اَعُيَنَ لَيس بمعروفٍ فى الحديث۔

‘‘ यह ग़रीब हदीस है। हम इसे अब्दुस्सलाम बिन हर्ब ही के माध्यम से जानते हैं। इस के रावी ग़ुतैफ़ बिन अअ्यन हदीस के मामले में सामान्य रुप से नहीं जाने जाते हैं।’’

लेकिन जहाँ तक हदीस के मज़मून का सम्बन्ध है वह इस आयत की बेहतरीन तफ़्सीर (व्याख्या) है। और इब्ने अब्बास, ज़हाक, हुजैफ़ा और अबुलआलिया से जो तफ़सीरी कथन उद्धृत हैं वे भी इसी भावार्थ का अनुमोदन करते हैं। (देखिए तफ़्सीर तबरी Vol X page 80) इस आयत पर ग़ौर करने से निम्न लिखित उसूली बातें मालूम होती हैं।

(A) दीन के मामले में असल चीज़ अल्लाह का अनुपालन है। उस को छोड़ कर किसी और की आज्ञापालन का पट्टा अपनी गर्दन में डालना उस को रब बना लेने और उस की बन्दगी करने अथवा पूजा करने के समानार्थ है।

(B) धर्म ज्ञाता हों या धर्म शास्त्री, इमाम हों या मुफ़्ती,पीर हों या वली किसी को यह अधिकार नहीं कि उस का अनुपालन अल्लाह के अनुपालन का स्थान ले ले ।

(C) अल्लाह के हुक्म को सिद्ध करने वाली चीज़ शरीअत की दलील है न कि धर्म ज्ञाताओं एवं धर्म शास्त्रियों तथा बुज़ुर्गों का कथन। और इस्लाम की राह प्रमाण और तर्क एवं दलील की राह है न कि अन्धानुकरण एवं स्थिरता की।

(D) जो लोग अल्लाह की शरीअत के विरुद्ध मानव जीवन के लिए क़ानून बनाने का हक़ अपने ही जैसे इन्सानों को देते हैं और शरीअत के आदेशों की कोई परवाह नहीं करते वे उन को ईश्वरीय स्थान पर बिठाते हैं।

62. हज़रत मसीह को रब बनाने वाले असल में ईसाई सन्यासी और धर्मज्ञाता हैं। खास तौर से पौलूस (Paul) जिस ने हज़रत मसीह के दीन को जो हक़ीक़त में इस्लाम था मसीहिय्यत में बदल डाला। उसे हज़रत मसीह को प्रभु एवं परमेश्वर कहने में कोई संकोच नहीं।

‘‘सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशू को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।’’ (प्रेरितों के काम 2:36)

‘‘पौलूस की ओर से जो यीशु मसीह का दास (बन्दा) है।’’ (रोमियों 1:1)

‘‘ जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।’’ (रोमियों 4:34)

63. यह हुक्म आज भी तौरात और इंजील में मौजूद हैं ‘‘ तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर कर के न मानना..... तू उन को दण्डवत् न करना और न उस की उपासना करना।’’ (निर्गमन 20:3,5)

‘‘ आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को इन्हीं विधियों और नियतों को मानने की आज्ञा देता है, इस लिए तू अपने सारे मन और सारे प्राण से इन को मानने में चौकसी करना।’’ (व्यवस्थाविवरण 26:16)

‘‘ तब यीशु ने उन से कहा, हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, तू प्रभू अपने परमेश्वर को प्रमाण कर और केवल उसी

की उपासना कर।'' (मत्ती 4:10)

64. अल्लाह की रौशनी (नूर) से मुराद इस्लाम है और इस को पूरा करने से मुराद इस्लाम की पूर्ति है। मतलब यह है कि काफ़िरों को इस्लाम की तरक़्क़ी बिल्कुल नहीं भाती। संसार के क्षितिज पर इस्लाम के सूरज को उभरता हुआ देख कर अत्याधिक मानसिक तनाव में लिप्त हो गए हैं और उन्हें कुछ सुझाई नही दे रहा है कि वे इस रौशनी को फ़ैलने से किस तरह रोकें। इस की कोई तदबीर उन की समझ में नहीं आती तो वे इस रौशनी को फूँकों से बुझाने का बचपना कर गुज़रते हैं मगर इस्लाम का सूरज जो सारे विश्व को प्रकाशमान करने के लिए है, उन की फूँकों से बुझने से रहा। उस की रौशनी सारे जहान में फैल कर रहेगी।

ये काफ़िर न तो हिदायत अर्थात् इस्लाम के सूरज को उभरने से रोक सकते हैं और न इस्लाम के चन्द्रमा को पूर्ण होने से। क्यों कि इस्लाम धर्म की पूर्ति अल्लाह का अटल फैसला है और अल्लाह का फैसला लागू हो कर रहता है। चाहे कोई पसन्द करे या नापसन्द।

65. आयत में हिदायत से मुराद वह रहनुमाई है जो सत्य धर्म का मार्ग प्रशस्त करती है अर्थात् वे चिन्ह और तर्क जो इस्लाम का सत्य धर्म होना सिद्ध करते हैं और सत्य धर्म से मुराद इस्लाम की पूर्ण अनुपालन व्यवस्था और संपूर्ण संविधान (शरीअत) है। जिस का क्षेत्र धारणाओं एवं आस्थाओं से ले कर राजनिति तक फैला हुआ है। आयत لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ में इज़्हार का अर्थ ग़लबा, (प्रभुत्व एवं वर्चस्व) के हैं।

लिसानुल अरब में है: فَلَانٌ ظاهِرٌ عَلٰى فلانٍ اى غالبٌ عليه

फ़्लाँ व्यक्ति फ़्लाँ व्यक्ति पर ज़ाहिर है अर्थात ग़ालिब (प्रभुत्व रखता) है। (जिल्द 4 पृष्ट 526)

क़ुर्आन में एक जगह इर्शाद हुआ:

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِى الْاَرْضِ (المؤمن:٢٩)

''ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! आज तुम्हें सत्ता प्राप्त है और राज्य में तुम ग़ालिब हो।''(मोमिन :२९)

विचारधीन आयत में इज़्हार से मुराद सत्ता की प्रभुत्व और शासकीय वर्चस्वता है न कि तर्क एवं युक्ति की प्रभुत्व क्यों कि यह प्रभुत्व तो रसूल को पहले दिन से प्राप्त थी। अत: इमाम राज़ी लिखते हैं:

وظهورُ هذا الدين بالحجة مقررٌ معلومٌ فالواجب حمله على الظهور بالغلبةِ۔ (التفسير الكبير ج١٦ ص٤٠)

''इस दीन का तर्क एवं युक्ति द्वारा ज़हूर एक मालूम हक़ीक़त है इस लिए ज़रुरी है कि इस ग़लबे (प्रभुत्व) के द्वारा ज़हूर समझा जाए।'' (अत्तफ़्सीरुल कबीर जिल्द 16 पृष्ट 40)

لِيُظْهِرَهٗ ''ताकि उसे ग़ालिब कर दे'' का कर्ता अल्लाह है न कि रसूल और इस पर तर्क ऊपर वाली आयत है जिस में ''युतिम्मा नूरहु'' يُتِمَّ نُوْرَهٗ ''अल्लाह अपनी रौशनी को पूरी कर देगा'' फ़रमाया गया है। इस लिए जिस तरह ''रौशनी को पूरा करने'' का कर्ता अल्लाह है उसी तरह दीन को ग़ालिब करने का कर्ता भी अल्लाह ही है। ये दोनों आयतें आख़िरी रसूल से सम्बन्धित ख़ुदा की योजना को दर्शाती है पहली आयत में रौशनी को पूरा करने अर्थात दीन को पूरा करने का सु-समाचार दिया गया है और दूसरी आयत में इज़्हारे दीन अर्थात रसूल के हाथ सारे धर्मों पर इस्लाम की प्रभुत्वा एवं वर्चस्वता का। दीन पूरा करने की पृष्ट भूमि में अहले किताब हैं, इस लिए पहली आयत में ''वलौ करेहल काफ़िरून'' ''यद्यपि काफ़िरों को अप्रिय हो'' फ़रमाया और ''दीन के ग़ालिब करने'' की पृष्ट भूमि में अहले-किताब के अलावा बहुदेववादी भी थे इस लिए इस आयत में ''वलौ करेहल मुश्रिकून'' ''यद्यपि बहुदेवादियों को अप्रिय हो'' फ़रमाया। यह वास्तव में इस बात का एलान था कि आखिरी रसूल के बारे में ख़ुदा यह फैसला फ़रमा चुका है कि इस के हाथों.........इस्लाम को अरब के सारे धर्मों पर ग़ालिब कर दिया जाएगा। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही यह ईश्वरीय निर्णय लागू हुआ और यह योजना पूरी हो कर रही। इस रुप में की पूरे अरब में बुत परस्ती और बहुदेववादी धर्मों का अस्तित्व कहीं बाकी नहीं रहा और यहूदियत को वहाँ से भागना पड़ा। रही ईसाईयत तो वह अरब के सीमांत क्षेत्रों में बाक़ी रही और वह भी पराजित हो कर और इस्लामी राज्य के आधीन हो कर।

इस से स्पष्ट हुआ कि यह आयत ख़ुदा की योजना को बयान करती है जो उस ने विशेष रुप से अपने रसूल के सिलसिले में बनाई थी। और अधिकांश क़ुर्आन के टीकाकारों ने इस को इसी भावार्थ में लिया है। किन्तु कुछ समकालीन टीकाकारों ने दीन की राजनीतिक प्रभुत्वा एवं वर्चस्वता को रसूल का मिशन क़रार दे कर इस्लामी जीवन व्यवस्था के संघर्ष के लिए इस आयत को दलील बनाया है, जो सरासर तकल्लुफ़ है क्यों कि इस में रसूल का मिशन नहीं बयान किया गया है बल्कि ख़ुदा के निर्णय का एलान किया गया है।

रहा यह प्रश्न कि फिर रसूल का मिशन क्या था और दीन की राजनितिक प्रभुत्वा एवं वर्चस्वता अभीष्ट है या नहीं? तो जहाँ तक रसूल के मिशन का सवाल है वह किसी एक आयत में नहीं बल्कि सैंकड़ों आयतों में बयान हुआ है। इस के लिए मक्की सूरों को देखना चाहिए। क्यों कि हर रसूल अपना मिशन प्रारम्भ में ही बयान करता है। रहा दीन की राजनितिक प्रभुत्वा एवं वर्चस्वता तो वह निश्चय ही अभीष्ट है और जिहाद इसी उद्देश्य के लिए

शरीअत में है जिस का स्पष्टीकरण इस सूरह की व्याख्या में हम कर चुके हैं और सूरह अन्फ़ाल की व्याख्या में भी। लेकिन इस का सम्बन्ध दअवती प्रयासों एवं संघर्षो के खास मरहलों से और हालात की मुनासिबत से है इस लिए इस को पैग़म्बर का मिशन क़रार देना उचित नहीं।

66. अहले-किताब अर्थात यहूदियों और ईसाईयों के पंडितो, धर्म ज्ञानियों एवं सन्तों का हाल यह था कि वे बड़ी चालाकी से धर्म की आड़ में दुकानदारी करने लगे थे। उन के इस हाल का वर्णन क़ुर्आन ने ईमान वालों को सम्बोधित कर के किया है ताकि ईमान वाले इस से सबक लें । अफ़सोस कि इस चेतावनी के बावजूद मुसलमानों में कितने उलमा, मौलवी, मुल्ला इमाम और पीर ऐसे हैं जिन्हों ने दुनिया को पेशा बना लिया है। वे उल्टी सीधी बातें बना कर धर्म के नाम से गुमराह करने वाली बातें लोगों को बताते हैं। उन्हों ने पीरी मुरीदी के चक्कर में लोगों को फाँस रखा है ताकि उन से नज़राना (भेंट) वसूल करते रहें। उन्होंने बुज़ुर्गो के नाम की नज्र और नियाज़ का ढोंग रचा रखा है ताकि उन के हलवे मांडे का सामान होता रहे। उन्होंने ताविज़ गंडे अविष्कार कर रखे हैं ताकि उन का कारोबार चलता रहे। वे बिदअतों और जाहिली रस्मों को बढ़ावा देते रहते हैं ताकि हर मजलिस में उन की आवश्यकता महसूस होती रहे और उन का काम बनता रहे। उन को शिर्क अर्थात् बहुदेववाद की छत्र छाया में रहने पर भी कोई आपत्ति नहीं है। दरगाहों की मुजावरी (मठाधीशी) का वास्तविक प्रेरक ''चिराग़ी'' और ''चढ़ावे'' हैं जिन से उन की जेबें गर्म होती रहती हैं। इन तमाम बिद्अतों एवं प्रथाओं की तह में जो चीज़ दिखाई देगी वह माया है न कि परलोक की सफलता। परिणाम यह कि हराम कमाई के कारण उन की सारी धार्मिकता (दीनदारी) ढकोसला बन कर रह गई है।

67. अर्थात् इन पंडितों, सन्तों और संयासियों की दशा विचित्र है इन को सच्चा ईश-भक्ति का जीवन प्रिय नहीं है इस लिए वे सत्य धर्म (दीन-हक़) के विरोधी हो गए हैं और लोगों को इस्लाम स्वीकार करने से रोकते हैं।

मालूम हुआ कि हराम माल खाने से आदमी की मानसिकता ऐसी हो जाती है कि उस में सत्य प्रियता बाक़ी नहीं रहती। और वह सत्य का विरोध करने लगता है।

68. मूल अरबी (Text) में ''यकनिजून'' इस्तेमाल हुआ है जो ''कन्ज़'' से है और कन्ज़ का अर्थ अरबी शब्दकोष में माल जमा करने के नहीं ख़ज़ाना बना कर रखने के हैं।

تسمعی العرب كلّ كثيرٍ مجموعٍ تنافس فيه كنزاً ـ

(لسان العرب ج٥ ص٤٠١)

''अरब वासी हर उस माल को जो अधिक मात्रा में जमा किया गया हो, और जिस से परस्पर विद्वेष फैलता होता हो कन्ज़ कहते हैं।'' (लिसानुल अरब जिल्द 5 पृष्ट 401)

और इमाम राग़िब लिखते हैं:

وَالَّذِيۡنَ يَكۡنِزُوۡنَ الذَّهَبَ وَ الۡفِضَّةَ ای يَدَّخِرُوۡنها

(المفردات ص ٤٥٨)

'' जो लोग सोना चाँदी कन्ज़ कर के रखते हैं अर्थात् इकट्ठा (ज़खीरा) कर के रखते हैं। (अल् मुफ़र्रदात पृष्ट ४५८)

और क़ुर्आन में एक जगह फ़रमाया गया है।

لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ عَلَيۡهِ كَنۡزٌ ۔ (ہود:١٢)

'' उस पर कोई कन्ज़ क्यों नहीं उतारा गया''। (हूद:१२)

ज़ाहिर है यहाँ भी कन्ज़ से मुराद ख़ज़ाना है न कि धन की सीमित मात्रा । इस लिए इस चल रही आयत में अज़ाब (यातना) की जो चेतावनी सुनाई गई है वह उन लोगों के लिए है जो अतिरिक्त धन को भारी मात्रा में जमा कर के रखते हैं। और जिन कामों में खर्च करना आवश्यक है उन पर खर्च नहीं करते। अल्लाह तआला दौलत इस लिए प्रदान नहीं करता कि आदमी उस पर साँप बन कर बैठ जाए और उसे गर्व और अभिमान तथा दिखावे का साधन बना ले बल्कि इस लिए प्रदान करता है कि उस को सही मसरफ़ में लाए वह दौलत का मालिक नहीं बल्कि उस का अमानतदार है इस लिए उस पर यह ज़िम्मेदारी आती है कि वह अपने मालिक के बताए हुए तरीक़े पर उस को इस्तेमाल करे और उस की राह में ख़र्च करे। जो व्यक्ति दौलत को इस तरह ख़र्च नहीं करता और उसे सैंत सैंत कर रखता है वह हक़ छीनने का बहुत बड़ा अपराध करता है जिस की सज़ा ख़ुदा के यहाँ अत्यंत कड़ी है।

इस से इस विचारधारा का खण्डन होता है कि इस्लाम में ज़कात अदा करने के बाद दौलत की जमाखोरी पर कोई पाबन्दी नहीं है। इस सिद्धान्त के अनुसार इस चल रही आयत की व्याख्या यह की जाती है कि यह चेतावनी उन लोगों के लिए है जो ज़कात अदा नहीं करते हालांकि आयत ज़ेर तफ़सीर में ये नहीं फ़रमाया गया है कि वह ज़कात अदा नहीं करते बल्कि फ़रमाया गया है कि वे सोने चाँदी को ख़ज़ाना बना कर रखते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हैं। अर्थात यहाँ बात इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च करने) की कही गई है जिस का सम्बन्ध ज़रुरत और हालात से है जब कि ज़कात माल का एक निश्चित भाग है जो हर हाल में अदा करना आवश्यक है। और इस्लाम का सामान्य उसूल यही है कि ज़कात की अदायगी के बाद माल पाक हो जाता है लेकिन इस का मतलब यह नहीं कि इस्लाम के अनिवार्य कामों की सूची समाप्त हो गई बल्कि

ज़रुरत और हालात के औसत से माल में हक़ुक़ होते हैं। और पूँजी पति के लिए आवश्यक है कि वह अल्लाह की राह में ख़र्च (इन्फ़ाक़) करे ।उदाहरण स्वरुप यदि अकाल या किसी दुर्घटनावश लोग भूखों मर रहे हो तो कोई व्यक्ति यह कह कर उन को खाना ख़िलाने की ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकता कि मैं पहले ही ज़कात अदा कर चुका हूँ। या जैसे किसी व्यक्ति के माता पिता अपंग हों तो उन के खाने कपड़े की ज़िम्मेदारी उस पर निश्चित रुप से लागू होगी यद्यपि कि वह ज़कात अदा करता हो। इसी प्रकार जिहाद के लिए ज़कात के अतिरिक्त भी ख़र्च करना होगा।

यहाँ जो हुक्म दिया गया है वह है सोना चाँदी की जमा ख़ोरी न करने और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च करने का। सोना चाँदी के आदेश के अन्तरगत हर प्रकार की नक़दी (Currency) बैंक बैलेंस (Bank Balance) और बॉन्ड (Bond) जैसी चीज़ें शामिल हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च करने के भावार्थ में दीन का प्रचार, निमंत्रण (दअवत) जिहाद दीनी शिक्षा, मस्जिदों और मदरसों का निर्माण मुहताजों की मदद और इस प्रकार के दूसरे नेकी के काम शामिल हैं। क़ुर्आन लोगों को यह अनुमति नहीं देता कि वे अपनी तिजोरियाँ भरें बल्कि वह इस बात पर ज़ोर देता है कि अतिरिक्त बची हुई दौलत नेकी और भलाई के कामों में खर्च की जाए। क़ुर्आन लक्ष्मी पूजा और धन एवं माया का मोह, कंजूसी और लालच को विनाशकारी ठहराता है और इस विनाश के लिए क़ारून का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो अपने समय का सब से बड़ा धनवान और सब से बड़ा पूँजी भक्त था।

मनुष्य यदि अपना माल जायज़ ज़रुरतों के लिए, बचा कर जमा करता है या कारोबार में लगाता है या अपने बाल बच्चों और नातेदारों के लिए संपत्ति छोड़ कर मरता है तो इन में से कोई बात भी आपत्तिजनक नहीं है बशर्ते कि वह ज़कात के आदेशों का पालन करता हो। लेकिन इस का यह मतलब नहीं की आदमी दौलत समेटने ही को अपना जीवन लक्ष्य निर्धारित कर ले और अपनी औलाद को भी करोड़पती बना कर छोड़े। दौलत का इस तरिक़े से ठहराव और उस की जमाख़ोरी इस्लाम में अत्यंत आपत्तिजनक है। इस तरह अपनी तिजोरियाँ भरने वालों को क़ुर्आन दुखदायिनी यातना का सुसमाचार देता है कि उन को अपने ख़ज़ानों को देख देख कर जो प्रसन्नता होती है वह अतिशीघ्र यातना की ''प्रफुल्लता'' में परिवर्तित हो जाने वाली है।

हज़रत अली ने अपने ज़माने की परिस्थितियों के लिहाज़ से चार हज़ार दिरहम (लगभग बारह हज़ार ग्राम चाँदी) से अधिक माल को कन्ज़ फरमाया था। अत: इब्ने जरीर तबरी ने उन के इस कथन का उल्लेख किया है कि:

''चार हज़ार दिरहम या उस से कम मात्रा तो आवश्यक ज़रुरतों के लिए बचत (नफ़्क़ा) है अगर इस से अधिक है तो कन्ज़ है।'' (तफ़्सीर तबरी जिल्द 10 पृष्ट 83)

यह कोई स्थाई पाबन्दी नहीं थी बल्कि आयत के मंशा को पूरा करने एवं परिस्थितियों के अनुसार प्रचलित एवं लागू करने की एक सूरत थी । और हज़रत उस्मान के ख़िलाफ़त काल में जब दौलत की रेलपेल हो गई और लोगों का झुकाव माल जमा करने की ओर हुआ तो हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने कड़ाई से पकड़ की और साफ़ साफ़ कहा:

هٰولاء يَجْمَعُونَ الدنيا ولا يعقلون شيئاً۔

(صحيح مسلم كتاب الزكوٰة)

''ये लोग दुनिया जमा कर रहे हैं और कोई बात समझते नहीं हैं।''(सही मुस्लिम किताबुज़्ज़कात)

और उन्हों ने अमीर मुआविया से इस मसले में कड़ा विरोध एवं असहमति व्यक्त की जो इस बात के क़ायल थे कि यह आयत अहले-किताब के बारे में नाज़िल हुई है। हज़रत अबू ज़र का कहना था कि आयत का हुक्म सब के लिए है। मुसलमान और अहले किताब दोनों से सम्बन्धित हैं ।(बुख़ारी किताबुज़्ज़कात)

हज़रत अबू ज़र की यह बात बुनियादी तौर पर बिल्कुल सही है क्यों कि आयत में दौलत के ख़ज़ाने जमा करने की जो सज़ा सुनाई गई है उस को अहले किताब के लिए विशिष्ट समझने का कोई औचित्य नहीं। अलबत्ता अबू ज़र (रज़ि.) से दूसरे सहाबा के असहमत होने का कारण संभवत: यह हुई हो कि हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने माल को कन्ज़ ठहराने में कड़ाई से काम लिया हो और आवश्यक ज़रुरतों के लिए जमा किए हुए माल पर भी कन्ज़ का हुक्म लगाया हो।

आज दीन का प्रचार एवं उस का प्रकाशन, दअवती संघर्ष और दीनी शिक्षा जैसे महत्पूर्ण काम पूँजी साधन की कमी के कारण कितने प्रभावित हो रहे हैं? फ़साद पीड़ितों को पुन: बसाने का काम कैसी संगीन परिस्थितियों से घिरा हुआ है। समाज का एक वर्ग ऐसा है जिस को सर छुपाने के लिए भी जगह उपलब्ध नहीं और कितने ही लोग अपने बाल बच्चों के साथ सड़क पर बसेरा करते हैं। क्या इन परिस्थितियों में पूँजी पतियों एवं धनवानों को अपनी तिजोरियाँ भर भर कर रखने और अपनी औलाद को करोड़पति बनाने के लिए दौलत समेट कर रखने की अनुमति दी जा सकती है? इस सवाल का जवाब धार्मिक (फ़िक़्ही) बहसें करने के बजाए सूरह तौबा की इस आयत ही से पूछ लेना चाहिए।

69. इन अंगो को दाग़ने का कारण यह है कि धन का घमंड मस्तिष्क में होता है जिस के चिन्ह माथे पर प्रकट होते हैं। इस

तरह पहलू और पीठ वे अंग हैं जिन को दौलत की भरमार के कारण ऐश और आराम ख़ूब प्राप्त होता है।

70. अर्थात् अल्लाह ने जिस समय आसमान और ज़मीन की रचना की उसी समय से ज़मीन वालों के लिए चाँद को प्राकृतिक जंतरी (Natural Calendar) की हैसियत दे दी। अत: इस का घटना और बढ़ना साधारण अनुभव की चीज़ है और इन प्रतीकों को देख कर तारीखों का निर्धारण सरलतापूर्वक हो जाता है कि महीने की शुरुआत कब हुई और ख़ात्मा कब हुआ। फिर इस ब्रहमाण्ड के रचयिता ने इन्सान के लिए साल की गिनती का जो नियम पहले दिन से निश्चित फ़रमाया है वह बारह क़मरी (चाँद के) महीनों का है और वह यह रहनुमाई अपनी वह्य द्वारा इन्सानों को देता रहा है। और जहाँ तक अरब वासियों का सम्बन्ध है इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने से क़मरी साल (Lunar Year) ही प्रचलित चलता आ रहा था और महीनों के अरबी नाम ये थे ।

1.मुहर्रम 2. सफ़र 3. रबिउल अव्वल 4. रबीउल आख़िर 5.जमादिलऊला 6. जमादिल आख़िर 7. रजब. 8. शाबान 9.रमज़ान 10. शव्वाल 11. ज़ीक़ादा 12. ज़ुल्हिज्जा ।

आज भी इस्लामी दुनिया में क़मरी साल ही प्रचलित हैं और महीनों के यही नाम चले आ रहे हैं।

क़ुर्आन के अवतरण के समय अरबों के यहाँ प्रचलित तो यही क़मरी साल (Lunar Year) था लेकिन अपनी ख़ास मसलहतों के कारण उन की तरतीब में वे उलट फेर किया करते थे जिस की तफ़सील आगे आ रही है।

71. हुर्मत वाले (प्रतिष्ठित) महीनों की व्याख्या के लिए देखिए सूरह बक़र: नोट 269

72. अर्थात माह और साल के बारे में ख़ुदा की तरफ़ से शरअी ज़ाब्ता (संवैधानिक नियम) यही है जो बिल्कुल सही और उचित नियम है अत: तमाम दीनी मामले जैसे हज्ज की अदायगी, रोज़े का आयोजन, ज़कात की अदायगी और इद्दत आदि में क़मरी माह और साल (Lunar Month & Year) ही का भरोसा किया जाना चाहिए ।

73. अर्थात प्रतिष्ठित (हुर्मत के) महीनों में जंग कर के अपराध के भागीदार न हो जाओ। स्पष्ट रहे कि प्रतिष्ठित महीनों में जंग छेड़ने की मनाही का आदेश स्थायी है और यह ख़याल सही नहीं कि यह आदेश निरस्त हो गया। क्यों कि यह आदेश इस से पहले कई सूरतों में आया है और सूरह ''बराअत'' तो अन्तिम चरणों का अवतरण है। एवं क़ुर्आन की कोई आयत ऐसी नहीं जिस ने इस आदेश को निरस्त कर दिया हो।

37. नसी (महीने को उस की जगह से पीछे हटा देना) कुफ़्र में सरासर ज़्यादती है जिस के द्वारा काफ़िरों को गुमराह किया जाता है। किसी साल उस (महीने) को हलाल कर लेते हैं और किसी साल हराम, ताकि अल्लाह के हराम किये हुए महीनों की तादाद पूरी कर लें और साथ ही अल्लाह के हराम ठहराए हुए महीनों को हलाल कर लें।[74] उन की बुरी करतूतें उन की निगाहों में मोहक बना दिये गए हैं। और अल्लाह काफ़िरों की रहनुमाई नहीं करता।

إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُيِّنَ لَهُمْ سُوٓءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

38. ऐ ईमान वालों ! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा गया कि अल्लाह की राह में निकलो तो ज़मीन से चिमट कर रह गए ?[75] क्या तुम ने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया ?[76] सांसारिक जीवन का सामान तो आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ
انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُمْ
بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾

39. अगर तुम जिहाद के लिए न निकलोगो तो वह तुम्हें दुखदायिनी यातना देगा [77]।और तुम्हारी जगह किसी दूसरे गिरोह को ला खड़ा करेगा [78] और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। [79] अल्लाह को हर बात पर सामर्थ्य प्राप्त है।

إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ
وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

40. अगर तुम उस की [80] सहायता न करोगे तो (कुछ परवाह नहीं) अल्लाह उस की सहायता ऐसे समय कर चुका है जब काफ़िरों ने उसे निकाल दिया था [81] और वह दो में का दूसरा था, जब वे दोनों गुफ़ा में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न कर अल्लाह हमारे साथ है। उस समय अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (मन की शान्ति) उतारी [82] और ऐसे लश्करों से उस की सहायता की जो तुम को नज़र न आए [83] और काफ़िरों का बोल नीचा कर दिया और अल्लाह का बोल ऊँचा रहा। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।[84]

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا
ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ
لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ
وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا
السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

41. निकल खड़े हो, चाहे हल्के हो या बोझल [85] और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने माल और जान के साथ। यह तुम्हारे पक्ष में उत्तम है अगर तुम जानो।[86]

انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

74. अरब वासियों में तो क़मरी (चन्द्रमा से सम्बन्धित) जंतरी ही प्रचलित थी किन्तु वे अपनी जंगी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन के क्रम में परिवर्तन कर देते। जैसे मुहर्रम का महीना प्रतिष्ठित (हुर्मत वाला) था जिस में जंग मना थी लेकिन जब वे इस में किसी क़बीले के विरुद्ध जंग छेड़ना चाहते तो मुहर्रम को पीछे कर के सफ़र के स्थान पर कर देते और सफ़र को आगे कर मुहर्रम के स्थान पर कर देते। उन की यह हरकत ऐसी ही थी जैसे कोई रात को दिन मान कर चले और दिन को रात। स्पष्ट है कि इस से वास्तविकता बदलने से रही। अलबत्ता मनुष्य प्राकृतिक नियमों से मुँह मोड़ कर अपनी बाग़ी मानसिकता का परिचय अवश्य देता है। अरब की जिहालत प्रतिष्ठित महीनों को अपनी जगह से हटा कर प्राकृतिक नियमों में ख़लल डाल रही थी इस लिए इस को कुफ्र में ज़्यादती कहा गया है। नसी जिस का अर्थ पीछे करने के हैं की परिभाषा (Term) इसी भाव में इस्तेमाल हुई है।

इस्लाम ने नसी के नियम को ग़लत ठहराया और प्रकृतिक नियम को अपने असली प्रारुप में स्थापित किया। अत: अन्तिम हज्ज सन 10 हिजरी के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اِنَّ الزَّمَانَ قَدِاسْتَدَارَ كَهَيْئَةِ يَوْمَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضَ ، اَلسَّنَةُ اِثْنَا عَشَرَ شَهْرًا مِنْهَا اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ، ثَلَاثٌ مُتَوَالِيَاتٌ ذوالقعدةِ و ذُوالحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ وَرَجَبُ مُضَرَ الَّذِىْ بَيْنَ جُمَادى و شَعْبَان۔ (البخاری کتاب التفسیر)

“ज़माना चक्कर काट के अपने उस दिन की दशा पर आ गया जिस दिन कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया था । साल बारह माह का है जिन में चार महीने हुर्मत के (प्रतिष्ठित) हैं। तीन लगातार हैं ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा और मुहर्रम, चौथा रजब मुज़र (मुज़र क़बीले से सम्बन्धित जो रजब को अपने स्थान से हटाता नहीं था) जो जुमादी और शाबान के बीच है।” (अलबुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

अर्थात् हर महीना अपने असली स्थान पर आ गया है। हलाल महीना हलाल महीनों की जगह है और हराम महीना हराम महीनों की जगह। उस क्षण से यह महीनों का क्रम ठीक अपनी हालत पर क़ायम चला आ रहा है।

कुछ लोगों ने नसी को कबीसा के अर्थ में लिया है। अर्थात उन के नज़दीक इस की सूरत यह थी कि क़मरी और शम्सी साल (Lunar & Solar Year) के बीच 11 दिन का जो अन्तर है उस को समाप्त करने के लिए हर तीन साल पर एक क़मरी माह की वृद्धि कर दी जाती । किन्तु कुछ कारणवश इस से सहमति नहीं की जा सकती:

पहला कारण यह है कि नसी का अर्थ पीछे करने के हैं वृद्धि करने के नहीं हैं। इस लिए इस को कबीसा समझना उचित नहीं।

दूसरा अगर अरब में कबीसा का चलन होता तो क़ुर्आन यह न कहता कि “ताकि अल्लाह के हराम किये हुए महीनों की तादाद पूरी कर लें”। क़ुर्आन के इस बयान से स्पष्ट होता है कि प्रतिष्ठित (हुर्मतवाले) महीनों को जब वे अपनी जगह से हटाते तो उस की पूर्ति के लिए हलाल महीनों को हराम ठहरा लेते। इस तरह हराम महीनों की तादाद जो चार थी पूरी कर लेते। इस सूरत का कबीसा से क्या सम्बन्ध?

तीसरा अगर यह मान लिया जाए कि अरब में कबीसा का नियम चल रहा था तो इस का मतलब यह हुआ कि कोई क़मरी (Lunar) महीना भी अपनी दशा पर न था बल्कि सारा हिसाब ही गड़ बड़ हो कर रह गया था। फिर क़ुर्आन ने प्रतिष्ठित महीनों में जंग छेड़ने की जो मनाही मुसलमानों को की थी और यह चेतावनीपूर्ण आदेश हिजरत के कुछ ही दिनों बाद दिया गया था तो वे कौन से हराम (प्रतिष्ठित) महीने थे। जब कि कबीसा के कारण कोई भी हराम महीना अपनी जगह पर स्थापित नहीं रहा होगा अर्थात रजब वास्तव में न रजब रहा होगा और न ज़िलहिज्जा, ज़िलहिज्जा । और तो और रमज़ान के बारे में भी यह सवाल पैदा होगा की वह रमज़ान वास्तव में रमज़ान का महीना था जिस में रोज़े फ़र्ज़ हुए थे और जिस में बद्र की जंग लड़ी गई और जिस में क़ुर्आन के अवतरण का आरम्भ हुआ था। ये सारे प्रश्न कबीसा की धारणा को स्वीकार कर लेने पर उत्पन्न होते हैं। किन्तु क़ुर्आन का स्पष्टीकरण इन तमाम बातों के खंडन के लिए काफ़ी हैं।

कुछ मुफ़स्सिरीन (क़ुर्आन के टीकाकारों) ने हज़रत अबू बक्र (रजि.) के हज्ज के बारे में भी जो सन 9 हिजरी में हुआ था यह लिखा है कि वह वास्तव में ज़ीक़ादा का महीना था लेकिन क़ुर्आन के बयान से इस का खंडन होता है। क्यों कि क़ुर्आन ने उसे हज्जे-अकबर (बड़े हज्ज) का दिन कहा है जैसा कि इस सूरह की आयत 3 में गुज़र चुका। और इब्ने कसीर ने इसी आयत से तर्क प्रस्तुत करते हुए इस सोच का खंडन किया है। (देखिए तफ़्सीर-इब्ने कसीर जिल्द 2 पृष्ट 357)

75. इशारा है तबूक की जंग की तरफ़ जो रजब सन ९ हिजरी (सन 630 ई.) में हुई। मक्का विजय के बाद इस्लाम एक ताक़त बन गया था और बड़ी तेज़ी से अरब पर छाता चला जा रहा था। उस समय दुनिया की सर्वाधिक शक्तिशाली शक्ति अर्थात महाशक्ति रोम की सल्तनत थी जिस की सीमाऐं सीरिया तक फैली हुई थीं। सीरिया में ग़स्सानी ख़ानदान जो ईसाई था

रोमियों के अधीन शासन कर रहा था। क़ैसर रोम ने इस्लाम की उभरती हुई ताक़त को कुचलने के लिए मदीना पर हमले की तैयारियाँ शुरु कर दी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह ख़बर हुई तो आप तीस हज़ार मुजाहिदों के साथ रोमियों के मुक़ाबले के लिए निकले। भीषण गर्मी का ज़माना था। फ़सलें पक चुकी थी और सफ़र दूर का था इस लिए घर से निकलना तबीयत पर बोझ जान पड़ता था। जिन लोगों के दिलों में निफ़ाक़ (पाखंड) की बीमारी थी, वे मुसीबत क्यों झेलते। उन्हों ने घर में बैठ रहने ही में भलमनसी समझी । उन के अलावा जो लोग मुसलमानों में कमज़ोर थे उन के लिए भी यह सफ़र कड़ी परीक्षा का कारण बन गया और कुछ तो आसावधानी का शिकार हो गए।

नबी सल्लल्लाहु वसल्लम ने तबूक पहुँच कर लगभग दो हफ़्ते निवास किया। तबूक मदीने से उत्तर की ओर 686 किलो मिटर की दूरी पर है। रोमी मुक़ाबले के लिए नहीं आए इस लिए जंग की नौबत नहीं आई। किन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस नीति को अपनाने एवं पहल करने से रोमी सल्तनत पर ज़बरदस्त धाक बैठ गई। और इस का दूसरा लाभ यह हुआ कि उस सीमांत क्षेत्र में जो ईसाई क़बीले रोमियों के अधीन थे वे इस्लामी राज्य को कर देने वाली प्रजा बन गए। अत: ऐला, जर्बा, अज़्रुह और अकीदर वालों ने आप से सुलह कर ली और जिज़्या देना स्वीकार कर लिया और तीसरा बड़ा लाभ यह हुआ कि तीस हज़ार मुजाहिदीन की तरबियत (प्रशिक्षण) का ऐसा सामान हुआ कि वे क़ैसर और क़िसरा (अपने समय की महाशक्तियों) को चैलेन्ज करने के क़ाबिल हो सके। हौसले की यही बुलन्दी थी जिस ने आगे जा कर (हज़रत उमर फ़ारुक़ के खिलाफ़त काल में) उन्हीं दो महाशक्तियों पर विजय एवं प्रभुत्व प्रदान की।

यह संक्षिप्त पृष्ठभूमि है कलाम के उस क्रम का जिस का आरंभ इस आयत से होता है।

76. जिहाद से आदमी इस लिए जी चुराता है कि उसे अपनी दुनिया बनाने की चिन्ता होती है। अगर उसे अपने आख़िरत के जीवन को बनाने की चिन्ता हो तो वह जिहाद करने में अपना सौभाग्य समझेगा।

77. जिहाद से जी चुराने पर जब इतनी कड़ी चेतावनी दी गई है तो अगर मुसलमान सांसारिक ऐश्वर्य की ख़ातिर या जिहाद को त्याग देने के ग़लत सिद्धान्त के तहत अपने को इस महत्वपूर्ण दायित्व से स्थायी रुप से अलग कर लें तो बात कितनी संगीन और भयंकर होगी । आज दुनिया में मुसलमान जिस विनाश का शिकार हैं उस का बड़ा कारण यह है कि उन के अन्दर जिहाद की स्पिरिट (Spirit) बाक़ी नहीं रही। अगर जिहाद का जोश उन के अन्दर होता तो न बैतुलमुक़द्दस उन के हाथ से छीन लिया जाता और न इस्राईल के हाथों वे अपमानित होते।

78. अर्थात् अल्लाह की योजना पूर्ण होने का मामला तुम पर निर्भर नहीं है। अगर तुम दीन के लिए संघर्ष न करोगे तो अल्लाह किसी और गिरोह को इस की तौफ़ीक़ (दैवयोग) प्रदान करेगा।

79. अर्थात् इस दायित्व की अदायगी में तुम ने बेपरवाही से काम लिया तो सोचो इस से हानि किस को पहुँचेगी? अल्लाह को,या स्वयं तुम्हारे अपने व्यक्तित्व और तुम्हारे समूह एवं समाज़ को?

80. अर्थात् पैग़म्बर की।

81. इशारा है हिजरत की घटना की ओर जो आप के नबी नियुक्त होने के 13 साल बाद (सन् 622 ई. में) पेश आई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के आदेश पर मक्का से निकले थे। लेकिन चूँकि काफ़िरों ने ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर दी थीं कि आप को निकलने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस लिए फ़रमाया ''काफ़िरों ने उसे निकाल दिया था।''

82. क़ुरैश ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वध करने की साज़िश की थी और इस उद्देश्य से एक रात आप के घर पर पहरे बिठा दिये थे लेकिन आप इस तरह मक्के से निकले कि उन को कानों कान ख़बर न हुई। उस समय आप के साथ हज़रत अबू बक्र (रजि.) थे। मक्का से हिजरत कर के आप को मदीना जाना था जो मक्का से उत्तर में स्थित है लेकिन आप ने जान बूझ कर दक्षिण का मार्ग अपनाया ताकि दुश्मनों को पता न चले और सौर पर्वत की गुफ़ा में जो मक्का से लगभग पाँच किलो मिटर की दूरी पर है, पनाह ली। यहाँ आप ने तीन रातें गुज़ारीं । इस नाज़ुक अवसर पर आप के साथ कोई समूह न था बल्कि केवल अबू बक्र (रजि.) थे । दुशमन हर तरफ़ ढूँढते हुए गुफ़ा के पास पहुँचे तो हज़रत अबू बक्र (रजि.) को चिन्ता हुई कि दुश्मन कहीं देख न लें लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र (रजि.) को ढारस दिलाया कि ग़मग़ीन न हों अल्लाह हमारे साथ है ख़ुदा का करना यह कि दुश्मनों ने ग़ार में झाँक कर भी देखा और वापस चले गए। यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी सहायता थी जो इस नाज़ुक मौक़े पर स्पष्ट हुई। इसी सहायता का हवाला दे कर यहाँ मुसलमानों से फ़रमाया गया है कि अगर तुम जिहाद के लिए नबी के साथ न निकलोगे तो अल्लाह को इस की कोई परवाह नहीं। वह हर हाल में अपने नबी की सहायता और सहयोग करेगा जिस तरह कि उस ने हिजरत के नाज़ुक अवसर पर की जब कि दो के सिवा कोई तीसरा व्यक्ति गुफ़ा में मौजूद नहीं था।

83. मुराद फ़रिश्तों की मदद है जो बद्र और हुनैन आदि जंग के अवसर पर प्रकट हुई।

84. अल्लाह प्रभुत्वशाली (ग़ालिब) है इसी लिए उस का बोल बाला रहता है और वह तत्वदर्शी (हिकमत वाला) है इस लिए अपने पैग़म्बर की सहायता और विजय के लिए अत्यंत नीति पूर्ण तरीक़े अपनाता है।

85. अर्थात साज़ो-सामान कम हो या ज़्यादा जब तुम्हें जिहाद के लिए हुक्म दिया गया है तो उस का पालन करना चाहिए स्पष्ट रहे कि उस समय जिहाद के लिए निकलने का आदेश तमाम मुसलमानों को दिया गया था इस से मुक्त या तो औरतें थीं या वे लोग जो वास्तव में कोई औचित्य अथवा कारण रखते थे और यह भी स्पष्ट रहे कि अरब के क़बीलाई माहौल में परवरिश पाने के कारण हर व्यक्ति तलवार चलाना जानता था और तलवार से सुसज्जित रहता था। इस के अलावा इस जिहाद की स्थिति यह थी कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नेतृत्व में एक संगठित तथा केवल अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए उस के दुश्मनों के ख़िलाफ़ जिहाद था। इस लिए अपंगों एवं औचित्यपूर्ण कारण रखने वालों के सिवा किसी के लिए इस से पीछे रह जाने की कोई वजह नहीं हो सकती थी ।

इस आदेश का सामान्य पक्ष यह है कि जब बाक़ायदा जिहाद का मामला सामने हो और मुसलमानों का सत्ताधारी अमीर उन्हें इस का आदेश दे दे तो उन के लिए निकलना फ़र्ज़ हो जाता है। यह उसूली बात है वरना मौजूदा ज़माने में राज्यों की फ़ौज़ ही इस योग्य होती है कि बाक़ायदा जंग करे।

86. अर्थात् अगर अन्जाम पर तुम्हारी निगाह है तो अपनी जान और माल को अल्लाह की राह में खपाना तुम्हारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

42. अगर लाभ तुरंत होता और सफ़र भी सरल होता तो ये अवश्य तुम्हारे पीछे हो लेते किन्तु उन्हें यह दूरी लम्बी प्रतीत हुई।[87] अब ये क़समें (सौगन्ध) खा खा कर कहेंगे कि अगर हमारे बस में होता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते। ये अपने को विनाश में झोंक रहे हैं [88]और अल्लाह जानता है कि ये बिलकुल झूठे हैं।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ
وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۭ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ
لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُونَ ﴿٤٢﴾

43. (ऐ नबी !) अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया, तुम ने इन्हें क्यों इजाज़त दे दी? (तुम इजाज़त न देते) जब तक कि तुम पर यह खुल न जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और यह मालूम न कर लेते कि कौन लोग झूठे हैं।[89]

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِينَ ﴿٤٣﴾

44. जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करने की छुट्टी की कभी माँग न करेंगे। और अल्लाह परहेज़गारों (मुत्तक़ियों) को ख़ूब जानता है।[90]

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
أَنْ يُّجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ
بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾

45. छुट्टी तो वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और जिन के दिल शक में पड़े हुए हैं। और वे अपने शक में डावाँ डोल हैं।[91]

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

46. अगर उन का इरादा निकलने का होता तो उस के लिए कुछ सामान अवश्य कर लेते। लेकिन अल्लाह को उन का उठना नापसन्द हुआ इस लिए उन को इस से बाज़ रखा।[92] और कह दिया गया कि बैठ रहो बैठने वालों के साथ।

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ
اللّٰهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا
مَعَ الْقٰعِدِينَ ﴿٤٦﴾

47. अगर वे तुम्हारे साथ निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी ही का कारण बनते और तुम्हारे बीच उन की दौड़ धूप फितना फैलाने के लिए होती और तुम में ऐसे लोग मौजूद हैं जो उन की बात पर कान धरने वाले हैं।[93] और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَّا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا
وَّلَأَوْضَعُوا خِلٰلَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ
وَفِيكُمْ سَمّٰعُونَ لَهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيمٌۢ بِالظّٰلِمِينَ ﴿٤٧﴾

87. यह मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों) का हाल बयान हुआ है जिन्हों ने तबूक की जंग में सम्मिलित होने से विमुखता अपनाई थी। जब कि तमाम मुसलमानों को निकलने का आदेश दिया गया था। इस से स्पष्ट हुआ कि जब आम एलान हो जाए तो जिहाद के लिए न निकलना किसी सच्चे मोमिन का काम नहीं।

88. अर्थात् झूठे बहाने बना कर एवं अनुचित कारणों का सहारा ले कर यह अपने विनाश का सामान कर रहे हैं।

89. तबूक की जंग के अवसर पर कुछ मुनाफ़िक़ो (पाखण्डियों) ने झूठे बहाने बना कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस जंग में सम्मिलित न होने की अनुमति माँगी थी, और आप ने क्षमा एवं दरगुज़र से काम लेते हुए उन्हें अनुमति दे दी थी। मगर अल्लाह तआला ने इस पर सावधान किया कि जब तक आप यह मालूम न कर लेते कि उन का औचित्य अथवा कारण दुरस्त है या मात्र बहाना, उन्हें अनुमति न देते। इस सूरत में उन्हें अपने पाखंड पर पर्दा डालने का अवसर न मिलता।

इस भूल पर अल्लाह तआला ने अपने नबी को सचेत करने से पहले ही फ़रमाया कि उस ने आप को क्षमा कर दिया जिस से एक तरफ़ नबी के पक्ष में अल्लाह तआला की कृपा दृष्टि व्यक्त हो रही है और दूसरी ओर नबी की मासूमियत पर कोई चिन्ह आने नहीं पाया। और अल्लाह तआला की सुन्नत यही है कि इन्सान होने के तक़ाज़े के तहत अगर किसी नबी से कोई चूक हो जाए तो वह उसी क्षण उस पर उंगली रख देता है और सही करा देता है ताकि लोगों की सही रहनुमाई हो।

90. मालूम हुआ कि मुत्तक़ी (परहेज़गार) वह व्यक्ति नहीं है जो कुफ्र और इस्लाम की जंग में अपने दायित्व से मुँह मोड़ते हुए शान्ति एवं सुरक्षा को ढूँढने के लिए एक किनारे दुबक जाए बल्कि परहेज़गार वह है जो अपने दायित्व को पूरा करने के लिए मैदान में निकल आए।

91. इस से निफ़ाक़ (पाखंड) की वास्तविकता का पता चलता है। और वह यह कि आदमी मुसलमान होने का दावा तो करे लेकिन इस्लाम पर संतुष्ट न हो बल्कि शक में मुब्तिला हो। दिल की यह दशा ईमान के विरुद्ध है और जिस दिल की यह दशा होती है वह इस्लाम के तक़ाज़ों को पूरा करने के मामले में डावाँ डोल रहता है। क्यों कि जब मनुष्य को दीन की स्तयता पर दृढ़ विश्वास नहीं रहता तो वह उस के लिए तन मन धन की बाज़ी नहीं लगाता। मदीने के मुनाफ़िक़ों का यही हाल था। वे न केवल अपने को मुसलमान कहलाते थे बल्कि नमाज़ भी पढ़ते थे और ज़कात भी देते थे लेकिन ये सब कुछ वह मन से नहीं करते थे बल्कि विवशतावश करते थे। वास्तव में न उन को अल्लाह से मुहब्बत थी और न उस के रसूल से। इस लिए जब अल्लाह की राह में क़ुर्बानी का मुतालबा होता उन पर पहाड़ टूट पड़ता और वे फ़रार की राह अपनाते।

आज भी ऐसे नाम मात्र मुसलमानों की कमी नहीं है जो इस्लाम के बारे में बुरी तरह शक एवं संदेह में लिप्त हैं। अत: इस की अभिव्यक्ति हर उस अवसर पर होती रहती है जब की इस्लाम के लिए अपने को ख़तरे में डालने और अपने स्वार्थ एवं लाभ को क़ुर्बान करने का मुतालबा उभरता है। मगर मुस्लिम सोसाइटी में घुल मिल जाने के कारण उन्हें अपने पाखंड (निफ़ाक़) पर परदा डालने का अवसर मिल गया है।

92. अर्थात् जब उन्होंने जिहाद के लिए निकलने का इरादा नहीं किया तो अल्लाह तआला ने भी उन को निकलने की तौफ़ीक़ नहीं प्रदान की क्यों कि उन का ऐसे अनिच्छापूर्वक निकलना अल्लाह को पसन्द न था।

93. इशारा है भोले भाले मुसलमानों की तरफ़ जो मुनाफ़िक़ो (पाखण्डियों) के फितने का शिकार होते थे।

48. इस से पहले भी उन्होंने फ़ितना बरपा करने का प्रयास किया था और तुम्हारे विरुद्ध हर तरह की तदबीरें करते रहे हैं।[94] यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म हावी हुआ। जब कि ऐसा होना उन को अप्रिय था।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ
حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٤٨﴾

49. उन में कोई ऐसा भी है जो कहता है मुझे छुट्टी दे दिजिए और फ़ितने में न डालिए।[95] सुन लो यह फ़ितने में गिर चुके [96] और जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي
الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٤٩﴾

50. अगर तुम्हें भलाई पहुँचती है तो उन्हें बुरी लगती है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं अच्छा हुआ हम ने पहले ही सावधानी से काम लिया और वे इस तरह पलटते हैं कि ख़ुशी से फूले नहीं समाते।[97]

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ
يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ
فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾

51. कहो, हमें वही पेश आएगा जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है। वही हमारा मौला (स्वामी) है और ईमान वालों को चाहिए कि उसी पर भरोसा करें।

قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

52. कहो, तुम हमारे लिए जिस बात की प्रतीक्षा करते हो वह इस के सिवा क्या है कि दो भलाइयों में से एक भलाई है।[98] और हम तुम्हारे लिए जिस बात के प्रतीक्षित हैं वह यह है कि अल्लाह या तो अपने पास से कोई अज़ाब (प्रकोप) भेज दे या हमारे हाथों तुम्हें सज़ा दिलवाए।[99]अब तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वाले हैं।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى
الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ
بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ
مُتَرَبِّصُونَ ﴿٥٢﴾

53. कहो, तुम स्वेच्छा से ख़र्च करो या अनिच्छा से, तुम्हारा इन्फ़ाक़ (ख़र्च करना) स्वीकार नहीं किया जाएगा क्यों कि तुम फ़ासिक (अवज्ञाकारी) लोग हो।[100]

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ
قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

54. इन के इन्फ़ाक़ (ख़र्च) को स्वीकार न किए जाने का कारण इस के सिवा कुछ नहीं है कि इन्होंने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया और नमाज़ के लिए आते हैं तो काहिली के साथ आते हैं।[101] और ख़र्च करते हैं तो नागवारी के साथ ख़र्च करते हैं।[102]

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا
بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ
كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَارِهُونَ ﴿٥٤﴾

94. मुनाफ़िक़ों की उपद्रवी सक्रियता एवं षडयंत्रों का वर्णन इस से पहले की कई सूरतों में हो चुका है।

95. तबरी की रिवायत है कि जद्द बिन कैस ने कहा था कि मैं रोम में सुन्दर एवं आकर्षक स्त्रियों को देख लूँगा तो धैर्य न रख सकूँगा । अत: मुझे जिहाद से माफ़ रखिए और फ़ितने में न डालिए।

इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि मुनाफ़िक़ीन कैसे कैसे बहाने बना लेते थे और फिर उन पर परहेज़गारी और ईश-भय का लेप लगाया करते थे।

96. अर्थात् वे फ़ितने से बचने की बातें करते हैं लेकिन कुफ्र और निफ़ाक़ के फ़ितने में जो सब से बड़ा फ़ितना है वे बुरी तरह लिप्त हैं।

97. अर्थात् इन पाखंडियों (मुनाफ़िक़ों) का हाल अजीब है। एक तरफ़ रसूल पर ईमान लाने का दावा भी करते हैं और दूसरी ओर उस के दुश्चिन्तक भी हैं। वे मुसलमानों में अपने को शामिल भी करते हैं और उन पर जो मुसीबत आती है उस पर खुश भी होते हैं।

98. मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) इस बात के प्रतिक्षित थे कि मुसलमानों का लश्कर रोमियों के मुक़ाबले में विजयी होता है या लाशों का ढेर बन जाता है। इस का जवाब यहाँ दिया गया है कि इन दोनों में से जो परिस्थिति भी सामने आ जाए मुसलमानों के लिए भलाई ही की सूरत है। अगर मुसलमानों को विजय प्राप्त होती है तो वह एक जीती जागती सफ़लता है और अगर मुसलमान मारे जाते हैं तो उन्हें अल्लाह की राह में शहीद होने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

99. इस आयत को उतरे मुश्किल से दो साल गुज़रे होंगे कि अल्लाह तआला के अज़ाब का कोड़ा मुसलमानों के हाथों इन पाखण्डियों पर बरसा । यह नाम मात्र के मुसलमान ही थे जिन्होंने हज़रत अबू बक्र (रजि.) के ख़िलाफ़त काल में ज़कात देने से इन्कार कर दिया था और कुछ क़बीलों ने मौक़ा पा कर इस्लाम के विरुद्ध बग़ावत का बिगुल बजा दिया था। किन्तु हज़रत अबू बक्र (रजि.) ने उन लोगों के विरुद्ध जंग की और बड़ी सफ़लतापूर्वक इन फितनों को समाप्त किया।

100. फ़ासिक़ अर्थात अवज्ञा कारी नाफ़रमान । मुनाफ़िक़ अल्लाह के आज्ञापालन का कोई काम करते भी थे तो वह आज्ञापालन की भावना से नहीं, और जब भी उन्हें मौका मिलता पूरी ढिटाई से अल्लाह की अवज्ञा के काम कर गुज़रते । उन की यह अवज्ञा (फ़िस्क़) ईश-भय के विरुद्ध और कुफ्र (इन्कार) के समानार्थ थी।

101. व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा नोट 229 और 230 ।

102. अर्थात् वे प्रसन्नतापूर्वक एवं स्वेच्छा पूर्वक और मात्र अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ख़र्च नहीं करते बल्कि मक़सद दिखावे के सिवा कुछ और नहीं होता।

55. तुम इन के माल और औलाद को देख कर आश्चर्य न करो । अल्लाह तो यह चाहता है कि इन के माध्यम से इन को दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब दे और इन की जानें इस हाल में निकलें कि वे काफ़िर हों।[103]

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم
بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُونَ ﴿٥٥﴾

56. वे अल्लाह की क़सम खा ख़ा कर कहते हैं कि वे तुम में से हैं हालाँकि वे तुम में से नहीं हैं बल्कि वे घबराए हुए लोग हैं।[104]

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَفْرَقُونَ ﴿٥٦﴾

57. अगर वे कोई शरण स्थल या कोई गुफ़ा या कोई छिपने की जगह पा लें तो पूरी उद्दंडता के साथ उस की ओर भाग खड़े हों।[105]

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغٰرٰتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ
وَهُمْ يَجْمَحُونَ ﴿٥٧﴾

58. और इन में कुछ लोग ऐसे हैं जो सदक़ों (दान) के मामले में तुम पर कटाक्ष करते हैं। अगर इन को उन में से कुछ दिया जाए तो ख़ुश होते हैं और न दिया जाए तो नाराज़ होते हैं।[106]

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا
رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾

59. अगर वे उस पर राज़ी होते जो अल्लाह और उस के रसूल ने उन्हें दिया और कहते कि'' हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है वह हमें अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़्ल)से प्रदान करेगा और उस का रसूल भी।[107] हम अल्लाह ही की ओर आकृष्ट हैं।''[108] तो उन के पक्ष में बेहतर होता।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتٰهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا
حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ
إِنَّا إِلَى اللَّهِ رٰغِبُونَ ﴿٥٩﴾

60. सदकात[109] तो केवल मुहताजों और मिस्कीनों के लिए हैं[110] और उन के लिए है जो सदकात के काम पर नियुक्त हों[111] और वे जिन के दिलों में (इस्लाम का) लगाव पैदा करना हों[112] एवं इस लिए हैं कि गर्दनें छुड़ाने में[113] और क़र्ज़दारों का बोझ हल्का करने में[114] और अल्लाह की राह में[115] और मुसाफ़िरों पर ख़र्च किये जाऐं।[116] यह एक फ़रीज़ा (अनिवार्य दायित्व) है अल्लाह की तरफ़ से[117] और अल्लाह इल्म वाला और हिकमत वाला (ज्ञानशील एवं तत्वदर्शी) है।[118]

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِينِ وَالْعٰمِلِينَ عَلَيْهَا
وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِينَ وَفِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۖ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

103. अर्थात् इन लोगों को सांसारिक सामाग्रीयाँ एवं धन आदि की जो बाहुल्यता के साथ प्राप्त हुए हैं वह कोई गर्व योग्य वस्तु नहीं हैं क्यों कि जिस चीज़ पर वे गर्व कर रहे हैं वही उन के लिए दुनिया में जान का वबाल बनने वाली है और यह बात सामान्य रुप से देखने में आती है कि धन के पुजारियों के लिए उन का धन जान का वबाल बन जाता है अलबत्ता इस के रुप कई होते हैं।

मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) में से कितने ही लोगों को जो चीज़ सच्चे ईमान से दूर रखे हुए थी वह माल और औलाद का घमंड था । इस घमंड ने आख़िरकार इन को ज़कात से इन्कार पर आमादा किया और हज़रत अबू बक्र ने जिन के ख़िलाफ़त काल के आरंभ ही में यह घटना घटी थी, उन के विरुद्ध जिहाद किया। अत: मदीना के ईर्द गिर्द अबस और ज़बयान क़बीलों के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की गई । इस तरह दुनिया ही में इन को अपने घमंड की सज़ा मिल गई और वे कुफ़्र की हालत में इस दुनिया से चल बसे।

104. अर्थात् वे मुसलमानों के समाज में इस लिए शामिल हुए हैं कि उन्हें डर है कि इस समाज से कट कर वे कहीं शरण नहीं पा सकते। वरना न वे अपने ईमान में सच्चे हैं और न वास्तव में इस्लामी बिरादरी के अंग हैं।

105. अर्थात् इन को अगर कोई ऐसी जगह मिल जाए जहाँ इन के स्वार्थों एवं लाभों की सुरक्षा एवं पूर्ति होती हो तो वे इस्लाम से मुक्त हो कर और मुस्लिम समाज से अपना रिश्ता तोड़ कर वहीं पहुँच जाऐं । मतलब यह है कि उन्हें न इस्लाम से दिलचस्पी है और न मुसलमानों से बल्कि ये हालात हैं जिस ने इन्हें तुम्हारे साथ बाँध रखा है।

106. बैतुलमाल (राजकोष) में ज़कात का जो माल जमा होता था उस का वितरण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तरह फ़रमाते थे कि वह वास्तविक हक़दारों तक पहुँच जाए लेनिक मुनाफ़िक़ इस पर आपत्ति किया करते थे कि माल का वितरण न्याय के साथ नहीं हो रहा है। हालाँकि अल्लाह के रसूल से बढ़ कर इन्साफ़ करने वाला और कौन हो सकता है? असल बात यह थी कि मुनाफ़िक़ीन में से जो मुहताज होते उन की मदद उन का हक़ बनने के कारण की जाती और जब उन की मदद की जाती तो वे ख़ुश होते। लेकिन जब उन से अधिक ज़रुरतमंद हक़दारों को वरीयता दी जाती तो वे नाराज़ हो जाते। इसी प्रकार वे मुनाफ़िक़ भी बिगड़ जाते जो इस माल को ललचाई हुई दृष्टि से देखते लेकिन हक़दार न होने के कारण उन को उस में से कुछ न दिया जाता।

107. अर्थात् रसूल से दुर्भावना रखने के बजाय यह आशा रखते कि वह अपनी तरफ़ से उन की सहायता एवं सहयोग में कोई कमी नहीं करेगा बल्कि और प्रदान करेगा। तो यह ईमान एवं शुद्ध हृदयता से मेल खाने वाली बात होती।

108. अर्थात् हमारा वास्तविक झुकाव माल की ओर नहीं बल्कि अल्लाह की ओर है।

109. ऊपर सदक़ों के वितरण के सिलसिले में मुनाफ़िक़ीन अर्थात् पाखंडियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया था। इस आयत में बताया गया है कि सदक़ों के वास्तविक हक़दार कौन लोग हैं। और सदक़े की रक़म किन किन खातों (Account) में व्यय करने के लिए हैं । वे व्यय कुल आठ हैं।

शब्द ''सदक़ा'' सिद्क़ से है। जिस का अर्थ है सत्यता। आदमी अल्लाह के लिए माल ख़र्च कर के इस बात का प्रमाण देता है कि वह अपने ईमान में सादिक़ और सच्चा है इस लिए उस माल को जो वह ख़र्च करता है सद्क़ा कहा गया है। अत: हदीस में आता है: ''अस्सदक़ातु बुरहानुन'' सदक़ा स्पष्ट प्रमाण है (मुस्लिम किताबुत्तहार:) आम तौर से सदक़ा, खैरात (दान) को कहा जाता है। मगर क़ुर्आन ने ज़कात के लिए सदक़ा की परिभाषा प्रयोग की है और हदीस में भी यह परिभाषा इस्तेमाल हुई है। अत: जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज़ को यमन भेजा तो फ़रमाया:-

فَاعْلِمْهُمْ اَنَّ اللّٰهَ افْتَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً فِى اَمْوَالِهِمْ تُؤْخَذُ
مِنْ اَغْنِيَائِهِمْ وَتُرَدُّ فِى فُقَرَائِهِمْ۔(البخاری کتاب الزکوٰۃ)

''उन्हें बताओ कि अल्लाह ने उन के मालों में सदक़ा फ़र्ज किया है जो उन के धनवानों से लिया जाएगा और निर्धनों को दिया जाएगा ।''

(बुख़ारी किताबुज़्ज़कात)

110. मूल अरबी (Text) में फ़ुक़रा और मसाकीन के शब्द इस्तेमाल हुए हैं। ये दोनों शब्द ऐसे ग़रीबों के लिए बोले जाते हैं जो आजीविका के लिए मदद के मुहताज हों । ये दोनों शब्द एक ही अर्थ में इस्तेमाल होते हैं अलबत्ता जब दोनों एक साथ इस्तेमाल किए जाते हैं तो यह स्पष्ट करना अभिप्रेत होता है कि फ़ुक़रा वे लोग हैं जो प्रथम श्रेणी के मुहताज हैं और मिस्कीन वे हैं जो द्वितीय श्रेणी के मुहताज हैं।

फ़ुक़रा (मुहताजों) का वर्णन सब से पहले हुआ है जो इस बात की दलील है कि ज़कात के पहले हक़दार यही लोग हैं। फ़क़ीर (मुहताज) का शब्द ग़नी (सम्पन्न) के मुक़ाबिले में है और क़ुर्आन ने ये शब्द उन मुहाजिरों (देश त्यागने वालों) के लिए इस्तेमाल किया है जो अपने घरों और अपनी संपत्तियों से वंचित कर दिये गये थे और हर तरह मदद के हक़दार थे।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْامِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ ۔(الحشر:٨)

''उन ज़रुरतमन्द (फ़ुक़रा) मुहाजिरों के लिए है जो निकाल दिये गए अपने घरों और मालों से''।

(अलहश्र -8)

इस लिए फ़ुक़रा से मुराद वे लोग हैं जो मुहताजगी और भूख से पीड़ित रहने पर विवश हों या जो अपनी गुज़र बसर के लिए मुहताज हो गए हों, या जो अपंग होने के कारण न कमा सकते हों और न उन की आजीविका का कोई प्रबन्ध हो। ऐसे ग़रीब और निर्धन लोगों की धन से सहायता करना ज़कात का प्राथमिक व्यय है। क़ुर्आन ने ख़ास तौर से ऐसे फ़ुक़रा (ज़रुरतमंदों) की मदद करने पर उभारा है जो दीन की सेवा में इस तरह लगे हुए हैं कि अपनी आजीविका को अर्जित करने के लिए दौड़ धूप नहीं कर सकते जिन की ख़ुद्दारी का यह हाल है कि जो इन्हें नहीं जानते वे इन को ग़ैर ज़रुरतमन्द ख़्याल करने लगते हैं।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِى سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْباً فِى الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْئَلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافاً۔ (البقرة:٢٧٣)

'' इन्फ़ाक़ के वास्तविक हक़दार वे ज़रुरतमंद हैं जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर गए हैं कि ज़मीन में दौड़ धूप नहीं कर सकतें। बेख़बर आदमी उन की ख़ुद्दारी को देख कर उन को संपन्न समझता है मगर तुम उनके चेहरों से पहचान सकते हो, वे लोगों से लिपट कर नहीं माँगते।'' (अल-बक़र: 273)

रही बात मिस्कीन की तो ज़रुरत के लिहाज़ से यह द्वितीय श्रेणी के लोग हैं। अर्थात् वे ग़रीब लोग जिन के पास गुज़र बसर का सामान इतना न हो कि उन के लिए काफ़ी हो सके या कमाने का साधन तो हो लेकिन कमाई इतनी कम होती हो कि वे अपनी और अपने बीवी बच्चों की बुनियादी ज़रुरतों को पूरा न कर पाते हों। क़ुर्आन ने एक घटना का विवरण देते हुए नाव को मिस्कीनों की बताया।

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ (الكهف:٧٩)

'' वह नाव मिस्कीनों की थी जो समुद्र में मेहनत मज़दूरी का काम करते थे ।'' (अलकहफ़ - 79)

मालूम हुआ कि किसी चीज़ का मालिक होना या कमाई के साधन का होना मिस्कीन होने के विरुद्ध नहीं है जब कि आदमी अपनी जरुरत भर का न पाता हो।

111. मुराद वे सदस्य हैं जो ज़कात का माल वसूल करने, उस की सुरक्षा और वितरण एवं उस से सम्बन्धित दूसरी व्यवस्थाओं के लिए नियुक्त किए गए हों। उन सब की मज़दूरी या तन्ख़वाहें ज़कात के माल से अदा की जा सकती हैं।

यह व्यय इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ज़कात की वसूली एवं वितरण की नियमित व्यवस्था हो ताकि एक ओर धनवान एवं पूँजी पति अपने धन की ज़िम्मेदारी को निश्चित रुप से अदा करें और दूसरी ओर निर्धनों एवं मिस्कीनों को यह ज़मानत हासिल हो कि उन का हक़ उन को मिल जाएगा एवं ज़कात के जो व्यय दीन और अवाम के हितों से सम्बन्धित हैं उन पर भी आवश्यकतानुसार ख़र्च किया जाए। यह व्यवस्था स्थापित करना इस्लामी राज्य का दायित्व है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के ज़माने में ज़कात की वसूल और वितरण की व्यवस्था स्थापित थी।

112. मुराद वे लोग हैं जो नये नये इस्लाम में दाख़िल हुए हों और उन के दिलों में इस्लाम से लगाव पैदा करने के लिए एवं उस से सहमत करने के लिए उन को धनका उपहार देना मसलहत का तक़ाज़ा हो। ऐसे लोगों के लिए यह शर्त नहीं कि वे ग़रीब हों तब ही उन की मदद की जाए। बल्कि उन के ख़ुशहाल होने के बावजूद उन को इस (Account) से दिया जा सकता है। और इस्लामी राज्य इस का अधिकार रखता है कि वह इस्लाम और मुसलमानों के पक्ष में ज़कात के माल में से इस मद (व्यय मार्ग) पर ख़र्च करे।

113. मुराद लौंडी एवं ग़ुलामों को ग़ुलामी से आज़ाद करने पर माल ख़र्च करना है। क़ुर्आन ने इस उद्देश्य के लिए ज़कात के माल में एक हिस्सा निर्धारित कर के इस उद्देश्य के महत्व को उजागर किया है। अब दुनिया में ग़ुलामी की प्रथा नहीं रही लेकिन उन बेगुनाह क़ैदियों को इस कसौटी पर रखा जा सकता है जो काफ़िरों की क़ैद में हों। ऐसे लोगों को क़ैद से छुड़ाने पर इस मद (Account)से ख़र्च किया जा सकता है। अत: डाक्टर युसुफ़ क़रज़ावी लिखते हैं।

''इमाम अहमद के मसलक में हैं कि ज़कात से मुसलमान क़ैदी को आज़ाद कराना जायज़ है क्यों कि यह क़ैद से गर्दन छुड़ाना है।...... अब ग़ुलामी का ख़ात्मा हो गया है लेकिन जंगें तो जारी रहेंगी और हक़ और बातिल (सत्य और असत्य) का मुक़ाबला भी होता रहेगा। ऐसी सूरत में यह गुंजाइश होनी जाहिए कि मुसलमान क़ैदियों का इस मद (Account) से फ़िदय: (मुक्ति प्रतिदान) अदा किया जा सके।''

(फ़िक़्हुज़्ज़कात जिल्द 2 पृष्ट 620)

114. अरबी मतन (Text) में ''अलग़ारिमीन'' शब्द इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ ऐसे क़र्ज़दारों के हैं जिन के लिए क़र्ज़ एक तावान और बोझ बन गया हो। मुराद वे क़र्ज़दार हैं जो अपनी आर्थिक स्थिति के कारण या किसी सामाजिक हितों के काम में हिस्सा लेने के लिए क़र्ज़ लेने पर विवश हुए और फिर

क़र्ज़ के बोझ तले ऐसे दब गए कि अदायगी की कोई सूरत निकाल नहीं सके। ऐसे लोग यूँ तो ऊपर से कमाने वाले अथवा संपन्न दिखाई दे सकते हैं लेकिन क़र्ज़ की अदायगी भर का माल न होने के कारण वे इस बात के हक़दार हैं कि उन के क़र्ज़ की अदायगी ज़क़ात के माल से की जाए।

115. मूल अरबी (Text) में ''फ़ी सबीलिल्लह'' का शब्द इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ है ''अल्लाह की राह में'' मुराद वह मार्ग है जिस पर चल कर आदमी अल्लाह की प्रसन्नता और उस की समिपता प्राप्त करता है। ज़ाहिर है यह मार्ग सत्य धर्म अर्थात इस्लाम है और क़ुर्आन में इस का इस्तेमाल इसी अर्थ में हुआ है। जैसा:

اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ۔(النحل:۱۲۵)

''अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ'' (अन्-नहल 125)

इस आयत में रब के रास्ते से मुराद दीन इस्लाम है।

اَلَّذِیۡنَ یَصُدُّوۡنَ عَنۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَ یَبۡغُوۡنَہَا عِوَجاً۔

''जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उस में टेढ़ पैदा करना चाहते हैं।'' (अल्-आराफ़ -४५)

यहाँ अल्लाह की सबील (राह) से रोकने का मतलब उस के दीन से रोकना है। इसी तरह हिजरत जिहाद, और इन्फ़ाक़ के साथ ''फ़ी सबीलिल्लाह'' का इस्तेमाल क़ुर्आन में कई जगहों पर हुआ है जो ख़ास तौर से इन चीज़ों के उद्देश्य (Causation) को स्पष्ट करते हैं।

اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا یُقٰتِلُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَالَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا یُقٰتِلُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ الطَّاغُوۡتِ۔(النساء۔٧٦)

'' ईमान वाले अल्लाह की राह में लड़ते हैं और काफ़िर तागूत की राह में।'' (अन्-निसा -७६)

इस आयत में अल्लाह की राह में लड़ने से मुराद इस्लाम की सुरक्षा और उस की प्रभुत्व के लिए लड़ना है। और तागूत की राह में लड़ने से मुराद इस्लाम के विरोध में और बातिल (ग़लत) उद्देश्यों के लिए लड़ना है।

وَمَنۡ یُّهَاجِرۡ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ ۔(النساء:۱۰۰)

''और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत (देश त्याग) करेगा''। (अन्-निसा - १००)

इस आयत में फ़ी सबीलिल्लाह के शब्द हिजरत के मक़सद को दर्शा रहे हैं। अर्थात् जो व्यक्ति केवल अल्लाह की ख़ातिर और उस के दीन की सुरक्षा एवं सहायता के लिए हिजरत करेगा।

لِلۡفُقَرَآءِ الَّذِیۡنَ اُحۡصِرُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ لَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ ضَرۡباً فِی الۡاَرۡضِ۔ (البقرة:٢٧٣)

''मदद के वास्तविक हक़दार वे ज़रुरतमंद हैं जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर गए हैं कि ज़मीन में दौड़ धूप नही कर सकते'' (अलबक़र: 273)

इस आयत में अल्लाह की राह में घिर जाने से मुराद दीन की सेवा में व्यस्त हो जाना है।

وَاَنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَلَا تُلۡقُوۡا بِاَیۡدِیۡکُمۡ اِلَی التَّهۡلُکَةِ۔ (البقرة:١٩٥)

''अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों अपने को विनाश में न डालो।'' (अलबकर: 195)

यहाँ अल्लाह की राह में ख़र्च करने से मुराद अल्लाह के दीन के ग़लबा और उस की सर बुलन्दी के लिए खर्च करना है ।

وَتُجَاهِدُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ بِاَمۡوَالِکُمۡ وَاَنۡفُسِکُمۡ ۔

''और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से''।

इस आयत में अल्लाह की राह में जिहाद करने से मुराद सत्य धर्म के समर्थन में और उस को ग़ालिब करने के लिए जिहाद करना है। इस से यह भी मालूम हुआ कि ''फ़ी सबीलिल्लाह'' का अर्थ जिहाद नहीं है वरना आयत का अनुवाद होगा ''जिहाद करो जिहाद में'' बल्कि फ़ी सबीलिल्लाह के शब्द जिहाद के उद्देश्य एवं उस के औचित्य को स्पष्ट करते हैं कि जिहाद अल्लाह की राह में अर्थात अल्लाह के दीन के लिए हो।

इस तफ़सील से स्पष्ट हुआ कि फ़ी-सबी लिल्लाह का खाता (Account) एक विस्तृत एवं व्यापक Account है और इस Account की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह उन कामों पर व्यय करने के लिए है जो सीधे सीधे दीन के स्वार्थ एवं लाभ से सम्बन्ध रखते हैं। जब कि दूसरे व्यय व्यक्तियों पर या उन की भलाई में ख़र्च करने के लिए है। अगर फ़ी- सबीलिल्लाह के Account से ग़ाज़ी (मुजाहिदीन) पर ख़र्च किया जाता है तो इस से उन की व्यक्तिगत सहायता करना अभिप्रेत नहीं होता। बल्कि इन के द्वारा दीन ही की सुरक्षा अभिप्रेत होती है। वरना यह मुजाहिदीन पर ख़र्च करने की सीमा तक सीमित नहीं है बल्कि इस से जंगी उपकरण (हथियार) आदि ख़रीदे जा सकते हैं। और तमाम रक्षात्मक (Defensive) कामों पर ख़र्च किया जा सकता है। एवं उन कामों पर भी जो सीधे सीधे दीन की

दअवत, उस के प्रचार, प्रकाशन, उस के संविधान को लागू करने और उस की निशानियों (चिन्हों) को स्थापित करने से है।

मौजूदा ज़माने में दीन की महत्वपूर्ण आवश्यकता उस की दअवत उस के प्रचार एवं प्रसार का काम है जिस के लिए निमंत्रण देने वालों, आहवान करने वालों की भी आवश्यक्ता है और ज्ञान एवं चिन्तन के क्षेत्र में कड़ा संघर्ष करने वालों की भी। क़ुर्आन के संदेश को ख़ुदा के बन्दों तक पहुँचाने की भी ज़रुरत है और समझने एवं सुधारने के लिए सम्मेलनों के आयोजन की भी। दीनी शिक्षा को फैलाने के लिए मदरसों, स्कूलों की भी ज़रुरत है और यूनिवर्सिटियों की भी। कहीं इस्लाम के विवाहिक एवं परिवारिक क़ानूनों की सुरक्षा की समस्या एक महत्वपूर्ण मिल्ली समस्या का रुप धार गया है तो कहीं शरीअत को लागू करने की समस्या । इन बातों के अलावा मुसलमानों में सामाजिकता एवं संगठन की समझ एवं सीख को उजागर कर के एक मिल्लत की हैसियत से उन को एक लड़ी में पीरोने, शरअी संविधान की व्यवस्था, इस्लामी राजकोष (बैतुलमाल) और इस्लामी सेन्टर स्थापित करने की आवश्यकता भी महत्वपूर्ण मिल्ली ज़रुरत है। और इस ज़रुरतों पर ख़र्च करने के लिए फ़ी - सबीलिल्लाह के खाते (Account) में पूरी गुन्जाइश मौजूद है।

स्पष्ट रहे कि फ़ुक़हा (धर्म शास्त्रियों) ने सामान्य रुप से फ़ी-सबीलिल्लाह को जिहाद के अर्थ में लिया है। लेकिन ऐसे उलमा भी हैं जिन के नज़दीक इस के भावर्थ में काफ़ी व्यापकता एवं फ़ैलाव है। अत: इमाम राज़ी लिखते हैं।

''फ़ी-सबीलिल्लाह के शब्द से अनिवार्य नहीं ठहरता कि इस से मुराद केवल ग़ाज़ी (मुजाहिदीन) हों। अत: क़फ़्फ़ाल ने अपनी तफ़्सीर में कुछ फ़ुक़हा (धर्म शास्त्रियों) का यह कथन उद्धृत किया है कि हर प्रकार की नेकी और भलाई के काम जैसे मुर्दों का कफ़न, क़िलो का निर्माण, मस्जिदों को अबाद करना आदि पर सदाक़त का माल ख़र्च करना जायज़ है क्यों कि ''फ़ी सबीलिल्लाह'' के सामान्य भावार्थ में यह सब बातें शामिल हैं।'' (तफ़्सीर राज़ी जिल्द 16 पृष्ट 112)

सय्यद सिद्दीक़ हसन खाँ ''अर-रौज़तुन्नदिया'' में लिखते हैं यहाँ फ़ी-सबीलिल्लाह से मुराद अल्लाह की राह है, और जिहाद यद्दपि अल्लाह की सब से बड़ी राह है लेकिन इस मद (Account) को जिहाद के लिए विशिष्ट करने का कोई औचित्य नहीं बल्कि हर ऐसे काम पर व्यय करना सही है जो अल्लाह की राह के भावार्थ में हो। यहाँ शाब्दिक रुप से आयत का यही अर्थ है और जब शरअी तौर पर कोई और अर्थ उपलब्ध नहीं हैं तो ज़रुरी है कि शाब्दिक अर्थ ही मुराद लिए जाऐं।'' (फ़िक़्हुज़्ज़कात जिल्द 2 पृष्ट 647 उद्धृत अररौज़तुन्नदिया जिल्द 1 पृष्ट 206)

अल्लामा रशीद रज़ा लिखते हैं ''सबीलिल्लाह में वे तमाम शरअी और सामान्य हित एवं मसलहतें शामिल हैं जिन पर दीन और राज्य के मामलों का दारो-मदार है। पहली और प्रमुख मसलहत जंग की तैयारी है, जैसे हथियारों की ख़रीद, फ़ौज के लिए राशन, सामान ढोने के साधन, और युद्ध सामग्री आदि.... और अल्लाह की राह में ख़र्च करने से सम्बन्धित मौजूदा ज़माने में महत्वपूर्ण काम यह है कि इस्लाम के लिए आहवान करता एवं निमंत्रण देने वाले तैयार किये जाएं और उन को संगठित समूहों की ओर से ढेरों माली सहायता दे कर काफ़िरों के देशों में भेजा जाए जिस तरह कुफ़्फ़ार अपने धर्म के प्रचार के लिए करते हैं।''

(फ़िक़्हुज़्ज़कात जिल्द 2 पृष्ट 649 उद्धृत तफ़्सीरुलमनारज जिल्द 10 पृष्ट 585)

शेख़ महमूद शलतूत लिखते हैं :-

यह मद (Account) सर्वसाधारण के हितों की है जिस में न किसी की संपत्ति का प्रश्न पैदा होता है और न यह किसी व्यक्ति विशेष के लाभ के लिए ख़ास है बल्कि यह संपत्ति अल्लाह के लिए और इस का लाभ ख़ुदा की सृष्टि (बन्दों) के लिए है। इन हितों में सब से प्रमुख एवं प्रधान जंगी आवश्यकताऐं हैं ।..... और इन में यह बात भी सम्मिलित है कि इस्लाम के आहवान कर्ताओं (दाअियों) के लिए ऐसे साधन जुटाए जाऐं कि वे इस्लाम की ख़ूबियों को प्रस्तुत करने, दीन को फैलाने और उस के आदेशों को दूसरों तक पहुँचाने का काम कर सकें।'' (अल-इस्लाम अक़ीदतन व शरीअतन पृष्ट 100)

डाक्टर युसूफ़ क़रज़ावी लिखते हैं:

इस लिए मैं ''सबीलिल्लाह'' का सप्रमाण भाव सुनिश्चित करने में ऐसे व्यापकता का समर्थक नहीं कि हर तरह की मसलहतों और हर प्रकार के हितों एवं सान्निध्य के काम इस में शामिल हो जाऐं और न ही इस के क्षेत्र को इतना तंग समझता हूँ कि वह केवल जंगी जिहाद के लिए खास हो कर रह जाए। जिहाद जिस तरह तलवार और भालों से किया जाता है उसी तरह जबान और क़लम से भी किया जाता है। और जिस तरह जिहाद असलहों का होता हैं उसी तरह, वैचारिक, प्रशिक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भी होता है।''

(फ़िक़हुज़्ज़कात जिल्द 2 पृष्ट 657)

विद्वान लेखक आगे चल कर लिखते हैं:

''अलबत्ता मौजूदा हालात में फ़ी सबीलिल्लाह से जो प्रमुखतम एवं महत्वपूर्ण चीज़ मुराद ली जाएगी वह है सही इस्लामी जीवन के पुनर्उत्थान का वह प्रोग्राम है जो इस्लाम के सारे आदेशों, अक़ीदों, आस्थाओं, चिन्हों, शरअी क़ानूनों और नैतिकता एवं शिष्तता को प्रचलित करने के लिए हो।....सही इस्लाम को प्रस्तुत करने के लिए दअवती मर्कज़ (आहवान केन्द्र) क़ायम

करना जिन के द्वारा दुनिया के कोने कोने में धर्मों एवं व्यवस्थाओं की कश्मकश के बीच ग़ैर मुस्लिमों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाया जा सके, निश्चित रुप से जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है।'' फ़िक़हुज़्ज़कात जिल्द 2 पृष्ट 667,668)

116. मुसाफ़िर अपने देश में संपन्न होने के बावजूद सफ़र में सहायता का अधिकारी हो सकता है। ऐसे ज़रुरतमन्द मुसाफ़िरों की सहायता ज़कात के माल से की जा सकती है। प्रचीन काल में जब कि सफ़र की कठिनाइयाँ अत्यधिक थीं। मुसाफ़िर अपने देश से बिल्कुल कट जाता था। इस हाल में अगर सफ़र में सामान खत्म हो जाता तो उसे असाधारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। इस लिए क़ुर्आन ने न केवल मुसाफ़िरों को देने पर उकसाया बल्कि ज़कात की मदों (Accounts) में एक Account मुसाफ़िरों के लिए निश्चित कर दिया।

आज भी जब कि सफ़र काफ़ी आसान हो गया है ऐसे हालात पेश आते रहते हैं कि एक मुसाफ़िर की पूँजी समाप्त हो जाती है और वह अपने देश में सम्पन्न होने के बावजूद घर से समय पर रुपया मंगा नहीं सकता। यदि वह विदेश में है तो विदेश मुद्रा (Foreign Exchange) का क़ानून उस में बाधक होता है। इस लिए मुसाफ़िरों पर ख़र्च करने की ज़रुरत आज भी पेश आती रहती है।

117. यह आदेशात्मक आदेश है कि ज़कात के ये व्यय (Accounts) अल्लाह तआला ने निर्धारित किए हैं। इस लिए इस का वितरण इसी नियम के अनुसार होना चाहिए। इस सीमा के बाहर किसी व्यक्ति को ज़कात देना या किसी और मद पर ज़कात का माल ख़र्च करना हरगिज़ जायज़ नहीं। इन आठ Accounts का भावार्थ और उन की सीमा निश्चित करने में मुफ़स्सिरीन (क़ुर्आन के टीकाकारों) और फ़ुक़हा (धर्म शास्त्रियों) के बीच काफ़ी मतभेद हुआ है इस लिए हम ने इस आयत की तफ़सीर में विस्तार से समझाने का प्रयास किया है ताकि तर्क एवं प्रमाण स्पष्ट हों और बात सुलझे हुए अन्दाज़ में सामने आ जाए। मसले के महत्व को देखते हुए यह तवालत गवारा करना पड़ी। अब एक मसला रह जाता है वह तमलीक अर्थात किसी को किसी की संपत्ति का मालिक बना देने का है। आम तौर से फ़ुक़हा (धर्म शास्त्री) इस के क़ायल हैं कि ज़कात जिस पर व्यय करना हो उस को उस का मालिक बनाना अवश्यक है। इस लिए वे फ़ी सबीलिल्लाह के Account (मद) को भी मुजाहिदीन के लिए खास करते हैं। उन का तर्क ''लिलफ़ुक़रा'' के अक्षर लाम से है। जो उन के नज़दीक लाम तमलीक है। हालाँकि अरबी में लाम केवल तमलीक के लिए नहीं आता बल्कि अधिकार याचना एवं लाभ पहुँचाने के अर्थ में भी आता है और कलाम के सिलसिले पर ग़ौर किया जाए तो स्पष्ट होगा कि यहाँ लाभ अधिकार याचना के अर्थ ही में आया है। क्यों कि मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ज़कात के वितरण से सम्बन्धित जो आपत्ति व्यक्त करते थे उस का जवाब देते हुए फ़रमाया गया है कि ज़कात के वास्तविक हक़दार ये फ़ुक़रा और मिस्कीन लोग हैं न कि वे आपत्ति करने वाले लोग जो इन में से किसी व्यय में नहीं आते और चाहते हैं कि ज़कात का माल उन्हें मिले । दूसरी बात यह कि बयान की गई आठ मदों (Accounts) में से केवल शुरु की चार मदों के साथ अक्षर लाम है। शेष चार मदों अर्थात् गर्दनें छुड़ाने, क़र्ज़दारों का बोझ हल्का करने, सबीलिल्लाह और मुसाफ़िर के साथ लाम नहीं बल्कि फ़ी आया है जिस के शाब्दिक अर्थ ''में'' है इस लिए इन चार मदों (Accounts) के सिलसिले में तो तमलीक की शर्त के लिए कोई दलील नहीं है और ''फ़ी'' से जो भावार्थ स्पष्ट होता है वह यही है कि इन कामों पर या इन की भलाई एवं लाभ पर माल खर्च किया जाए और ''फ़ी सबीलिल्लाह'' में तो लोगों का कहीं कोई ज़िक्र ही नहीं है। इस लिए यह मद व्यक्ति की क़ैद के बग़ैर दीन की सेवा और दीन के हितों एवं मसलहतों पर ख़र्च के लिए है।

118. इस लिए ज़कात वितरण का यह आदेश इल्म और हिकमत पर आधारित है।

61. इन में ऐसे लोग भी हैं जो नबी को कष्ट पहुँचाते हैं और कहते हैं यह व्यक्ति कान का कच्चा है कहो वह तुम्हारे लिए कान का भला है।[119] अल्लाह पर ईमान रखता है, मोमिनों की बात पर विश्वास करता है।[120] और जो लोग तुम में से ईमान रखते हैं उन के लिए सरासर रहमत है। और जो लोग अल्लाह के रसूल को कष्ट पहुँचाते हैं उन के लिए दुखदायिनी यातना है।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ
اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۱﴾

62. वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी करें हालाँकि अगर वे ईमान वाले हैं तो अल्लाह और उस का रसूल इस का ज़्यादा हक़दार है कि उसे राज़ी करें।[121]

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ
اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿۶۲﴾

63. क्या इन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिए जहन्नम (नर्क) की आग है जिस में वह सदैव रहेगा। यह बहुत बड़ा अपमान है।

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ
نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿۶۳﴾

64. मुनाफ़िक़ (पाखंडी) डर रहे हैं कि इन पर (मुसलमानों पर) कोई ऐसी सूरह नाज़िल न हो जाए जो इन को इन (मुनाफ़िक़ीन) के दिलों के भेद से आगाह कर दे।[122] कहो मज़ाक उड़ाओ। अल्लाह उस चीज़ को ज़ाहिर करने वाला है जिस से तुम डरते हो।[123]

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ
بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ
مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿۶۴﴾

65. और अगर तुम इन से पूछो तो जवाब देंगे, हम तो यूँ ही बातों में व्यस्त थे और हंसी मज़ाक कर रहे थे। कहो क्या तुम अल्लाह, उस की आयतों और उस के रसूल के साथ हंसी मज़ाक करते हो ?[124]

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ
اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾

66. बहाने न बनाओ। तुम ने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है। अगर हम तुम्हारे किसी गिरोह से दरगुज़र भी कर लें तो दूसरे गिरोह को ज़रुर सज़ा देंगे क्यों कि वह मुजरिम हैं।[125]

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ
طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا
مُجْرِمِيْنَ ﴿۶۶﴾

67. मुनाफ़िक़ (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक दूसरे के हमजिन्स (सहजातीय) हैं ।[126] बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं।[127] और अपने हाथों को बन्द रखते हैं।[128] ये अल्लाह को भूल गए [129] तो अल्लाह ने भी इन्हें भुला दिया।[130] नि:संदेह ये मुनाफ़िक़ बड़े फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ
بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ
اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۶۷﴾

119. मुनाफ़िक़ीन (पाखंडि लोग) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में धृष्टता की बातें करते और दीन का मज़ाक उड़ाते और जब सच्चे ईमान वाले इन की ये बातें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचाते, और आप इन पाखंडियों से पूछते तो वे इन्कार करते और व्यंग्य करते कि आप हर व्यक्ति की बात सुन लेते हैं। उन की इस हरकत पर पकड़ करते हुए फ़रमाया गया है कि नबी ने तुम्हारी भलाई के लिए अपने कान खुले रखे हैं। तुम्हारी अशोभनीय हरकतें उस की जानकारी में लाई जाती हैं तो वह इस लिए सुनता है कि तुम्हें इस पर सचेत कर दे और तुम्हारा सुधार हो। वह न बुराई की टोह में रहता है और न इस उद्देश्य से कोई बात सुनता है। वह सरासर कान का बहुत भला है।

120. अर्थात वे ऐसे वेसे लोग नहीं हैं जिन की बातों पर विश्वास कर के वह तुम्हारे बारे में बदगुमान होता हो। बल्कि वे सच्चे ईमान वाले हैं। इस लिए कोई कारण नहीं कि उन की बातों पर विश्वास न किया जाए। क्यों कि कोई सच्चा ईमान वाला यह दुस्साहस कर ही नहीं सकता था कि आप के सामने झूठ बोले या ग़लत बातों को सही समझ लेने का प्रयास करे।

121. मुनाफ़िक़ीन झूठे बहाने बना कर मुसलमानों को ख़ुश करने की जो कोशिश करते थे उस पर यहाँ पकड़ करते हुए फ़रमाया गया है कि उन को इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि अल्लाह को और उस के रसूल को राज़ी एवं प्रसन्न करें। हालाँकि ईमान का तक़ाज़ा यह था कि वे इस को प्राथमिकता देते। और यदि वे वास्तव में अल्लाह और उस के रसूल को राज़ी और प्रसन्न करना चाहते हैं तो झूठे बहाने कदापि न प्रस्तुत करते।

आयत को अगर अपनी जगह पर रख कर देखा जाए तो उस का यह भावार्थ बिल्कुल स्पष्ट है। किन्तु बिद्अती हज़रात आयतों को अपने स्थान से हटाते हैं और फिर उन का उलटा सीधा मतलब निकाल लेते हैं। अत: इस आयत की बिदअती तफ़्सीर यह की गई है कि इबादतों में भी अल्लाह के साथ उस के रसूल की रज़ा एवं प्रसन्नता की नीयत होनी चाहिए। क्यों कि यह ईमान की बुलन्दी है। हालाँकि यहाँ इबादत का मसला सिरे से वार्ता में है हि नहीं। बल्कि रसूल की उपस्थित में जिहाद के लिए रसूल का साथ न देने पर मुनाफ़िक़ो (पाखंडियों) को चेतावनी दी गई है। और जहाँ तक इबादत का मामला है, केवल अल्लाह की इबादत और शुद्ध हृदयता के साथ सिर्फ और सिर्फ उसी की रज़ा एवं प्रसन्नता के लिए करने का आदेश क़ुर्आन में जगह जगह दिया गया। मगर बिदअती हज़रात इन तमाम बातों से विमुख हो कर क़ुर्आनी आयतों का वह मतलब निकालते हैं जो गुमराह करने वाला हो। और पिछली उम्मतें अल्लाह की किताब का ग़लत मतलब निकाल कर ही गुमराह होती रही है।

122. पाखंडी लोग (मुनाफ़िक़ीन) क़ुर्आन पर सच्चा ईमान नहीं रखते थे लेकिन ग़ैब (परोक्ष) की उन ख़बरों के बारे में जो क़ुर्आन दे रहा था वे इस संदेह में अवश्य लिप्त थे कि क़ुर्आन आप पर ग़ैब (परोक्ष) से अवतरित होता है। इस लिए वे ये आशंका में पड़े रहते थे कि कोई सूरह ऐसी नाज़िल न हो जाए जो उन के दिल की गुप्त बातों को बेनिक़ाब कर दे।

123. और सूरह तौबा ने पाखंडियों की तमाम साज़िशों को बेनिक़ाब कर के रख दिया और उन के एक एक भेद को खोल दिया।

124. अल्लाह, उस की किताब, और उस का रसूल सब से अधिक आदर एवं प्रतिष्ठा के हक़दार हैं और कोई सच्चा मुसलमान यह दुस्साहस नहीं कर सकता कि उन का मज़ाक उड़ाए।

125. मुनाफ़िक़ो में बुराई एवं उपद्रव की दृष्टि से विभिन्न श्रेणी के लोग थे। किसी का मामला अपनी हद तक सीमित था और कोई अपराधिक प्रवृत्तियों एवं कार्यक्रमों में लिप्त था। इस लिए फ़रमाया कि पहली क़िस्म के लोगों से अगर हम दरगुज़र कर भी लें तो जिन का मामला अपराधिक प्रवृत्ति का है उन को अवश्य दंड देंगे। यहाँ दरगुज़र से मुराद दुनिया में दरगुज़र करना है और सज़ा देने से मुराद भी दुनिया में सज़ा देना है। रहा मामला परलोक (आख़िरत) का तो जैसा कि आगे आयत 68 में स्पष्ट किया गया है, उन के लिए जहन्नम (नर्क) की यातना (अज़ाब) है। इन पाखंडियों को दुनिया में बड़ा ही अपमानजनक दंड मिला । उदाहरण स्वरुप, उन की बनाई हुई ''मस्जिदे ज़रार'' नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा से जला दी गई। उसी प्रकार जिस घर में वे मजलिस जमा कर उपद्रवपूर्ण षडयंत्र रचा करते थे वह एक यहूदी सुवैलम का घर था । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से यह भी अग्नी की भेंट चढ़ा दिया गया।

(सीरत इब्ने हिशाम जिल्द 4 पृष्ट 171)

126. अर्थात सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं और एक ही जाति (Category) के लोग हैं। वे केवल नाम के मुसलमान हैं वरना इन को इस्लाम से न कोई वास्ता है न दिलचस्पी ।

127. ईमान की विशेषता यह है कि आदमी भलाई के काम करने के लिए कहता है और बुराई से मना करता है लेकिन इस के विपरीत निफ़ाक़ (पाखंड एवं कपट) की विशेषता यह है कि आदमी बुराई पर लोगों को आमादा करता है और भलाई के काम से मना करता है। मुनाफ़िक़ों का यह चरित्र ऐसा नहीं कि गुज़री हुई बात हो बल्कि आज की भी सत्यता है। और क़ुर्आन में मुनाफ़िक़ों का यह चरित्र इस लिए बयान किया गया है ताकि इस दर्पण में हर युग के पाखंडियों (मुनाफ़िक़ों) का प्रतिबिंब

देखा जा सके।

128. अर्थात् नेकी और भलाई के कामों पर और अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए इन की मुट्ठियाँ बन्द हैं।

129. मुनाफ़िक़ अल्लाह के नाम की क़समें भी खाते थे और नमाज़ भी पढ़ते थे इस के बावजूद अल्लाह को भूल गए थे । क्यों कि न तो उन का वास्तविक उद्देश्य अल्लाह की रज़ा एवं प्रसन्नता की प्राप्ति था और न उन को अल्लाह की इबादत और उस की फ़रमांबरदारी से कोई लगाव था। वह विचार एवं आस्था के कुफ्र में लिप्त थे और दीनदारी का दिखावा मात्र समाज के दबाव के तहत या उस को ख़ुश करने के लिए करते थे ।

130. अल्लाह के भुला देने का अर्थ यह है कि वह उन्हें नेकी और भलाई की तौफ़ीक़ (दैवयोग) नहीं देता और उस ने अपने उदार अनुग्रह (फ़ज़्ल) से उन्हें वंचित कर दिया है।

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ (साथी) हैं। भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञापालन करते हैं। यही लोग हैं जिन को अल्लाह अपनी रहमत से नवाज़ेगा। निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी (ग़ालिब और हिकमत वाला) है।(अल-क़ुर्आन)

68. अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों, मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिस में वे सदैव रहेंगे।[131] वही इन के लिए काफ़ी है। इन पर अल्लाह ने लानत फ़रमाई है और इन के लिए क़ायम रहने वाला अज़ाब है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۙ ﴿٦٨﴾

69. तुम्हारा हाल भी वही हुआ जो तुम्हारे पूर्वजों का था। वे तुम से कहीं अधिक शक्तिशाली थे और माल और औलाद में भी बढ़ चढ़ कर थे। तो (उन का क्या हाल हुआ?) उन्हों ने अपने हिस्से का लाभ उठा लिया। और तुम ने भी अपने हिस्से का लाभ उसी तरह उठा लिया जिस तरह कि तुम से पहले लोगों ने उठा लिया था। और तुम भी उसी तरह उलझते रहे जिस तरह वे उलझते रहे।[132] यही लोग हैं जिन के आमाल दुनिया और आख़िरत में नष्ट हो गए।[133] और यही लोग हैं तबाह होने वाले ।

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ
اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ
بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ
وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

70. क्या इन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इन से पहले गुज़र चुके हैं। नूह, आद, और समूद की क़ौमें।[134] इब्राहीम की क़ौम,[135] मदयन वाले,[136] और वे बस्तियाँ जो उलट दी गईं।[137] उन के रसूल [138] उन के पास खुली निशानियाँ ले कर आए थे। फिर ऐसा नहीं हुआ कि अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म किया हो बल्कि वे स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ
وَّثَمُوْدَ ڏ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ
اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾

71. और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ (साथी) हैं। भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञापालन करते हैं।[139] यही लोग हैं जिन को अल्लाह अपनी रहमत से नवाज़ेगा। निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी (ग़ालिब और हिकमत वाला) है।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۘ
يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

72. मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह ने वादा कर रखा है कि वह उन्हें ऐसे बाग़ प्रदान करेगा जिन के नीचे नहरें प्रवाहित होंगी। वे उन में सदैव रहेंगे और उन सदैव रहने वाले बागों में पाकीज़ा मकान होंगे [140] और उन्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी जो सब से बड़ी चीज़ है।[141] यही महान सफ़लता है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ
وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

131. दुनिया में मुस्लिम समाज़ का विस्तार ज़ाहिरी इस्लाम की बुनियाद पर होता है। कोई व्यक्ति भी कलिमा पढ़ कर इस्लाम में दाख़िल हो सकता है। और मुस्लिम समाज का अंग बन सकता है। लेकिन अल्लाह तआला के नज़दीक स्वीकृत इस्लाम उस व्यक्ति का है जो दिल से ईमान लाया हो और अल्लाह और उस के रसूल के लिए वफ़ादारी की भावना रखता हो । दूसरे शब्दों में वह दीन को स्वीकार करने में सच्चा हो। और आख़िरत की कामयाबी ऐसे ही लोगों के लिए है। रहे वे लोग जो इस्लाम के सत्य धर्म होने के बारे में संदेह एवं संकोच में लिप्त हैं और जिन की वफ़ादारियाँ ख़ुदा और शैतान के बीच विभक्त हों या जिन के दिल कुफ्र से भरे हुए हों और मात्र मुस्लिम सोसाइटी में अपना नाम जोड़े रखने के लिए अपने मुसलमान होने का दावा करते हों तो ऐसे लोग चाहे वे मर्द हों या औरतें न वास्तव में मुसलमान हैं और न आख़िरत में उन की गिनती ईमान वालों में होगी । उन को जहन्नम की सज़ा उसी तरह भुगतना होगी जिस तरह दूसरे काफ़िरों को भुगतना होगी।

132. जो लोग अपने ईमान में सच्चे एवं शुद्ध हृदय के नहीं होते वे कभी इस्लाम के अक़ीदे के बारे में संदेह एवं शंका को व्यक्त करने लगते हैं और कभी शरीअत के आदेशों के बारे में बहस खड़ी कर देते हैं ताकि लोग शरीअत से बेज़ार हों।

133. अर्थात् दिखाने के तौर पर उन्होंने नेकी के कुछ काम किये भी हों तो चूँकि यह काम सच्चे मन से अल्लाह के लिए नहीं किये गए थे और कुफ्र की गन्दगियों से पाक नहीं थे इस लिए अल्लाह तआला के तराज़ू में उन का कोई वज़न न होगा। और दुनिया में भी उन के ये काम भलाई और बरकत का कारण नहीं बनेंगे।

134. इन क़ौमों का वृत्तांत (सरगुज़श्तें) सूरह आराफ़ आयत 59 से 79 में गुज़र चुके।

135. इब्राहीम की क़ौम एक बुत परस्त क़ौम थी जिस की तबाही का वर्णन सूरह अम्बिया में हुआ है।

فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ (الانبياء-٧٠)

''हम ने उन्हें बुरी तरह तबाह कर दिया।'' (अम्बिया :70)

فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ (الصافات-٩٨)

''हम ने उन को नीचा और अपमानित कर दिया।''
(अस्साफ़्फ़ात :98)

136. इन का वृत्तांत भी सूरह आराफ़ आयत 85 से 93 में गुज़र चुका ।

137. मुराद लूत की क़ौम की बस्तियाँ हैं अर्थात् सदूम और अमूरा की बस्तियाँ। उन का क़िस्सा भी सूरह आराफ़ आयत 80 से 84 में गुज़र चुका ।

138. रसूलों को क़ौमों की तरफ़ इस सम्बन्ध से जोड़ा गया है कि वे उन क़ौमों के अन्दर ही से उठाए गए थे।

139. ऊपर मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों की विशेषताऐं बयान की गई थीं। यहाँ मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की विशेषताऐं बयान की गई हैं ताकि दोनों का अन्तर स्पष्ट हो जाए।

140. वास करने वालों का जीवन भी अनन्त और वास स्थल भी अनन्त ।

141. अर्थात् तमाम नेमतों से बढ़ कर जो नेमत उन्हें मिलेगी वह अल्लाह की प्रसन्नता है। यह वह नेमत है जो तमाम नेमतों की कुंजी है। क्यों कि जिस हस्ती के हाथ में आसमान और ज़मीन के ख़ज़ाने हैं उस की प्रसन्नता प्राप्त होने के बाद बन्दे का उस की नेमतों से माला माल हो जाना एक अनिवार्य बात है और यह एक ऐसा सौभाग्य है जिस में मन की शान्ति एवं संतोष का पूरा सामान और रूहानी ख़ुशियों के सारे भेद निहित हैं। यही वह अन्तिम लक्ष्य है जिस की प्राप्ति की अभिलाषा मोमिन के दिल में करवटें लेती रहती है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَ
مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

73. ऐ नबी ! काफ़िरों (इन्कार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन के साथ सख़्ती से पेश आओ।[142] उन का ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है पहुँचने की।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا
بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا ۚ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ
أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا
لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ
وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

74. ये अल्लाह की क़सम खा खा कर कहते हैं कि हम ने ऐसे नहीं कहा, हालाँकि उन्होंने ज़रुर कुफ़्र की बात कही और इस्लाम लाने के बाद कुफ़्र कर बैठे और वह कुछ करना चाहा जो न कर सके।[143] इन की नाराज़ी मात्र इस कारण है कि अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल (उदार अनुग्रह) से इन्हें संपन्न कर दिया और उस के रसूल ने भी।[144] अगर ये तौबा कर लें तो इन के पक्ष में बेहतर है और अगर मुँह फेर लेंगे तो अल्लाह इन्हें दुनिया में भी दर्दनाक सज़ा देगा और आख़िरत में भी और धरती के ऊपर इन का न कोई समर्थक होगा और न सहायक।

وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ
وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

75. और इन में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हों ने अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी कि अगर उस ने अपने फ़ज़्ल (उदार अनुग्रह) से हमें प्रदान किया तो हम ज़रुर सदक़ा करेंगे और नेक बन कर रहेंगे।

فَلَمَّا آتَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾

76. लेकिन जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल (उदार अनुग्रह) से प्रदान किया तो वे कंजूसी करने लगे और अपनी प्रतिज्ञा से फिर गए। और वे हैं ही (सत्कर्म से) बिल्कुल फिरे हुए।

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ
بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿٧٧﴾

77. इस का परिणाम यह निकला कि उस ने उन के दिलों में उस के समक्ष पेशी के दिन तक के लिए निफ़ाक़ (कपट) बिठा दिया। यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया और इस लिए कि वे झूठ बोलते रहे।[145]

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ
وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٧٨﴾

78. क्या इन्हें नहीं मालूम कि अल्लाह उन की राज़ की बातों और उन की सरग़ोशियों (गुप्त वार्ताओं) को जानता है और अल्लाह ग़ैब (परोक्ष) की तमाम बातों को जानने वाला है।

142. अर्थात् मुनाफ़िक़ों के साथ अब दरगुज़र का रवैया न अपनाया जाए। बल्कि सख़्ती का मामला किया जाए और जिस हद तक ज़रुरी हो उन के विरुद्ध बल का प्रयोग भी किया जाए। सख़्ती का यह हुक्म इस लिए दिया गया कि उन का निफ़ाक़ (पाखंड) ज़ाहिर हो गया था और उन का कुफ्र खुल कर सामने आ गया था । ये नाम मात्र के मुसलमान थे लेकिन इस्लाम दुशमनी के लिहाज़ से उन में और काफ़िरों में कोई अन्तर नहीं था। ये कुफ्र के अपशब्द तो अपने मुँह से निकालते ही थे इस के अलावा उन्होंने इस्लाम को क्षति पहुँचाने और मुसलमानों का मनोबल गिराने और उन के अन्दर फ़ितना बरपा करने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी। यहाँ तक कि वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध षडयंत्र रचते रहे। इस लिए आस्तीन के इन साँपों से अब दुश्मन का सा व्यावहार करना ज़रुरी था।

143. अर्थात् इस्लाम और पैग़म्बर के विरुद्ध इन्होंने भाँत भाँत के षडयंत्र रचे किन्तु इन की कोई योजना एवं षडयंत्र सफल न हो सका ।

144. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिजरत कर जाने से पहले मदीना की सामान्य जनता ग़रीब थी। आप के तशरीफ़ ले आने के बाद जब मदीना इस्लाम की राजधानी तय पाई तो व्यापार का भी विकास हुआ, खूब फला और फैला । और फिर जो विजय अभियानों का क्रम चला तो बहुत सी दौलत मदीना वालों के हाथ आ गई। इस तरह अल्लाह ने उन के रिज़्क़ (अजीविका) में बाहुल्यता पैदा की और उस के रसूल ने अपने एहसानों से उन्हें अलंकृत किया किन्तु उन्हों ने इस के जवाब में अल्लाह के साथ कुफ्र और उस के रसूल के साथ दुशमनी का रवैया अपनाया।

145. स्पष्ट रहे कि अल्लाह से वादा कर के फिर जाने और झूठ बोलते रहने से दिल में निफ़ाक़ (कपट) परवरिश पाता है।

79. जो लोग ख़ुशी ख़ुशी (स्वेच्छा से) इन्फ़ाक़ (ख़र्च) करने वाले मोमिनों पर सदक़ात के बारे में व्यंग्य करते हैं और उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जो अपनी मेहनत मज़दूरी के सिवा इन्फ़ाक़ के लिए कुछ नहीं पाते।[146] अल्लाह उन का मज़ाक़ उड़ाता है और इन लोगों के लिए दुखदायिनी यातना है।

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي
الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ ۙ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

80. (ऐ पैग़म्बर !) तुम इन के लिए क्षमा की प्रार्थना करो या न करो तुम अगर सत्तर बार भी इन के लिए क्षमा की प्रार्थना करोगे तो भी अल्लाह इन को कदापि क्षमा नहीं करेगा। यह इस लिए कि इन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया।[147] और अल्लाह फ़ासिक (अवज्ञाकारी) लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।[148]

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً
فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٨٠﴾

81. जो लोग पीछे छोड़ दिये गए थे [149] वे अल्लाह के रसूल के पीछे बैठ रहने पर ख़ुश हुए और उन्हें यह बात अप्रिय हुई कि अपने माल और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करें। उन्हों ने कहा कि गर्मी में न निकलो, कहो जहन्नम की आग इस से कहीं अधिक गर्म है।[150] काश वे समझ लेते।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ
وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ
حَرًّا ۚ لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٨١﴾

82. अब वे हँसें कम और रोएं ज़्यादा,[151]उस (बुराई) के बदले में जो ये कमाते रहे हैं।

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

83. अगर अल्लाह उन के किसी गिरोह की तरफ़ तुम्हें वापस ले जाए [152] और वे तुम से (जिहाद में) निकलने की इजाज़त माँगे तो कह दो तुम मेरे साथ कभी नहीं निकल सकते और न कभी मेरे साथ हो कर दुश्मन से लड़ सकते हो।[153] तुम ने पहली बार बैठ रहना पसंद किया तो अब भी पीछे बैठ रहने वालों के साथ बैठे रहो।

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ
فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا ۖ إِنَّكُمْ
رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ﴿٨٣﴾

84. और उन में से जो मरे उस की नमाज़ (जनाज़ा) तुम हरगिज़ न पढ़ना और न कभी उस की क़ब्र पर खड़े होना। क्यों कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया और इस हाल में मरे कि वे फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) थे।[154]

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۖ
إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨٤﴾

146. तबूक की जंग के अवसर पर सफ़र और जंग के बड़े व्यय को देखते हुए अधिक से अधिक अल्लाह की राह में ख़र्च (इन्फ़ाक़) करने की ज़रुरत थी। इस महत्वपूर्ण अवसर पर मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) ने अल्लाह की राह में ख़र्च करने से अपना हाथ रोका किन्तु जिन सच्चे मुसलमानों ने धन की बड़ी बड़ी क़ुर्बानियाँ दीं उन पर यह व्यंग्य किया कि वे दिखावे के लिए ऐसा कर रहे हैं और उन में जो लोग ग़रीब थे उन्हों ने जब अपनी मेहनत मज़दूरी की रक़म की भेंट अल्लाह की राह में प्रस्तुत कर दी तो उस का निरादर करते हुए पाखंडि लोग मज़ाक उड़ाने लगे कि अल्लाह को ऐसे तुच्छ भेंट की ज़रुरत नहीं।

147. अर्थात् इन मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) की दिखावटी हालत यह है कि वे मुसलमान हैं क्यों कि वे नमाज़ भी पढ़ते हैं और ज़कात भी देते हैं। इस लिए संभव है कि तुम इन के दिखावे का भरोसा कर के उन के लिए अल्लाह से क्षमा याचना करो । लेकिन चूँकि वे अपने दिलों में अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध कुफ़्र की भावना रखते हैं इस लिए अल्लाह उन को हरगिज़ क्षमा करने वाला नहीं। अल्लाह के यहाँ जिस प्रकार शिर्क (बहुदेववाद) क्षमा योग्य नहीं हैं उसी प्रकार कुफ़्र (इन्कार) भी क्षमा योग्य नहीं है।

ध्यान रहे कि सत्तर बार से अभिप्रेत अधिक है न कि खास तादाद और मक़सद यक़ीन के साथ इस बात का एलान करना है कि मुनाफ़िक़ों (बहुदेववादियों) के पक्ष में पैग़म्बर की क्षमा याचना भी अस्वीकार्य है चाहे वह कितनी ही बार की गई हो।

लगभग यही बात सूरह मुनाफ़िक़ून में भी कही गई है जो सूरह तौबा से काफी पहले नाज़िल हुई थी।

148. यहाँ फ़ासिक़ से मुराद वे अवज्ञाकारी लोग हैं जिन की नाफ़रमानी कुफ़्र की भावना के साथ हो। ऐसे लोगों पर सफ़लता की राह नहीं खुलती ।

149. वे मुनाफ़िक़ीन (पाखंडि) अभिप्रेत हैं जिन को अल्लाह तआला ने तबूक की जंग में सम्मिलित होने से वंचित रखा ।

150. विलास प्रिय मनुष्य सत्य मार्ग में सामने आने वाले कष्टो को सहन करने के लिए तैयार नहीं होता और यह समझता है कि अगर आख़िरत बरपा होगी तो वहाँ उस को सुखी जीवन प्राप्त होगा। यह एक भुलावा है एक फ़रेब है जिस में मनुष्य मुब्तिला रहता है। लेकिन जब आख़िरत बरपा होगी और जहन्नम को वह अपने सामने देख लेगा तो यह बात उस पर खुल जाएगी कि अल्लाह की राह में सामने आने वाले कष्टों को उस ने सहन न कर के कहीं अधिक कष्टों को न्योता दिया है। दुनिया की जिस गर्मी से घबरा कर वह अपने दायित्व को निभाने एवं फ़र्ज़ को अदा करने से जी चुराता रहा वह जहन्नम की गर्मी के मुक़ाबले में कुछ भी न थी ।

151. अर्थात् उन के हँसने के दिन कम रह गए। इस के बाद उन को रोना ही रोना है।

152. ये आयतें तबूक की जंग से वापसी में सफ़र के दौरान नाज़िल (अवतरित) हुई थीं।

153. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अब इन पाखंडियों (मुनाफ़िक़ों) को किसी भी जिहाद में निकलने की तौफ़िक़ न होगी ।

154. आयत 73 में मुनाफ़िक़ो के साथ सख्ती से पेश आने की जो हिदायत दि गई थी ये आदेश उसी सिलसिले की कड़ी है,और उन मुनाफ़िक़ों के बारे में है जिन का निफ़ाक़ (पाखंड) खुल कर सामने आ गया हो और जो खुले कुफ़्र का अपराध करने लगे हों। ऐसे लोगों की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने से मना किया गया है और उन की क़ब्र पर खड़े होने से भी। क़ब्र पर खड़े होने का मतलब क़ब्र पर जा कर क्षमा की प्रार्थना करना और दया की भावना को प्रकट करना है। यह मनाही जिस प्रकार मुनाफ़िक़ों के लिए है उसी प्रकार काफ़िरों, मुश्रिकों, मुलहिदों के लिए भी है। क्यों कि जो लोग मरते दम तक काफ़िर रहे वे अल्लाह के दुश्मन हैं और अल्लाह के दुशमनों के लिए एक मोमिन के दिल में दया भाव नहीं हो सकता। अल्लामा इब्ने तैमिया से जब पूछा गया कि क्या कोई मुसलमान किसी ईसाई के जनाज़े के पीछे चल सकता है तो उन्होंने जवाब दिया, नहीं उस के जनाज़े के पीछे न चले और चूँकि ईसाई कुफ़्र की हालत में मरा इस लिए वह जहन्नम का हक़दार हो गया अत: उस की नमाज़ न पढ़े (संग्रह फ़तावा इब्ने तैमिया जिल्द 24 पृष्ट 265)

मगर मौजूदा दौर में मसलहत परस्त मुसलमान मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की अर्थियों के जुलूस में सम्मिलित होने, उन की राख के कलश उठाने, उन की समाधियों पर जा कर फूल चढ़ाने और श्रद्धांजलि अर्पित करने में कोई आपत्ति नहीं महसूस करते। और जिन पर राजनितिक स्वार्थो का भूत सवार रहता है या जो अल्लाह की आयतों को बेचने की कला खूब जानते हैं वे इस बात से भी नहीं चूकते कि मुश्रिक लीडरों की मौत पर उन के सरहाने क़ुर्आन-करीम की तिलावत (पाठ) करें जब कि ये लीडर जीवन भर क़ुर्आन के अल्लाह की किताब होने का इन्कार करते रहे।

इस आयत की तफ़्सीर में आम तौर से यह रिवायत नक़्ल की जाती है कि आप ने मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी थी जिस पर यह आयत नाज़िल हुई, अत: बुखारी में है:

''अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई का इन्तिक़ाल हुआ तो उस का बेटा रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ। आप ने उसे अपना कुर्ता दिया और फ़रमाया कि इस में उस को कफ़नाया जाए। फिर आप खड़े हो गए ताकि उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़े लेकिन उमर बिन ख़त्ताब ने आप का कपड़ा पकड़ लिया और कहा कि आप उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ेगें जब कि वह मुनाफ़िक़ है और अल्लाह ने आप को उन के लिए क्षमा याचना करने से रोका है। आप ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे (दोनों बातों का) इख़्तियार दिया है। अत: फ़रमाया है "तुम उन के लिए क्षमा की प्रार्थना करो या न करो अगर सत्तर बार भी उन के लिए क्षमा याचना करोगे तब भी अल्लाह उन को क्षमा करने वाला नहीं। (इस आयत को पढ़ कर) आप ने फ़रमाया मैं सत्तर बार से भी अधिक क्षमा की प्रार्थना करुँगा। हज़रत उमर फ़रमाते हैं कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और आप के साथ हम ने पढ़ी। इस के बाद अल्लाह ने आप पर यह आयत अवतरित की "और उन में से जो मरे उस की नमाज़ जनाज़ा तुम हरगिज़ न पढ़ना और न कभी उन की क़ब्र पर खड़े होना, क्यों कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया और इस हाल में मरे कि वे फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) थे। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर) यह हदीस यद्यपि बुख़ारी की है और इस के उल्लेख कर्ता भी विश्वस्नीय (सिक़:) हैं लेकिन कुछ उलमा ने इस हदीस की प्रमाणिकता (सेहत) और उस को क़ुबूल करने से इन्कार किया है।

क़ाज़ी अबु बक्र कहते हैं इस हदीस को क़ुबूल करना न्यायसंगत नहीं और न यह बात सही है की कि यह अल्लाह के रसूल का इर्शाद है। और क़ाज़ी अबू बक्र बाक़लानी "अत्तक़रीब में लिखते हैं यह हदीस "अख़बार आहाद" में से है जिस का साबित होना मालूम नहीं। और इमामुल हरमैन अपनी "मुख़्तसर" में फ़रमाते हैं इस हदीस की गिन्ती सही हदीसों में नहीं होती और "बुर्हान" में वह कहते हैं अहले हदीस इस को सही नहीं मानते। और इमाम ग़ज़ाली "अलमुस्तस्फ़ा" में फ़रमाते हैं:

"स्पष्ट बात यह है कि यह हदीस सही नहीं और इस हदीस के टीकाकार दाऊदी कहते हैं कि यह असुरक्षित है।" (फ़त्हुल बारी जिल्द ८ पृष्ट २७२)

इस हदीस के बारे में जो संदेह एवं परेशानी महसूस होती हैं वे संक्षेप में निम्न लिखित हैं।

(A) बुखारी ने जहाँ यह हदीस बयान की हैं वहाँ एक दूसरी हदीस हज़रत जाबिर से भी बयान की है जो इस से बिल्कुल भिन्न है।

"हज़रत जाबिर फ़रमाते हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब्दुल्लाह बिन उबई के पास उस को दफ़न कर चुकने के बाद पहुँचे, फिर आप ने उसे निकलवाया और उस के मुँह में अपना लुआबे-दहन (मुँह का थूक) डाला और उसे अपना कुर्ता पहनाया।" (बुख़ारी किताबुल जनायज़)

दोनों हदीसें बुख़ारी की हैं लेकिन एक में ज़िक्र है कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई का बेटा आप की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप ने अपना कुर्ता प्रदान किया फिर उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और एक रिवायत में ये शब्द भी हैं कि आप ने उस से फ़रमाया " मुझे ख़बर देना मैं नमाज़ जनाज़ा पढ़ूँगा, फिर उस ने आप को (मैय्यत के तैयार होने की) ख़बर दी और जब आप नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के लिए आगे बढ़े तो हज़रत उमर ने आप को रोकने की कोशिश की। (बुख़ारी किताबुल जनायज़)

और दूसरी हदीस में है कि दफ़नाया जा चुका था लेकिन आप ने उस की मैय्यत क़ब्र से निकलवा कर अपना कुर्ता पहनाया। जाहिर है इन हदीसों में स्पष्ट विरोधाभास है और इस विरोधाभास का दूसरा उदाहरण यह कि बुख़ारी ने अब्दुल्लाह बिन उमर की जो रिवायत नक़ल की है उस के शब्द हैं

سَازِيدُهُ عَلٰى سَبعِينَ

"साज़ीदुहू अला सबईना" अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं सत्तर बार से भी अधिक क्षमा की प्रार्थना करूँगा मगर इब्ने अब्बास ने जो रिवायत नक़ल की है उस में आप की तरफ़ ये शब्द मन्सूब हैं।

لَوْ اَعْلَمُ اَنِّىْ اِنْ زِدتُ عَلَى السَّبْعِيْنَ يُغْفَرْلَهٗ لَزِدتُّ عَلَيْهَا

अर्थात् "अगर मुझे मालूम होता कि सत्तर बार से अधिक दुआ (प्रार्थना) करने से उस को क्षमा मिल जाएगी तो मैं इस से भी अधिक बार दुआ करता।" (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर सूरह तौबा)

दोनों बातों में अर्थ कि दृष्टि से बड़ा अन्तर है पहली बात बिना शर्त के है और दूसरी सशर्त। और अल्लामा जस्सास कहते हैं कि कुछ रिवायतों में لَأَزِيْدَنَّ عَلٰى سَبعِينَ "ला ज़ीदुन्ना अला सबईना" "मैं सत्तर पर भी वृद्धि कर दूँगा" के जो शब्द हैं वह उल्लेखकर्ता (रावी) की ग़लती है। क्यों कि अल्लाह तआला यह ख़बर दे चुका था कि इन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़्र किया है। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम काफ़िरों के लिए किस तरह अल्लाह से क्षमा याचना करते जब कि आप को मालूम हो चुका था कि इन को क्षमा नहीं मिलेगी। दरअसल सही रिवायत वह है जिस में ये शब्द आए हैं।

لَوْ عَلِمْتُ اَنِّىْ لَوْزِدْتُ عَلَى السَّبْعِيْنَ غُفِرَلَهُمْ لَزِدْتُ عَلَيْهَا

"अगर मुझे मालूम होता कि सत्तर बार से अधिक दुआ करने

से इन को माफ़ कर दिया जाएगा तो मैं इस से भी अधिक बार दुआ करता।''(एहकामुल क़ुर्आन जस्सास जिल्द 3 पृष्ट 177)

(B) यह हदीस प्रमाण की दृष्टि से कई तरीक़ों से बयान हुई है लेकिन बीच की कड़ी उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह, बिन उत्बा हैं या उबैदुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन उमर हैं। इस तरह इस की हैसियत अकेली ख़बर (ख़बरे-वाहिद) ही की है। और ख़बरे-वाहिद हुज्जत (तर्क) ज़रुर है बशर्ते कि वह क़ुर्आन और सुन्नत से टकराने वाली न हो।

(C) मुस्नद अहमद की हदीस में जो इब्ने अब्बास से उल्लिखित है, यह स्पष्टीकरण है कि

ثم صلّیٰ عَلَیۡهِ وَمَشٰی مَعَهٗ وَ قَامَ عَلٰی قَبۡرِهٖ

अर्थात् फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और जनाज़ा के साथ चले और उस की क़ब्र पर खड़े हो गए। जब कि हज़रत जाबिर वाली हदीस बताती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब्दुल्लाह बिन उबई की क़ब्र पर उस को दफ़नाए जाने के बाद पहुँचे। हदीसों के इस विपरीत भाव को अल्लामा सनदी ने भी स्वीकारा है अत: वे लिखते हैं: यह हदीस पिछली हदीस के विपरीत है क्यों कि उस में स्पष्ट रुप से यह बयान हुआ है कि आप ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और इस से पहले आप कुर्ता प्रदान कर चुके थे.... लेकिन यह हदीस बताती है कि आप दफ़नाने के बाद तशरीफ़ लाए और बाद में कुर्ता पहनाया। कुछ उलमा ने संकोच समेत दोनों हदीसों में ताल मेल बिठाने की कोशिश की है लेकिन इस से आपत्ति पूरी तरह दूर नहीं होती।

(सूनन नसाई जिल्द 4 पृष्ट 38 हाशिया इमाम सनदी)

(D) इब्ने ज़रीर तबरी हज़रत अनस से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन उबई की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाना चाही तो जिब्रील ने आप का दामन पकड़ा और यह आयत पढ़ी ''और उन में से जो मरे उस की नमाज़ जनाज़ा तुम हरगिज़ न पढ़ना....... मगर जैसा कि इब्ने कसीर ने पुष्टि की है इस का एक उल्लेख कर्ता यज़ीद रक़्क़ाशी हैं जो कमज़ोर हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द 2 पृष्ट 379) फिर भी तार्किक बात यही है कि जिब्रील ने आप को रोका होगा और शायद दूसरे उल्लेख कर्ताओं को यह ग़लतफ़हमी हो गई कि हज़रत उमर ने आप को रोकने की कोशिश की। यही कारण है कि अल्लामा राज़ी ने तफ़्सीर कबीर में और मौलाना मौदूदी ने तफ़्हीमुलक़ुर्आन में इस कमज़ोर प्रमाण वाली रिवायत पर भरोसा किया है हालाँकि बुख़ारी मुस्लिम वगैरा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने का ज़िक्र स्पष्टीकरण के साथ मौजूद है। गोया इन के नज़दीक मज़मून के लिहाज़ से यह कमज़ोर हदीस बुख़ारी की हदीस के मुक़ाबले में प्रमुख है।

(E) आयत का प्रसंग एवं संदर्भ बताता है कि यह आयत तबूक की जंग से वापसी के सफ़र में नाज़िल हुई थी क्यों कि इस के ठीक पहले की आयत में है, ''अगर अल्लाह तुम्हें इन में से किसी गिरोह की तरफ़ वापस लौटा दे'' जो इस बात का प्रमाण है कि यह आयतें आप के मदीना पहुँचने से पहले ही नाज़िल हो गई थीं और अब्दुल्लाह बिन उबई का इन्तिकाल आप के मदीना वापस लौटने के लगभग 2 माह बाद अर्थात ज़ीक़ादा सन 9 हिजरी में हुआ। इस लिए यह हदीस आयत के प्रसंग एवं संदर्भ से कोई मेल नहीं रखती, बल्कि आयत ७३ से जो ''मज़मून शुरु होता है, वह इस आयत तक एक संबद्ध मज़मून है और इस में मुनाफ़िक़ों के साथ सख्ती बरतने का जो निर्देश दिया गया है उस को ध्यान में रखते हुए इस बात का क्या औचित्य है कि आप मुनाफ़िक़ों के सरदार के साथ इस क़दर नरमी बरतेंगे कि उस को अपना कुर्ता प्रदान करेंगे और उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऐंगे ?

(F) अब्दुल्लाह बिन उबई का बेटा अब्दुल्लाह सच्चा और नेक मुसलमान था। बनी अलमुस्तलक़ की जंग के मौक़े पर जब अब्दुल्लाह बिन उबई ने यह दुस्साहसपूर्ण बात कही कि हम मदीना लौटेंगे तो इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा तो उस का बेटा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और अपने पिता की गर्दन अपने हाथ से उड़ाने की अनुमति माँगी। (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द 3 पृष्ट 337)

क्या ऐसा व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने मुनाफ़िक़ (पाखंडी) पिता के लिए कुर्ता माँगेगा और उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने का अनुरोध करेगा?

इन आपत्तियों एवं परेशानियों के कारण घटना की वह दशा जो उक्त हदीसों में प्रस्तुत की गई है सही नहीं मालूम होती। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि घटना क्या थी और किस तरह बयान हुई।

85. और उन के माल और औलाद तुम को आश्चर्य में न डालें। अल्लाह तो यह चाहता है कि इन के द्वारा उन को दुनिया में सज़ा दे और उन की जानें इस हाल में निकलें कि वे काफ़िर हों।[155]

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللّٰهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُونَ ﴿٨٥﴾

86. और जब कोई सूरह (इस आदेश को ले कर) उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ मिल कर जिहाद करो तो जो लोग इन में सामर्थ्य वाले हैं वही तुम से इजाज़त माँगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम बैठने वालों के साथ रहें ।[156]

وَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ اٰمِنُوا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ
اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقٰعِدِينَ ﴿٨٦﴾

87. उन्हों ने पीछे रह जाने वालियों के साथ रहना पसंद किया[157] और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई इस लिए वे कुछ नहीं समझते ।[158]

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

88. लेकिन रसूल ने और उन लोगों ने जो उस के साथ ईमान लाए हैं अपने माल और जान से जिहाद किया। यही लोग हैं जिन के लिए भलाइयाँ हैं और यही लोग कामयाब होने वाले हैं।

لٰكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا مَعَهُ جٰهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأُولٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۖ وَأُولٰئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

89. अल्लाह ने उन के लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें प्रवाहित हैं। उन में वे हमेशा रहेंगे। यह है सब से बड़ी कामयाबी।

أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ
فِيهَا ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

90. बद्दुओं में से भी उज्र करने (बहाना करने) वाले आए ताकि उन्हें भी इजाज़त दी जाए[159] और जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल से झूठ बोला था वे बैठे रहे।[160] इन बद्दुओं में से जिन लोगों ने कुफ्र किया वे अतिशिघ्र दुख़दायिनी यातना से दो चार होंगे।[161]

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ
كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

91. कमज़ोर,बीमारों और उन लोगों पर कोई गुनाह नहीं जिन्हें ख़र्च के लिए कुछ मयस्सर नहीं जब कि वे अल्लाह और उस के रसूल से वफ़ादारी करें।[162] ऐसे सुकर्मियों पर कोई आरोप नहीं और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِينَ
لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلّٰهِ وَرَسُولِهِ ۚ
مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾

155. इस की व्याख्या नोट 103 में गुज़र चुकी।

156. इशारा है उन मुनाफ़िक़ों (पाखण्डियों) की तरफ़ जो सामार्थ्य के बावजूद जिहाद के लिए नहीं निकले और बहाना बना कर इजाज़त माँगने लगे।

157. अर्थात् उन्हों ने औरतों की तरह घरों में रहना पसन्द किया।

158. इस बुज़दिली, निरुत्साह एवं नैतिक गिरावट का परिणाम यह निकला कि उन की नैतिकता समाप्त हो गई और बेग़ैरत एवं निर्लज्य हो कर रह गए। इस मनोदशा को दिलों पर मुहर लगाना कहा गया है। क्यों कि यह मनोदशा उस प्राकृतिक नियम का फल है जो अल्लाह तआला ने नैतिकता के बनने बिगड़ने के लिए निर्धारित कर रखा है।

159. बद्दू अर्थात् अरब देहाती । यह उन देहाती मुनाफ़िक़ों का वर्णन है जिन्हों ने तबूक की जंग में शरीक न होने के लिए झूठे बहाने प्रस्तुत किये थे।

160. अर्थात् उन बद्दूओ में कुछ मुनाफ़िक़ तो ऐसे भी हैं जिन्होंने इस अह्म मौक़े पर रसूल की सेवा में उपस्थित होने का कष्ट ही नहीं किया।

161. इन मुनाफ़िक़ों के पक्ष में अल्लाह तआला की तरफ़ से सज़ा का यह वादा पूरा हो कर रहा और इस की सूरत यह हुई कि इस आयत को उतरे अभी दो साल भी नहीं गुज़रे थे कि इन मुनाफ़िक़ो ने खुल्लम खुल्ला इर्तिदाद (इस्लाम त्याग) की राह अपनाई । और पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रजि.) ने इस इर्तिदाद के फितने का तलवार से मुक़ाबला किया।

162. अर्थात् जो लोग बहाना नहीं बना रहे हैं बल्कि वास्तविक कारण वश अनुमति चाह रहे हैं उन पर न कोई आपत्ति है न गुनाह जैसे बूढ़े, बीमार शारीरिक दृष्टि से अपंग, और निर्धन लोग बशर्ते कि उन का सम्बन्ध अल्लाह और उस के रसूल के साथ शुद्ध हृदयता एवं वफ़ादारी का हो और पीछे रह कर कोई ऐसा काम न करें जो इस के विरुद्ध हो।

92. और न उन लोगों पर कोई आरोप है जो तुम्हारे पास आए कि तुम उन के लिए सवारी का प्रबन्ध कर दो। और जब तुम ने कहा कि मैं तुम्हारे लिए सवारी का प्रबन्ध नहीं कर सकता तो इस हाल में वापस हुए कि ख़र्च का सामर्थ्य न रखने के ग़म में उन की आख़ें रो रही थीं।[163]

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ
مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ
حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

93. आरोप तो वास्तव में उन लोगों पर है जो सम्पन्न होने के बावजूद तुम से अनुमति (छुट्टी) की माँग करते हैं। उन्हों ने पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ रहना पसन्द किया और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी। इस लिए वे कुछ नहीं जानते।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ
رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

94. जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र (बहाने) पेश करेंगे।[164] तुम उन से कहो कि बहाने न बनाओ। हम तुम्हारी बातों का विश्वास करने वाले नहीं।अल्लाह ने तुम्हारे हालात से हमें अवगत कर दिया है [165]अब अल्लाह और उस का रसूल तुम्हारे अमल (कर्मों)को देखेगा ।[166] फिर तुम लौटाए जाओगे उस की तरफ़ जो ग़ैब और हाज़िर (अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष) सब का जानने वाला है। वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कुछ करते रहे हो।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ قُلْ لَّا
تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ وَ
سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

95. जब तुम उन की तरफ़ लौटोगे तो वे अल्लाह की क़समें खाऐंगे ताकि तुम उन से उपेक्षा करो। तो तुम उन से उपेक्षा ही करो।[167] वे अपवित्र हैं [168]और उन का ठिकाना जहन्नम है बदले में उस चीज़ के जो वे कमाते रहे हैं।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ
فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ اِنَّهُمْ رِجْسٌ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ جَزَآءًۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

96. वे तुम्हारे सामने क़समें खाएंगे ताकि तुम राज़ी हो जाओ लेकिन अगर तुम उन से राज़ी हो भी गए तो अल्लाह फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोगों से कभी राज़ी होने वाला नहीं।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ
لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

97. बद्दू लोग [169] कुफ़्र और निफ़ाक़ (इन्कार एवं पाखंड) में अति कठोर हैं [170] और उन से यह असंभव नहीं कि जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किया है उस की सीमाओं से वे अनभिज्ञ रहें ।[171] और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, हिकमत वाला है।[172]

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا
حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

163. अर्थात् सच्चे ईमान वालों की भावनाएं इस तरह की होती हैं कि जो लोग सवारी का प्रबन्ध स्वयं नहीं कर सकते थे वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और आप से अनुरोध किया कि उन के लिए सवारी का प्रबन्ध कर दिया जाए किन्तु जब आप उन के लिए साधन की कमी के कारण व्यवस्था न कर सके तो वह अनुभव कर के कि वे जिहाद के सौभाग्य से वंचित रहेंगे उन की आँखों से आँसू जारी हो गए।

रसूल का यह कहना कि ''मैं तुम्हारे लिए सवारी का प्रबन्ध नहीं कर सकता'' रसूल की बेबसी को दर्शाता है मगर इस प्रकार के स्पष्ट तर्कों के बावजूद मुसलमानों का जाहिल वर्ग रसूल को ख़ुदा का दर्जा देने लगता है और यह समझता है कि रसूल के पास ख़ज़ाने हैं। और यद्यपि आप दुनिया से विदा हो चुके हैं लेकिन आप को सहायता के लिए पुकारना जायज़ है, यह अक़ीदा तौहीद (एकेश्वरवाद) के सरासर विरुद्ध है और रसूल का यह कथन जो आयत में बयान हुआ है इस अक़ीदे के खंडन के लिए काफ़ी है।

164. अर्थात् जब तुम तबूक की जंग से मदीना वापस पहुँचोगे तो ये मुनाफ़िक़ जो जिहाद के लिए तुम्हारे साथ नहीं निकले तुम्हारे पास आ कर झूठे बहाने प्रस्तुत करेंगे।

165. इशारा है सूरह तौबा की उन आयतों की तरफ़ जिन में मुनाफ़िक़ों को बेनिक़ाब किया गया है।

166. अर्थात् यह देखेगा कि आगे तुम्हारा रवैया क्या रहता है। सुधार कर के अल्लाह और उस के रसूल से वफ़ादारी का सबूत देते हो या पिछले रवैये पर क़ायम रहते हो।

ध्यान रहे कि उस समय अल्लाह का रसूल उन के बीच मौजूद था इस लिए यह जो फ़रमाया कि रसूल तुम्हारे रवैये को देखेगा तो इस का मतलब अपनी जगह बिल्कुल स्पष्ट है ठीक उसी तरह जिस तरह कि आयत 105 में फ़रमाया गया है कि अल्लाह तुम्हारे अमल को देखेगा और उस का रसूल और ईमान वाले भी। लेकिन हद से आगे बढ़ने वाली मानसिकता यह नई बात पैदा करती है कि हुज़ूर हमारे खुले और छिपे आमाल देख रहे हैं जब कि आप दुनिया से कूच कर चुके हैं। इस प्रकार की नवीनता अथवा रहस्य पैदा कर के शिर्क और बिद्अत के लिए राहें ज़रुर निकाली जा सकती हैं इस तरह की नवीनता एवं रहस्योदघाटन यहूदी और ईसाई भी अल्लाह की किताब में करते रहे हैं अल्लाह की पनाह ऐसे कुकर्मों से।

167. अर्थात् वे चाहते हैं कि तुम उन को उन के हाल पर छोड़ दो और जब वे अपनी इसलाह (सुधार) के लिए आमादा नहीं हैं तो उचित यही है कि उन को उन के हाल पर छोड़ दो।

168. अपवित्रता से मुराद कुफ्र और निफ़ाक़ (इन्कार एवं पाखंड) की गंदगी है जिस ने उन के दिल और दिमाग़ एवं उन की आत्मा को अपवित्र कर के रख दिया है इस लिए न पवित्र विचारों का उन के दिल एवं दिमाग़ में गुज़र होता है और न पवित्र भावनाऐं उन के अन्दर पनप पाती हैं।

169. अर्थात् अरब के देहाती लोग।

170. देहात का माहौल सामाजिक दृष्टि से शहर से भिन्न होता है इस लिए वहाँ देहाती लोग कठोर प्रवृत्ति के होते हैं। और प्रवृत्ति की यह कठोरता कुफ्र और निफ़ाक़ में भी कठोरता पैदा कर देती है।

171. उन को न ज्ञान का शौक़ होता है और न तरबियत से लगाव है। इस लिए शरीअत के आदेशों से उन के अनभिज्ञ रहने की संभावनाएं अधिक होती हैं।

172. इशारा है इस बात की तरफ़ कि अल्लाह को उन के दिलों का हाल मालूम है इस लिए वह उन के साथ वही मामला करेगा जिस के लिए हिकमत (नीति) तक़ाज़ा करेगी।

❒ ❒ ❒ ❒ ❒ ❒

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ
مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ عَلَيْهِمْ
دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

98. उन बद्दूओं (देहातियों) में ऐसे लोग भी हैं जो (अल्लाह ही राह में) ख़र्च (इन्फ़ाक़)को अपने ऊपर तावान (जुर्माना) समझते हैं।[173] और इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि तुम किसी न किसी गर्दिश (कालचक्र)में आ जाओ [174](और सत्यता यह है कि) बुरी गर्दिश (कालचक्र) में वे स्वयं ही आ गए हैं और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ
الرَّسُولِ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾

99. और बद्दूओं (देहातियों) में वे लोग भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं [175] और इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च करने) को अल्लाह के समक्ष निकटता और रसूल की दुआऐं लेने का साधन बनाते हैं [176] सुनो वह निश्चित रुप से उन के लिए निकटता का साधन हैं।[177] अल्लाह बहुत जल्द उन को अपनी रहमत में दाखिल करेगा। निःसंदेह अल्लाह अत्यंत क्षमाशील दया करने वाला है।

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾

100. मुहाजिरीन [178] (देश त्याग करने वालों) और अन्सार[179](सहायता करने वालों) में से जिन लोगों ने सब से पहले पहल की [180] एवं वे जिन्होंने सुन्दरता के साथ उन का अनुपालन किया [181] अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वे उस से राज़ी हुए।[182] उन के लिए उस ने ऐसे बाग़ तैयार किये हैं जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं। वे हमेशा वहाँ रहेंगे। और यही है बहुत बड़ी सफ़लता।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ وَمِنْ أَهْلِ
الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ
ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

101. और तुम्हारे इर्द गिर्द जो बद्दू रहते हैं उन में मुनाफ़िक़ हैं और मदीना के बाशिन्दों में भी मुनाफ़िक़ मौजूद हैं जो निफ़ाक़ (पाखंड) में निपुण हो गए हैं।[183] तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं।[184] उन्हें हम दो बार सज़ा देंगे [185] फिर वे बहुत बड़े अज़ाब (यातना) की तरफ़ लौटाए जाऐंगे।[186]

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا
عَسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

102. और दूसरे वे लोग हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों को मान लिया है। उन्होंने मिले जुले काम किए हैं, अच्छे भी और बुरे भी।[187] असंभव नहीं कि अल्लाह उन की तौबा क़ुबूल फ़रमाए। अल्लाह अत्यंत क्षमाशील, दयावान है।

173. अर्थात् वे ज़कात को जबरी टैक्स और जिहाद के लिए सहयोग को जुर्माना समझते हैं हालाँकि यह इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च करना) इबादत है जो स्वेच्छा से एवं ख़ुशी ख़ुशी करना चाहिए।

174. ये बदू अर्थात अरब देहाती इस्लाम में मात्र अपने स्वार्थ की ख़ातिर दाख़िल हुए थे। उन्होंने देखा कि इस्लाम उस सरज़मीन पर प्रभावी होता जा रहा है इस लिए भलाई इसी में है कि मुसलमान हो जाओ वरना उन को इस्लाम से कोई दिलचस्पी और लगाव न था । वे मुसलमानों का बुरा चाहते थे, और चाहते थे कि मुसलामान किसी चक्कर में फँस जाऐं ताकि उन को इस्लाम का पट्टा अपनी गर्दनों से उतार फेंकने का मौक़ा मिले ।

175. अर्थात् तमाम बद्दूओं का हाल एक सा नहीं है उन में जहाँ मुनाफ़िक़ (पाखंडी लोग) हैं वही सच्चे ईमान वाले भी हैं।

इस के तहत इस सिद्धान्त का खंडन भी होता है कि माहौल ही इन्सान को अच्छा या बुरा बनाता है। अगर ऐसा होता तो पत्थर दिल बद्दूओं में नर्म दिल लोग पैदा न होते। इन्सान का मामला ईंट पत्थर की तरह नहीं है बल्कि वह बनने और बिगड़ने की क्षमता रखता है और इस मामले में निर्णायक शक्ति (Decisive Force) उस का अपना मन है। माहौल से आदमी प्रभावित अवश्य होता है किन्तु यह कहना सही नहीं कि माहौल ही आदमी को अच्छा या बुरा बनाता है। अगर यह बात सही होती तो बुरे माहौल में अच्छे लोग पैदा न होते और न अच्छे माहौल में बुरे लोग जन्म लेते।

176. ईमान वालों में से जब कोई व्यक्ति अल्लाह की राह में रुपये की सहायता अर्पित करता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे स्वीकार करते और उस के लिए रहमत की दुआ फ़रमाते।

रसूल की दुआ का मान और मूल्य ईमान वाले अच्छी तरह जानते थे इस लिए इन्फ़ाक़ अर्थात् अल्लाह की राह में ख़र्च कर के रसूल की दुआऐं लेने की अभिलाषा उन के दिलों में करवटें लेती रहती थी।

177. इस से इन्फ़ाक़ का महत्व और श्रेष्ठता स्पष्ट होती है कि एक मोमिन अल्लाह की राह में जितना ख़र्च करेगा उतना ही वह अल्लाह से क़रीब होगा ।

178. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्फ़ाल नोट १०६ ।

179. व्याख्या के लिए देखिए सूरह अन्फ़ाल नोट १०८ ।

180. अर्थात जिन्होंने हक़ की दअवत क़ुबूल करने और ईमान लाने में पहल की और इस बात का इन्तिज़ार नहीं किया कि लोग इस दअवत को क़ुबूल करते हैं या नहीं। और ईमान लाने के बाद वे इस्लाम के तक़ाज़ों एवं माँगों (Demands) को पूरा करने और कठिन समय में उस के लिए क़ुर्बानियाँ पेश करने में आगे आगे रहे । उन्होंने अपनी अपनी जानें जोख़िम में डाल कर और अपना माल हक़ की राह में लुटा कर अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने और उस के रसूल का समर्थन और सहायता करने में कोई कसर उठा न रखी। यही लोग इस चमन के श्रेष्टतम फूल हैं और उन्हीं से इस्लाम की प्रथम पंक्ति सुसज्जित हुई है।

पहल करने वाले पुर्वजों का सम्बन्ध बद्र की जंग से पहले के दौर से है, क्यों कि यही दौर अधिक आज़माइशों और तकलीफ़ों का था । और बद्र की जंग ने तो इस्लाम के हक़ में फ़ैसला सादिर कर दिया था। इस लिए इस के बाद इस्लाम की तरफ़ झुकने एवं बढ़ने में वे रुकावटें नहीं थी जो उस के पहले के दौर में थीं।

181. मुराद वे लोग हैं जो पहल करने वाले पूर्वजों के नमूने को देख लेने के बाद इस क़ाफ़िले में शामिल हो गए और इस राह पर जिसे उन्होंने अपनाया था अच्छी तहर चलते रहे ।

पहला गिरोह महानुभव सहाबा का है और दूसरे गिरोह में दूसरे सहाबा भी शामिल हैं और वे तमाम लोग भी जो सुन्दरतापूर्वक उन के पदचिन्हों पर चलते रहेंगे चाहे वे किसी ज़माने में और किसी मुल्क में पैदा हुए हों क्यों कि सब एक ही राह के राही और एक ही उम्मत के लोग हैं।

182. जिस गिरोह की शान यह हो कि अल्लाह ने उस से राज़ी होने का एलान अपनी किताब में फ़रमा दिया हो एक मुसलमान के दिल में निश्चित रुप से उस का आदर सम्मान होगा एवं उस के पद् चिन्हों पर चलने का वह बेहतर तरीक़ा अपनाएगा ।

मगर इस स्पष्ट कथन के बावजूद मुसलमानों का एक गिरोह, कुछ को छोड़ कर बाक़ी सहाबा के पूरे गिरोह को और खास तौर से पहल करने वाले पूर्वजों को भला बुरा कहता है और तबर्रा बाज़ी को उस ने अपना धार्मिक कृत्य बना रखा है। गोया जहाँ से उन को हिदायत पाना चाहिए थी वहीं से उन्हों ने गुमराही मोल ली । अगर वे हद से न बढ़ते और व्यक्ति पूजा में लिप्त न होते तो इस आयत को पढ़ कर उन की आँखें खुल जातीं ।

183. अर्थात वे अपने को मुसलमान ज़ाहिर करते हैं मगर दिल से वे मुनाफ़िक़ हैं और अपने इस निफ़ाक़ (पाखंड) को छिपाने के लिए ऐसा वाचालता (लफ़्फ़ाज़ी) रचते हैं कि

कोई उन्हें पहचान नहीं सकता ।

184. दिलों का हाल पैग़म्बर भी नहीं जानता, अल्लाह ही जानता है।

185. एक सज़ा दुनिया में और दूसरी सज़ा क़ब्र (यमलोक) में ।

दुनिया में इन मुनाफ़िक़ों को सज़ा जैसा कि नोट 103 में स्पष्ट किया जा चुका है, मुसलमानों के हाथों मिली।

186. मुराद आख़िरत का अज़ाब है।

187. सूरह बराअत आख़िरी दौर का अवतरण है और उस समय ईमान और अमल की दृष्टि से मुस्लिम समाज में विभिन्न दर्जे के लोग पाए जाते थे । इस लिए इस सूरह में हर गिरोह का अलग अलग जायज़ा लिया गया है ताकि क़ुर्आन का अभीष्ट (मतलूब) मोमिन कौन है, इस दौर के मुसलमानों पर भी स्पष्ट हो जाए और आने वाली नस्लों पर भी। इस आयत में मुसलमानों के जिस गिरोह का वर्णन हुआ है उस से एक क़ुसूर तो यह हुआ था कि ये लोग तबूक की जंग में सम्मिलित नहीं हुए थे लेकिन इस के अलावा जैसा कि क़ुर्आन के बयान से स्पष्ट होता है उन की ज़िन्दगीयाँ नेकी और बदी का संग्रह थीं मगर उन्हों ने अपने गुनाहों को मान लिया था इस लिए उन्हें प्रायश्चित (तौबा) के स्वीकार होने की आशा दिलाई गई।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

(ऐ नबी !)तुम उन के माल से सदक़ा ले लो कि इस के द्वारा तुम उन्हें पाक करोगे। और उन का तज़्किय: (शुद्धिकरण) करोगे और उन के लिए तुम रहमत की दुआ करो, निःसंदेह तुम्हारी दुआ उन के लिए हृदय शान्ति (तस्कीन) का कारण है । और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है।(अल-क़ुर्आन)

103. (ऐ नबी !)तुम उन के माल से सदक़ा ले लो [188] कि इस के द्वारा तुम उन्हें पाक करोगे। और उन का तज़्किय: (शुद्धिकरण) करोगे [189] और उन के लिए तुम रहमत की दुआ करो, निःसंदेह तुम्हारी दुआ उन के लिए हृदय शान्ति (तस्कीन) का कारण है।और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है।

خُذْ مِنْ أَمْوَٰلِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ
عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَٱللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ١٠٣

104. क्या उन्हें मालूम नहीं कि वह अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है और सदक़ात को स्वीकृति प्रदान करता है और यह कि अल्लाह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला रहम फ़रमाने वाला है।

أَلَمْ يَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ ٱلتَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِۦ وَيَأْخُذُ
ٱلصَّدَقَٰتِ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ١٠٤

105. कहो तुम अमल (कर्म) करो। अल्लाह तुम्हारे अमल को देखेगा एवं उस का रसूल और ईमान वाले भी देखेंगें।[190] और तुम बहुत जल्द उस के सामने पेश किए जाओगे, जो ग़ैब और हाज़िर (अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष) सब का जानने वाला है फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो।

وَقُلِ ٱعْمَلُوا۟ فَسَيَرَى ٱللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُۥ وَٱلْمُؤْمِنُونَ ۖ
وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ١٠٥

106. कुछ और लोग हैं जिन को अल्लाह के फ़ैसले के इन्तिज़ार में रखा गया है।[191] या तो उन्हें सज़ा दे या उन पर मेहरबान हो जाए। अल्लाह जानने वाला और हिकमत वाला है।

وَءَاخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ ٱللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ
وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ١٠٦

107. और (कुछ लोग ऐसे भी हैं) जिन्हों ने इस उद्देश्य से मस्जिद बनाई कि क्षति पहुँचाऐं और कुफ्र करें और ईमान वालों में तफरक: डाले (विच्छेद करें) और उन लोगों के लिए गुप्तस्थान बनाऐं जो इस से पहले अल्लाह और उस के रसूल से जंग कर चुके हैं।[192] वे ज़रुर क़समें खा कर कहेंगे कि हमारा इरादा तो भलाई का था। मगर अल्लाह गवाही देता है कि ये बिल्कुल झूठे हैं।

وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُوا۟ مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًۢا بَيْنَ
ٱلْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ مِن
قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّا ٱلْحُسْنَىٰ ۖ وَٱللَّهُ يَشْهَدُ
إِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ١٠٧

108. तुम उस में हरगिज़ ख़ड़े न होना [193] वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़वा (ईश-भय) पर रखी गई है वही इस बात की हक़दार है कि तुम उस में खड़े हो [194] उस में ऐसे लोग हैं जो पाक रहना पसंद करते हैं।[195] और अल्लाह पाक रहने वालों ही को पसंद करता है।

لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى ٱلتَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ
أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا۟ ۚ وَٱللَّهُ
يُحِبُّ ٱلْمُطَّهِّرِينَ ١٠٨

188. अर्थात् जो सदक़ा ये पेश करें उस को क़ुबूल कर लो ।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो सदक़ा या जक़ात स्वीकार करते उस को उन व्यायों (Accounts) में ख़र्च करते जो सदक़ात के लिए निश्चित हैं।

189. स्पष्ट हुआ कि सदक़ा चाहे वह ज़कात हो या ख़ैरात, गुनाहों और बुराइयों से पाकीज़गी और नेकियों एवं भलाइयों से सुसज्जित होने का साधन है। इस से दिमाग़ और दिल के रोग भी समाप्त होते हैं और अच्छी भावानएं भी पनपने लगती हैं। इस से अन्तरात्मा संवरती हैं और इन्सान सदगुणी हो जाता है।

190. अर्थात् आगे तुम्हारा क्या रवैया रहता है इस पर ईमान वालों की भी निगाह रहेगी ताकि वे तुम्हारे साथ वह मामला करें जिस का तुम अपने को योग्यवान सिद्ध कर दिखाओगे।

191. अर्थात् तबूक की जंग से पीछे रह जाने वाले लोगों में कुछ लोग ऐसे हैं जिन का मामला अधर में है। ये तीन व्यक्ति थे जिन्होंने मात्र ग़फ़लत के कारण जंग में शिर्कत नहीं की थी। उन के मामले को विराम में रखा गया और बाद में उन की तौबा क़ुबूल कर ली गई जिस का ज़िक्र आगे आयत 118 में हुआ है।

192. यह मस्जिद जो मस्जिदे-ज़िरार (क्षति पहुँचाने वाली मस्जिद) के नाम से प्रसिद्ध हुई, मदीना में क़ुबा मस्जिद के क़रीब मुनाफ़िक़ों के एक गिरोह ने बनाई थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तबूक के सफ़र पर रवाना हो रहे थे तो कुछ मुनाफ़िक़ो ने आप से अनुरोध किया था कि वहाँ तशरीफ़ लाए और उस मस्जिद में एक बार नमाज़ पढ़े । उस के निर्माण की वजह उन्होंने यह बताई कि बारिश की रातों और ख़ास तौर से लाचारों, बेबसों के लिए सहूलत हो । आप ने फ़रमाया, अभी सफ़र करना है बाद में जब तबूक से वापसी हुई और आप मदीना के क़रीब ही ''ज़ीअवान'' के स्थल पर पहुँचे तो आप को अल्लाह तआला ने उन के षडयंत्र से अवगत कर दिया । आप ने उसी समय अपने कुछ साथियों को आगे रवाना कर दिया ताकि वे आप के मदीना पहुँचने से पहले ही उस मस्जिद को ढा दें। अत: उन लोगों ने इस आदेश के अनुपालन में बड़ी होशियारी से काम लिया और उस मस्जिद को तुरन्त आग के हवाले कर दिया ताकि फ़ितने को सर उठाने का मौक़ा न मिले यह क़िस्सा सीरत इब्ने हिशाम जिल्द 4 पृष्ट 185 में बयान हुआ है) इस आयत में अल्लाह तआला ने मुनाफ़िक़ों के उन विकृत स्वार्थों एवं उद्देश्यों को बेनिक़ाब किया है जिस के लिए उन्हों ने मस्जिद का निर्माण किया था। उन का पहला उद्देश्य यह था कि इस के माध्यम से इस्लाम को नुक्सान पहुँचाया जाए। मस्जिदें तो इस लिए बनाई जाती हैं कि दीन फले फूले और इस्लाम का यह प्रतीक उस की सुदृढ़ता का साधन बने।

लेकिन उन्होंने इस्लाम की जड़ो को खोखला करने के उद्देश्य से मस्जिद का निर्माण किया था। एक ऐसी मस्जिद को जिस की बुनियाद ग़लत उद्देश्यों पर रखी गई हो पवित्रता कैसे प्राप्त हो सकती है? उन का दूसरा उद्देश्य यह था कि वह वास्तव में पूजा स्थल नहीं बल्कि कुफ्र का केन्द्र बने । तीसरा उद्देश्य यह था कि मुसलमानों की एकता को छिन्न भिन्न कर दिया जाए और यह इस तरह कि उन को उन के वास्तविक केन्द्र बिन्दु से अलग करने की कोशिश की जाए। और चौथा उद्देश्य यह था कि इस्लाम के दुश्मनों के लिए यह एक ठिकाना बन जाए ताकि वे इस्लाम के विरुद्ध जोड़ तोड़ एवं तोड़ फोड़ कर सकें। रिवायतों में आता है कि क़बीला ख़ज़रज का एक व्यक्ति अबू आमिर जो ईसाई हो गया था इस्लाम और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर दुश्मन था उहद की जंग में उस ने बहुदेववादियों का साथ दिया और हुनैन की जंग के बाद जब उस ने महसूस किया कि इस्लाम की ताक़त को दबाने में अरब नाकाम रहे हैं तो रोम चला गया और वहाँ से इस्लाम के विरुद्ध साज़िशें करने लगा यहाँ तक कि उस ने क़ैसरे-रोम (रोमी शासक) को मदीना पर हमला करने के लिए उकसाया । उसी के इशारे पर मुनाफ़िक़ों ने मस्जिदे ज़रार बनाई थी । लेकिन अल्लाह की वह्य ने इस घिनावनी साजिश को बेनिक़ाब कर दिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समय पर पहल कर के उस को नाकाम बना दिया ।

193. अर्थात् उस मस्जिद में न केवल यह कि नमाज़ न पढ़ो बल्कि सिरे से पैर ही न रखो ।

194. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हिजरत कर के मदीना पहुँचे तो कुछ दिनों तक आप क़ुबा के इलाक़े में ठहरे रहे। वहाँ आप ने एक मस्जिद की बुनियाद रखी जो मस्जिदे-क़ुबा के नाम से मशहूर हुई। यह मदीना की पहली मस्जिद थी। दूसरी मस्जिद आप ने शहर के अन्दर निर्मित कराई जिस को मस्जिदे-नबवी कहते हैं। इन दोनों मस्जिदों की बुनियाद तक़्वा (ईश-भय एवं परहेज़गारी) पर रखी गई थी। इस लिए आयत की साक्षी दोनों ही मस्जिदें हो सकती हैं और सहाबा के कथन भी दोनों मस्जिदों की ताईद में मौजूद हैं। लेकिन चूँकि मस्जिदे-नबवी में यह ख़ूबी पूर्ण रुप से मौजूद है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोज़ का नियम उसी में खड़े होने और नमाज़ पढ़ने का रहा है एवं मुनाफ़िक़ीन का असल निशाना भी इसी मस्जिद की केन्द्रीयता एवं संगठना को पारा पारा करना था इस लिए आयत की अनुकूल साक्षी मस्जिदे-नबवी ही है।

हदीस में आता है कि दो व्यक्तियों के बीच उस मस्जिद के बारे में जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है,

मतभेद हुआ । एक ने कहा वह मस्जिदे क़ुबा है और दूसरे ने कहा वह मस्जिदे-रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह मेरी यह मस्जिद है। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को नक़ल कर के लिखा है कि यह हदीस हसन सही है।और शोकानी ने तफ़्सीर फ़त्हुल क़दीर में बिल्कुल सही फ़रमाया है कि जब सही हदीसों से यह बात साबित हुई कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे-नब्वी ही मुराद ली है तो रसूल की हदीस के मुक़ाबले में किसी के कथन को प्रस्तुत करना सही नहीं है। (फ़त्हुलक़दीर, शोकानी, जिल्द 2 पृष्ट 406)

195. मुराद बाह्य पवित्रता भी है और आन्तरिक पवित्रता भी। शरीअत ने दोनों के आदेश दिए हैं और उन सच्चे ईमान वालों की विशेषता यह है कि वे सब से पहले अपने दिल और दिमाग़ को गुनाहों से पाक रखते हैं और साथ ही शारिरिक पवित्रता का लिहाज़ रखते हैं। इस के विपरीत मस्जिद ज़िरार की बुनियाद रखने वालों का अन्दरुन कुफ़्र और निफ़ाक़ की गन्दगी से अटा पड़ा था। उन्हें न दिल की पवित्रता का एहसास था और न शारीरिक पवित्रता का ख़्याल ।

❖❖❖❖❖❖❖❖

नबी को और ईमान वालों को शोभा नहीं देता कि वे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के लिए क्षमा की प्रार्थना करें चाहे वे उन के नातेदार ही क्यों न हों जब कि उन पर यह स्पष्ट हो चुका कि वे जहन्नम वाले हैं।(अल-क़ुर्आन)

109. क्या वह व्यक्ति बेहतर है जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह के तक़्वा और उस की प्रसन्नता पर रखी या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद खोखली गिरती हुई कगार के किनारे पर रखी और फिर वह उस को लेकर जहन्नम की आग में जा गिरी [196] अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता।[197]

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ
أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي
نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾

110. ये इमारत जो उन्हों ने बनाई हमेशा उन के दिलों में ख़लजान का कारण बनी रहेगी। यह और बात है कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं [198] और अल्लाह अत्यंत ज्ञानशील, तत्वदर्शी है।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ
تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾

111. वास्तव में अल्लाह ने मोमिनों से उन की जानें (प्राण) और उन के माल जन्नत के बदले ख़रीद लिए हैं [199] वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और मारते और मरते हैं।[200] यह अल्लाह के ज़िम्मे एक सच्चा वादा है तौरात [201] ईन्जील और क़ुर्आन में। और कौन है अल्लाह से बढ़ कर अपने वादे को पूरा करने वाला? तो खुशियाँ मनाओ अपने उस सौदे पर जो तुम ने उस के साथ किया है। यही है सब से बड़ी कामयाबी।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ
بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَ
يُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ
وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾

112. तौबा करने वाले, [202] इबादत करने वाले,[203] हम्द (अल्लाह की प्रशंसा) करने वाले,[204] (उस की राह में) भ्रमण करने वाले,[205] रुकू करने (झुकने) वाले, सजदा करने वाले [206] भलाई का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले [207] और अल्लाह की सीमाओं (हुदूद) की रक्षा करने वाले [208] और (तो ऐ पैग़म्बर !) इन मोमिनों को ख़ुश ख़बरी दे दो।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ
السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

113. नबी को और ईमान वालों को शोभा नहीं देता कि वे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के लिए क्षमा की प्रार्थना करें चाहे वे उन के नातेदार ही क्यों न हों जब कि उन पर यह स्पष्ट हो चुका कि वे जहन्नम वाले हैं।[209]

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾

196. यह उन लोगों की मिसाल है जो अपने जीवन का निर्माण तक़वा (ईश-भय) और अल्लाह की प्रसन्नता के बजाय ख़ुदा से निर्भयता और बेपरवाही की बुनियाद पर करते हैं जिस का नतीजा पूरी तरह से तबाही के रुप में सामने आता है। अगर वे इस नतीजे को सामने रखें तो उन्हें एहसास होता कि वे निर्माण का नहीं बल्कि विनाश का काम कर रहे हैं।

197. अर्थात् उन की अभिलाषाओं को पूरी नहीं करता और कामयाबी की मन्ज़िल पर नहीं पहुँचाता ।

198. अर्थात् एक घिनावनी साज़िश को मस्जिद का रुप दे कर उन्होंने निफ़ाक़ (पाखंड) को अपने दिलों में ऐसा जमा दिया है कि वे अब मरते दम तक उस से छुटकारा नहीं पा सकते।

199. यहाँ उस प्रतिज्ञा को जो ईमान वाले अल्लाह पर ईमान ला कर उस के साथ करते हैं ख़रीद और फ़रोख़्त (कर्य विक्रय) का समझौता कहा गया है। जान और माल अल्लाह ही के प्रदान किये हुए हैं और वास्तव में वही उन का मालिक है। लेकिन इस परीक्षा से भरे जीवन में ईमान वाले अल्लाह की राह में जान और माल की जो क़ुर्बानियाँ पेश करते हैं उस का आदर अल्लाह तआला इस प्रकार करता है कि गोया वह एक सौदा है जो बन्दा और ख़ुदा के बीच तय पाया है। बन्दे ने अपनी जान और अपना माल अल्लाह के हाथ बेच दिया है और अल्लाह उस की जो क़ीमत चुकाने वाला है वह जन्नत है।

200. अर्थात् वे अल्लाह की राह में लड़ने से जी नहीं चुराते बल्कि साहस के साथ लड़ते हैं और अल्लाह के दुश्मनों को मारने में कोई कसर उठा नहीं रखते यहाँ तक कि शहीद होने का गौरव प्राप्त कर लेते हैं।

201. मुराद असली तौरात और इन्जील हैं जिन को अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया था। अगर मौजूदा तौरात और इन्जील में यह मज़मून (विषय) इस तरह से नहीं मिलता तो इस से इस बात का खंडन नहीं होता कि असली तौरात और इन्जील में यह मज़मून नहीं था क्यों कि मौजूदा तौरात और इन्जील परिवर्तित की हुई हैं अर्थात इस में काफ़ी काट छाँट की जा चुकी है। और इन में असल किताब के कुछ अंश ही पाये जाते हैं। फिर भी क़ुर्आन से मिलती जुलती बातें मौजूदा तौरात और इन्जील में भी विद्यमान हैं जैसे:

> हे इस्राएल, सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है एक ही ख़ुदावन्द है तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना !
>
> ''धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताये जाते हैं, क्यों कि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' (मत्ती 5:10)
>
> ''जो कोई अपने प्राण बचाता है वह उसे खोएगा और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।'' (मत्ती 10:39)

202. इस आयत में सच्चे ईमान वालों के गुण बताए गए हैं और उन का पहला गुण यह बयान किया गया है कि वे तौबा करते रहते हैं। अर्थात् जब भी उन से कोई चूक या गुनाह हो जाता है तो वे उस पर लज्जित हो कर अल्लाह की ओर पलटते हैं और उस से क्षमा की विनती करते हैं। तौबा (प्रायश्चित) की व्याख्या सूरह निसा नोट 45 और 46 में गुज़र चुकी।

203. वे एक अकेले ख़ुदा की इबादत करते हैं और उस की इबादत में सक्रिय रहते हैं। वे अल्लाह की उपासना को कोई बोझल कार्य समझ कर नहीं करते बल्कि दिल की गहराई और मन की लगन के साथ करते हैं।

204. अर्थात वे अल्लाह का ही गुणगान करते हैं और उस की प्रशंसा में उन की ज़बान मग्न रहती है।

205. अर्थात् वे दीन के तक़ाज़ों को नज़रंदाज़ कर के अपने घर और वतन से चिमटे नहीं रहते बल्कि उस के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए सफ़र की तकलीफ़ों को सहन करते हैं और ज़मीन में भ्रमण करते रहते हैं जैसे जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह, हिजरत, हज्ज और उमरह, दअवत और प्रचार दीन के ज्ञान की प्राप्ति, अल्लाह की आयतों (निशानियों) का निरक्षण, दीन की सेवा एवं प्रसार और इस के लिए सामूहिक संघर्ष आदि उद्देश्यों के लिए सफ़र करना।

206. रुकू करने वाले अर्थात् अल्लाह के आगे झुकने वाले। सज्दा करने वाले अर्थात् अल्लाह के लिए अपना माथा ज़मीन पर टेक देने वाले। रुकू की दशा यह है कि खड़े होने की हालत में अपने हाथ घुटनों पर रख कर इस तरह झुका जाए कि पीठ सीधी रहे। और सज्दे का तरीक़ा यह है कि माथे को ज़मीन पर रख दिया जाए और साथ ही नाक, हथेलियाँ, घुटने और पाँव की उंगलियाँ भी ज़मीन पर रख दी जाऐं। रुकू और सज्दा नमाज़ के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं और उन के ज़िक्र से अभिप्रेत नमाज़ है।

207. वे केवल अपना सुधार नहीं करते बल्कि ख़ुदा के बन्दों के सुधार का दायित्व भी निभाते हैं। अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह आले-इम्रान नोट 137

208. हुदूदिल्लाह (अल्लाह की सीमाएं) शरीअत के आदेशों और क़ानूनों की क़ुर्आनी परिभाषा है और इन की रक्षा से मुराद इन की पाबन्दी करना है। एवं इस के भावार्थ में यह बात भी शामिल है कि ग़ैर शरई आदेश और क़ानून का समर्थन करने या उन को लागू करने से बचे।

ये गुण जो यहाँ बयान किये गए हैं ईमानी चरित्र को पाखंडी

(मुनाफ़िक़ाना) चरित्र से अलग करते हैं।

209. मुश्रिक (बहुदेववादी) इस बात का इन्कारी होता है कि एक अल्लाह का वफ़ादार बन्दा बन कर रहे। इस आधार पर वह अल्लाह का बाग़ी और उस का दुश्मन होता है। फिर जो व्यक्ति मरते दम तक मुश्रिक रहा उस ने अपने अमल (कर्मो) से यह स्पष्ट कर दिया कि वह अल्लाह का दुश्मन है। और शिर्क अर्थात् बहुदेववाद के बारे में अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमाया है कि वह एक ऐसा अपराध है जो क्षमा करने योग्य नहीं है और ऐसे अपराधियों का ठिकाना जहन्नम है। इस के बाद ईमान वालों के लिए किस तरह यह बात उचित हो सकती है कि वे बहुदेववादियों (मुश्रिकों) के लिए दुआ करें चाहे वे उन के सम्बन्धी एवं नातेदार ही क्यों न हों। अल्लाह से दोस्ती का तक़ाज़ा यह है कि उस के दुश्मन को ईमान वाले अपना दुश्मन समझें।

स्पष्ट रहे कि क्षमा की प्रार्थना की मनाही जिस तरह मुश्रिकों के लिए है उसी तरह काफ़िरों और मुलहिदों (अनीश्वरवादियों) के लिए भी है क्यों कि सब का समाईक जुर्म कुफ्र (इन्कार) है जो क्षमा योग्य नहीं है। रहा किसी पर उस के मुश्रिक होने का हुक्म लगाना तो वह हुक्म उस के ज़ाहिरी अक़ीदे और अमल के आधार पर लगाया जायेगा जिस तरह किसी के ज़ाहिरी इस्लाम को देख कर उस के मुसलमान होने का हुक्म लगाया जाता है। वरना अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वास्तव में कौन कुफ्र और शिर्क पर मरा और किस ने ईमान और इस्लाम पर अपनी जान दी तथा कौन जहन्नमी है और कौन जन्नती ।

❐ ❐ ❐ ❐ ❐ ❐

बेशक अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत वही जिलाता और मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार ।(अल-क़ुर्आन)

114. और इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी वह तो उस वादे के कारण थी जो उस ने उस से किया था। लेकिन जब उस पर यह स्पष्ट हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उस से विरक्त हो गया।[210] वास्तव में इब्राहीम बड़ा ही दर्दमन्द (दयालु) और सहनशील था।[211]

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرٰهِيْمَ لِأَبِيْهِ إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ
وَّعَدَهَآ إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ أَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ
إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

115. और अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह करे जब तक कि उस पर वे बातें स्पष्ट न कर दे जिन से उसे बचना चाहिए।[212] निःसंदेह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى
يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

116. बेशक अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाहत वही जिलाता और मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार ।[213]

إِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾

117. अल्लाह ने माफ़ किया नबी को और मुहाजिरीन (देश त्याग करने वालों) को और अन्सार (सहायता करने वालों) को जिन्हों ने तंगी के समय में नबी का साथ दिया [214] और ऐसी हालत में दिया कि क़रीब था कि उन में से एक गिरोह के दिल टेढ़ की ओर झुक जाएं। फिर अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया।[215] निःसंदेह वह उन के पक्ष में अत्यंत स्नेह और दयालू है।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْأَنْصَارِ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا
كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهٗ
بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾

118. और उन तीनों को भी उस ने क्षमा किया जिन का मामला अनुलंबित कर दिया गया था।[216] यहाँ तक कि जब ज़मीन अपनी विशालता के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे खुद अपनी जान से तंग आ गए और उन्हें विश्वास हो गया कि अल्लाह के प्रकोप से बचने के लिए कोई शरण स्थल नहीं है सिवाय उसी के पास, तो अल्लाह ने उन की तौबा क़ुबूल फ़रमाई ताकि ये उस की ओर पलटें।[217] निःसंदेह अल्लाह ही है बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम फ़रमाने वाला।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ۚ حَتّٰى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ
الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْا أَنْ
لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللّٰهِ إِلَّا إِلَيْهِ ۚ ثُمَّ تَابَ
عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ۚ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾

210. इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप से विदा होते समय उस के लिए माफ़ी की दुआ करने का वादा किया था जिस का वर्णन कुर्आन में दूसरी जगहों पर हुआ है। सूरह मरयम में है:

سَلٰمٌ عَلَيۡکَ ۚ سَاَسۡتَغۡفِرُلَکَ رَبِّیۡ اِنَّهٗ کَانَ بِیۡ حَفِيًّا۔ (مریم:۴۷)

> ''सलाम हो आप पर, मैं आप के लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करुँगा वह मुझ पर बहुत मेहरबान है।''(मरयम : ४७)

इस से यह ख़याल पैदा हो सकता था कि फिर मुसलमान अपने मुश्रिक नातेदारों के लिए क्षमा की प्रार्थना क्यों न करें इस भ्रम को यहाँ दूर कर दिया गया कि इब्राहीम का अपने बाप के लिए क्षमा की प्रार्थना करना उस वादे के कारण था जो उन्हों ने अपने बाप से किया था। लेकिन जब उन पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो उन्होंने दुआ करना छोड़ दिया। मतलब यह है कि इब्राहीम अपने वादे के अनुसार तब तक दुआ करते रहे जब तक कि उन पर उस के ख़ुदा का शत्रु होने का पक्ष उजागर नहीं हुआ था। जब यह पक्ष उजागर हुआ तो उन्हें महसूस हुआ कि किसी मुश्रिक (बहुदेववादी) के लिए क्षमा की प्रार्थना करना सही नहीं चाहे वह पिता ही क्यों न हो। और यह एहसास पैदा होते ही वे दुआ (प्रार्थना) करने से रुक गए। इब्राहीम का यह बाद का अमल ही नमूना है।

211. अर्थात् इब्राहीम चूँकि एक करुणामय एवं सहनशील व्यक्ति था इस लिए उस ने अपने मुश्रिक बाप के ज़ालिमाना बर्ताव को ख़ातिर में लाए बग़ैर उस का पूर्ण रुप से भला चाहा और उस के दुर्व्यवहार का जवाब दुआ से दिया यहाँ तक कि उस पर यह बात खुल गई कि वह शिर्क (बहुदेववाद) से बाज़ आने वाला नहीं है। और शिर्क ख़ुदा से दुश्मनी के समानार्थ है।

212. यह मुसलमानों को चेतावनी है कि अल्लाह तआला ने हिदायत देने के बाद तुम पर वे सारी बातें खोल दी हैं जिन से तुम्हें बचना है और जिन में यह बात भी शामिल है कि तुम अल्लाह के दुश्मनों को अपना दोस्त न समझो और उन के लिए क्षमा की प्रार्थना न करो चाहे वे तुम्हारे सगे सम्बन्धी एवं नातेदार ही क्यों न हों।

इन खुली एवं स्पष्ट हिदायतों के बाद भी अगर तुम ने इन की परवाह नहीं की तो फिर याद रखो अल्लाह का गुमराह कर देने वाला प्राकृतिक नियम हरकत में आ सकता है और तुम गुमराही में पड़ सकते हो।

213. और जब अल्लाह के ये गुण एवं ये विशेषताएं हैं तो तुम्हें सारे मामलों में उसी की ओर पलटना चाहिए उस की हिदायतों पर दृढ़ता पूर्वक जमे रहना चाहिए और उसी से गहरा लगाव होना चाहिए।

214. मूल अरबी (Text) में ''ताबा'' का शब्द प्रयोग हुआ है । इस शब्द का कर्ता (Subject) जब अल्लाह हो और ''अला'' के सिले के साथ आए तो इस का अर्थ क्षमा करने, तौबा क़ुबूल करने, दयालुता के साथ ध्यान देने और मेहरबान होने के होते हैं। यहाँ यह शब्द अपने विस्तृत भावार्थ में ही इस्तेमाल हुआ है लेकिन अनुवाद के लिए कोई ऐसा शब्द हमें नहीं मिल सका जो इस के पूर्ण भाव पर हावी हो इस लिए इस का अनुवाद ''अल्लाह ने माफ़ किया'' कर दिया गया है।

तबूक की जंग के मौक़े पर ईमान वालों से जो क़ुसूर हुए थे उन पर पिछली आयतों में कड़ी पकड़ की गई है लेकिन जब उन में अपनी ग़लती का एहसास पैदा हो गया और उन्होंने माफ़ी माँग ली तो उन्हें तौबा क़ुबूल होने की ख़ुशख़बरी सुनाई गई। और इस ख़ुशख़बरी का क्षेत्र इतना विस्तृत हुआ कि जो क़ुसूर भी इस से पहले हुए थे उन सब के लिए माफ़ी का एलान हो गया। यह गोया दया की वर्षा थी जिसने गर्म वातावरण को अति मधुर बना दिया।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तबूक की जंग के अवसर पर जो भूल हुई थी उस का वर्णन आयत ४३ में गुज़र चुका वह यह कि जिन लोगों ने सामर्थ्य के बावजूद जंग में शामिल न होने की अनुमति मांगी थी आप ने उन को मात्र अपने कोमल स्वभाव और करुणामय आचरण के कारण अनुमति दे दी थी। यह एक अति साधारण चूक थी किन्तु :

जिनके रुतबें हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

और जब अल्लाह तआला ने हिजरत (देश त्याग) करने वालों और सहायता करने वालों (अन्सार) पर कृपा दृष्टि की तो सब से पहले वह अपनी रहमत के साथ अपने नबी की ओर आकृष्ट हुआ।

तंगी के समय से मुराद तबूक की जंग है जिस की कठिनाइयों का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि कड़ी गर्मी के ज़माने में लगभग सात सौ किलो मिटर का लंबा सफ़र,जल और आहार की बेहद कमी, सवारी का यह हाल कि एक ऊँट पर बारी बारी से कई कई लोग सवार हो जाते। और फिर मुक़ाबला रोम की महाशक्ति से। ऐसे कठिन एवं परीक्षा के समय में जिन लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ दिया था और उस कड़ी परीक्षा में पूरे उतरे, वे जब मदीना वापस लौटे हैं तो वहाँ अल्लाह की रहमत उन का स्वागत एवं अभिनन्दन करने के लिए मौजूद थी। जो क़ुसूर उन से हुए थे वे माफ़ कर दिये गए और उन की तौबा क़ुबूल कर ली गई।

215. इस कड़ी परीक्षा में संभव था कि कुछ सच्चे ईमान वालों से भी कमज़ोरियाँ ज़ाहिर हो जाऐं मगर उन की सत्यता एवं

शुद्ध हृदयता उन की कमज़ोरियों पर हावी हो गई और अल्लाह ने उन्हें भी क्षमा कर दिया।

216. ये तीन व्यक्ति, कअब बिन मालिक, मुरार: बिन रबिअ्: और हिलाल बिन उमैय्य: हैं। ये लोग सच्चे मोमिन थे किन्तु मात्र सुस्ती और ग़फ़लत की वजह से तबूक की जंग में शामिल नहीं हो सके थे। इस लिए उन का मामला जैसा कि आयत 106 में बयान हुआ अनुलंबित कर दिया गया था। इस आयत ने उन की तौबा भी क़ुबूल होने की ख़ुशख़बरी सुना दी।

217. कअब बिन मालिक ने जो तीन व्यक्तियों में से एक हैं अपना क़िस्सा बड़े विस्तार के साथ बयान किया है जो बुख़ारी और हदीस की किताबों में वर्णित है। हम यहाँ बुख़ारी की हदीस का सारांश प्रस्तुत करते हैं।

इस का सारांश यह है कि उन तीनों से यह कोताही हुई थी कि तबूक की जंग में किसी उचित कारण के बिना शामिल नहीं हुए थे। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक से वापस तशरीफ़ लाए तो पीछे रह जाने वालों ने आ कर जंग में न शामिल हो सकने के कारण बता दिये । लेकिन कअब बिन मालिक ने सेवा में उपस्थित हो कर साफ़ साफ़ बता दिया कि मेरे पास कोई उचित कारण एवं मजबूरी नहीं थी । आप ने फ़रमाया तुम ने सच कहा, अब उठो और अल्लाह के फैसले का इन्तिज़ार करो । हज़रत कअब फ़रमाते हैं कि मैं चला गया, बाद में मालूम हुआ कि मुरार: बिन रबीआ: और हिलाल बिन उमैय्य: जो बद्र की जंग में शरीक रह चुके थे, का मामला भी मेरी ही तरह है। वे दोनों घर में बैठ गए और रोते रहे और मैं बाहर जाता रहा लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलामानों को हम तीनों से बात करने से मना कर दिया था। इस लिए कोई व्यक्ति भी मुझ से बात न करता था । एक रोज़ बाज़ार से गुज़र रहा था कि एक व्यक्ति ने ग़स्सान के शासक का एक ख़त मेरे हवाले किया जिस में लिखा था कि आप के साथी ने आप के साथ ज़्यादती की है। अगर आप हमारे पास आ जाऐं तो हम आप का आदर सम्मान करेंगे। हज़रत कअब फ़रमाते हैं कि मैं ने उस ख़त को पढ़ा तो कहा यह भी एक परीक्षा है और उस ख़त को चूल्हे में झोंक दिया। जब चालीस रोज़ गुज़र गए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि अपनी पत्नी से अलग रहो। मैं ने उस से कहा कि मैके चली जाओ तब तक वहाँ रहो जब तक अल्लाह इस मामले में निर्णय न सुना दें । इस हाल में पचास दिन गुज़र गए जब कि मेरा जीना दूभर हो गया था। और ज़मीन मुझ पर तंग हो चुकी थी। सहसा एक पुकारने वाले की आवाज़ सुनी जो मुझे तौबा क़ुबूल हो जाने की ख़ुशख़बरी देने के लिए आया था। मेरे दोनों साथियों को भी लोग ख़ुशख़बरी देने के लिए पहुँच गए थे। मैं ने रसूलुल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो कर सलाम अर्ज़ किया तो आप का चेहरा ख़ुशी से जगमगा रहा था। आप ने मुझे ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाया कि आज का दिन तुम्हारी ज़िन्दगी में बेहतरीन दिन है। मैं ने कहा मेरी तौबा क़ुबूल हो जाने का तक़ाज़ा यह है कि मैं अपना तमाम माल सदक़ा के तौर पर भेंट कर दूँ। आप ने फ़रमाया बेहतर है कुछ अपने लिए रख लो। मैं ने अर्ज किया ख़ैबर वाला हिस्सा अपने लिए रख लेता हूँ । मैं ने फिर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल मुझे अल्लाह ने सच बोलने की वजह से मुक्ति दी, मेरी तौबा में यह बात शामिल है कि मैं जब तक ज़िन्दा रहूँगा सच के सिवा कोई बात न करुँगा। (बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी)

ध्यान रहे कि इन लोगों से बात करने की मनाही आम मुसलमानों को की गई थी वह एक मख़्सूस (Particular) मामला था जो इन लोगों के साथ किया गया। और यह सब कुछ अल्लाह की वह्य की रहनुमाई में अन्जाम पाया। इस लिए इस को किसी मुसलमान के सामाजिक बायकाट के लिए तर्क नहीं बनाया जा सकता । कमज़ोरियाँ तो दूसरे मुसलमानों से भी होती रहती हैं। और जिस ने कोई अपराध किया उसे सज़ा भी दे दी गई लेकिन बात न करने और सलाम का जवाब न देने का तरीक़ा किसी मामले में भी नहीं अपनाया गया है और यह दलील है इस बात की कि कअब् बिन मालिक और उन के साथियों के साथ जो मामला किया गया वह ख़ास (Particular) था और इस से सामाजिक बायकाट का उसूल निकालना सही नहीं।

दूसरी बात यह कि सहाबा से भी ग़लतियाँ हुई हैं और उन्हें माफ़ भी कर दिया गया है इस लिए न तो उन की पिछली ग़लतियों पर उन्हें बुरा भला कहा जा सकता है और न उन्हें ख़ताओं और ग़लतियों से मासूम ठहराया जा सकता है। और जब सहाबा मासूम नहीं तो इमामों के मासूम होने की धारणा जिस पर मुसलमानों के एक वर्ग को हठ् है किस तरह सही हो सकता है? क़ुर्आन से इस विचारधारा अथवा इस अक़ीदे का ग़लत (बातिल) होना बिल्कुल स्पष्ट है।

❖❖❖❖❖❖❖❖

और जो छोटा या बड़ा ख़र्च वे करते हैं और जो घाटी भी वे पार करते हैं, वो सब इन के हक़ में लिखा जाता है ताकि अल्लाह उन के अमल का उन्हें बेहतरीन बदला (इनाम) दे।(अल-क़ुर्आन)

119. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।[218]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾

120. मदीने के बाशिन्दों और उस के इर्द गिर्द बसने वाले बद्दूओं (देहातियों) के लिए उचित न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़ कर पीछे बैठ रहते और उस के प्राण से बेपरवाह हो कर अपने प्राणों की चिन्ता में लगे रहते।[219] यह इस लिए कि अल्लाह की राह में प्यास, थकान, और भूख की जो तकलीफ़ भी उन को पहुँचती है और काफ़िरों को क्रोध एवं रोष में लिप्त करने वाला जो क़दम भी वे उठाते हैं और दुश्मन को जो क्षति भी वे पहुँचाते हैं उस के बदले में उन के लिए एक नेक अमल लिखा जाता है।[220] अल्लाह उन लोगों का अमल नष्ट नहीं करता जो सुकर्मी हैं।

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ
اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ
نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ
وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ
الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ
عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

121. और जो छोटा या बड़ा ख़र्च वे करते हैं और जो घाटी भी वे पार करते हैं, वो सब इन के हक़ में लिखा जाता है ताकि अल्लाह उन के अमल का उन्हें बेहतरीन बदला (इनाम) दे।

وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ
وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾

122. और यह तो नहीं हो सकता था कि सब ईमान वाले निकल खड़े होते। मगर ऐसा क्यों न हुआ कि उन के हर गिरोह में से कुछ लोग निकल आते, कि वे दीन की सीख (समझ) हासिल करते और जब वापस जाते तो अपनी क़ौम के लोगों को ख़बरदार (सावधान) करते ताकि वे सचेत हो जाते।[221]

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ
فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا
قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ ع

123. ऐ ईमान वालो ! जंग करो उन काफ़िरों (सत्य का इन्कार करने वालों) से जो तुम से निकट हैं।[222] और चाहिए कि वे तुम्हारे अन्दर सख़्ती महसूस करें[223] और जान लो कि अल्लाह मुत्तकियों (परहेज़गारों) के साथ है।[224]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ
الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾

124. और जब कोई सूरह उतरती है तो[225] उन में से कुछ कहते हैं। इस ने तुम में से किस के ईमान को बढ़ाया? तो जो लोग ईमान रखते हैं उन के ईमान को इस ने ज़रुर बढ़ाया है।[226] और वे इस से बशारत (प्रफुल्लता) प्राप्त करते हैं।

وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ
زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

218. ऊपर जो घटनाएं बयान हुई हैं उन से स्पष्ट हुआ कि मुनाफ़िक़ों ने झूठ का सहारा लिया था जिस के नतीजे में निफ़ाक़ (पाखंड) की जड़ें मज़बूत हो गईं और उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ नसीब नहीं हुई। इस के विपरीत जिन मोमिनों से क़ुसूर हुआ था उन्होंने सच्चाई का दामन हाथ से जाने नहीं दिया इस लिए उन के अन्दर ईमान की भावना जागीं और उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई।

सच्चाई और ठीक बात कहने की इन बरकतों को देखते हुए आम मुसलमान को हिदायत की जा रही है कि सच्चे और ठीक बात कहने वालों के साथ हो जाओ अर्थात शुद्ध हृदय एवं ईश-भय रखने वाले मोमिनों के साथ मेल जोल रखो। उन का साथ अपनाओ, उन की संगत में रहो और दीन के लिए किए जाने वाले सामूहिक प्रयास में उन ही का समर्थन एवं अनुमोदन करो और मुनाफ़िक़ाना (पाखंड का) रवैया अपनाने वालों से बच कर रहो ।

219. तबूक की जंग से अकारण पीछे रह जाने वालों पर पिछली आयतों में जो कड़ी पकड़ की गई थी उस का वास्तविक कारण यह है जो इस आयत में बयान कर दिया गया है। अर्थात् जिहाद जैसे महत्वपूर्ण और नाज़ुक अवसर पर उन का अल्लाह के रसूल का साथ न देना और घर में बैठे रहना । रसूल तो अपनी जान जोखिम में डाल दे और वे अपनी जान बचाने के लिए पनाह की जगह ढूँढे।

220. अर्थात् जब जिहाद की यह महानता एवं श्रेष्ठता है कि क़दम क़दम पर इनाम समेटा जा सकता है और अपने दामन को आख़िरत की दौलत से भरा जा सकता है तो फिर इस राह की कोई तकलीफ़,तकलीफ़ नहीं रहती बल्कि सौभाग्य की प्राप्ति का साधन बन जाती है। और इस का मनोवैज्ञानिक पक्ष यह है कि आदमी को जब यह विश्वास हो जाता है कि वह फ़्लाँ घाटी को पार कर के अभीष्ट मूल्यवान मोती को पा सकता है तो फिर राह की कठिनाइयाँ और कष्ट उस के लिए कुछ नहीं रह जाते और वह कठिन से कठिन काम के लिए भी तैयार हो जाता है।

221. जो मुसलमान मदीना से दूर रहते थे उन के लिए नबी की सभा की उपस्थिति मुश्किल थी। और इस मुश्किल ने इन की पढ़ने सीखने के मामले में समस्या पैदा कर दी थी। एक तरफ़ इस्लाम का क्षेत्र रोज़ की रोज़ विस्तृत होता जा रहा था और दूसरी तरफ़ पढ़ने सीखने की कमी के कारण नाम मात्र के मुसलमानों की वृद्धि हो रही थी। इसी समस्या का हल इस आयत में पेश किया गया है और वह यह कि तमाम मुसलमान तो दीन का ज्ञान और उस की समझ प्राप्त करने के लिए मदीना नहीं आ सकते लेकिन हर बस्ती, हर क़बीले के लोगों में से कुछ लोग तो ऐसे निकल सकते हैं जो ज्ञान के केन्द्र में आ कर दीन का ज्ञान प्राप्त करें और उस में समझ पैदा करें और फिर वापस जा कर अपनी बस्ती या अपने क़बीले वालों को इस से परिचित करें ताकि उन में दीन की समझ पैदा हो और वे नाफ़रमानी और गुनाह की बातों से बचें।

इस से जो उसूली हिदायतें मिलती हैं वे यह हैं:

(A) दीन का ज्ञान बुनियादी महत्व की चीज़ है। लोग अगर शरीअत की सिमाओं (हुदूद) से अवगत न हों तो वे सही इस्लामी जीवन व्यतीत नहीं कर सकते। और अगर दीन की समझ न हो तो उन में गुनाहों की मनोवृत्ति एवं मानसिकता यहाँ तक कि कुफ्र और निफ़ाक़ (इंकार एवं पाखंड) भी पनप सकता है। इस लिए मुसलमानों में दीन के ज्ञान को फैलाने की ज़रुरत है।

(B) दीन के ज्ञान को फ़ैलाने के लिए हालात के अनुकूल कई तरीक़े अपनाए जा सकते हैं एक सूरत यह है कि शिक्षा दीक्षा एवं पढ़ाने सिख़ाने की संस्थाएं अथवा केन्द्र स्थापित किए जाएं और वहाँ सम्बन्धित क्षेत्रों के हर हिस्से से लोगों की एक तादाद पहुँच कर लाभान्वित हो और अपने स्थान पर पहुँच कर जन सामान्य को दीन की शिक्षाओं से अवगत करने का प्रयास करे।

मौजूदा ज़माने में यह काम मुक़ामी तौर से भी अन्जाम पा सकता है । उदाहरण के लिए मसाजिद में क़ुर्आन तथा हदीस की शिक्षा का सिलसिला, दिनी इजतिमाआत, मदारिस वग़ैरा ।

(C) दीन की शिक्षा एवं तरबियत की आवश्यकता बच्चों के लिए भी है और बड़ो के लिए भी। अत: बड़ो को नज़रंदाज़ कर के केवल बच्चों कि शिक्षा पर बस करना सही नहीं। आयत में अगर देखा जाए तो बड़ो में दीन की समझ पैदा करने की हिदायत की गई है।

(D) दीन की शिक्षा में वास्तविक महत्व तफ़क़्क़ुह अर्थात् दीन की समझ और सीख को है। यह उद्देश्य नाम मात्र की शिक्षा देने या बस फ़िक़्ही मालूमात (धार्मिक ज्ञान) उपलब्ध कराने से प्राप्त नहीं हो सकता। बल्कि इस के लिए ऐसी शिक्षा की ज़रुरत है कि आदमी अपने रब को पहचान ले। अपने जीवन लक्ष्य से परिचित हो जाए और यह बात उस के दिल में बैठ जाए कि दीन उस से स्वेच्छा पूर्वक अनुपालन की माँग करता है और इस्लाम यह है कि अपने आप को पूर्ण रुप से अल्लाह के हवाले कर दिया जाए। उसे यह मालूम होना चाहिए कि इस्लामी जीवन की रुप रेखा क्या हैं। शरीअत की बाँधी सीमाओं (हुदूद) की रक्षा का मतलब क्या है। तक़वा की वास्तविकता क्या है और क़ुर्आन ने किन लोगों को मुत्तक़ी (इश-भय रखने वाले) कहा है।

(E) पढ़ाने, समझाने और सिखाने का असल मक़सद लोगों को ग़ैर इस्लामी जीवन के कुपरिणामों से आगाह करना है। ताकि उन में आख़िरत की जवाबदेही का एहसास पैदा हो और सही इस्लामी जीवन गुज़ारने के लिए वे आमादा हो जाऐं।

(F) दीन की ठोस जानकारी और उस की समझ तभी पैदा हो सकती है जब कि क़ुर्आन को समझने की कोशिश की जाए।

(G) दीन की जानकारी के लिए अगर ज़रुरी हो तो सफ़र करना चाहिए ।

222. जिहाद से सम्बन्धित यह अन्तिम आदेश है जो मुसलमानों को दिया गया है। और इस से यह बात दिमाग़ में बिठाना अभिप्रेत है कि यद्यपि अरब पर इस्लाम का प्रभुत्व एवं सत्ता स्थापित हो गई है, लेकिन इस से मुस्लिम उम्मत की ज़िम्मेदारियाँ समाप्त नहीं हुईं । वह जिस उद्देश्य के लिए बरपा की गई है उस का तक़ाज़ा है कि जिहाद का सिलसिला आगे भी जारी रहे ताकि क्रमानुसार इस्लाम का सर्किल विस्तृत होता चला जाए। और वह एक प्रभुत्वशाली शक्ति बन जाए। इस का व्यवहारिक रुप यह होगा कि काफ़िरों का जो इलाक़ा या जो मुल्क इस्लामी राज्य से निकट और लगा हुआ हो उस से पहले जंग की जाए और उस के बाद इसी लिहाज़ से जो निकट हो उस से ।

यह आदेश सर्वथा स्वतंत्र एवं निश्चित है इस लिए रक्षात्मक युद्ध तक इसे सीमित रखने का कोई औचित्य नहीं। इस्लामी राज्य को अपनी परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार कार्रवाई करने का अधिकार है।

रईसुलमुफ़स्सिरीन अर्थात् क़ुर्आन के टीकाकारों के नायक इब्ने-जरीर तबरी ने भी इस को बिल्कुल स्वतंत्र अर्थ में ही लिया है। अत: वह फ़रमाते हैं:

''अल्लाह तआला के इस इर्शाद का मतलब यह है कि जगह के लिहाज़ से जो (काफ़िर) तुम से निकटतम हों उन से तुम पहले लड़ो, फिर उन से जो इस के बाद निकटतम हों। दूर के काफ़िरों से नहीं । उस समय इस आयत के संबोधकों से निकटतम रोमी थे क्यों कि वे सीरिया में आबाद थे और सीरिया मदीना से इराक़ की तुलना में अधिक निकट था।

(तफ़्सीर तबरी जिल्द 7 पृष्ट 52) और समकालीन टीकाकार सैयद क़ुत्ब फ़रमाते हैं:

'' इस आदेश में काफ़िरों के मुसलमानों पर ज़्यादती करने और देश पर ज़बरदस्ती एवं आतंकित करने के वास्ते हमला करने का कहीं वर्णन नहीं है और हमें मालूम है कि यह अन्तिम आदेश था जो इस दीन पर अमल दरामद को बुनियाद ठहराता है और इसी से जिहाद का उसूल निकला है। यह उन आदेशों की तरह है जो मदीना में इस्लामी राज्य के शुरु के चरणों से सम्बन्ध रखते थे, मात्र रक्षा (Defence) से सम्बन्ध रखने वाला आदेश नहीं है।

कुछ लोग जो आज इस्लाम के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और इस्लाम में जिहाद के आदेशों पर बहस करते हैं एवं वे जो जिहाद से सम्बन्धित क़ुर्आनी आयतों की तफ़्सीर से मुकरते हैं अथवा प्रतिरोध करते हैं चाहते हैं कि जिहाद से सम्बन्धित क़ुर्आन के इस अन्तिम स्पष्ट आदेश को उन आदेशों की तरह सीमित एवं सशर्त मानें जो पिछले चरणों से सम्बन्ध रखती हैं। और इस के लिए ज़्यादती करने के अपराधी होने या ज़्यादती करने की आशंका का प्रतिबन्ध लगाऐं हालाँकि क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश अपनी जगह सर्वथा स्वतंत्र है और जिहाद से सम्बन्धित वह अन्तिम स्पष्ट आदेश है।''

(फ़ी ज़िलालिल क़ुर्आन जिल्द 3 पृष्ट 1737)

यह आक्रमक युद्ध (Offensive War) इन्सानियत को जिहालत के अंधेरों से निकालने, मानव दासता को समाप्त करने और कुफ़्र के विनाश से मुक्ति दिलाने के लिए होती है। इस लिए इस में और मुल्क जीतने के लिए लड़ी जाने वाली जंग में ज़मीन आसमान का अन्तर है।

परवाज़ है दोनों की इसी एक जहाँ में
शाहीं का जहाँ और है करग़स का जहाँ और

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अन्तिम दिनों में उसामा बिन ज़ैद के नेतृत्व में जो लश्कर रोमियों के मुक़ाबले के लिए सीरिया की ओर रवाना किया था वह अल्लाह के इसी आदेश का अनुपालन था। और बाद में यरमूक आदि के जो संग्राम हुए वे भी इसी आदेश के अनुपालन में थे। अधिक व्याख्या के लिए देखिए नोट 57।

223. अर्थात् वे जान लें कि तुम काफ़िरों पर सख़्त हो और बातिल (असत्य) के आगे झुकने वाले नहीं हो। उन के मामले में तुम्हारे अन्दर ढीला पन नहीं होना चाहिए कि वे तुम्हें नर्म चारा समझने लगें बल्कि तुम्हारे अन्दर ऐसी दृढ़ता एवं कठोरता होनी चाहिए कि उन्हें अन्दाज़ा हो जाए कि यह लोहे के चने हैं जिन्हें चबाना आसान नहीं।

इसी हिदायत का असर था कि मुसलमान फ़ारस और रोम की महाशक्तियों के मुक़ाबले के लिए डट गए और न किसरा (फ़ारस के शासक) को ख़ातिर में लाए और न क़ैसर (रोमी शासक) को।

224. अत: काफ़िरों से जंग करते समय और उन के साथ सख़्ती का मामला करते समय तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए और यह सारे काम शरीअत की बाँधी सीमा में रह कर अन्जाम देना चाहिए ।

225. जिस तरह ऊपर की आयत अन्तिम आदेश था जो काफ़िरों के बारे में ईमान वालों को दिया गया उसी तरह इन आयतों में मुनाफ़िक़ों के बारे में आख़िरी बातें इर्शाद हुई हैं। उन मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) के बारे में जिन का वर्णन इस सूरह में विस्तार से हुआ है।

226. ईमान बढ़ाए जाने का मतलब ईमान के मनोभाव को बढ़ाया जाना है। इस की व्याख्या सूरह अन्फ़ाल नोट ३ में गुज़र चुकी ।

लेकिन जिन लोगों के दिलों में रोग है उन की गंदगी पर उस ने एक और गंदगी की वृद्धि कर दी। और वे इस अवस्था पर मरे कि काफ़िर (सत्य के इन्कारी) थे।(अल-क़ुर्आन)

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

125. लेकिन जिन लोगों के दिलों में रोग है उन की गंदगी पर उस ने एक और गंदगी की वृद्धि कर दी। और वे इस अवस्था पर मरे कि काफ़िर (सत्य के इन्कारी) थे [227]।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ
مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

126. क्या यह देखते नहीं कि ये हर साल एक या दो बार आज़माइश (परीक्षा) में डाले जाते हैं फिर भी ये हैं कि न तौबा करते हैं और न सबक़ सीखते हैं।[228]

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ
يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

127. और जब कोई सूरह नाज़िल होती है तो एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं कि कोई तुम को देख तो नहीं रहा है, फिर चल देते हैं।[229] अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए हैं क्यों कि ये ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ
مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾

128. तुम्हारे पास एक रसूल आ गया है जो तुम ही में से है [230] तुम्हारा दुखों में पड़ना उस के लिए असह्य है [231] वह तुम्हारी भलाई का बड़ा ही इच्छुक है [232] और ईमान लाने वालों के लिए ममतामय और दयाशील है।[233]

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

129. इस पर भी अगर ये लोग मुँह फेरते हैं [234] तो इन से कह दो मेरे लिए अल्लाह काफी है। उस के सिवा कोई ख़ुदा नहीं।[235] उसी पर मैं ने भरोसा किया और वह महान राजसिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

227. अर्थात् जिन के दिलों में निफ़ाक़ (पाखंड एवं कपट) का रोग था उन की इस आन्तरिक गंदगी एवं दृष्टता में नई सूरह के उतरने से वृद्धि ही हुई है। जिस व्यक्ति की आँख ही बीमार हो उस को सूरज की रौशनी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती बल्कि उस का रोग बढ़ने का ही कारण बनती है। ये मुनाफ़िक़ अत्यंत घृणित रोग में लिप्त होने के बावजूद अपने को स्वस्थ समझते थे। और जब उन्हें इलाज की ओर ध्यान दिलाया जाता तो वे अपने स्वस्थ होने का दावा करते। परिणाम यह कि वे क़ुर्आन से उस के स्वास्थ विधि होने के बावजूद कोई लाभ उठा न सके और सूरह ''बराअत'' जैसी ज़मीर को झंझोड़ने वाली सूरह से भी इन के अन्दर जागृति पैदा न हो सकी।

228. अर्थात् साल में एक दो बार कोई न कोई परीक्षा आती ही रहती है। कभी जिहाद के रुप में और कभी किसी और रुप में ताकि ये परीक्षाएं प्रायश्चित (तौबा) एवं सुधार का द्वार बनें किन्तु इन पाखंडियों के दिल इतने कठोर हो गए हैं कि इन्हें प्रायश्चित का दैवयोग (तौफ़ीक़) नहीं होता । और इन की बुद्धि चूँकि भ्रष्ट हो गई है इस लिए किसी घटना एवं दुर्घटना से वे सीख नहीं लेते।

229. मुनाफ़िक़ीन (पाखंडी लोग) अपने निफ़ाक़ अर्थात् पाखंड पर परदा डालने के लिए नबी की मजालिसों एवं सभाओं में शरीक तो होते थे लेकिन जब कोई ऐसी सूरह नाज़िल होती जिस में इन पाखंडियों को बेनिक़ाब किया गया है तो उन के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगतीं और वे अपने साथियों से इशारे में कहते कि तुम को इस हाल में कोई देख तो नहीं रहा है और फिर मौक़ा पा कर निकल जाते। उन की इसी दशा का चित्रण इस आयत में ख़ींचा गया है।

230. ये आख़िरी दो आयतें क़ुर्आन के नाज़िल होने अर्थात् उतरने की दृष्टि से सिवाय सूरह ''नस्र'' के अल्लाह का आख़िरी कलाम हैं जिन में विदा संदेश दिया गया है। रसूल की नियुक्ति यद्यपि प्रत्यक्ष रुप से अरब वासियों की ओर हुई थी मगर अप्रत्यक्ष रुप से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत क़ियामत तक की तमाम क़ौमों के वास्ते है।

''तुम ही में से है'' का एक मतलब तो यह है कि रसूल अरब वासियों ही में से है और दूसरा मतलब यह है कि वह इन्सानों ही में से है। इस लिए सारे इन्सान सरलता पूर्वक उस से परिचित हो सकते हैं और उस से घुल मिल सकते हैं। किसी भी क़ौम को उस से क़रीब होने में अजनबियत महसूस नहीं करना चाहिए। रसूल अल्लाह का संदेष्टा होता है इस लिए उस के साथ अपनाइयत बरतने में मुल्क और क़ौम (देश एवं राष्ट्र) की दीवारें आड़े नहीं आनी चाहिएं।

231. अर्थात् यह तमाम इन्सानों के लिए सहानुभूति रखने वाला दिल रखता है इस लिए तुम को विनाश से बचाने के लिए बेचैन है और यह कल्पना भी उस के लिए अत्यंत दुखदायिनी है कि तुम नर्क में कभी न समाप्त होने वाली सज़ा भुगतने के लिए झोंक दिये जाओ।

232. अर्थात् वह मानवता का शुभ चिन्तक है। और चाहता है कि तुम भलाई की राह अपना कर अपने दामन को नेकी और भलाई से भर लो और अखिरत में सफ़ल हो जाओ।

233. ईमान लाने वालों में अरब वासी भी थे और ग़ैर अरब वासी (अजमी) भी, और पैग़म्बर इन सब के लिए स्नेही एवं दयालु थे। सुहैब रोमी, सलमान फ़ारसी, और बिलाल हब्शी सब नुबुव्वत के दीप के परवाने थे और आप का फ़ैज़ (सुप्रभाव एवं भलाई) क़ौम और वर्ग के मतभेदों के बग़ैर सारे ईमान वालों के लिए आम था।

234. अर्थात् इस शान का जो रसूल इन की तरफ़ भेजा गया है उस का यदि लोग आदर एवं सम्मान नहीं करते और उस पर ईमान लाने से इन्कार करते हैं तो.....

235. यह आख़िरी बात है जो रसूल की ज़बान से कहलवाई गई है। इस में तौहीद के साथ सम्पन्नता एवं विश्वास (इस्तिग़ना और तवक्कुल) की शान की अभिव्यक्ति है। रसूल ने दअवत (आह्वान) की शुरुआत तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद से की थी और विदा संदेश में भी तौहीद ही को पेश किया है।

शब्द सूचि (Index)
(पृष्ट नं.)

(अ)

अल्लाह
--- अल्लाह शब्द की व्याख्या 3
--- को मानने का मतलब 21
--- का रंग अपनाना 60
--- के हकीम (तत्वदर्शी) होने का मतलब 22,24
--- से मुहब्बत और उस का मतलब 76,179
--- के एक मात्र उपास्य होने का मतलब 165
--- आसमान और ज़मीन का मालिक 218
--- सत्ता का मालिक 175
--- से वफ़ादारी हर चीज़ पर सर्वोपरि है 285
--- से वफ़ादारी ख़ाक और ख़ून की वफ़ादारी पर हावी है 295
--- आकृति देने वाला 167
--- स्वयं स्थापित 165
--- की तरफ़ से ख़ैर अर्थात् भलाई 287
--- की बनाई हुई आकृति में परिवर्तन 307
--- की गवाही 171,431
--- को मज़बूत पकड़ना 205
--- का समीप किन लोगों को प्राप्त होगा 331
--- को पा लेना 331
--- की रस्सी 205
--- मुर्दों से ज़िन्दा को और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालने वाला 176,451
--- मालिकुलमुल्क 174
--- को हुक्म देने का कुल अधिकार 335
--- का ज्ञान 337
--- की शान में गुस्ताख़ी करने वाला 381
--- की रहमत 437
--- ज़मां और मकां (Time & Space) का मालिक 427
--- के कलिमों में परिवर्तन नहीं 435
--- की सुन्नत अर्थात् नियम 437
--- को पुकारने का मतलब 535
--- दाने और गुठली को फाड़ने वाला 464
--- के लिए पाकी 467
--- की आयत (देखिए आयाते-इलाही)
--- का हक़ 489
--- ने आसमान और ज़मीन को ६ दिनों में पैदा किया 525
--- अर्श (राजसिंहासन) पर बिराजमान 525
--- को पुकारना भय और आशा के साथ 526
--- से मदद मांगना 552
--- का मूसा से कलाम (बात) करना 557
--- के लिए अच्छे नाम 579
--- ही को क़ियामत का ज्ञान है 583
--- पर भरोसा 597
--- से डरना 646
--- की राह से रोकना 623
--- की औलाद होने की ग़लत धारणा 623
--- की प्रसन्नता 650
--- का प्रकोप 380

अल्लाह का अज़ाब
--- अचानक आ सकता है 500,501,506
--- से निर्भीक होने वाली बस्तियाँ 520,521

अल्लाह की किताब
--- के एक हिस्से से कुफ़्र करना अर्थात् न मानना 42
--- में विभेद करना 80
--- तमाम किताबों पर ईमान 10,168
--- कि प्रकाशना अर्थात् वह्य 87
--- कि तरफ़ दअवत 170
--- को बेचने वाला 236
--- के अनुसार फ़ैसले करना 300
--- हक़ की कसौटी 280
--- रोशन किताब 234
--- को उस के वास्तविक जगह से हटाना 368
--- को मज़बूत थामना 570
--- में रद्दोबदल करना 570

अल्लाह की चर्चा (देखिए ज़िकरे-इलाही)
अल्लाह की राह में ख़र्च (देखिए इन्फ़ाक़)
अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता)
अल्लाह के गुणों की बहुदेववादी धारणा 579, 580
अल्लाह कि सुन्नत 218, 219
अल्लाह से सम्बन्ध (देखिए तअल्लुक़ बिल्लाह)
अंधानुकरण (देखिए तक़लीद)

अन्सार 696,697,708,709

अक़ायद
ग़लत अक़ायद पर जमे रहना हठधर्मी है 318
अक्सरियत हुज्जत नहीं 473,474
--- अक्सरियत का हाल 392
--- अक्सरियत को आदेश देने का अधिकारी समझना 375

अतिश्योक्ति (देखिए ग़ूलू)
अद्‌ल (न्याय) 344,514,515
अद्‌ल की धारणा 2,5
अधर्म 498
अधर्म प्रिय मुस्लिम 498
अन्फ़ाल 593
अबूज़र 664
अबूजेहल 595
अबूबक्र 639
अबूसुफ़ियान 694
अमानत
--- का मतलब 278
--- हक़दारों के हवाले करना 278,279
अम्र बिलमारुफ़ व नही अनिलमुन्कर 204,208
--- मारुफ़ से अभिप्रेत 205
--- मुन्कर से अभिप्रेत 206
--- हर मुसलमान का दायित्व 205
--- ख़ैर- उम्मत की विशेषता 209
--- ज़िम्मेदारियाँ 407
अय्यामे-तश्रीक़ 103
अय्यूब 456,457
अरब देहाती 692,693,696,697
अर्श पर बैठने का मतलब 525
अली 639,664
अहद
---का उल्लंघन 45,194,198,136,622,625
--- को पूरा करो 496
--- प्रकृतिक से 543
अहले किताब
--- के मतभेद 170,373
--- की विमुखता 174
--- की मांग 318
--- को दअवत 190,191,192,193,274
--- का सत्य को छिपाना 194
--- का अल्लाह की आयतों से इन्कार 194,204
--- की साज़िश 194,270,272
--- का अल्लाह की तरफ़ झूठ मन्सूब करना 194,196,274
--- का विश्वासघात (ख़ियानत) 194
--- द्वारा किताब में काटछाँट 194,353
--- का टेढ़ पैदा करना 204
--- का आयत को थोड़ी क़ीमत पर बेच देना 236
--- में सत्यप्रिय गिरोह 194,208,205,239
--- का ज़बीहा 340,341
--- की पाक दामन औरतों से निकाह 340,342
--- से जंग 654,656,657
--- से जिज़्या लेने का आदेश 654

(आ)

आंतरिक पवित्रता 498
आख़िरत
--- से तात्पर्य 13
--- पर तर्क एवं प्रमाण 5,6
--- पर ईमान 650
--- में पूरा पूरा अज्र (बदला) 232
--- कर्म फ़ल का क़ानून 307
--- में हिस्सा 232
--- की निजात (मुक्ति) 201,306
--- को अपना लक्ष्य बनाना 311
--- का मुक़ाबले में सांसारिक जीवन के सामान 666
--- का इन्कार करने वाले 748
आख़िरी नबी 53
आज्ञा देने के अधिकारी (देखिए उलिल अम्र)
आत्महत्या हराम है 94,96
आद 528,530,684
आदम 22,23,24,26,27,510,511
--- से इन्सान की पैदाइश 242,243
--- हव्वा की पैदाइश 242,243
--- की जन्नत 22,24
--- अस्मा से मुराद 23
--- को सजदा करने का हुक्म 22,24,508
--- की तौबा 26,510
--- की भूल 22,25
--- के दो बेटों का क़िस्सा 357,338,356
--- की सतर पोशी 510
--- आदम की संतान (देखिए बनी आदम)
आयाते इलाही
--- का अर्थ 27
--- को न बेचना 28
--- निरस्त होने का मतलब 53
--- आयतुल कुर्सी 140,141
--- का इन्कार 168,194,278
--- की हर चीज़ में निशानी 261
--- का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो तो वहाँ न बैठना 322,323
--- को झुठलाना 344,434,436,448,500, 516,519,578
--- के बदले तुच्छ क़ीमत 642,643
आराफ़ (अअ्राफ़) 522,523
आरोप लगाना 302,303
आर्थिक ख़ुशहाली का आधार 543
आर्थिक तंगी में मुब्तिला करने की मसलहत 538
आलमे-बर्ज़ख़ 146
आले-इब्राहीम 178,179,180,275
--- को किताब और हिकमत 271
--- की विशाल सल्तनत 271
आले इमरान 178,180
इमरान बिन मातान 178,179
आवागमन 568
---एक ग़लत सिद्धान्त 568
आस्था से जुड़ी गुमराहियाँ

---- ईसाईयों की आस्था का खण्डन कि गुनाहों को बख़्शने का अधिकार चर्च को है। 219
आवहान और प्रचार (देखिए दअवत-व-तबलीग़) 140,142

(इ)

इन्साफ़
--- के निगराँ 248
--- पर क़ायम रहने की हिदायत 310
--- के साथ फैसला करना 368
--- बेलाग़ बात कहना 496,498

इन्सान
--- की असल हैसियत 24
--- को पैदा करने का मक़सद 24
--- की ख़िलाफ़त 503
--- कमज़ोर सृष्टि (मख़्लूक़) 264
--- ज़मीन में इख़्तियार का दायित्व 508,509
--- की पैदाइश 422,423,508,509
--- की पैदाइश एक जान से 466,468
--- की मरने के बाद समाप्ति नहीं होती 447

इन्सानी नस्ल की वृद्धि

इज्तिहाद एवं क़ियास 284

इद्दत 120,121,124,127

इनाम पाने वाले लोग 2

इनाम की व्याख्या 335

इनजील
--- और बाइबिल का फ़र्क़ 166
--- में काट छाँट और परिवर्तन 189
--- को क़ायम करने का मतलब 385
--- में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भविष्य वाणियां 574,575,576
--- में तौहीद (एकेश्वरवाद) का हुक्म 662

इन्फ़ाक़ 201,578,624,625,626
--- दिखावे के लिए करना 266,267
--- अल्लाह की निकटता का साधन 328,329
--- को तावान समझना 696,697
--- का मतलब 140
--- सहायता का असल हक़दार 152,153

इबादत 5
--- अल्लाह ही की करो

इब्राहीम
--- और ख़ान-ए-काबा का निर्माण 59,202
--- का दीन 63
--- की क़ौम 684
--- की हुज्जत 145,148,149,456,457
--- की संतानों की दो शाख़ें 27
--- अल्लाह का सच्चा दोस्त 307
--- का तरीक़ा 502,503
--- की अपनी क़ौम से वार्ता 452,453,454,455
--- का अपने पिता को हक़ की दअवत देना 452
--- का अपने बाप के लिए क्षमा याचना 708,709

इब्राहीम की संतान (देखिए आले-इब्राहीम)

इब्लीस 24
--- की मन्तिक़ 488,489

इल्हाम 414,415

इल्यास 456,457

इश्क़ लड़ाना 497

इस्तिग़फ़ार
--- गुनाह कर बैठने पर तुरंत माफ़ी मांगना 218
--- क़ुबूल होने का समय

इस्माईल 198,237,456,458
--- और ख़ाना-ए-काबा का निर्माण 59
--- बनी इस्माईल 27,59

इस्राईल 200,201
--- याक़ूब का लक़ब 27,457

इस्लाम 334,451,458,498
--- का अर्थ 61
--- में पूरी तरह प्रविष्ट होना 106
--- का दंड संहित का विधान 364,365
--- की ज़िन्दगी का तरीक़ा 6
--- असल दीन 171
--- ख़ैर ही ख़ैर (भलाई ही भलाई) 206
--- कायनात का दीन 199
--- के एक मात्र सत्यधर्म होने का प्रमाण 199
--- किसी एक नस्ल या गिरोह का दीन नहीं 199
--- हवारियों का दीन 414,415
--- के लिए सीने का खुल जाना 480,481
--- के सिवा कोई दीन मान्य नहीं 199

इस्लामी क़ानून की सीमा (देखिए हुदूद)

इस्लामी राज्य

इस्लामी समुदाय (देखिए मिल्लते-इस्लामिया)

इस्हाक़ 198,320,456,457
--- इब्राहीम के बेटे 457

(ई)

ईद 414,415
--- ईदुल फ़ितर 88

ईमान
--- वही मान्य है जो शिर्क से पाक हो 457
--- के साथ कुफ़्र करना 340
--- लाने का मतलब 12
--- लाने की दअवत 312
--- में वृद्धि 596
--- ईमान वाले 190,191
--- धैर्यवान 170
--- सत्यनिष्ट 170
--- आज्ञाकारी 170
--- अल्लाह की राह में ख़र्च (इन्फ़ाक़) करने वाले 170
--- तहज्जुद के समय अल्लाह से गिड़गिड़ाने वाले 170
--- अल्लाह की राह में लड़ने वाले 170
--- पक्के ईमान वाले बन जाएं 170

--- का अन्जाम 170

ईमान वालों का मार्ग छोड़ कर अन्य राह अपनाना

ईला का आदेश और उस की व्याख्या 121

ईश-भय (देखिए ख़ुशुअ्)

ईश-भय रखने वाले (मुत्तकी) कौन है 10,12 670,671

''ईश्वर के सिवा कुछ नहीं''

(हम:औस्त) की धारणा 423

ईसा (अलैहिस्सलाम) 44,45,60,61,63,186, 187,188,190,191,326,353,37

---कलिमतुम्मिनल्लाह 186,187,328

--- के ख़ुदा होने का खण्डन 321,328,348,388

--- अल्लाह की ओर से एक रुह 328,329,389

--- का पालने में बात करना 186,187

--- का जन्म असाधारण विधि पर 186,323,410

--- की दुआ माइदा (खाने की थाल) उतारने के लिए 414

--- को अल्लाह का बन्दा होने से शर्म और फ़रार नहीं 328

--- शब्द इब्ने मरयम उस के बिना बाप के होने पर प्रमाण है 187

--- के चमत्कार 186,188,410,411

--- के क़ब्र से उठ खड़े होने का क़िस्सा

--- की पुकार 188,189

--- का आख़िरी खाना 415

--- का क़ब्ज़ करना अर्थात समय पूरा होना 190

--- का उठाया जाना 190,322,323,415

--- का अनुपालन करने वालों का ग़लबा 189

--- मुत्वफ़्फ़ी की व्याख्या 189

--- दीन इस्लाम के साथ आना 189

--- का अल्लाह को अपना रब कहना 189

--- का पुन: अवतरण नये नबी की हैसियत से न होगा 324

--- को क़त्ल नहीं किया गया न सूली पर चढ़ाया गया 324

--- की मौत से पहले अहले-किताब का ईमान लाना 320,323

--- ईसा का नाज़िल होना 323,324

--- ईसा के नाज़िल होने के बाद इस्लाम और केवल इस्लाम होगा 323

--- का दज्जाल को क़त्ल करना 323

--- के उठाए जाने के बाद ईसाईयों ने अजीब फलसफ़ा गढ़ा 322

--- त्रीश्वरवाद स्वरचित अथवा मनगढ़ंत धारणा 329

--- अल्लाह की इबादत का हुक्म दिया था 418

--- केवल रसूल थे 388,389

--- की ज़बान से लानत 392

--- के हवारी अथवा साथी 414

(उ)

उज़ैर (अलैहिस्सलाम)

उत्तरधिकारी (देखिए वारिस)

उत्तेजनात्मक बातों से प्रभावित न होना 588

उमैया बिन ख़लफ़ 394

उम्मत

--- उम्मते-वाहिद: 108

--- उम्मते-वस्त 67

--- उम्मते-मुस्लिम: 59

--- उम्मते-मुस्लिम: की दुआ 162

--- उम्मते-मुस्लिम: को आस्तित्व में लाने का मक़सद 345

--- के लिए सबक़ 349

उम्मी

--- शाब्दिक अर्थ 172

--- बनी इस्माईल उम्मी थे 172

--- उम्मियों के बारे में यहूदियों की सोच 175

उम्मुल क़ुरा (मक्का) 460

उलमा और मशाएख़ (पंडित और संत)

--- को रब बनाना 660,661

--- का अन्धानुसरण 661

--- का ग़लत तरीक़े से माल खाना 660,661

--- का अल्लाह की राह से रोकना 660,663

उलिमा- अम्र (आज्ञा देने के अधिकारी)

--- से मुराद 280

--- की आज्ञा पालन का आदेश 280

--- से मतभेद का अधिकार 280

--- तक ख़बरें पहुँचाना 288,289

--- इमाम (लीडर) के मासूम होने की ग़लत धारणा 280

--- लादीनी (अधर्मी) हुकुमत पर लागू करना सही नहीं 280

--- के मन्सब (पद) के लिए अनुकूल लोग 289

उशर 489

उहुद

--- के लिए रवानगी 213

--- का स्थल 214

--- जंग की तारीख़ 213

--- में मुसलमानों और काफ़िरों की तादाद 213

--- पहाड़ का नक़्शा 214

--- का चित्र 215

--- फ़रिश्तों द्वारा मदद 212

--- मुसलमानों को ज़ख़्म 218,220

--- मुसलमानों से कमज़ोरियों का सादिर होना 224,225,226

--- मदद के वादे का पूरा होना 222,223,225

--- शहीदों की तादाद 229

--- काफ़िरों को खदेड़ना 234

ऊ

ऊँट

(ऋ)

ऋग्वेद और सृष्टा की धारणा 423

(ए)

एकेश्वरवाद (तौहीद) की कल्पना

और बहुदेववाद का खण्डन 18,19,54,74,75,140,141
161,190,202,236,237,271,464,465
--- एकेश्वरवाद की दलीलों की व्याख्या 75,77
--- हलाल और हराम ठहराने का हक़ 79,80
--- वहम, अंधविश्वास और ग़ैरशरअी पाबन्दियां 79
--- के तर्क 44,441,448,454,455,456,457,464,465
--- फ़ितरत का अहद है 575
--- के मामले में हर व्यक्ति ज़िम्मेदार है 576
एतिकाफ़ 58,90,91
एहराम 334,335
एहसान
--- का मतलब 223
(ऐ)
ऐला (अक़्बा) 567,569
(औ)
औरत 266,267,270,306
--- के अधिकार 120,121
--- जाहिलिय्यत के ज़माने में जायदाद से वंचित 247
--- मर्दों का दर्जा 121
--- की गवाही 158
--- की मानसिकता (Psychology) 159
--- को खेती कहने का अर्थ 116,117
--- को इस्लाम ने उत्तराधिकारी बनाया 247
--- औरतों का ज़बरदस्ती उत्तराधिकारी बन जाना 256
--- इद्दत के बाद आज़ाद है 258
--- को माल देने के बाद वापस न लेना 256
--- बदचलनी की सूरत में कष्ट देना 256,258
--- जिन औरतों से निकाह हराम है 260,261
--- मर्द औरत में पैदाइशी लिहाज़ से समानता नहीं है 267
--- मर्द औरत के सरबराह 266,267,268
--- नेक औरतें कौन हैं 266,267,268
--- समानता का विकृत दृष्टिकोण 266
--- का मर्द जैसा बनना 307
औलाद
क़ियामत के दिन काम नहीं आएगा 168,210
औलिया परस्ती 483,583
(क)
कंज का अर्थ 664
कअब बिन उशरफ़ 283
कअब बिन मालिक 710,713
क़त्ल 266,267,496,497
--- ग़लती से हो जाने वाला क़त्ल 292,293
--- जान बूझ कर किया जाने वाला क़त्ल 292,293
--- नबियों का क़त्ल 384,386
क़त्ले औलाद
--- देवी देवताओं अथवा पूज्यों पर भेंट चढ़ाना 484,485
--- ग़रीबी के डर से 496,497
कफ़्फ़ारा का अर्थ 397
क़बीला
--- ख़ज़्रज 213
--- औस 213
--- अबू ग़तफ़ान 293
--- बनी ख़ज़ीमा 293
--- हवाजन 655
--- सक़ीफ़ 655
क़ब्र परस्ती 485
क़मरी महीने
--- की विश्वस्नीयता 660,665
--- के नाम 665
--- के महीनों में परिवर्तन की मनाही 666,667
करामतें दिखाना 435
क़र्ज़ का लेन देन 158
--- क़र्ज़दार के लिए मोहलत 156
--- की दस्तावेज़ 158
कलिमा पढ़ने वाले को काफ़िर न कहना 295
क़समें 116,117,410,411
--- क़सम का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) 396,497
--- तोड़ना 646,647
--- झूठी 670,674,680
--- क़सामा 39
क़सास 368,370
--- का मतलब 84
क़ादियानियत का फ़ितना 324
क़ानून
--- कर्म भोग का क़ानून 161
--- अल्लाह के क़ानून की पाबन्दी 264,265
--- नये सिविल कोड के नाम पर ग़लत क़ानून 265
--- अल्लाह के क़ानून के अनुसार फ़ैसला करना 368,369
काफ़िर 334,385,414,632
--- का अन्जाम 168,210,231,286,326,360,362,364,366
600,601,640
--- को दोस्त न बनाने का मतलब 174,175
--- माफ़ नहीं किये जाएंगे 326
--- बदतरीन जानवर 622,623
--- काफ़िरों से जंग का हुक्म 712,714
काबा 402,403
कायनात
--- उद्देश्य रहित नहीं 451
--- की मन्सूबा बन्दी 464
किताबे-इलाही
--- के एक हिस्से से कुफ्र करना 42
--- में मतभेद करना 78
--- तमाम किताबों पर ईमान 10,168
--- अल्लाह की वह्य 83
--- की तरफ़ दअवत 170
--- को बेचने वाले 236
--- के अनुसार फ़ैसले करना 300
--- हक़ की कसौटी 280

--- रौशन किताब 234
--- को उस के वास्तविक संदर्भ से हटाना 364
--- को मज़बूत थामना 570
--- में परिवर्तन अथवा काट छाँट करना 38,39
क़िताल फ़ि सबीलिल्लाह 94,95,96,112,132
क़िबला 66,67,70,71,69,98
क़ियामत 4,42,54,55,78,140,236,300 422,423,426,427,433,436,482,483
--- सब को जमा किया जाएगा 174,178,290
--- के दिन पूरा पूरा बदला 234
--- के दिन ईसा गवाही देंगे 326
--- कब आयेगी 582
--- के आसार 583
कुफ़्र
--- की हक़ीक़त 24
--- की हालत में मरना 200
--- के साथ सांठ गांठ 107
--- ईमान लाने के बाद कुफ़्र 198,208
--- क्षमा न किया जाने वाला गुनाह 329
--- की दो शक्लें 313,315
--- अल्लाह और रसूल के बीच फ़र्क करना 316
कुरा अन्दाज़ी 187
क़ुर्आन
--- अल्लाह की किताब 218,330,333,348,350,372,402 423,433,445,447,580,473
--- आरम्भिक आयत 3
--- के हिदायत होने का मतलब 11,12
--- का चैलेन्ज 18,19
--- के अवतरण का उद्देश्य 506,507
--- की असल दअवत 19
--- की महानता के पहलू 19
--- के नाज़िल होने की शुरुआत 86,88
--- सत्य ग्रंथ 166
--- पिछले ग्रंथों की पुष्टि 164
--- फ़ुर्क़ान अर्थात कसौटी 164,166
--- में मुहकम एवं मुतशाबिहात 165,166
--- शब्दों के साथ उतरा 165
--- हिकमत भरा ज़िक्र 190
--- पर केन्द्रित होना 205
--- जब पढ़ा जा रहा हो तो ध्यान से सुनना 590,591,592
--- नूर 562
--- हिदायत और रहमत 522,523
--- के बेहतरीन भावार्थ का अनुपालन करना 559
--- इमाम जब आवाज़ के साथ पढ़ (जेहरी क़िर्अत कर) रहा हो तो ध्यान के साथ सुनना 591
--- की पैरवी 506,507
--- डराने और समझाने के लिए क़ुर्आन को प्रत्यक्ष रुप से प्रस्तुत करना 445
--- को क़ायम करना 384,385
--- के अनुसार फैसला करने का हुक्म 375
--- की कोई आयत मन्सूख़ अर्थात् निरस्त नहीं 257
--- संपूर्ण ग्रंथ 273
--- हक़ की कसौटी 280
--- पर ग़ौर करने की दअवत 288,289,291
--- के अल्लाह के कलाम होने की दलील 286,287,288,289
--- पर ग़ौर करने से हिकमत के दरवाज़े खुलते है 289
--- केवल आलिमों के लिए नहीं 289
--- बुलन्दी प्रदान करने वाला ग्रंथ 576
--- मात्र रटने के लिए नहीं 571
--- का प्रभाव 392,394
--- अरब और अजम अर्थात अरब और ग़ैर अरब सब के लिए
--- ज्ञान ध्यान बढ़ाने वाला ग्रंथ 431
--- सत्य का मेयार (कसौटी) 373
--- से ग़ैर मुस्लिमों को परिचित कराना 642, 643
--- बरकत वाली किताब 460,461,500,501
--- नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार 270,271
क़ुर्बानी
--- अल्लाह के लिए 502
--- के जानवर 98,99,334,335,402,403
--- सोख़्ती क़ुर्बानी 234,235
--- केवल मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) की क़ुर्बानी क़ुबूल 356,357
--- प्राचीन काल से 357
कौआ 356
क़ौम
--- लूत की क़ौम 685
--- क़ौमों के उत्थान और पतन का नियम 623
--- क़ौम जिस से संधी हो चुकी हो 632
--- क्षमा याचना (देखिये इस्तिग़फ़ार) 218
(ख)
ख़ज़ाअः 647
ख़बरदार करने का मतलब 10,13
ख़बीस (अपवित्र) जानवर 493
ख़लीफ़ा 22,23,24,27,502,504
--- का अर्थ 23
ख़ियानत 300,301,606,607
ख़िलाफ़त
--- इस्लामी ख़िलाफ़त 138
--- ज़मीन की ख़िलाफ़त 22
ख़ुदा का दर्शन
--- इन्सान नहीं कर सकता 556,557
--- इस मक़सद के लिए सुफ़ियों के परिश्रम और योगियों के योगासन बेकार हैं 557
ख़ुद्दारी 152
ख़ुलअ् (औरतों का तलाक़ अधिकार) 120
ख़ुशहाली और बदहाली 540,541
ख़ुशू 22
ख़ून 334,492,493
ख़ूनी नातेदार 632, 633,606
खेती में ग़ैरुल्लाह का हिस्सा 484,485

(ग)
ग़रीबो की मदद 82
गर्व करने वाले 270,271
ग़लबा (विजय)
--- ग़लबा-ए-दीन (दीन का वर्चस्व) 96
--- ग़लबा की दुआ 96,160,162
--- छोटे गिरोह का ग़ालिब आना 136
--- ईमानवाले ग़ालिब रहेंगे 218,219
--- काफ़िरों के दिलों में रोब 222,223
--- अल्लाह की मदद का सशर्त होना 223
गाना
गाय 497
--- ज़ब्ह (बध) करने का हुक्म 36, से 37
--- गऊ पूजा 39,46,47
--- बछड़ा 318,558,559
--- गाय बैल 488,489
--- भैंस 490
गुनाह 518,519
--- के कामों में सहयोग न करना 334,336
--- खुले और छिपे 476,477
--- बड़े गुनाहों (कबीरा) से मुराद 267
गुमराह करने वाले पेशवा 76
''गुमराह लोग'' की व्याख्या (देखिए ज़ाल्लीन) 77
ग़ुलाम
--- ग़ुलामी से आज़ाद करना 82,83,292
--- ग़ुलामी के रिवाज का ख़ातिमा
--- औरत (बाँदी) से सम्बन्धित इस्लाम के आदेश 271
--- उन को ईमान की दौलत का नसीब हो जाना 262
--- के साथ व्यवहार 261,271
--- से आज़ाद होना चाहते हों उन से लिखित संप्रतिज्ञा
ग़ुलू 329,392
ग़ुस्ल का हुक्म 340,343
ग़ैब 10,11,12
--- का मतलब 12
ग़ैर इस्लामी व्यवस्था में विवशता 498
ग़ैरुल्लाह की उपासना 388
--- ग़ैरुल्लाह के लिए खोखले लक़ब ''मुश्किल कुशा'' आदि 431
(घ)
घमण्ड करने वाले 270,271
(च)
चमत्कार (देखिए मोज्ज़ा)
(ज)
ज़करिया 182,183,456,457
ज़कात 42,52,156,286,320,378,379,560
638,642,650,684
--- इस का स्थापित होना अभीष्ट लक्ष्य 287
--- अदा करने वाले 320
--- की मदों (मसारिफ़) की व्याख्या 674, से 679
जन्नत 22,27,38,42,108,238,250,306
344,382,384,396,418,518,636,684,692
--- ख़ास वृक्ष 22,25
--- आदम और हव्वा को उस से उतरने का हुक्म 22
--- में पाकीज़ा बीवियां 170,292
--- अल्लाह की ख़ुश्नूदी (प्रसन्नता) 170,171
--- अल्लाह की विशालता 218,219
--- में घनी छांव 278
--- की सोसाइटी 285
--- किस पर हराम है 388
--- सलामती का घर 480,481
--- जन्नत और दोज़ख़ वालों की बात चीत 520,521
ज़बूर 326,327,393
ज़बीहा
--- ज़ब्ह (क़ुर्बानी) करने का मतलब 336
--- ग़ैरुल्लाह के नाम का 334,492,493
--- स्थान का 337
--- बुज़ुर्गों के नाम का 337
--- मशीन का ज़बीहा 342
--- को इलेक्ट्रिक शाक 336
--- जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो 476,477,484
--- पर अल्लाह का नाम लेने की हिकमत 477
ज़मीन
--- पर फ़साद 632
--- का मतलब 17
--- बरपा करने वालों के लिए सज़ा 361
--- ज़मीन में चल फ़िर के देखना 360
जम्हूर
--- हुज्जत (कसौटी अथवा तर्क) नहीं 474
--- को हुक्म देने के योग्य समझना 335
ज़रतुशतों के यहाँ ईश्वर की कल्पना 423
जहन्नम (नरक) 388,396,480,518,519,520,680
686,688
--- का निचला वर्ग 316
--- की राह 326
--- में मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जमा किया जाएगा 314
--- आग का ईंधन 168
--- से बचने की दुआ 182
--- बुरा ठिकाना 168,228,238,302,306
--- की भड़कती आग 216,432
--- में खालें पक जाएंगी 278
जादू 46,49
जादूगरों का ईमान लाना 548,549
जान को बचाना बहुत बड़ी नेकी 360,361
जान निकलने का वक़्त 464,465,518,519
जानदारों की जानें 437
जानवरों की उम्मतें (क़िस्में) 436,437
जानवरों को ग़ैरुल्लाह के नाम पर छोड़ना 406,407
ज़ालिम 198, 222, 368, 374
जालूत 132,134,136

ज़ाल्लीन की व्याख्या 6,7
जाहिलिय्यत का फैसला 374,375
ज़िक्र-इलाही 398,399,400
--- सुबह और शाम 590,592
--- तस्बीह घुमाना 592
--- की हक़ीक़त 592
--- किस तरह मतलूब (अभीष्ट) है 592
जिज़्या का मतलब 656
ज़िना 256,257,264,265,497
जिन्न 466,467,468,482,578,579
जिब्त
--- अंधविश्वासों एवं ख़ुराफ़ात पर विश्वास रखने वाले 274
--- से मुराद 274,276
--- ज्योतिष, फालगीरी, अपशगुन, जादू 274,275,276
जिब्रील 45,46,47,67
जिहाद 42,220,284,285,288,289,294,295
632,633,646,650,651,688,692,693,712,713
--- करने वाले 218
--- में कमज़ोरी न दिखाना 220
--- की तैयारी 239,624,625
--- अकारण (बिना उज्र) बैठ रहने वाले 294
--- दारुलकुफ्र के मजलूम मुसलमानों के लिए 286, 287
--- जिहाद का हुक्म 284, 288,289
--- से टाल मटोल करने वाले 286,287
--- अल्लाह की राह में लड़ने वाले 275
--- इस्लाम में जंग का उद्देश्य 362
--- से मुराद 362
--- जंगी क़ैदी 628,624
--- न करने की सूरत में फ़ितना और फ़साद 632,636
--- कुफ्र के लीडरों से लड़ना 646,667
--- इस्लाही और इन्क़लाबी जंग 656
--- अल्लाह की राह में निकलने का हुक्म 666
--- फ़र्ज़ कब होता है 669
जीना और मरना अल्लाह के लिए 502
जुआ
--- के नुक़सान 113,114,399,400
--- लाटरी 399,400
--- रेस 399
ज़्यादती करने की मनाही 334
(ज्ञ)
ज्ञान
--- की व्याख्या 68
--- से तात्पर्य 171
--- में दक्षता 164,167,320
--- ज्ञानवान लोगों की गवाही 170,171,324
--- ज्ञानी और संत (देखिए उलमा और मशाएख)
(त)
तंग दिली 308,309
तअल्लुक़ बिल्लाह 316,330
तक़लीद
--- अंधी 533
तक़वा 234,345,384,398,434,496,498
560,570,586
--- अपनाने वाले 170,171
--- अल्लाह मुत्तक़ियों को पसंद करता है 194
--- का आदर्श 205
--- मुत्तक़ी क़ौन हैं 239
--- तक़वा अपनाने की ताकीद 242
--- सामाजिक ज़िम्मेदारियों के लिए आधारशिला 243
--- की बरकतें 542,543
--- अपनाने का मतलब 561
--- मुत्तक़ियों के लिए सुखद अन्जाम 550
तक़दीर का लिखा
तज़्किया 58,59,70,88
तबूक
--- की जंग 635
--- का फ़ासला मदीने से 637
तयम्मुम 272,273
--- की मसलहत 273
तलाक़ 120,121,124,125,126,128,129
--- का अर्थ 121
--- का अप्रिय होना 121
--- का हुक्म मूसा की शरीअत में 122
--- ईसाईयों के नज़दीक 122
--- के मसले में बीच की राह 122
--- तलाक़ रजअी 122
--- का अर्थ जाहिलिय्यत में 122
--- देने का सही तरीक़ा 122
--- तलाक़ मुग़ल्लिज़ा 122,123
--- तीन तलाक़ एक साथ न देना 123
--- तलाक़ बाइन 123
--- एक मज़लिस की तीन तलाक़ एक तलाक़ के हुक्म में 123
--- तीसरी बार की तलाक़ का मतलब 129
--- अदालत को इख़्तियार देना
--- तलाक़ पाई औरत (मुतल्लक़ा) का हक़ 128,130,131
तवक्कुल 224,225
तवाफ़ 58,59
तसव्वुफ़ 397
ताग़ूत
--- का इन्कार 140,142
--- की व्याख्या 142,380,381
--- पर विश्वास जताने वाले 274
--- से मुराद 282,283
--- की ओर फैसले के लिए पलटना 278,280
--- की राह में लड़ने से मुराद 285
तादाद अज़्वाज
तालूत 132,133,136,138
तूर 318

तूर पर्वत 31,34,35,46
तौरात 28,31,33,35,37,38,44,45,63,75,165 186,187,188,189,200,368,370,372,373,384,385, 400,449,461,500,501
--- और बाइबिल का फ़र्क़ 165
--- में काट छांट 195
--- को कायम करने का मतलब 385
--- तख़्तियां 558,559,560
---में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भविष्यवाणी 562,563
--- में तौहीद का हुक्म 661
तौबा 316,444,560,636,638,642,654,686
--- करने वालों के लिए क्षमा 198
--- सच्ची तौबा 201
--- किस की तौबा क़ुबूल नहीं होती 200,201,256,257
--- किस की तौबा क़ुबूल होती है 200,257
--- तौबा की हक़ीक़त 257
--- सूरह तौबा की शुरुआत बग़ैर बिस्मिल्लाह के 636
(थ)
थान (स्थान) 396
थाल (माइदा) का आसमान से उतरना 414,415
(द)
दफ़न करना (लाश को) 356,358
दरगाह
--- को जाना नज़्र और नियाज़ के लिए 584
दस आदेश 498
दर गुज़र से काम लेना 586
दाऊद 136,137,326,392,456,457
दअवत और तबलीग़
--- का तरीक़ा 142
--- भलाई की तरफ़ 204
--- के लिए असर करने वाला अन्दाज़े-बयान 282,283
--- दाओ (दअवत देने वाला) गिरोह 204
दिखावा
दियत (खूँ बहा) 82,83
दिल
--- की बातों पर पकड़ 160
--- की सख़्ती 39,348,349
--- पर मुहर 10,694
--- में रोग 16,17
दीन (इस्लाम) 60,109,366,316,660,663
--- का अल्लाह ही के लिए होना 60,612,613,614
--- में ज़ोर ज़बरदस्ती की मनाही 141,140,142
--- में इख़्तिलाफ़ 108
--- में अटकल की बातें करना 38
--- असल दीन 171,192,198,199
--- कायनात का दीन 198,199
--- में ग़ुलू 189,328,329
--- विभेद (तफ़रक़ा) में न पड़ना 204,205
--- भाइचारे की बुनियाद 204,205
--- की तकमील अर्थात उस का पूरा होना 334,337,338
--- से फिरना 378
--- में अलग अलग राहें निकालना 502,503
--- बिलकुल सही दीन 502,503,642,654,660
--- को खेल तमाशा बनाना 522,523
--- पर ताना अथवा व्यंग्य कसना 646,647
--- को ग़ालिब करना 662
--- इस्लाम, पूर्ण उपासना व्यवस्था 662
--- दीन को जाहिर करने का मतलब 662
--- का राजनीतिक वर्चस्व 662
--- की सीख अथवा बोध प्राप्त करना 712,713
दुआ
--- का क़ुबूल होना 86,91,238
--- गिड़गिड़ाते हुए 524,525
--- इब्राहीम की दुआ 58,59
--- अल्लाह की राह में लड़ने वालों की दुआ 222
--- बुद्धिमानों की दुआ 236,237,238
दुनिया
--- की ज़िन्दगी का सामान 168,169,234
--- थोड़े दिनों की ज़िन्दगी 238,434,435
--- में रूस्वाई 364
--- के फ़ायदे बटोरना 570,571
--- के कुत्ते 570,571
दूध पिलाना 126,127
देवता
--- देवताओं के सोमा पीने की धारणा 141
--- के अवतार 145
--- त्रीश्वरवाद की धारणा 141
--- शफ़ाअत की ग़लत धारणा 140,141
--- देवी का अस्तित्व बहुदेववादियों की ख़ाम ख़याली 77
देश त्यागने वाले (देखिए मुहाजिरीन) 696
दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार 271
दौलत
--- जमा कर के रखना 663
--- को सीमित करने के बारे में अबू ज़र की राय 663
(ध)
धन (लक्ष्मी) की पूजा एवं दासता 233
धर्म (देखिए मज़हब) 60,61
धारणाएं (देखिए अक़ाइद) 319
(न)
नग्नता
--- नग्न चित्र 497
नजवा 302
नजाशी 394
नज़्र और नियाज़ ग़ैरुल्लाह के लिए 476,485
नज़्र बिन हारिस 594,630
नबी उम्मी 562,563
नबी और रसूल
--- सिर्फ इन्सानों में से 483

--- नबियों का क़त्ल 34,174,175,210
--- नबियों के क़त्ल पर दर्दनाक अज़ाब 174
--- सब पर ईमान लाना ज़रुरी 198
--- के बीच भेद भाव न करना 60,61,198
--- अल्लाह के सिवा किसी की इबादत का हुक्म नहीं देते 196
--- का आज्ञा पालन और अनुकरण 288,460,461
--- ख़ुशख़बरी देने वाले 326,440,441
--- सावधान करने वाले 326,440,441
--- का दीन 369
--- से क़ियामत के दिन सवाल 410,411,506,507
--- क़ुर्आन में सब का ज़िक्र नहीं 327
--- नियुक्ति का उद्देश्य 326,327
---सब एक ही हिदायत के स्त्रोत से फ़ैज़याब (लाभान्वित) होते रहे हैं
--- का सान्निध्य 284,285
--- की रिसालत का सिलसिला 519
--- बनी इस्राईल में 352
--- इनाम पाने वाला गिरोह 284,485

नर्क (देखिए जहन्नम)

नव मुस्लिमों के साथ सामाजिक न्याय एवं समानता 643

नसीहत (देखिए याददेहानी)

नहूसत की हक़ीक़त 550,552

नाइन्साफ़ी दुश्मन के साथ भी न करना 344

नाच रंग (देखिए रक़्स और सुरूर)

नाप तौल में इन्साफ़ 496

नाम
--- बच्चों के शिर्क से प्रेरित नाम रखना 584

निकाह 124,128,340

पक्का अहद 260,261
--- बहुदेववादियों से निकाह की मनाही 116,117
--- विधवाओं का निकाह 128,130
--- कि आयु 246,247
--- जिन औरतों से हराम है 260,261,262
--- बहुपतिवाद स्वभाव के विरूद्ध एवं अप्राकृतिक 261
--- अहसान का मतलब 262
--- मुतआ की मनाही 262
--- तादाद अज़्वाज (एक से अधिक एवं चार तक सीमित पत्नी रखने) के लिए शर्त 308,309

निफ़ाक़ 16,17
--- की हक़ीक़त 671
--- और झूठ में रिश्ता 686,687

निशानियाँ
--- ब्रह्मांड (आफ़ाक़) में 236,237
--- क़ियामत से पहले ख़ास (विशिष्ट) निशानियों का ज़ाहिर होना 500,501
--- सूरज का पश्चिम से उदय होना 502
--- नुफ़्क़ा 128,129,130,131

नूह 178,179,320,684
--- का वृत्तांत 528,529,531
--- का ज़माना 529
--- की क़ौम का ठिकाना 531
--- नूह की नाव 558,560

नेकी
--- का स्थान 200,201
--- के काम में सहयोग 334,335

न्याय (देखिए इन्साफ़)

न्याय और शान्ति का अर्थ 17, 344, 345, 514

न्याय और समानता (देखिए अद्ल)

(प)

पड़ोसी से अच्छा व्यवहार 270,271

पत्नियों की संख्या (देखिए तादाद अज़्वाज)

परहेजगार (देखिए मुत्तक़ी)

परिवार नियोजन 307
--- के लिए नसबन्दी 307
--- ख़सी करना 307

परिहार (देखिए माले-गनीमत)

पवित्र धरती फ़िलस्तीन 352,353

पलटना 120,121

पांसे के तीर 334,337,396

पाक चीज़े 341

पाकीज़ा बीवियाँ 20

पाखण्ड (देखिए निफ़ाक़)

पाखण्डी (देखिए मुनाफ़िक़)

पुनर्जन्म की धारणा 433

पूजे जाने वाले पत्थरों का अन्जाम 18,19

पूर्वजों की पूजा (देखिए बुजुर्ग परस्ती)

पौलूस (पाल) 393
--- पाल और ईसाईयत 658

प्रतिज्ञा (देखिए अहद)

प्राण मूल्य (देखिए दियत)

प्रायश्चित (देखिए तौबा)

(फ)

फ़रिश्ते 22, 23, 24, 46, 426, 427, 464, 465, 472, 500, 508, 509
--- फ़रिश्तों का आदम को सजदा करना 508
--- निकटस्थ अथवा मुक़र्रब 592
--- अल्लाह ही को सज्दा करते हैं 592
--- रूहों का क़ब्ज़ करना 622,623
--- का जंग के मौक़े पर उतरना 654,655,668
--- मलाइका का अर्थ 23,24,45
--- मीकाईल 46,47

फ़ालगीरी 337

फ़ासिक़ 378,642,643,672
--- की व्याख्या 21,543
--- का घर 558,559

फ़िक़ही तफ़सीलों के लिए सही हदीसों की ओर पलटना 591

फ़ितना 94,95,112,113
--- फ़ितना बाक़ी न रहे 612,613

फ़िरऔन 542,544,546,549,622,623

--- शब्द का अर्थ 551
--- के माबूद (उपास्य) 550,551
--- का मूसा को चैलेन्ज 549
--- की जालिमाना हुकूमत में मज़हब बदलने की आज़ादी नहीं थी 549
--- का रब होने का दावा 551
--- का डूब जाना 554
--- की क़ौम पर अज़ाब का अवतरण 542,554
--- का समाज और सभ्यता तबाह 554
फ़िलस्तीन 552,555
फ़िस्क 334
फ़ुज़ूल ख़र्ची न करना 488,489,514
फ़ुर्क़ान 606,607
--- की व्याख्या 31
फूट और विभेद से बचना 496,497
(ब)
बक्का (मक्का) 200,202
बदी का बदला 502
बद्दू अरब 660,693,694,695,696
बद्र 212,218,221,229,231,593
--- इस्लाम की पहली जंग 169
--- जंग के कारण 593
--- की घटना 596,597,598,599,600,612,616
--- फ़रिश्तों के द्वारा मदद 600,601,602
बनाव और बिगाड़ की हक़ीक़त 17
बनी आदम (आदम की संतान)
--- से तौहीद का अहद् 574,575
बनी इस्राईल 26, 27, 28, 30, 31, 33, 34, 37, 42, 56, 63, 79, 132, 133, 174, 178, 195, 197, 202, 210, 211, 318, 321, 352, 357, 410, 412, 539, 540, 544, 548, 554, 555, 557, 561, 576
--- को ईमान लाने की दअवत 274
--- का निरन्तर अहद (प्रतिज्ञा) को तोड़ना 318,348
--- पर लानत 272,273
--- का बछड़े को पूजना 318, 319,558,559
--- का हज़रत ईसा पर इल्ज़ाम और उन के ख़िलाफ़ साज़िश 188,321
--- की (किताब में) काट छांट 202
--- का अवैध रूप से माल खाना 320
--- के अपराध की गवाही बाइबिल में 211
--- का नबियों को क़त्ल करना 232
--- का बात को असल जगह से फेरना 272,273
--- का दीन पर व्यंग्य करना 272,273
--- से प्रतिज्ञा 384,386
--- की ईर्ष्या 278, 279
--- पर पाक चीज़ें हराम 320
--- का सूद लेना 320
--- का हज़रत ईसा को सूली देना 320
--- का झूठा दावा 321
--- का मरयम पर बोहतान 321
--- का नमाज़ और ज़कात को छोड़ देना 327
--- के सत्यप्रिय उलमा 327
--- का आपसी शत्रुता के कारण मतभेद करना 170
--- सत्य को छिपाना और असत्य के साथ गड्ड मड्ड करना 194,272,273
--- में सत्यप्रिय गिरोह 210,211,238,562,564
--- की आयतों को थोड़ी क़ीमत पर बेचना 236
--- के ख़ुरूज का रास्ता 353,354,359
--- की रिहाई का मुतालबा 544,545
--- की संगदिली का विवरण बाइबिल में 349
--- का मारे मारे फिरना 357,359
बनी नज़ीर 370
बनु क़ुरैज़ा 370
बनुबक्र 647
बराअत 635
बर्थ कन्ट्रोल 497
बहुदेववादी 392,435,484,485,492
--- इस लायक नहीं कि मस्जिदों को आबाद करें 646
--- का हाल क़ियामत के दिन 430
--- के उपास्यों को बुरा भला न कहो 470,471
--- के ख़ुदा (देवता) क़ियामत के दिन ग़ायब 433
--- की इच्छाओं पर चलने की मनाही 444
--- की नमाज़ 600,610
--- से लड़ने का हुक्म 612,613,660
--- से मुक्त एवं विरक्त होने का एलान 638,639
--- को क़त्ल करने का हुक्म 638,639
--- को अल्लाह का कलाम सुनने के लिए सुरक्षा प्रदान करना 642,643
--- के क़त्ल के हुक्म के बारे में ग़लत फ़हमी का निवारण 640
बाइबिल
--- कब संकलित हुई 157
--- की हैसियत 166
--- के टीकाकार का एतिराफ़ 167
बाप दादा का अन्धानुकरण 78,79,406,407
बाबिल 46,49
बारिश (बाराने रहमत) 524
बिदअत 90
--- बिदअतें और ख़ुराफ़ात 307
--- का दरवाज़ा कब खुलता है 329
--- बिद्अत में लिप्त लोगों की हरकत 197
--- इमाम के मासूम होने की धारणा 280
बिस्मिल्लाह की व्याख्या 3
बुज़ुर्ग परस्ती 484,585
बुत
--- चढ़ावे 483,583
--- के बारे में श्रद्धा एवं आस्था 587
बुत परस्ती 554,555,561
--- नूह की क़ौम में 529
--- आद की क़ौम में 535
--- समूद की क़ौम में 535

--- अरब के बहुदेवरादियों में 586,587
बुद्धि
--- से काम लेने का निर्देश 496,497
--- से काम न लेना 606,607
बुद्धिमान
--- के गुण 236
--- की दुआएं 236
--- कौन लोग हैं 237
बुराई से न रोकने पर पकड़ 392
बुराई का सामान्य रुप से प्रचलन 403
बेहयाई की बातें हराम हैं 96,497,498,514,515,519,536
बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) 58,59,95,200,202
--- पहला घर 200,201
--- मक़ामे-इब्राहीम 200,202
--- का हज्ज 200,203
--- के मेअमार अर्थात निर्माण करता 202
--- के निर्माण से सम्बन्धित ग़लत रिवायतें 202
बैतुलमुक़द्दस 353
(भ)
भलाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना (देखिए अम्र बिल मारुफ़ व नहि अनिल मुन्कर)
भली बात करने का हुक्म 586
भारत के बहुदेववादी 397,477
--- की ईश्वर के बारे में धारणा 467,468
--- के दवी देवता 555
भेड़ बकरी 488,490
भौतिकवादिता (देखिए माद्दा परस्ती)
भ्रामक नारे 473
भ्रुण हत्या (देखिए क़त्ले-औलाद)
(म)
मक्का का स्थल भौगोलिक दृष्टि से 68
मजलिस
--- ऐसी मजलिस में बैठने की मनाही जहाँ इस्लाम का मज़ाक उड़ाया जाता हो 449
मज़हब
--- की हक़ीक़त 61
--- मज़हबी पक्षपात 141
--- के नाम पर खोटे सिक्के चलाना 40
--- मजहबों के बीच कश्मकश 80,83
--- इन्सानी नस्ल का सब से पहला मज़हब 109
--- मज़हब परस्ती 195
--- मज़हब चलाने वाले 166,465
--- के मामले में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं 540,541
--- मतभेद न करना 618,619
मदयन 536,537
--- वाले 684
मनुष्यों के सुधार का काम 116
मन्न और सलवा 32,33,562
मन्नत मानना 485
मरयम
--- की पैदाइश 182,183
--- के लिए अजिविका अर्थात रिज़्क़ 182,183
--- की पवित्रता 186,187
--- को दुनिया की औरतों पर फ़ज़ीलत 320,321
--- पर आरोप 414,416
--- के ख़ुदा होने का अक़ीदा 388,389
--- मरयम बेहद सच्ची 388,389
मर्द
--- औरतों के सरबराह 266,267,272
--- दण्ड देने के अधिकार 268
--- का औरत जैसा बनना 307
--- को एहसान और तक़वा अपनाने का प्रोत्साहन 308
मलामत से न डरना 378
मवेशी 334,335,488,489
--- में ग़ैरुल्लाह का हिस्सा 484
--- मना किये गए 484,485
मश्विरा 226,227
--- करने का निर्देश 227
--- शूराईयत 227
--- सच्ची जम्हूरियत 227
--- फैसले के लिए मेयार 227
मसीह इब्ने मरयम 654,658
मस्जिदे-हराम 70,71,95,98,114,334
--- के मुतवल्ली 610,611
--- के पास मुआहिदा अर्थात वचन बांधना 642
--- की सेवा 650,651
--- के पास बहुदेववादी न आने पाएं 654,655
महरम 452,453
महर 128,129,242,256,258,260,261,340
--- की हैसियत 244
--- औरतों का हक़ 244
--- बढ़ा हुआ महर 262
मांसाहारी 77
माद्दा परस्ती 233
मामले की सफ़ाई
माल 168,169,233,234,244,266,267,320
--- आज़माइश 606,607
--- सोने और चाँदी ख़ज़ाना बना कर रखना 660,663
--- का घमण्ड 675
--- के दर्दनाक अज़ाब 692
माले-गनीमत 596,597,628,631
--- का वितरण 612,614
मासिक धर्म (देखिए हैज़)
मिना में ठहरने का समय
(देखिए अय्यामे-तशरीक़)
मिल्लते-इस्लामिया
--- के लिए प्रभुत्व एवं सत्ता 211
--- से ग़द्दारी करने वाले 313

मिस्कीन से अच्छा व्यवहार 270,271
मीरास
--- का जदवल अर्थात् तालिका 252,255
--- मर्द और औरत दोनों का हिस्सा 246,228
--- कलाला 64,312,333
--- जिन से अहद है उन का हिस्सा 266,267
--- माता पिता और नाते दारों के वारिस 266,267
--- लड़का और लड़की का हिस्सा बराबर न रखने का कारण 248
--- औलाद का हिस्सा अधिक रखने का कारण 249
--- वसीयत 246,249,250
--- वारिस के लिए वसीयत नहीं 248
--- यतीम पोते को कुछ न कुछ देना 247
--- सगी औलाद की मौजूदगी में पोते वारिस नहीं 248
--- यतीम और मिस्कीन को कुछ देना 246,247
--- क़र्ज़ की अदायगी 246,249,250
--- जाहिलिय्यत के मीरास क़ानूनों का सुधार 247
--- मज़हबों की अफ़रातफ़री 249
--- मीरास के क़ानून बनाना ख़ुदा का हक़ 246,249, 251
--- बच्चे वारिस 313
--- जाहिलिय्यत के क़ानून का ग़लत होना 247
--- नेपोलियन का सिविल कोड 249
--- हिन्दू कोड 249
--- इण्डिन सेक्शन एक्ट 249
--- ग़ैरइस्लामी संपत्ति व्यवस्था लाने का प्रयास संगीन जुर्म 250,251
मुत्तक़ी 372,638,639,642,660,670
--- कौन हैं 10,12
मुनाफ़िक़ीन 228,229,282,283,284,285,288,289 290,291,300,से 303,314,315,375,672,680,684
--- से जिहाद 686,687,694,696
--- नये दौर के मुनाफ़िक़ीन 303
--- का जिहाद से जी चुराना 670,692
--- की मुसलमानों के ख़िलाफ़ साजिशें 672,673
--- निफ़ाक़ की हक़ीक़त 671
--- की नमाज़ काहिली के साथ 672,673
--- अब्दुल्लाह बिन उबई की नमाज़ जनाज़ा 689 से 691
--- के लिए माफ़ी की दुआ बेफ़ायदा 688,689
--- की जनाज़े की नमाज़ पढ़ने की मनाही 689,690
मुबाहला 190,191
मुर्दार 37,492,493
मुर्दे सुनते नहीं 436,437
मुर्दों को ज़िन्दा करना 524,525
मुश्रिकीन (देखिए बहुदेववादी)
मुशिरकीने-हिन्द (देखिए भारतीय बहुदेववादी)
मुसाफ़िर से अच्छा व्यवहार 270,271
मुस्लिम 58,59,60,188,192,414,502,548
--- मुसलमान अल्पसंख्याक की समस्याएं और दअवती काम 546
--- मुस्लिम और मुश्रिक का फ़र्क़ 428
--- मुसलमान 384
--- मुसलमान केवल नाम के 685
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 28,37,39,45 47, 49, 53, 57, 63, 67, 75, 138, 195, 220, 221, 223, 228, 326, 349, 384, 431, 578
--- अल्लाह के रसूल 220,221,288,289,288
--- की पैरवी अल्लाह की मुहब्बत के लिए अति आवश्यक 174,175
--- का अनुपालन अल्लाह का अनुपालन है 174,175
--- के रसूल होने के बारे में बनी इस्राईल से वचन 196,197
--- क़ियामत के दिन गवाही देंगे 272,273
--- की नियुक्ति सारे जगत की क़ौमों के लिए 273,391
--- का दौर क़ियामत तक के लिए 273
--- आख़िरी नबी 273,324,338
--- की शान में गुस्ताख़ी करना 272
--- के अनुपालन का हुक्म 272
--- को फ़ैसला करने वाला मानना 282,283
--- पर ईमान लाने की दअवत 312
--- पर वह्य 326
--- आप को क़त्ल करने की साज़िश 345
--- बशीर और नज़ीर अर्थात् ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले 352,553
--- के बस में लाभ और हानि पहुँचाना नहीं हैं 583
--- कि नियुक्ति कब हुई 353
--- ग़ैब के इल्म (परोक्ष के ज्ञान) का दावा नहीं 440,441
--- फ़रिश्ता होने का दावा नहीं 440,441
--- के ग़ैब दाँ होने की बहस 441,442
--- को ग़ैब का ज्ञान नहीं 582,583
--- नबी उम्मी 562,563
--- के बारे में तौरेत और इन्जील में भविष्यवाणियाँ 562,563,564
--- का बोझ और तौक़ उतारना 562,564
--- की हिमायत और मदद 562
--- हिन्दुस्तान के लोगों के लिए भी रसूल हैं 564
--- के ख़िलाफ़ साज़िश 610,611
--- की दुआ सुकून और संतोष का कारण 700
--- के लिए माफ़ी का एलान 708,709
मुहाजिरीन 696,697,708
मूसा 27,30,31,32,34,36,37,44,46,60,318,319 327,352,357,456,460,461,500,501,542,550,551 554,552,562
--- की फ़िरऔन को दअवत 544
--- का फ़िरऔन से मुतालबा कि बनी इस्राईल को जाने दे 544
मोज़्ज़ा (चमत्कार)
--- का मतलब 189
--- महसूस मोज़्ज़ा 436,472
मोमिन 632,633
--- के गुण 596,597,650,684,704,705
--- एक दूसरे के साथी 684
--- औरतें 684
--- मोमिनीन की राह छोड़ कर अन्य राह को अपनाना 302
मौत 220,221,225,234,235
--- का मतलब 71

--- के बाद ज़िन्दगी 20
--- के बाद उठाए जाने को घटना 32
--- मृत्यु के पश्चात मिलने वाले जीवन का इन्कार करने वाले 421

(य)

यतीम
--- की परिभाषा 244
--- का माल उस के हवाले करना 242,244,245,246,247
--- का माल खाना 242,246
--- यतीम लड़कियों से निकाह के लिए शर्त 244
--- के अधिकार देने की ताक़ीद 242,243,308,309
--- का सरपरस्त 247
--- के साथ अच्छा व्यवहार 270
--- के माल की हिफ़ाज़त 496

यमलोक (देखिए आलमे-बर्ज़ख़)

एरीहा 33

यहूदी 34,43,45,47,49,54,55,56,57, 68,75,83,352,368,369,370,392
--- में से बन्दर और सुअर बनाए गए 380,381
--- के पंडित और धर्म शास्त्री 380,381
--- लड़ाई की आग भड़काते हैं 380,382
--- पर नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए गए थे 492,493
--- यहूदियत और ईसाईयत की हक़ीक़त 55
--- को दोस्त बनाने की मनाही 374,375

यहया 35,182,183,456,457
--- बाइबिल में यूहन्ना 183

याक़ूब
---याक़ूब की संतान 326,327

याददेहानी हासिल करने वाले 164

यूनुस 326,456

यूसुफ़ 456,457

यौन सम्बन्ध (मर्दों के साथ) 537

(र)

रक़्सो-सुरूर 497

रज़ाअत 126,127

रब 2,18,26,36,52,74,330
--- की व्याख्या 4
--- से मुलाक़ात 30
--- से डरना 238,242
--- ग़ैरूल्लाह को रब बनाने का मतलब 193

रमज़ान 86,88

रसूल
--- रसूलों में फ़ज़ीलत 140,141
--- रसूलों में भेद न करना 60,61
--- का अनुपालन 398,562,570,618
--- की ज़िम्मेदारी 398,402
--- पर एतिराज़ 426,427
--- की तौहीन करना संगीन जुर्म 647
--- का मिशन 662
--- को कष्ट पहुँचाना 680
--- ईमान वालों के लिए रहमत 680
--- से वफ़ादारी 693
--- ईमान वालों के लिए स्नेही एवं दयालू 716,717

रस्मों की शरीअत

रहमान और रहीम की व्याख्या 4

राजसिंहासन (अर्श) पर बैठने का मतलब 525

राय और क़ियास (अनुमान) को क़ुर्आन और सुन्नत पर वरीयता न देना 591

रिश्वत 90,92,267,369

रिश्तों का काटना 21

रुकू का अर्थ 38

रुजू (पलटना) 120,124

रूहुलक़ुदुस 140,141,410

रोज़ा 86,87,88,90,98,99
--- का मतलब 87
--- का मक़सद 87

(ल)

लादिनियत पसंद मुसलमान 449

लामज़हबियत 498

लानत 380,381,392,393
--- बाइबिल में लानत का ज़िक्र 381,393
--- जहन्नम में एक उम्मत का दूसरी उम्मत पर लानत भेजना 518,519

लिखने पढ़ने का प्रोत्साहन 159

लिबास
--- का मक़सद 510,511
--- नग्नता को आदर एवं श्रद्धा का दर्जा देने का खण्डन 511
--- हिप्पीवाद का खण्डन 511
--- तक़वा का लिबास 510,511
--- के मामले में ज़हिलाना विचारों का खण्डन 516

लूत अलैहिस्सलाम 456,458
--- का वृत्तांत 536,537
--- का ज़माना 537
--- का ठिकाना 537

लेन देन आपसी रजामन्दी से 266,267
--- फ़रेब से पाक 267

लौंडिया (दासियां) 244,264,270
---जो जंग में गिरफ़्तार हो कर आएं 264,265
--- को आजाद करने का प्रोत्साहन 244
--- को वैश्यावृत्ति का साधन बनाने की मनाही 264,265

(व)

वसीयत 80,81,131,246,249,250
--- जब मौत आ खड़ी हो 406,407
--- के गवाह 406,407
--- ज़बानी 407

वसीले का मतलब 361,362

वारिस 634

विनम्रता 227

विभक्त अक्षर (देखिए, हुरूफ़े-मुक़त्तआत) 11,165,507

विभेद अथवा मतभेद 496,497
विश्वासघात (देखिए ख़ियानत)
वुज़ू
--- का हुक्म 340
--- का मसनून तरीक़ा 343
वैवाहिक नियम 123
--- परिवर्तन की मनाही 123
--- की मसलहतें 125
व्याभिचार एवं बलात्कार (देखिए ज़िना)
(श)
शमोएल 133,134
शरीअत
--- भारी ज़िम्मेदारी 160,161,162
--- शरअी व्यवस्था की स्थापना 162
--- के मुक़ाबले में क़ानून गढ़ना 661
--- से विमुखता 37
--- सादा शरीअत 265
--- शरअी क़ानून 334
--- शरअी क़ैद की पाबन्दी 334,335
--- धर्म के नाम पर झूठी शरीअत गढ़ना 485,486
शआएर (इस्लामी चिन्ह) 334,373
शहादत (गवाही) 160,406,407
--- हलफ़िया बयान 411
--- गवाह ग़ैर मुस्लिम 408
--- हालात की शहादत 411
--- अल्लाह की ख़ातीर 312,313
शहीद
--- क़ौन हैं 219
--- को मुर्दा न कहो 230
--- रिज़्क़ पा रहे हैं 231
--- के लिए ख़ास तरह की ज़िन्दगी 231
--- के लिए ख़ौफ़ (भय) नहीं 230
शिकार 398,399,400
--- के हलाल होने का तरीक़ा 341
--- एहराम की हालत में मना है 334,335,398,400
--- समुद्र का शिकार 402,403
--- शिकारी जानवर 340,341
शिर्क (बहुदेववाद) 447,450,456,457,465
--- देवी देवता की कल्पना 166,167
--- अल्लाह के औलाद होने की धारणा 328
--- देवमाला 304
--- गैरूल्लाह को रब बनाने का मतलब 192,193
--- तबाही का कारण 193
--- एक प्रमाण रहित बात 192,193
--- शरीक (साझीदार) ठहराने की मनाही 270,271
--- कभी न माफ़ किया जाने वाला गुनाह 274,275,302
--- क्या है? 275
--- बुत परस्ती 275,276
--- शिर्क करने वाले 270
--- देवियों को पुकारना 208,209
--- हाजतों की पूर्ति के लिए किसी को पुकारना उस को माबूद अर्थात उपास्य बनाना है 304
--- से बेज़ारी 430,580,582,583
--- हराम 496,497
शुऐब
--- का वृत्तांत 536,537
शुक्र (कृतज्ञता) 316,317
--- दीन का आधार 3
--- करने वाले 528
शैतान 16,17,22,25,76,106,107,232,233
302,304,398,450,451,472,473,476,485,488
--- की छूत का मतलब 154
--- के वादे 306
--- बुरा साथी 270
--- की चाल 275
--- के पीछे चलना 288,289
--- को पुकारना 302
--- के भक्त 302
--- कौन हैं 493
इब्लीस 304
--- की योजना 304
--- का इख़्तियार 304
--- को सहचर (रफ़ीक़) बनाना 306
--- नहीं चाहता कि इन्सान दीन के मामले में सत्यप्रिय बने 307
--- का आदम और हव्वा के दिल में वस्वसा पैदा करना 510,511
--- का कामों को लुभावना बना देना 440,441
--- को बुराई का देवता समझना सही नहीं 515
--- खुला दुश्मन 510,511
--- का दिखाई न देना उस के आस्तित्व को नकारता नहीं 515
--- की ओर से उकसाहट 586
शैबा 594
(स)
संदूक 136,137
संपत्ति (देखिए मीरास)
सकीनत का नाज़िल होना 654,666
सच्चे मुत्तक़ी अर्थात् परहेज़गार 82
सज़ाए-मौत 84
सज्दा 314
--- की आयत 592
सत्ता
--- अमानत 175,288
--- और जम्हूरियत का दावा 175
--- और मलूकियत 175
सत्य को छिपाना 175
सन्यास 392,394,397
सदक़ा 150
--- के लिए पाकीज़ा कमाई 150
--- किन कामों और लोगों पर ख़र्च करना 674 से 679

--- वसूल करने का हुक्म 700,701
--- और तज़्किया 701
सफ़र
--- इबरत की जगहों को देखने के लिए 426,427
--- की दूरी 88
सफ़ा मरवा 74,75
सब्त 34
--- वालों पर लानत 274,275
--- को तोड़ने वालों का क़िस्सा 566 से 569
सब्र 70,71,83,212,220,234,238,264,305,552, 592,593
समूद का वृत्तांत 534,535,584
सरगोशियाँ 302,303
सरिय्या किसे कहते हैं 285
सलाम
--- करना 290,291
--- का तरीक़ा 291
सलीब 661
सवालात
--- ग़ैर ज़रूरी अर्थात् अनावश्यक न करो 402,403
--- फ़िक़ही उलझाव 403
सहाबा
--- साबिक़ून अव्वलून 696,697
--- के विरुद्ध तबर्राबाज़ी 697
सात आसमान 20
साबी 34,35,384
सामाजिक व्यवस्था के वास्तविक आधार 17
सामार्थ्य से अधिक ज़िम्मेदारी नहीं 160,161
सम्प्रदायिक कौन हैं 498
सितारे 464,465
--- सितारों को पूजने का खण्डन 452,से 455
सिफ़ारिश
--- नेक काम की 288
--- बुरे काम की 288
सिराते-मुस्तक़ीम (सीधी राह)
--- की व्याख्या 6
सीधा रास्ता 496
सूअर 334,492,493
सुन्नत-साबितः 289
सुलह के लिए झुकना 524,525
सुलैमान 326,456,457
--- पर जादू के आरोप का खण्डन 46,49
सूद 156,157,158
--- का हराम होना बाइबिल में 154,324
--- कारोबारी 154
--- काफ़िरों से सूद लेना 154
--- के हराम होने का कारण 157
--- ग़ैर सूदी क़र्ज़ 157
--- ग़ैर मुस्लिमों से लेने के लिए ग़लत फ़तओं का सहारा 195
--- दोगुना चौगुना 216,217
--- यहूद के लिए सूद लेने की निन्दा 320
सूर 450
सूरह
--- सूरतों की तरतीब 636,637
--- सूरह बक़र: की तिलावत 9
सौर ग़ुफ़ा (ग़ारे-सौर) 666,668,669
स्वरचित क़ानून 265
स्वालेह (पैग़म्बर) 534,535
(ह)
हंसी उड़ाना
हंसी उड़ाने का मतलब
हक़ और बातिल को गुड्ड मुड्ड करना 26
हज्ज और उमरा 75,90,92,98,99,102,200,203,335
--- उमरा की व्याख्या 95,99
--- शआएर अर्थात् इस्लामी चिन्हों की व्याख्या
--- हज्ज के मनासिक और महीने 98,103
--- हज्ज की रूह 99
--- अरफ़ात 98,100
--- जबलिर्रहमः 100
--- मशअर-हराम 98
--- मुज़्दल्फ़ा मिना 103
--- अरफ़ात में ठहरना 100
--- अय्यामे-तशरीक 103
--- रमी जिमार 103
--- हरम मक्का 95
--- हज्जे-अकबर 636,639
--- हाजियों को पानी पिलाना 650
हद 357
हम्द (ईश-प्रशंसा) की व्याख्या 3
हराम की कमाई 78,80
हराम चीज़ें 336,338,348
--- से मुराद ख़ून, सुअर 78,79
--- ग़ैरूल्लाह के नाम का जबीहा अर्थात् बलि 78,79
--- इन चीज़ों के हराम ठहराने की मसलहतें 78,79
--- हराम ठहरने का मतलब 80
--- हराम माल खाना 368,380,381
हलाल और हराम 562,563,664,665
--- मिल्लते-इब्राहीम में 493
--- हलाल को हराम ठहराने की मनाही 386,397,484,485
हुलूल का फ़लसफ़ा 423
हलाल चीज़ें 340
हलाल जानवर 334
हवारी 185,189,414,415
हारूत और मारूत 46,47,50
--- के बारे में बेहुदा क़िस्से 49,50
हारून 326,357,456,457,548,554,557
--- पर बछड़ा बनाने के इल्ज़ाम का खण्डन 559
हिकमत

हिजरत 112,113,298,299,632,633,650
--- मुहाजिरीन
हित्ततुन का अर्थ 33
हिदायत 2,10,11,12,13,20,26,31,63,86,98 164,170,180,188,194,198,204,332,456,461, 480,562,575,578
--- को छिपाना 74,75
--- का मतलब 662
हुज्जत अर्थात् तर्क एवं युक्ति का पूरा होना 334,338
हुदैबियाः 642,643
हुनैन 654,655
हुबुल (बुत) 485
हुरूफ़े मुक़त्तआत की व्याख्या 11,165,487
हुर्मत (आदर) वाले महीने 334,402,403,638,639,665
हूद (अलैहिस्सलाम) 528,530
हृदय का शुद्धिकरण (देखिए तज़्कियः)
हृदय से तात्पर्य 579
हैज़ 116,117

❍ ❍ ❍ ❍ ❍ ❍

इदारे की हिन्दी प्राकाशन

✸ दअवतुल क़ुर्आन

तफ़सीर :

शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिन्दी अनुवाद :

मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द१ (पारा१से पारा१०तक) सूरह फातिहा ता सुरह तौबा	३००/-
जिल्द२ (पारा ११ से पारा२०तक) सूरह यूनुस ता सूरह अंकबूत	३५०/-
जिल्द३ (पारा २१ से पार ३०तक) सूरह रूम ता सूरह नास	४८०/-
मौज़ूअ और ज़ईफ हदीसों का चलन	९/-
क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना जरुरी नहीं	१०/-
तलाक़ कब और कैसे ?	६/-
सुनो अपने रब (पालनहार की)	१०/-
पारा अम्म	१२०/-

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-४०० ००३   फोन ; 23465005

मौलाना शम्स पीर ज़ादा (१९२७-१९९९ई.) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के आलिमे दीन,फ़क़ीह,मुफ़स्सिर तथा संपादित के अतिरिक्त सदाचारी (मनुष्य)भी थे। क़ुरआन व हदीस़ पर गहरी नज़र तथा तहक़ीक़ी मिज़ाज था।आप की तसानीफ़ में तफ़सीर ''दअवतुल क़ुरआन'' शामिल है। यह तफ़्सीर बहुत आम फ़हम और आसान भाषा में लिखी गई है और प्रसिद्ध है, तीन जिल्दों पर सम्मिलित यह तफ़सीर पाँच भाषाओं उर्दू ,मराठी, गुजराती,हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में प्रकाशित हो रही है।

जन्म स्थान कल्यान (महारष्ट्र) था। परन्तु दअवती काम (आवाहन) के लिए वतन छोड़ कर मुम्बई मुन्तक़िल हुए। केमरिज मेटरिक के बाद अधिक दीनी और दुनियावी शिक्षा खुद से घर पर हासिल की। एक अरब से अरबी भाषा सीखी और उस में अधिक महारत हासिल की। मुतामारूल फ़िक़्हुल इस्लामी, ज़ेरे इहतिमाम जमिअतुल-इस्लाम मुहम्मद बिन सऊदुल-इस्लामिया रियाज़ में एक अरबी मक़ाला ''वज़ुब ततबीक़ अश-शरय्या'' पेश किया।

जवानी में मौलाना मौदूदी (रह.) के लिटरेचर से प्रभावित हो कर ज़माअत इस्लामी हिन्द से संबन्धित हो गए। लम्बे समय तक महाराष्ट्रा की जमाअत इस्लामी के अध्यक्ष (अमीर हलका) और मरक़ज़ी मजलिसे शुरा के मिम्बर रहे।१९७७ ई. में इमरजन्सी के बाद राजनिति में जमाअत की शिरकत पर इस़रार करते हुए उन्हों ने जमाअत से अलाहिदगी इख़्तियार कर ली। मरहूम इस्लामी किरदार के हामिल थे जमाअत इस्लामी से अलाहदा होने के बाद भी आप ने जमाअत के विरूद्ध कोई बात सरेआम नहीं कही, इस के बुनियादि काम से सहमत थे और इस के लिए अपने हृदय में नरम गोशा रखते थे।

मौलाना मरहूम मिल्ली समस्याओं के हल में गहरी दिलचस्पी लेते थे। मुम्बई में मुस्लिम परस्नल-ला बोर्ड,के प्रथम इतिहासिक इजलास को कामयाब बनाने में नुमायाँ रोल अदा किया। ऑल इन्डिया मुस्लिम परस्नल-ला बोर्ड, इस्लामी फ़िक़ह ऐकडमी (इन्डिया)और ऑल इन्डिया मिल्ली कौनसिल के स्थाई मिम्बर थे। मुसलमानों की राजनितिक रहनुमाई के लिए ''मुस्लिम डेमोकरेटिक फोरम'' की बुनियाद डाली और कुछ समय तक राजनितिक रहनुमाई के लिए प्रयास करते रहे। मौलाना मरहूम ने अपने जिवन की तमाम तवानाईयाँ इस्लाम की खिदमत में लगा दीं। जिवन के अन्तिम समय तक तसनीफ़ व तालीफ़ और दाअवती काम अन्जाम देते रहे।

जमाअत इस्लामी से संबन्ध की वजह से दो मरतबा कैद व बन्द की तकलिफें सहन कीं। इसी दौरान फाँसी पर चढ़ाया जाने वाला एक आदमी आप के हाथों पर मुशर्रफ बा इस्लाम हुआ। दौराने कारावास ग़ैर मुस्लिमों ख़ास कर आर-एस-एस के लोगों से संबन्ध पैदा कर के उन के सामने इस्लाम का निज़ामे हयात पेश किया। उसी दौरान एहसास हुआ कि मराठी भाषा में क़ुरआन का अनुवाद पेश किया जाना चाहिए। इस लिए रिहाई के बाद १९७६ ई. में ''इदारा दअवतुल क़ुरआन'' के नाम से ट्रस्ट की स्थापना कर के क़ुरआन का अनुवाद तथा ग़ैर मुस्लिमों के ज़हन को सामने रख कर उर्दू में क़ुरआन की तफ़सीर का काम शूरू किया।

आलमे इस्लाम के प्रसिद्ध आलिम और फ़क़िह अल्लामा युसुफ़ अल क़रज़ावी की प्रसिद्ध अरबी पुस्तकें '' इस्लाम में हलाल व हराम '' तथा '' फ़िक़हुज़्जकात '' का सलीस उर्दू भाषा में अनुवाद किया। सही अहादीस पर सम्मिलित दो पुस्तकें '' तनवीरूल हदीस़'' (मुसलमानों के लिए) और '' जवाहिरूल हदीस '' (ग़ैर मुस्लिमों के लिए) तरतीब दिए। दीनी और समाजी मौज़ुआत पर बहुत सी पुस्तकें लिखीं उदाहरण के लिए ; '' क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना ज़रूरी नहीं'' ''मौज़ुअ और ज़ईफ़ हदीसों का चलन'' '' हुज्जियते हदीस '' और क्या हर हदीस हदीस़े रसूल है ? '' शादी के शरई और गैर शरई तरिक़े'' '' तलाक़ कब और कैसे ''?'' इकट्ठी तीन तलाक़ें किताब व सुन्नत कि रौशनी में'' ''यह कैसा बिगाड़ है''? '' यह कैसी दीनदारी है ''? उभरते मआशरती मसाईल, सुनो अपने रब की, और रुवैत हिलाल का मसला वग़ैरा।

कुछ पुस्तकों के मराठी, गुजराती, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित हो रहे हैं।

زیراہتمام: محمد صدیق قریشی
Pixel Arts
Mobile : 9820790615
Printed at: **Fatima Printers**
Tilak Nagar, Saki Naka Mumbai - 400070